पुरातनों की गुफा
(The Cave of Ancients)

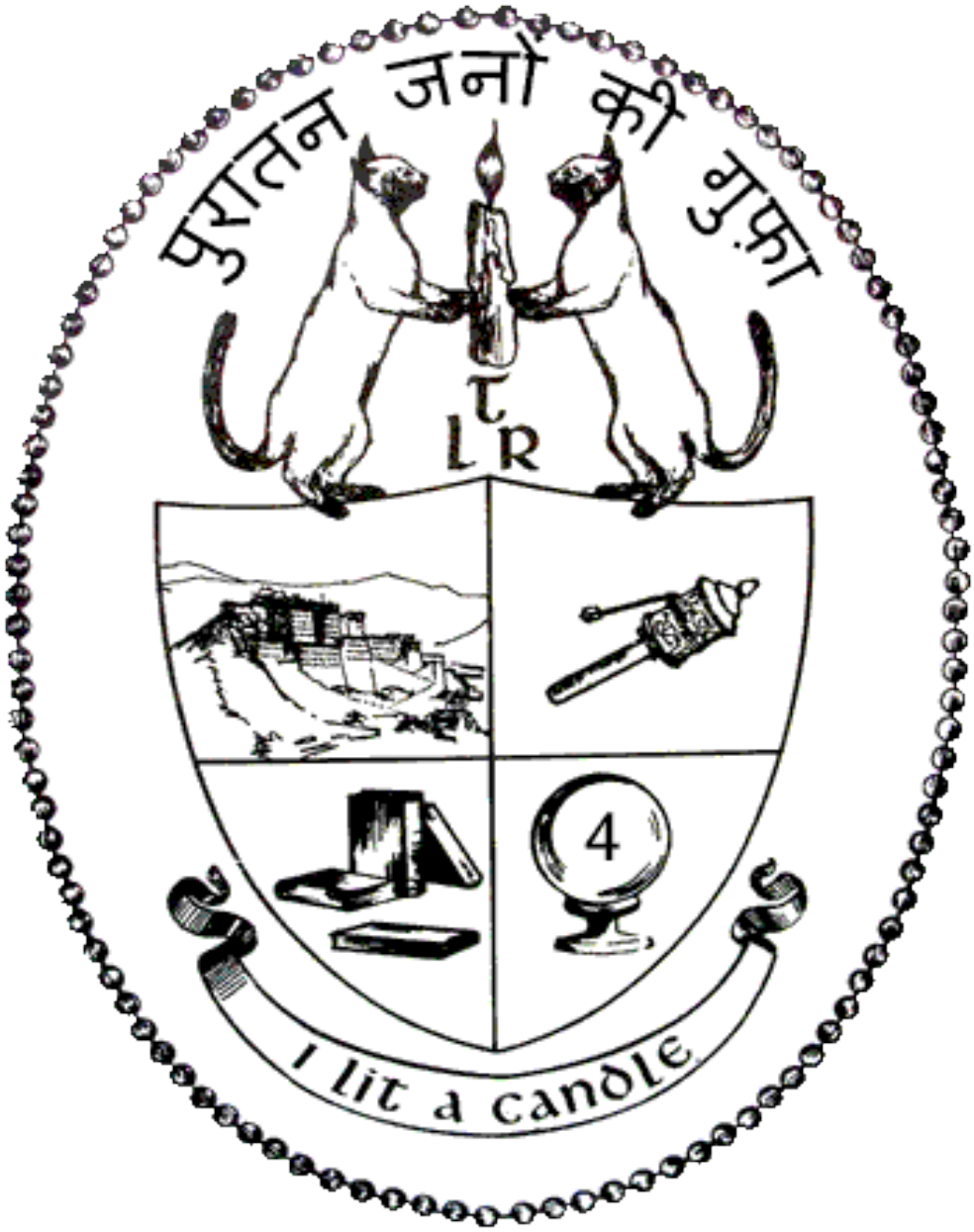

मैं दीप जलाता हूँ
(I Lit a candle)

पुरातनों की गुफा
(The Cave of Ancients)

मूल लेखक
टी लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरणकर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थल :
Website : www.lobsangrampa.org
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

विषय सूची

पुरातनों की गुफा		ii
अग्रेषण		iii
अनुवादक का निवेदन		iv
अध्याय एक	:	1
अध्याय दो	:	13
अध्याय तीन	:	24
अध्याय चार	:	37
अध्याय पॉच	:	50
अध्याय छैः	:	64
अध्याय सात	:	79
अध्याय आठ	:	94
अध्याय नौ	:	111
अध्याय दस	:	123
अध्याय ग्यारह	:	137
अध्याय बारह	:	145
प्रकाशकों की दयालुता	:	146

पुरातनों की गुफा

पुरातनों की गुफा– (मूलतः 1963 में प्रकाशित हुई) पृथ्वी और उसके निवासियों, जिन्होंने उच्चस्तरीय तकनीकी उपकरणों को छिपा दिया था, जो आज के दिन तक भी छिपे हुए हैं, के पुराने इतिहास की एक छोटी–सी झलकी। लोबसांग अपने शिक्षक, महान लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ, वहॉ घूमने जाते हैं, जहॉ ये तकनीकी छिपाई गई है और अपनी ऑखों से इन आश्चर्यजनक उपकरणों को देखते हैं। ये तकनीक, उनकी प्रतीक्षा कर रही है, जो मानव जाति की भलाई के लिए, इसका उपयोग कर सकें और वह समय समीप ही आता जा रहा है।

अग्रेषण

ये पुस्तक गूढ़विज्ञान (occult) और मनुष्य की शक्तियों के संबंध में है। ये इस मामले में एक सरल पुस्तक है कि, इसमें कोई ''विदेशी शब्द,'' नहीं, कोई संस्कृत नहीं, मृत भाषाओं में से कुछ नहीं। औसत आदमी चीजों को जानना चाहता है, वह शब्दों के ऊपर अनुमान नहीं लगाना चाहता, जिसे कोई औसत लेखक नहीं समझता! यदि कोई लेखक अपने कार्य को जानता है, वह विदेशी भाषाओं के उपयोग के द्वारा, ज्ञान की अपनी कमी को छिपाये बिना, अंग्रेजी में लिख सकता है।

बहुत सारे लोग, प्रतिमा अथवा बुत (mumbo jumbo) के फेर में पड़ जाते हैं। वास्तव में, जीवन के नियम सरल हैं; उन्हें गूढ़ विधियों या छद्म धर्मों के द्वारा, जामा पहनाने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। और न ही, किसी को ये दावा करने की आवश्यकता है कि, ''ये ईश्वरीय आदेश (revelation)'' हैं। यदि कोई भी इसके लिए कार्य करे, वही ''ईश्वरीय आदेश'' पा सकता है।

किसी भी धर्म के पास, स्वर्ग की चाबियॉ नहीं है, न ही इच्छा। क्या कोई हमेशा के लिए दोषी हो सकता है, क्योंकि वह किसी गिरजाघर में अपना टोप लगा कर और अपने जूतों को बिना उतारे हुए प्रवेश करता है। तिब्बत में, लामामठों के प्रवेशद्वारों पर ''हजार भिक्षु, हजार धर्म (a thousand monks, a thousand religions)'' खुदा रहता है। यदि आप इसे अंगीकार करते हैं, आप जैसे चाहें, विश्वास करें। ''वैसा करो, जो तुम दूसरों से अपेक्षा करते हो (do as you would be done by)'' जब अंतिम पुकार आयेगी, आप वैसे ही चलेंगे।

कुछ लोग कहते है कि अंदर का ज्ञान, केवल इस संप्रदाय या उस संप्रदाय में जुड़ने से और एक भारी–भरकम चंदा भी देने से प्राप्त किया जा सकता है। जीवन के नियम कहते हैं, ''चाहो, और तुम्हें मिल जायेगा (seek and you shall find)।''

ये पुस्तक, जीवनपर्यंत, तिब्बत के चुने गए महान लामामठों में प्रशिक्षण और शक्तियों, जो अत्यंत कठोर निष्ठा के साथ, नियमों के पालन करने से प्राप्त हुईं थीं, का फल है। ये पुरातन बृद्धों के द्वारा पढ़ाया हुआ और मिस्र के पिरामिडों के समान ऐसे ही मंदिरों में लिखा हुआ और तिब्बत के उच्चदेशों (Highlands) में, विश्व के गूढ़ज्ञान के, महानतम खजाने में जमा, ज्ञान का भंडार है।

अनुवादक का निवेदन

हिमालय हमारे देश का शुभ्र हिम मुकुट है, जिसकी चोटियॉ वर्ष भर बर्फ से ढकीं रहती हैं। हिमालय का शाब्दिक अर्थ, बर्फ का घर होता है। ध्रुवीय क्षेत्रों के बाद, यह विश्व का सबसे बड़ा हिम आच्छादित क्षेत्र है। यह हमारे देश की उत्तरी सीमा का सजग प्रहरी है, जिसका विस्तार पॉच देशों, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान, चीन में 2500 किलोमीटर दूरी तक है। इसके दक्षिण–पश्चिम में भारत के जम्मू काश्मीर प्रान्त का लद्दाख क्षेत्र, उत्तराखंड, हिमांचल प्रदेश, और दक्षिण–पूर्व में असम, अरुणांचल, मीजोराम, सिक्किम तथा नेपाल, भूटान, आदि क्षेत्र आते हैं। विश्व का सर्वोच्च शिखर, माउण्ट ऐवरेस्ट (mount Everest), हिमालय का ही एक शिखर है। अरब सागर और बंगाल की खड़ी से उठने वाली मानसूनी हवाऐं, हिमालय से टकरा कर, हमें पूरे उत्तर भारत में वर्षारूपी अमृत प्रदान करतीं हैं। उत्तरी भारत की सभी नदियों गंगा, यमुना, एवं ब्रह्मपुत्र का उद्‌गम हिमालय क्षेत्र से ही होता है। हिमालय पर देवताओं का निवास माना जाता है। उत्तराखंड, हिमांचल प्रदेश को देवलोक कहा जाता है। जम्मू क्षेत्र में, अमरनाथ (बर्फानी बाबा), उत्तराखंड में प्रसिद्ध केदारनाथ एवं बद्रीनाथ धाम हैं, जबकि हिमांचल प्रदेश, शक्तिपीठों और नौ देवियों के लिये जाना जाता है। बद्रीनाथ के क्षेत्र में, हमारा 'माना' नाम का, तिब्बत के साथ, आखिरी सीमान्त गॉव है। असम में, विश्वविख्यात कामाख्या शक्तिपीठ है, ये सभी स्थान वैदिक धर्म में स्तुत्य हैं। नेपाल, विश्व में एकमात्र हिन्दू राष्ट्र है, जहॉ शिव, विश्व प्रसिद्ध पशुपतिनाथ के रूप में विराजमान हैं। (जीव को पशु, और शिव को पशुपति भी कहा जाता है) तिब्बत में, हमारे दो प्रसिद्ध तीर्थ, कैलाश तथा मानसरोवर हैं। कैलाश को शिव का निवास कहा जाता है, जहॉ पूर्व में हमारे अनेक साधु–संत, एवं तीर्थयात्री, गंगोत्री के रास्ते पैदल ही, बेरोकटोक आते जाते रहते थे। हमारे अनेक साधु–संत, सिद्धमहात्मा, हिमालय पर रह कर निरंतर अपनी आध्यात्मिक साधनाओं में लीन रहते हैं। भारत, नेपाल, भूटान, सिक्किम, तिब्बत, चीन, मंगोलिया आदि देशों में, हिमालय क्षेत्र में अनेक कंदराऐं एवं गुफाऐं हैं। हिमालय के तिब्बती क्षेत्र में, 7000 से अधिक गुफाऐं ज्ञात हैं, जिनमें से अधिकांश में बौद्ध साधु (लामा) रहते हैं। 1959 से पहले तक हिमालय के उत्तर में, पूरी दुनियॉ से अलग–थलग, तिब्बत नाम का एक शान्तिप्रिय, सार्वभौम, स्वतंत्र राज्य था, जहॉ बौद्धधर्म का एकछत्र साम्राज्य था। चीन में 1949 में साम्यवादी शासन का सूत्रपात हुआ, भारत दुनियॉ का पहला देश था, जिसने चीन को गणवादी जनतंत्र के रूप में मान्यता प्रदान की। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने चीन के साथ पंचशील का समझौता किया, फलस्वरूप 1954 में भारत ने, ब्रिटिश शासन से विरासत में मिले, तिब्बत में भारतीय अधिकारों को न केवल गवॉ दिया, वल्कि बिना किसी प्रतिकार के, तिब्बत को चीन का भूभाग मान लिया और परिणामस्वरूप विस्तारवादी, साम्यवादी चीन ने, भारत की पीठ में छुरा भौंकते हुए, तिब्बत पर अतिक्रमण करके उसे हड़प लिया। इसके फलस्वरूप तिब्बत के धार्मिक एवं राज्यप्रमुख पवित्रतम दलाई लामा, अपने लाखों अनुयायियों एवं समर्थकों सहित, वहॉ से पलायन करके भारत आ गये, जिन्हें शरण दे कर, भारत के हिमांचल प्रदेश के धर्मशाला जिले में बसाया गया। तिब्बत की निर्वासित सरकार, तिब्बत को स्वतंत्र कराने के लिये अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्तिपूर्ण प्रयास कर रही है। इसके लिये दलाई लामा को 1989 में नोबल शान्ति पुरुष्कार से सम्मानित किया गया।

सन् 2013 में, तिब्बत पॉलिसी इंस्टीट्यूट ने, तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर, अंर्तराष्ट्रीय नागरिकों के लिये, अपना श्वेतपत्र जारी किया है। जिसमें बताया गया है कि, चीन लगातार तिब्बती नागरिकों के धर्म में हस्तक्षेप करता है तथा दैनिक सामान्य जीवन में उन्हें प्रताड़ित करता रहता है। चीन ने अपनी आबादी का एक बड़ा भाग वहॉ बसा दिया है और मूल तिब्बती नोमाडों को बलपूर्वक वहॉ से हटा दिया है, इसप्रकार मूल तिब्बतियों को अपने ही देश में अल्पसंख्यक बनाते हुए, हॉशिये पर ला दिया है। अप्रैल 2013 तक, 117 तिब्बती नागरिकों ने आत्मदाह किया है (जिसकी सविस्तार सूची एवं

जानकारी, श्वेतपत्र के अंत में दी गयी है)। अधिकांश आत्मदाह करने वाले, तीस वर्ष के कम आयु वाले नवयुवक हैं, जिन्होंने मरने से पहले, तिब्बत की स्वतंत्रता की मॉग के नारे लगाये और पवित्रतम दलाईलामा में अपनी आस्था व्यक्त करते हुए, उन्हें वापस लाने की इच्छा जताई। 10वें पंचेन लामा द्वारा तत्कालीन चीनी प्रधानमंत्री माओ–त्से– तुंग को 7000 शब्दों की याचिका किये जाने के अवसर पर, उन्होंने तिब्बतियों को ''अपना पुराना शत्रु'' करार देते हुए, याचिका को खारिज कर दिया तथा पंचेन लामा को वर्षों के लिये नजरबन्दी में डाल दिया। 1989 में पंचेन लामा ने कहा था कि तिब्बती लोगों ने चीनी शासन में, जितना पाया है, उससे कई गुना अधिक खोया है। इसके कुछ दिनों बाद, रहस्यमय परिस्थियों में, उनकी असामयिक मृत्यु हो गयी। तिब्बती साम्यवादी दल के एक प्रमुख नेता ने एक अवसर पर कहा था कि, खाम (Kham) और आम्डो (Amdo) के अधिकांश पुराने लोग, तहेदिल से अपने दलाईलामा को बेहद प्यार करते हैं और बेहद सम्मान देते हैं और उनकी एकमात्र अभिलाषा अपने जीवनकाल में दलाईलामा का दर्शन पा लेने की है।

तिब्बत के लोगों में आम धारणा है कि तिब्बत ने पहले दस वर्षों (1950–60) में अपनी भूमि खोई, दूसरे दस वर्षों (1960–70) में अपनी राजनैतिक शक्ति गंवाई, और तीसरे दस वर्षों (1970–80) में अपनी संस्कृति खोई तथा चौथे दस वर्षों (1980–90) में युगों पुरानी, अपनी पूरी अर्थव्यवस्था गंवा दी। चीन लगातार उनकी बौद्ध संस्कृति, तिब्बती भाषा, आध्यात्मिकता और पहचान पर हमले कर रहा है। तिब्बत में चीनियों का बेरोकटोक प्रवाह, लगातार उनके रोजगार के अवसरों, आगामी भविष्य, भूमि को निगल रहा है। तिब्बती नगर (Tibetan towns) लगातार चीनी नगरों (China towns) में बदल रहे हैं। तिब्बत का लगातार दोहन करते हुए, सभी प्राकृतिक खनिज सम्पदाऐं एवं पुरातात्विक कलाकृतियॉ ढो कर चीन ले जायी जा रही हैं।

प्राचीन काल में, विश्व में, भारत ही एकमात्र ऐसा देश था, जहॉ चीन अपने यहॉ के छात्रों को अध्ययन के लिये भेजता था और भारत से विद्वानों को अपने यहॉ आमंत्रित करता था क्योंकि बौद्धधर्म यहीं पैदा हुआ और यहीं से पूरे एशियाई देशों में फैला। सातवीं शताब्दी में चीन से ह्वानसांग (Xuanzang) नामक एक यात्री भारत आया था, जिसने अनेक वर्षों तक नालन्दा विश्वविद्यालय में बौद्ध धर्म और दूसरे सम्बधित विषयों का अध्ययन किया था। उसके शिक्षकों द्वारा उसे वापस चीन न लौटने की सलाह दिये जाने पर ह्वानसांग ने उत्तर में कहा था कि, '' बुद्ध ने अपने मत को यहॉ (भारत में) स्थापित किया ताकि इसे सभी देशों में फैलाया जा सके, ऐसा कौन होगा, जो इससे अकेला ही सराबोर और आनन्दित होना चाहेगा और उन लोगों को भुला देगा, जो अभी ज्ञान को प्राप्त नहीं हुए हैं ?''

चीन में बौद्धधर्म के प्रचार–प्रसार ने चीनी विचारों और संस्कृति को और अधिक पनपने का मौका दिया। ये ऐतिहासिक तथ्य प्रदर्शित करता है कि, साम्यवादी चीन द्वारा बौद्ध तिब्बत का विनाश, चीनी लोगों या उनकी संस्कृति के द्वारा नहीं किया जा रहा, बल्कि इसकी जड़ें कहीं और ही से आयात की गयी हैं। ये वास्तव में, पश्चिम से आयातित साम्यवाद में निहित हैं। विशेषरूप से दोष, चीन में, रूस, जो स्वयं अनीश्वरवादी, अधार्मिक देश है, से आयातित लेनिनवादी राज्य व्यवस्था में हैं, जहॉ नैतिकता की जडें खोखली हैं, और वे तिब्बत के बौद्ध धर्म और संस्कृति को अपने लिये खतरा मानते हैं। रूसी नेता और दार्शनिक, कार्ल मार्क्स ने लिखा था '' धर्म, जनता के लिये अफीम है।''

चीनी प्रशासन, तिब्बती जनता को, अपने घरों में दलाई लामा की फोटो नहीं लगाने की अनुमति नहीं देता। इसलिये तिब्बती लोग, काफी गुस्से, अवसाद और निराशा में हैं, चीनी लोग मंदिरों और मठों में जाते हैं और माआ–त्से–तुंग अथवा हू की फोटो लगा देते हैं। तिब्बती जनता, अभी भी पवित्रतम दलाई लामा के प्रति वफादार है। चीन भले ही तिब्बत पर भौतिक रूप से शासन कर रहा हो परन्तु तिब्बती लोगों के दिल में अभी भी चीन के लिये स्थान नहीं बन सका है। चीन की नीतियों और तिब्बती आध्यात्मिक नेताओं को दैत्यों के बराबर बताने की आदतों ने पूरे तिब्बत को एक वर्ग के दुश्मन (class

enemy) के रूप में बदल दिया है। जर्मन साम्यवादी दल के तानाशाह हिटलर ने भी जीसस क्राइस्ट (Jesus Christ) को दानव कहा था और वह सभी ईसाइयों से नाजी तानाशाह से प्रेम करने की अपेक्षा करता था। उसने यहूदियों का भयानक नरसंहार कराया, यहॉ तक कि नोबल पुरुष्कार विजेता यहूदी वैज्ञानिक आइंस्टीन (Einstein) को भी भागकर, अमेरिका में शरण लेनी पड़ी। तिब्बत के एक कम्युनिस्ट नेता, सेंग क्विंगली (Zheng Quingli) ने दलाई लामा को ''भिक्षु के भेष में भेड़िया'' और ''मानव आकृति में दानव'' बताया था। 16 अगस्त 2006 को जर्मन समाचार पत्र डेर स्पीगल (Der Spiegel) को दिए गए एक साक्षात्कार में उसने आश्चर्य व्यक्त किया था ''मैं यह कभी नहीं समझ सका कि दलाई लामा जैसे व्यक्ति को शांति का पुरुष्कार देकर क्यों सम्मानित किया गया, उसने शांति के लिए क्या किया है ? साम्यवादियों के विचार में ''धर्म एक विष है'' उन्होंने एक बार कहा था कि ''चूॅकि धर्म, मातृभूमि को बनाने के लिए हानिकारक है और अंत में ये, अपरिहार्य रूप से, प्रगति और विकास के लिए हानिकारक सिद्ध होगा, इसलिए उन सभी राष्ट्रीय विशेषताओं को, जो समाजवादी संरचना और राष्ट्रीय प्रगति के लिए, उनके पक्ष के विरोध में हैं उखाड़ दिया जाना चाहिए। चीनी लोग बौद्धधर्म को, तिब्बत के ऊपर अपने नियंत्रण के लिये सबसे बड़ा रोड़ा मानते हैं। 1950 और 60 के दशकों में समाजवादी सुधारों के नाम पर, भूमि और दूसरी चीजें, अल्पसंख्यकों से छीन ली गईं। ''तिब्बत के संक्षिप्त इतिहास (A short history of Tibet)" में ह्यूज रिचार्डसन (Hugh Richardson) लिखते हैं, ''धर्म पर आक्रमण अधिक हिंसक होते गए, लामाओं पर हमले किए गए और उन्हें अपमानित किया गया, कुछ एक को मौत के घाट उतार दिया गया। सामान्य व्यक्ति, जिन्होंने धर्म को छोड़ देने के चीनी आदेशों को मानने से मना किया, पीटे गए और उनकी संपत्तियॉ जब्त कर ली गईं। 1959 तक आक्रान्ता चीनी फौजों ने बौद्ध भिक्षुओं और नागरिकों को अत्यधिक बड़ी संख्या में मार डाला और बड़ी संख्या में धार्मिक संरचनाओं को गिरा दिया।

जेम्स हिल्टन (James Hilton) की प्रसिद्ध पुस्तक, '' द लॉस्ट होराइजन (The Lost Horizons)'' में लेखक ने तिब्बत की कुछ रहस्यमयी घाटियों का वर्णन किया है, जहॉ के लोग, सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहते हैं परंतु वृद्ध नहीं होते। इसी संदर्भ में उसने श्रृंगरीला का भी उल्लेख किया है पुस्तक के प्रकाशन के बाद, अनेक देशी–विदेशी लोगों ने श्रृंगरीला घाटी का पता लगाने की कोशिश की, लेकिन अभी तक कोई भी सफल नहीं हो सका। श्री अरुण कुमार शर्मा ने अपनी पुस्तक, ''तिब्बत की वह रहस्यमयीघाटी'' में श्रृंगरीला की घाटी के बारे में लिखा है। श्री अरूण कुमार शर्मा, तिब्बत में तीन वर्षों तक रहे हैं और उन्होंने विभिन्न तांत्रिक, धार्मिक, आध्यात्मिक क्रियाओं संबंधी ज्ञान और अनुभव प्राप्त किए हैं। चीन द्वारा तिब्बत का अतिक्रमण किए जाने के संबंध में, उन्होंने एक आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय कारण की जानकारी दी है। उनके अनुसार, श्रृंगरीला घाटी के प्रति, प्रबल जिज्ञासा से प्रेरित होकर ही, 1950 में चीनियों ने तिब्बत पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया था, तिब्बत पर उनके आक्रमण का एकमात्र कारण, श्रृंगरीला घाटी का पता लगाना था परंतु, वह अपने प्रयास में सफल नहीं हुए। श्री अरूण कुमार शर्मा की मुलाकात, तिब्बत में युत्सुंग (Yutsung) नामक एक लामा से हुई और उसंने एक आश्चर्यजनक घटना, उनको बताई, जिसके अनुसार, श्रृंगरीला घाटी का एक लामा, भ्रमण करता हुआ, कैसे भी, ल्हासा पहुॅच गया था। वह दलाई लामा से भेंट करना चाहता था परंतु दुर्भाग्यवश चीनियों की नजर में पड़ जाने के कारण उसे पकड़ लिया गया। उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा था, पर वह काफी वृद्ध था। चीनी डाक्टरों ने वैज्ञानिक जॉच और परीक्षण कर बताया कि उसकी आयु, लगभग 400 वर्ष की है परंतु, उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति, 40 वर्ष की आयु के सामान्य स्वास्थ्य वाले व्यक्ति के समान है। रिपोर्ट से चीनी नेताओं को यह विश्वास हो गया कि, अवश्य ही वह लामा श्रृंगरीला घाटी का निवासी होगा। तत्काल ही उससे पूछताछ की गई, उसे काफी यातनायें दी गईं, हर प्रकार से डराया धमकाया भी गया परंतु उसने घाटी का पता नहीं बताया। माउत्से तुंग, व्यक्तिगत रूप

से श्रृंगरीला घाटी के रहस्य को जानने के लिए उत्सुक थे। वे वहॉ जाकर स्थाई रूप से रहना चाहते थे। उनकी इच्छा कई 100 वर्ष जीवित रह कर साम्यवाद का प्रसार करने की थी, क्योंकि उन्हें भय था कि उनकी मृत्यु के पश्चात्, उनकी जलाई हुई क्रांति की ज्योति, बुझ जाएगी। जब लामा ने किसी प्रकार से भी कुछ नहीं बताया तो माऊ ने एक योजना बना कर उस लामा को छोड़ दिया। उनका अनुमान था कि छोड़े जाने पर, ये लामा ल्हासा से भाग कर फिर अपनी घाटी में जाएगा और इस प्रकार उसका पीछा करते हुए, घाटी का पता चल जाएगा। परंतु वह लामा छूटने के बाद वापस घाटी की ओर न जाकर भारत की ओर गया और किसी प्रकार लुकते छिपते भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करके, अंत में तवांग मठ आ गया। यह घटना अगस्त 1962 की है। तवांग मठ में पहुंचते ही लामा ने श्रृंगरीला घाटी के स्थान का एक नक्शा बनाया, वास्तव में, वह दलाई लामा से मिलकर वह नक्शा उन्हें देना चाहता था। तभी चीनी सैनिकों ने तवांग मठ पर आक्रमण किया और वह लामा न तो दलाई लामा से मिल पाया और न ही उन्हें नक्शा दे सका। चीनियों ने जब त्वांग मठ पर आक्रमण किया तो प्रत्याक्रमण से अपनी सुरक्षा करने के लिए, उन्हें दूसरे क्षेत्रों में भी युद्ध करना पड़ा। वह लामा चीनियों के हाथ नहीं पड़ा। लामा को घोड़े पर बिठाकर तीन–चार लोगों के साथ, मैदानी इलाकों की ओर भेज दिया गया परंतु, जब वह तेजपुर की निचली पहाड़ियों के करीब पहुॅचा तो उसके घोड़े का पैर फिसल गया। लामा 25–30 फुट गहरे गड्ढे में गिर गया। चट्टान से सिर टकरा जाने के कारण, उसकी वहीं मृत्यु हो गई। तवांग मठ से भागकर लामा तेजपुर जाने की सूचना, जब चीनियों को मिली तो वे तेजपुर की ओर चल दिए। रास्ते में उन्हें खून से लथपथ लामा का शव मिला, जिसे तत्काल संरक्षण में लेकर उसकी मृत्यु की सूचना चीनी सेनापति को दी गई। इस पर चीनियों ने अपने उद्देश्य में विफल हो जाने के कारण, एकतरफा युद्ध विराम कर दिया। श्रृंगरीला और श्रृंगरीला के समान घाटियों की खोज चीनी उसी समय से कर रहे हैं जब, उन्होंने भारत पर आक्रमण किया था। उनके टोही विमान, तिब्बत के ऊपर अभी भी चक्कर काटते रहते हैं। लामा ने श्रृंगरीला घाटी का नक्शा बनाकर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दिया। पुस्तक में दी गई जानकारी अविश्वसनीय और अकल्पनीय लग सकती है परंतु इसको सत्यापित करने का कोई तरीका नहीं है।

पृथ्वी पर वर्तमान जीवन ही एकमात्र जीवन नहीं है। इससे पहले भी पृथ्वी पर, अनेक बार विभिन्न प्रकार के जीवन प्रारम्भ हो कर समाप्त हो चुके हैं। यहॉ लाखों वर्ष पहले डायनासोर जैसे भीमकाय प्राणियों का साम्राज्य थे, जो ज्वालामुखियों के विस्फोट, भूकम्प, उल्कापिंडों के टकराने आदि विभिन्न प्राकृतिक कारणों से पूरी तरह तहस–नहस हो गये। ऐसा भी विश्वास किया जाता है कि मानवजाति के भी, अनेक पूर्व एवं उन्नत संस्करण यहॉ रह चुके हैं, जिन्होंने वर्तमान वैज्ञानिक स्तर से भी उच्चस्तरीय प्रगति कर ली थी, वे गुरुत्वाकर्षण पर नियंत्रण करने में तथा दूसरी आकाशगंगाओं की यात्रा करने में सक्षम थे। उन्होंने नाभिकीय विखंडन जैसी अनेक अकल्पनीय विधाओं का विकास कर लिया था, परन्तु उन्होंने परमाणु विस्फोटों का प्रयोग करते हुए, परस्पर लड़ते हुए, पूरी पृथ्वी का ही विनाश कर दिया। कालान्तर में पृथ्वी के अनेक स्थलीय भाग, सागरों में तथा सागरीय भाग स्थलीय भागों में परिवर्तित हो गये। उनकी पूरी सभ्यता, पूरे नगर, पृथ्वी के गर्त में समा गयी। जब हिमालय का जन्म हुआ तो समुद्रतटीय नगर हिमालय में विलीन होकर उसके साथ ही ऊपर उठ गये। जलक्षरण के फलस्वरूप गुफाओं का निर्माण हुआ और कुछ नगर अपनी कलाकृतियों को सुरक्षित बनाये रखते हुये गुफाओं के अन्दर प्रकट हुए। प्रस्तुत पुस्तक में भी ऐसी ही एक पुरातन गुफा का वर्णन है, जो लेखक ने अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ जा कर, स्वयं देखी थी, जिसके उपकरण अभी तक चालू हालत में थे। अभीतक किसी को उस गुफा के सम्बंध में जानकारी नहीं है, परन्तु उसके तिब्बती उच्चक्षेत्रों में होने की सम्भावना है। लेखक को यह भी विश्वास था कि उचित समय पर, जब मानव का पूर्ण विकास हो जायेगा, वह युद्धों के भय से मुक्त हो जायेगा और परस्पर सौहाद्रतापूर्वक जीवन जीना

सीख लेगा तब वह उन स्थानों की खोज करने की पात्रता हासिल कर लेगा। इसके साथसाथ प्रसंगानुसार अन्य विषयों पर भी चर्चा की गयी है।

इस पुस्तक के हिन्दी रूपांतरण में, मुझे अपने गुरु श्री बी. एन. गच्छ, जिन्होंने मेरी पिछली सभी पुस्तकें पढ़ीं हैं, का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। इसके साथ अपने मित्रगणों विशेषकर, श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री देवेन्द्र भार्गव, श्री दिग्वीर सिंह चौहान, एवं डॉ. के. पी. शर्मा का भावपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। विशेष रूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, श्री प्रदीप सेन, कुमारी रागिनी मिश्रा, जिनके सहयोग के बिना, इस पुस्तक का प्रस्तुतिकरण संभव नहीं था, का मैं आभारी हूँ। मैं पुनः उन सभी का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से, इस पावन कार्य में सहयोग किया।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में निश्चित रूप से कुछ त्रुटियॉ रह गयी होंगी, मैं उनके लिये पाठकों से क्षमायाचना करता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि विद्वत पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे ताकि उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., भारत
फोन 07512433425
मोबाइल : 9893167361 email : drguptavp@gmail.com

बैशाखी पूर्णिमा – बुद्ध जयंती
सोम्यनाम संवत्सर, 2073 विक्रमी
दिनांक : 21 मई 2016

पुनश्च :– दैनिक नईदुनियॉ दिनांक 26 मई 2016 के समाचार पत्र में 'रानी को बचाने मधुमक्खियों ने 24 घंटे पीछा किया' शीर्षक से एक प्रेरणादायक खबर छपी है, जिसे देने के लोभ का, मैं संवरण नहीं कर सका, अतः पाठकों के लिये, मैं उसे यहॉ प्रस्तुत कर रहा हूँ। खबर के अनुसार, ब्रिटेन के पश्चिमी वेल्स के हावरबार्डशायर में रहने वाली 65 वर्षीय महिला, श्रीमती होवाल्स खरीददारी के लिये गयी थीं, उन्होंने अपनी कार पार्किंग में खड़ी की, संयोगवश तभी, एक रानी मधुमक्खी, कार की डिक्की में कैद हो गयी। अपनी रानी मधुमक्खी को बचाने के लिये, लगभग 20 हजार मधुमक्खियों ने कार का 24 घंटे से अधिक समय तक पीछा किया। रानी को मुक्त कराने के बाद ही, मधुमक्खियों ने कार को छोड़ा। तथाकथित निम्नयोनियों के जीवों, विशेषकर, मधुमक्खियों और चींटियों में ये मिसाल देखने को मिलती है। उनमें केवल रानी मधुमक्खी या चींटी ही बच्चे पैदा करतीं हैं, झुण्ड में शेष सभी, श्रमिक अथवा सैनिक होती हैं, जो अनुशासन में रहते हुए अपनी रानी के प्रति बफादार होती हैं।

अध्याय एक

शाम थोड़ी गर्म थी, वर्ष के उस समय के लिए असामान्यरूप से गर्म, सुरुचिपूर्ण। प्रवाहरहित वातावरण में धीमे से उठते हुए, अगरबत्तियों की मधुर सुगंध ने, हमारी मनोदशा को शांतिचित्तता प्रदान की। हिमालय की रंगत भरी ऊँची चोटियों के पीछे, काफी दूरी पर, सूर्य भव्यता की लपटों में छिपता जा रहा था, बर्फ से ढकी पहाड़ों की खूनी लाल (blood red) चोटियॉ, मानो कि उस रक्त की चेतावनी दे रही हों, जो आने वाले कुछ दिनों में तिब्बत को सराबोर कर देगा।

पोटाला[1] की युग्म चोटियों और हमारे खुद के चाकपोरी से, ल्हासा के शहर की ओर, लंबी होती हुई परछाईयॉ, धीमे–धीमे रेंगती हुईं, आगे बढ़ीं। दाई ओर, हमारे नीचे, पार्गो कलिंग (Pargo Kaling) या पश्चिमी द्वार की ओर जाता हुआ, भारतीय व्यापारियों का एक विलंबित काफिला, अपने रास्ते पर से गुजर रहा था। अपने लिंगखोर रोड के परिक्रमा पथ पर, तीर्थयात्रियों में से अंतिम श्रृद्धालु ने अनुचित जल्दी की, मानो कि उसे तेजी से समीप आती हुई रात के मखमली अंधेरे द्वारा, घेर लिए जाने का डर हो।

क्यी चू (Kyi Chu) या प्रसन्नता की नदी, प्रकाश की अभिशप्त झलकों को बिखेरते हुए, मानो डूबते हुए दिन के प्रति श्रृद्धांजलि देते हुए, प्रसन्नतापूर्वक अपनी अंतहीन यात्रा पर, समुद्र की ओर बढ़ती जा रही थी। ल्हासा का शहर, मक्खन के दीपों की स्वर्णिम आभा से जगमगा रहा था। दिन की समाप्ति पर, अपने सुरों को लुढ़काते हुए और चट्टानों की सतहों से टकरा कर, घाटी में चारों तरफ गूंज पैदा करते हुए एवं बदले हुए स्वर स्वरूप के साथ हम तक लौटते हुए, समीपवर्ती पोटाला से एक तुरही बज उठी।

मैंने इस सुपरिचित दृश्य पर टकटकी लगाई, पोटाला के आसपास टकटकी लगाई, चूँकि दिन की समाप्ति पर, सभी श्रेणियों के भिक्षु, अपने–अपने काम बंद करके चले गए थे, सैकड़ों खिड़कियॉ जगमगा उठीं। विशाल आकार वाली इमारत की चोटी पर, स्वर्णिम समाधियों के पास, एक अकेली आकृति, अकेली और दूर, निगरानी करती हुई खड़ी हुई। जैसे ही सूर्य की अंतिम किरणें, पहाड़ियों की श्रृंखलाओं के नीचे डूबीं, एक तुरही फिर बजी, और नीचे के मंदिर से, गहरे मंत्रजाप की आवाज उठी। शीघ्र ही, प्रकाश के अंतिम अवशेष भी धुंधले पड़ गए; जल्दी ही, आकाश के तारे, बैंगनी पृष्ठभूमि में जड़े हुए नगीनों की लपट की तरह बन गए। आकाश में एक उल्कापिण्ड चमका और पृथ्वी पर गिरने से पहले विस्फोटित होकर, अपनी भव्यता की अंतिम लपटों में, धुंऐदार धूल भरी चुभन के रूप में, जल गया।

''एक सुन्दर रात्रि, लोबसांग!'' एक प्रेमपूरित स्वर ने कहा। ''वास्तव में, एक सुन्दर रात्रि,'' जैसे

---

1 अनुवादक की टिप्पिणी : समुद्र तल से लगभग 3700 मीटर की ऊँचाई पर, ल्हासा नदी के एक तरफ, लाल पहाड़ी पर स्थित पोटाला महल, तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रतीक है। ये सातवीं शताब्दी से अबतक, दलाईलामाओं का शीतकालीन महल रहा है और तिब्बत के पारंपरिक प्रशासन में इसकी केन्द्रीय भूमिका रही है। महल, ल्हासा घाटी के केन्द्र में, लाल पहाड़ पर, लाल और सफेद, दो महलों से बना हुआ है, इसके साथ में अनेक सहयोगी भवन भी बने हैं। सातवीं शताब्दी में ही लामामठ का जोखांग मंदिर भी बनाया गया, जो बौद्धधर्म की अपवादमयी सुन्दर रचना है। दलाई लामा का ग्रीष्मकालीन महल नोर्बूलिंगा है, जिसे 18वीं शताब्दी में बनाया गया था। ये तिब्बती स्थापत्य कला, वास्तुकला और सौंदर्य के अनुपम उदाहरण हैं। ये तीनों स्थल, अच्छी तरह से सजावट किए हुए है और परस्पर सामान्जस्यपूर्ण ढंग से एकीकृत (harmogeniously unified) हैं। पोटाला को यदि, तिब्बत का प्रतीक कहा जाये तो गलत नहीं होगा। ये एक विशाल आकार का महल है जिसमें अनेक खण्ड, मीनारें, मंदिर आदि बनी है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस् (Guinness book of world records) के अनुसार, पोटाला महल, विश्व का सवाधिक ऊँचाई पर स्थित महल है। इसे अपनी विशिष्ट वास्तुकला शैली के लिए, विश्व में वास्तु का सर्वाधिक सुन्दर नमूना माना जाता है। ल्हासा के ऐतिहासिक प्रतीक के रूप में, अपने जोखांग मंदिर और नोर्बूलिंगा के साथ पोटाला महल, यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहरों की सूची में सम्मिलित है। मुख्य भवन, पोटाला महल न केवल एक भव्य महल है, बल्कि कलाकृतियों का एक खजाना भी है, जहॉ आप बहुमूल्य कलाओं को देख सकते हैं और तिब्बती संस्कृति और इतिहास से परिचित हो सकते हैं। महल के ऊपर की छतों, जिन्हें स्वर्णिम छतें (golden roofs) कहा जाता है, पर से कोई ल्हासा शहर और ल्हासा के सुन्दर पठार की आकर्षक झलक पा सकता है। ये ल्हासा के गोंगर हवाई अड्डे से 70 किलोमीटर दूर और ल्हासा रेल्वे स्टेशन से 20 किलोमीटर दूर है। ल्हासा के उत्तरी भाग में स्थित जोखंग मंदिर, बारखोर सड़क से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर है।

ही मैं लामा मिंग्यार डोंडुप को दंडवत कर पाऊँ, इसकी तैयारी के साथ, मैंने जल्दी से जवाब दिया। वह एक दीवार के बगल से बैठे और मुझे भी बैठने का संकेत किया। ऊपर की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, ''क्या तुम महसूस करते हो कि लोग, तुम और मैं, इस तरह दिखाई दे सकते हैं ?'' मैंने मूक होकर उनको घूरा, मैं रात्रि के आकाश में, तारों की भॉति, कैसे दिख सकता था ? लामा एक बड़े आदमी थे, एक भद्र और सुन्दर मस्तिष्क वाले। फिर भी, वह तारों के समूह की तरह नहीं दिखते थे। मैं आनंद विभोर कर देने वाली, अपनी इस अभिव्यंजना के ऊपर हॅसा। ''शाब्दिक रूप से सामान्य, लोबसांग, शाब्दिक रूप से सामान्य'', वह मुस्कुराये। मेरे कहने का अर्थ ये है कि चीजें, हमेशा वैसी नहीं होतीं जैसी कि वे दिखती हैं। यदि तुम इतना बड़ा ''ओम! म–नी पद–मे हुम'' लिखो, कि ये पूरी ल्हासा की घाटी को भर दे, लोग इसे पढ़ने में असमर्थ रहेंगे। उनके समझने के लिए, ये अत्यधिक बड़ा होगा।'' वे रुके, और ये निश्चय करने के लिए कि, मैं उनके स्पष्टीकरण को समझ रहा था, उन्होंने मेरी ओर देखा और तब कहना जारी रखा, ''उसी तरीके से, तारे भी इतने बड़े हैं कि, हम यह नहीं निश्चय कर पाते कि, उनकी सही आकृति क्या है।''

मैंने उनकी ओर देखा मानो कि, उन्होंने अपने संज्ञानों (senses) से छुट्टी ले रखी हो। क्या तारे कुछ बनाते हैं ? ठीक है, वे तारे थे! तब मैंने इतनी बड़ी लिखावट पर विचार किया जोकि पूरी घाटी को भर ले, और इसप्रकार के अपने आकार के कारण, पढ़ने योग्य न बचे। नम्रस्वर चलता गया, ''अपने आपको, घटता हुआ, सिकुड़ता हुआ सोचो, इतना सिकुड़ता हुआ कि तुम बालू के एक कण की तरह हो जाओ। तब मैं तुम्हें कैसा दिखाई पड़ूंगा। मान लो कि तुम, और अधिक छोटे हो गए, इतने छोटे कि, तुम्हारे लिए बालू का कण इतना बड़ा था, जितना कि ये संसार, तुम्हारे लिए है। तब तुम, मुझे कैसा देखोगे ?'' वह रुक गए और उन्होंने चुभती हुई निगाह से मुझे देखा। ''ठीक है ? उन्होंने पूछा, ''तुमको क्या दिखेगा ?'' मैं वहॉ बैठा और जमीन पर उतरी हुई एक नई मछली की भॉति, मेरा मुॅह खुला का खुला रह गया, दिमाग इस विचार पर, लकवा खा गया।

लामा ने कहा, ''लोबसांग, तुम, पूरी तरह छितराये हुए विश्वों के एक समूहों को, अंधेरे में तैरते हुए देखोगे।'' अपने छोटे आकार के कारण, तुम देखोगे कि, मेरे शरीर के अणु, एक–दूसरे से इतने दूर–दूर हैं कि, उनके बीच में काफी बड़ी जगह, खाली है। तुम विश्वों को, दूसरे विश्वों के सापेक्ष, घूमता हुआ पाओगे, तुम सूर्यों को देखोगे, जो किसी निश्चित मनोकेन्द्रों (psychic centres) के अणु थे। तुम एक ब्रह्माण्ड देखोगे।'' मेरा मस्तिष्क चकरा गया, मैं लगभग कसम खा सकता हूॅ कि, मेरी भौओं (eyebrows) के ऊपर की ''मशीनरी (machinery)" ने पूरे प्रयास के साथ, एक आक्षेपी सिहरन (convulsive shudder) दी, इस पूरी अनोखी चीज के उत्तेजित करने वाले ज्ञान को समझने के लिए, मैं विस्तारित हो रहा था।

मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप आगे बढ़े और उन्होंने कोमलता से मेरी ठोड़ी को ऊॅचा उठाया। ''लोबसांग!'' वह मन ही मन मुस्कराये, ''मुझे समझने का प्रयास करने में, तुम्हारी ऑखें भ्रमित हो रही हैं।'' वे हॅसते हुए पीछे बैठे, और (उन्होंने) मुझे कुछ क्षण, जिनमें मैं कुछ हद तक, अपनी स्थिति को वापस प्राप्त कर सकूॅ, प्रदान किए। तब उन्होंने कहा, ''अपनी पोशाक के पदार्थ को देखो। इसको अनुभव करो!'' मैंने, उल्लेखनीय रूप से मूर्खतापूर्ण अनुभव करते हुए वैसा ही किया, जब मैंने अपनी फटी हुई, पुरानी पोशाक को, जो मैं पहने हुए था देखा। लामा ने टिप्पणी की, ''ये कपड़ा है, छूने में कुछ हद तक चिकना। तुम इसमें होकर देख नहीं सकते। परंतु तुम एक शीशे में से, जो इसे दस गुना बढ़ा देता है, देखने की कल्पना करो। याक की ऊन के मोटे धागे के बारे में सोचो, जो तुम यहॉ देख रहे हो, उसकी तुलना में, हर धागा दस गुना मोटा (दिखेगा)। तुम इसके धागों के बीच में, प्रकाश देखने में सक्षम होओगे। परंतु इसे दस लाख गुना बढ़ा दो और तब तुम इसमें से घुड़सवारी करने के लिए सक्षम होगे, सिवाय इसके कि हर धागा, उसको कूदकर पार करने के लिए, अत्यधिक बड़ा होगा!''

मेरे लिए इसका कुछ अर्थ प्रतीत हुआ, अब इसकी ओर मुझे संकेत किया गया था। मैं बैठा और जैसा कि लामा ने कहा, मैंने ''एक जर्जर बूढ़ी महिला की तरह!'' सिर हिलाते हुए विचार किया। ''श्रीमान्!'' मैंने अंत में कहा, ''तब संपूर्ण जीवन, बिखराये हुए विश्वों के, बहुत बड़े आकाश की तरह हैं।'' ''ठीक उतना आासान नहीं है,'' उन्होंने जबाव दिया, ''परंतु तुम अधिक आराम से बैठ जाओ और मैं तुम्हें थोड़ा–सा ज्ञान दूँगा, जो हमने पुरातनों की गुफा (cave of ancients) में खोजा था।'' ''पुरातनों की गुफा!'' मैं उत्सुकता में, अतिउत्साह से, प्रसन्नता से चीखा, ''आप मुझे उस सम्बंध में और उस अभियान के बारे में कुछ बताने वाले हैं!'' ''हॉ! हॉ!'' उन्होंने शांत किया, ''मैं ऐसा करूँगा, परंतु पहले हमें, एटलांटिस (Atlantis) के दिनों में, जब पुरातन पुरुष होते थे, ऐसा विश्वास किया जाता है, मानव और उसके जीवन के बारे में कुछ कहना है।''

मैं, गुप्तरूप से, पुरातन पुरुषों की गुफा, जिसे उच्चलामाओं के एक अभियान ने खोजा था, और जिसमें एक युग, जब पृथ्वी एकदम जवान थी, की कलाकृतियों और ज्ञान के मोटे–मोटे भंडार भरे थे, में अत्यधिक दिलचस्पी ले रहा था। अपने शिक्षक को इतने अच्छे तरीके से जानते हुए, मैं जानता था कि, कहानी को बताये जाने की आशा करना, जबतक कि वे स्वयं तैयार न हों, निरर्थक होगा, और ये समय अभी नहीं था। हमारे ऊपर, तिब्बत की शुद्ध हवा में, कहीं भूले–भटके मुश्किल से धीमे पड़ते तारे, अपनी–अपनी भव्यता में चमक रहे थे। मंदिरों और मठों में, रोशनियॉ, एक–एक करके मंद होती जा रहीं थीं। बहुत दूर से, रात की हवा आई, एक कुत्ते के किकयाने की दर्दनाक आवाज आई और उसके जबाव में, श्यो (Shö) गॉव के, जो हमारे नीचे था, दूसरे कुत्तों के भौंकने की आवाज को लाई। रात्रि शांत थी, और भी शांत, और नये उगने वाले चंद्रमा के चेहरे के आरपार बहते हुए बादल नहीं थे। प्रार्थना के ध्वज, स्थिर होकर और अपने दंडों (masts) पर निर्जीव होकर लटक रहे थे। जैसे ही यथार्थता से अपरिचित, अंधविश्वास में घिरे हुए, किसी श्रृद्धालु भिक्षु ने, देवताओं की सहानुभूति प्राप्त करने की व्यर्थ आशा में, चक्र को घुमाया, कहीं से, किसी प्रार्थना चक्र की, हल्की सी खटखट करने वाली, कक्रश आवाज आई।

मेरे शिक्षक, लामा इस आवाज पर मुस्कुराये और उन्होंने कहा, ''प्रत्येक के लिये, उसके अपने विश्वास के अनुसार, प्रत्येक के लिए, उसकी अपनी आवश्यकता के अनुसार, धर्म के उत्सव पूर्ण आभूषण, अनेक लोगों के लिए सॉत्वना देने वाले होते हैं, हमें उनकी निंदा नहीं करनी चाहिए, जिन्होंने अभी इस पथ पर, बहुत दूर तक यात्रा नहीं की है, और न हीं वे बिना बैसाखियों के खड़े होने में सक्षम हैं। लोबसांग, मैं तुम्हें, मनुष्य की प्रकृति को बताने जा रहा हूँ।'' मैंने (स्वयं को) केवल एक, इस आदमी, जिसने मुझे हमेशा मान और प्रेम दिया है, के काफी करीब अनुभव किया। मैंने, अपने प्रति उनके विश्वास को तक्रसंगत बनाने के लिए, सावधानीपूर्वक सुना। कम–से–कम, यह ऐसा है, जैसे मैंने प्रारंभ किया, परंतु शीघ्र ही, मैंने इस विषय को, मोहित करने वाला पाया और तब मैंने, बिना छिपाई हुई उत्सुकता के साथ, सुनना प्रारंभ किया।

''संपूर्ण विश्व कम्पनों से बना हुआ है, संपूर्ण जीवन, सभी, जिनमें जीवन है, कम्पनों से बने हैं। यहॉ तक कि शक्तिशाली हिमालय भी'', लामा ने कहा, ''निलंबित कणों का एक पिंड मात्र है, जिसमें कोई भी कण दूसरे को छू नहीं सकता। विश्व, ब्रहमाण्ड, पदार्थ के अत्यंत छोटे कणों से मिलकर बना हुआ है, जिनके चारों ओर, दूसरे कण घूमते हैं, वैसे ही जैसे कि, कभी एक दूसरे को न छूते हुए, अपनी दूरी को हमेशा बनाये रखते हुए, सूर्य के चारों ओर ग्रह घूमते हैं, इसलिए प्रत्येक वस्तु, जिसका अस्तित्व है, चक्कर खाते हुए विश्वों से बना होता है।'' वे रुके और शायद चकित होते हुए, मेरी ओर घूरकर देखने लगे, यदि ये सब मेरी समझ के परे हो, परंतु मैं इसे सरलता से समझ गया।

उन्होंने कहना जारी रखा, ''प्रेत, जिनको हम अतीन्द्रियज्ञानी लोग देख लेते हैं, मंदिरों में वे लोग हैं, जीवित लोग, जो इस लोक को छोड़ चुके हैं और उस स्थिति में प्रविष्ट हो गए है, जहॉ उनके अणु,

इतनी दूर–दूर छितरा गए हैं कि, प्रेत सबसे घनी दीवारों में होकर, उसके किसी भी अणु को न छूते हुए, पार जा सकता है।'' ''आदणीय स्वामी,'' मैंने कहा, ''जब कोई प्रेत, हमारे पास से, हमें रगड़ता हुआ गुजरता है, तब हमको खुजली क्यों अनुभव होती है ?'' ''हर अणु, एक छोटे 'सूर्य और उसके ग्रह' के तंत्र (system) के समान होता है और ये तंत्र, विद्युत आवेशों के द्वारा घिरा रहता है, जो विद्युत के उस प्रकार (sort) से अलग है, जिसको मनुष्य मशीनों के द्वारा पैदा करता है, परंतु (यह) उससे अधिक सुधरे हुए प्रकार की होती है। विद्युत, जो हम कई रातों को, आकाश में कड़कती हुई देखते हैं। वैसे ही, जैसे कि, पृथ्वी के ध्रुवों पर, उत्तरी प्रकाश (northern lights) या ओरोरा बोरियालिस (Aurora Borealis)[2] टिमटिमाता है, इसलिए पदार्थ का प्रत्येक कण, अपने आप में एक उत्तरी प्रकाश की तरह होता है।'' हमारे अत्यधिक समीप आता हुआ एक प्रेत, हमको, हमारे प्रभामंडल (aura) को, एक हल्का सा झटका देता है, इसलिए हम ये खुजली अनुभव करते हैं।''

हमारे आसपास रात्रि शांत थी, हवा के किसी झोके ने भी हमारी शांति को भंग नही किया; वहॉ शांति थी, जिसे कोई, केवल तिब्बत जैसे देशों में ही पा सकता है। ''प्रभामंडल, तब, जिसे हम देखते हैं, एक विद्युत आवेश ही होता है ?'' मैंने पूछा। ''हॉ!'' मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने जबाव दिया। ''तिब्बत के बाहरी देशों में, जहॉ विद्युत धारा को ले जाने वाले हाई बोल्टेज वाले तार, जमीन पर बंधे रहते हैं, एक 'कोरोना (corona) प्रभाव' देखा जा सकता है और इसे विद्युतीय अभियंताओं द्वारा मान्यता दी गई है। इस कोरोना प्रभाव में, तार, एक कोरोना या नीली सी रोशनी के प्रभामंडल से घिरे दिखाई देते हैं। अधिकांशतः यह, कोहरे भरी रातों को अंधेरे में देखा जाता है परंतु, वास्तव में, ये हर समय होता है और जो लोग देख सकते हों, उनको दिखाई देता है।'' उन्होंने मेरी तरफ पलटकर देखा। ''जब तुम चुंगकिंग में चिकित्साशास्त्र पढ़ने जाओगे, तो तुम एक उपकरण का उपयोग करोगे, जो मस्तिष्क की विद्युतीय तरंगों को कागज पर उतारता है। संपूर्ण जीवन, वह सब कुछ, जो अस्तित्व में है, केवल विद्युत और कंपन ही है।''

''अब मैं उलझ गया'' मैंने जबाव दिया, ''क्योंकि जीवन, कंपन और विद्युत, कैसे हो सकता है ? मैं किसी एक को समझ सकता हूँ परंतु दोनों को नहीं।'' ''परंतु मेरे प्रिय लोबसांग!'' लामा हॅसे, ''बिना कंपन के, बिना गति के, विद्युत नहीं हो सकती! ये हलचल ही है, जो विद्युत को पैदा करती है, इसलिए ये दोनों अभिन्न रूप से, एकदम एक–दूसरे से सम्बंधित हैं।'' उन्होंने मेरी, उलझी हुई त्योरियों को देखा और अपने अतीन्द्रियज्ञान से, मेरे विचारों को पढ़ लिया।'' ''नहीं! ''उन्होंने कहा, ''किसी भी प्रकार का कंपन मात्र, ऐसा नहीं करेगा! इस बात को मैं इस तरीके से तुम्हारे सामने रखता हूँ; यहॉ से लगाकर अनंत तक विस्तारित होते हुए, एक वास्तविकरूप से बहुत बड़े, संगीत के कुंजीपटल (musical

---

2 अनुवादक की टिप्पिणी : रात के आकाश में, पृथ्वी के उत्तरीध्रुव के ऊपर, निरन्तर बदलते हुए रंगों का एक झरना सा दिखाई देता है, जिसे ओरोरा बोरियालिस (Aurora borealis) या उत्तरी प्रकाश (northen lights) या उत्तर ध्रुवीय प्रकाश (north polar lights) भी कहते हैं। ये प्रकृति के सर्वाधिक आश्चर्यजनक प्रदर्शनों में से एक है। मैग्नेटोस्फियर (magnetosphere) में से गुजरते हुए आवेशित कण, जब पृथ्वी के ऊपरी वातावरण से टकराते हैं तो वे अतिरिक्ति ऊर्जा का अवशोषण करते हैं, जो रात में प्रकाश के रूप में व्यक्त होती है। जब सूर्य, हॉइड्रोजन का हीलियम के रूप में संगलन (fusion) करता है, प्रोटोन और इलेक्ट्रोन, बंदूक की गोलियों की बौछार की तरह से, बाहर अंतरिक्ष में निकलते हैं, जिसे सौर तूफान (solar wind) कहा जाता है। कणों का ये आवेश प्रवाह, जैसे ही ये पृथ्वी के पास से गुजरता है, पृथ्वी की चुम्बकीय रेखाऐं, इन्हें पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों की ओर, जहॉ ये रेखाऐं इकट्ठी हो जाती हैं, खींच लेती हैं। कण जब आइनोस्फियर (ionosphere) में आते हैं, वे गैस के अणुओं से टकराते है ओर प्रकाश उत्सर्जित करते हैं। उनके द्वारा उत्सर्जित किया गया प्रकाश, गैस के कणों, जो उसने टकराते हैं, की प्रकृति पर निर्भर करता है। आणुविक (molecular) ऑक्सीजन से उत्सर्जित प्रकाश, हरे से रंग का और गहरी लाल आभा वाला होता है। नीले रंग का प्रकाश परमाण्विक (atomic) नाइट्रोजन का, जबकि जामुनी प्रकाश आण्विक नाइट्रोजन का परिणाम होता है। उत्तरी प्रकाश में, अनेक दूसरे रंग भी देखे जाते हैं।

ये प्रकाश, दोनों गोलार्द्धों में देखा जाता है। उत्तरी गोलार्द्ध में, उत्तरी ध्रुव पर निकलने वाले प्रकाश को, ओरोरा बोरियालिस या उत्तरी प्रकाश कहते हैं। जबकि दक्षिणी ध्रुव के ऊपर, ऐंटार्कटिका क्षेत्र में दिखने वाले, ऐसे ही प्रकाश को, ओरोरा ऑस्ट्रालिस (australis) या दक्षिणी प्रकाश या दक्षिण ध्रुवीय प्रकाश कहते हैं। ओरोरा बोरियालिस अक्सर सितम्बर अक्टूबर तथा मार्च अप्रैल के महीनो में देखा जाता है प्रारंभ में इसे दुर्घटना और भय की आशंका के साथ माना जाता था। इस संबंध में वहॉ अनेक प्रकार की लोकोक्तियॉ और लोकगीत प्रचलित हैं। एक पौराणिक कथा के अनुसार, ये माना जाता है कि, ओरोरा बोरियालिस उन कहानियों को कहता है, जो भूतकाल में हुई और भविष्य में होने वाली हैं।

keyboard), की कल्पना करो। कंपन जिन्हें हम ठोसों (solids) के रूप में जानते हैं, वे इस की–बोर्ड के एक सुर (note) से निरूपित किए जायेंगे। अगले, ध्वनि (sound) को निरूपित कर सकते हैं और इससे अगले दृष्टि (sight) तथा दूसरे सुर (उन), भावनाओं, ज्ञानों और उद्देश्यों को, जिनकी इस पृथ्वी पर रहते हुए, हमें कोई समझ नहीं है, को निरूपित करेंगे। एक कुत्ता, एक आदमी की तुलना में, उच्चतर (higher) सुरों को सुन सकता है, और एक आदमी, कुत्ते से निम्नतर (lower) सुरों को सुन सकता है। कुत्ते को, शब्द, ऊँचे सुरों में कहे जा सकते हैं, जिन्हें वह सुन सकता है और आदमी इसके बारे में कुछ भी नहीं जानेगा। इसप्रकार, तथाकथित आत्मा लोक (spirit world) के लोग, फिर भी, इस पृथ्वी पर, उन लोगों से संपक्र बनाते हैं, यदि पृथ्वी के प्राणी को 'परोक्ष श्रवण (clairaudience)' का विशेष उपहार मिला हो।––––12

लामा थोड़ी देर को रुके और हल्के से मुस्कुराये, ''मैं तुम्हें सोने जाने से रोक रहा हूँ, लोबसांग परंतु, इससे दुबारा उबरने के लिए, तुम्हें कल सुबह की छुट्टी दी जायेगी।'' उन्होंने ऊपर की तरफ, साफ हवा में चमकते हुए तारों की तरफ, खुले आकाश में इशारा किया। ''पुरातनों की गुफा के भ्रमणों के बाद और वहाँ रखे आश्चर्यजनक उपकरणों, जो एटलांटिस (Atlantis) के जमाने से सही सलामत सुरक्षित रखे गए हैं, की जाँच करने के बाद, बहुधा मैं एक सनक के साथ, खुद ही प्रसन्न होता हूँ। मैं, सबसे छोटे वायरस की तुलना में और भी अधिक छोटे, दो छोटे, चेतन प्राणियों के संबंध में सोचना चाहता हूँ। इससे कोई फक्र नहीं पड़ता कि उनकी आकृति क्या है, केवल इतना मान लो कि वे प्रखर बुद्धि वाले हैं और अच्छे से अच्छे उपकरण उनके पास हैं। उन्हें अपने अनंत विश्व में, खुले आकाश में, खड़े हुए देखने का प्रयास करो (वैसे ही, जैसे अभी हम यहाँ हैं!) ''मेरे भगवान! ये एक सुन्दर रात्रि है!'' ए (Ay)[3] ने, जानबूझकर ऊपर की तरफ आकाश में टकटकी लगाते हुए, प्रसन्न होकर कहा। ''हाँ,'' बे (Beh) ने जवाब दिया। ''यह किसी को, जीवन के उद्देश्य के संबंध में, कुछ हद तक आश्चर्यचकित कर देता है, हम क्या हैं, हम कहाँ जा रहे हैं ?'' ए (Ay) सीमारहित आकाश में अनन्त पंक्तियों में भरे हुए तारों की ओर घूरता हुआ, आश्चर्यचकित हुआ। ''असीम विश्व, उन जैसे, लाखों, करोड़ों। मैं आश्चर्य करता हूँ कि उनमें से कितने, आबाद हैं ?'' 'बेवकूफ! पवित्र वस्तुओं का अनादर!' हास्यास्पद! बे (Beh) अटक–अटककर बोला, ''तुम जानते हो कि हमारे इस विश्व को छोड़ कर अन्य कहीं जीवन नहीं हैं, क्या हमारे पुजारी लोग, हमें नहीं बताते कि, हम परमात्मा की छवि में बने हैं ? और कहीं, दूसरा जीवन कैसे हो सकता है, जबतक कि, वह ठीक हमारे जैसा न हो – नहीं, ये असंभव है, तुम अपने होश–हबास खो रहे हो!'' जैसे ही वह लंबे–लंबे डग भरता हुआ चला, ए (Ay) नाराज होकर अपने आप पर बड़बड़ाया, ''वे गलत हो सकते हैं, तुम जानते हो, वे गलत हो सकते हैं!'' लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरे ऊपर मुस्कुराये और उन्होंने कहा, ''मेरे पास एक उत्तरकथा (sequel) भी है! वह यह है :––––––––13

''किसी दूर की प्रयोगशाला में, जहाँ हम विज्ञान के होने का सपना भी नहीं देख सकते, जहाँ असाधारण शक्ति वाले सूक्ष्मदर्शी उपलब्ध हैं, दो वैज्ञानिक काम कर रहे थे। एक, एक बैंच पर झुका हुआ बैठा था आँखें सर्वोत्कृष्ट सूक्ष्मदर्शी, जिसमें से वह घूर रहा था, से चिपकी हुईं थीं। अचानक ही, एक पॉलिश किए हुए दरवाजे पर, शोर–युक्त घिसटन के साथ, अपने स्टूल को पीछे की तरफ धक्का देते हुए, वह शुरू हुआ। ''देखो, चान!'' उसने अपने सहायक से कहा, ''आओ और इसे देखो!'' चान अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अपने उत्तेजित होते हुए वरिष्ठ की ओर चला और सूक्ष्मदर्शी के सामने जाकर बैठ गया। मेरे पास, स्लाइड के ऊपर, लेड सल्फाइड (lead sulphide) का, एक ग्रेन का दस लाखवाँ हिस्सा है,'' वरिष्ठ ने कहा, ''इसको देखो'' चान ने नियंत्रणों (controls) को समायोजित किया और अत्यधिक आश्चर्य के साथ भौंचक्का होकर सीटी बजाने लगा ''मेरे भगवान!'' वह प्रसन्नता

3 अनुवादक की टिप्पिणी : यहाँ ए (Ay) और बे (Bey) दोनों कल्पित क्षुद्र प्राणियों के नाम हैं।

से चीखा, ''ये दूरदर्शी में होकर ब्रह्माण्ड को देखने के समान है। जलता हुआ सूरज, उसके ईर्द–गिर्द परिक्रमा करते हुए ग्रह.....!'' वरिष्ठ ने उत्साहपूर्वक कहा, ''मुझे आश्चर्य है, यदि हमें एक अकेले लोक को देखने के लिये पर्याप्त प्रवर्धन मिल जाये–मैं आश्चर्य करूँगा, यदि वहॉ कोई जीवन है!'' ''बेवकूफ!'' चान ने रुखाई से कहा, 'वास्तव में वहॉ कोई सजीव जीवन नहीं है। वहॉ हो भी नहीं सकता, क्योंकि क्या पुजारी लोग नहीं कहते कि, हम प्रभु की छवि में बने हैं, वहॉ प्रबुद्ध (intelligent) जीवन कैसे हो सकता है ?''

हमारे ऊपर, सितारों ने अपने पथ पर अंतहीन, शाश्वत, घूमना जारी रखा। मुस्कुराते हुए, लामा मिंग्यार डोंडुप ने अपनी पोशाक पहनी और माचिसों का एक डिब्बा निकाल कर, खजाना, जो पूरी यात्रा के दौरान, बहुत दूर भारत से यहॉ लाया गया था, आगे लाये। धीमे से, उन्होंने माचिस की एक तीली निकाली और उसे सीधा पकड़ कर रखा। ''मैं तुम्हें सृष्टि दिखाऊँगा, लोबसांग!'' उन्होंने आकर्षक ढंग से कहा। जानबूझकर, उन्होंने तीली के सिरे को, डिब्बी की जलाने वाली सतह पर खींचा, और जैसे ही वह जीवित होकर जली, उन्होंने जलती हुई लकड़ी की तीली को पकड़ लिया। तब उसके बाद फेंक दिया! ''सृजन (creation) और मृत्यु (dissolution),'' उन्होंने कहा। ''जलती हुई तीली के सिरे ने, अपने साथियों के साथ विस्फोट करते हुए, हर एक में से हजारों कणों को उत्सर्जित किया है। उनमें से प्रत्येक, एक पृथक लोक था, संपूर्ण (whole) ब्रह्माण्ड था। और जैसे ही लपट बुझ गई, ब्रह्माण्ड मर गया। क्या तुम कह सकते हो कि उन लोकों में जीवन नहीं था ?'' मैंने ये नहीं जानते हुए कि क्या कहना चाहिए, संदिग्धरूप से, उनकी तरफ देखा, ''यदि वे लोक थे, लोबसांग, और उनके ऊपर जीवन था, उन जीवनों के लिए, ये लोक करोड़ों वर्षों तक जीवित रहे होंगे। क्या हम इस रगड़ी हुई माचिस की तीली की तरह नहीं हैं ? क्या हम, अपने सुख और दुःखों के साथ, अधिकांशतः दुःखों के साथ–ये सोचते हुए कि, इस लोक का अंत नहीं होगा, यहॉ जिंदा रह रहे हैं ? इसके बारे में सोचो और कल हम कुछ और अधिक बातें करेंगे,'' वह अपने पैरों पर खड़े हुए और मेरी दृष्टि से ओझल हो गए।––––––––––––––15

मैं छत पर ठोकर खाता रहा और अंधा होकर उस सीढ़ी की चोटी को ढूढ़ता रहा, जो नीचे की तरफ जाती थी। हमारी सीढ़ियॉ, उनसे अलग होती हैं, जो पश्चिमी विश्व में उपयोग में लाई जाती हैं, उनमें खूंटीदार लट्ठे होते हैं। मुझे पहली खूँटी मिल गई, दूसरी, तीसरी। तब मेरा पैर वहॉ से फिसला, जहॉ किसी ने, दिए से मक्खन गिरा दिया था। जितने (तारे) हमें ऊपर आकाश में दिखाई देते हैं, उनकी तुलना में अधिक 'तारों' को देखते हुए, और सोते हुए भिक्षुओं के अनेक विरोधों के उठते हुए, मैं (सीढ़ी के एकदम) निचले पैर पर, एक पेचीदा ढेर से, टकरा गया। अंधेरे में एक हाथ प्रकट हुआ और उसने मुझे एक (ऐसा) तमाचा मारा कि, मेरे सिर में घंटियॉ गूँज उठीं। शीघ्रता से, मैं अपने पैरों पर उछल पड़ा और लपेटते हुए अंधकार की सुरक्षा में, बाहर की तरफ दौड़ पड़ा। यथासंभव शांति के साथ, मुझे एक स्थान मिला, जिसमें मुझे सोना था, मैंने अपनी पोशाक को अपने आसपास लपेटा और चेतना पर अपनी पकड़ ढीली की। पैंरों के कदमों की जल्दीबाजी की 'चुप–चुप' ने भी मुझे परेशान नहीं किया और न हीं शंखों या चॉदी की घंटियों ने मेरे सपने को तोड़ा।

जब, किसी उद्यमी के द्वारा मुझे ठोकर लगाते हुए जगाया गया, सबेरा काफी आगे बढ़ चुका था। झेलते हुए, मैंने एक विशालकाय चेले का चेहरा देखा। ''उठो, उठो! पवित्र खंजर की कसम, तुम एक आलसी कुत्ते हो!'' उसने मुझे दोबारा ठोकर मारी–जोर से। मैं बाहर पहुँचा, उसके पैर को पकड़ा और (उसे) मरोड़ दिया। वह, एक हड्डी हिलाने वाले झटके के साथ, फर्श पर ये कहते हुआ गिरा, ''मठाध्यक्ष स्वामी! मठाध्यक्ष स्वामी! वह तुम्हें मिलना चाहते हैं, तुम नाचीज बेवकूफ!'' अनेक ठोकरों, जो उसने मुझे दी थीं, का बदला लेने के लिए, उसे एक ठोकर लगाते हुए, मैंने अपनी पोशाक को सीधा किया और जल्दी की। ''खाना नहीं– नाश्ता नहीं!'' मैं अपने आपमें बुदबुदाया, ''हर आदमी मुझे तभी

क्यों मिलना चाहता है, जब मेरा खाने का समय होता है ?'' मैंने, अंतहीन गलियारों में दौड़ते हुए, कोनों के आसपास झूमते हुए, बुढ़ापे के कारण आसपास डगमगाते हुए कुछ बूढ़े भिक्षुओं को, लगभग, हृदय–आघात पहुँचाया, परंतु मैं मठाध्यक्ष स्वामी के कमरे में मानक समय में पहुँच गया। दौड़ते हुए, मैं अपने घुटनों पर झुका और उन्हें आदर के साथ नमन किया। ————————16

मठाध्यक्ष स्वामी मेरे अभिलेख (record) को ध्यान से देख रहे थे और उसी समय मैंने जल्दी से छिपाई हुई मुस्कान सुनी। ''आह!'' उन्होंने कहा, ''जंगली नौजवान, जो चोटियों पर से गिरता है, बैसाखियों के निचले सिरे को चिकना देता है और किसी दूसरे की तुलना में अधिक पदचाप पैदा करता है।'' वे रुके और उन्होंने मुझे कठोरता से देखा; ''परंतु तुमने ठीक अध्ययन किया है, सर्वोत्कृष्ट, ठीक,'' उन्होंने कहा। तुम्हारी आधिभौतिक क्षमताऐं इतने ऊँचे स्तर की हैं और तुम अपने शैक्षणिक कार्यो में इतने आगे बढ़े हुए हो कि, मैं तुम्हें विशेषरूप से, अकेले ही, महान लामा मिंग्यार डोंडुप से पढ़वाने वाला हूँ, तुमको, पवित्रतम के तीव्रगामी आदेशों के द्वारा, एक अभूतपूर्व अवसर दिया जा रहा है। अब अपने शिक्षक लामा के पास जाओ।'' अपने हाथ को लहराने के साथ मुझे मुक्त करते हुए, मठाध्यक्ष स्वामी फिर से अपने कागजों की तरफ मुड़ गए। इस बात से मुक्त होकर कि, मेरे अनेक पापों में से कोई भी यहाँ नहीं ढूंढ़ा गया, मैं तेजी से भाग गया। मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरी प्रतीक्षा करते हुए बैठे थे। ज्यों ही मैं घुसा, उन्होंने मुझ पर नजर गढ़ाते हुए कहा ''क्या तुमने नाश्ता कर लिया है ?'' ''नहीं, श्रीमान्,'' मैंने कहा, ''आदरणीय मठाध्यक्ष स्वामी ने मुझे बुला भेजा, जबकि मैं सो ही रहा था– मैं भूखा हूँ!'' वे मेरे ऊपर हँसे और उन्होंने कहा, ''आह! मैं सोच रहा था कि, तुम्हारा चेहरा इसलिए उदास है मानो कि, बीमार होने पर भी तुम्हें काम में लगाया गया। यहाँ से जाओ, अपना नाश्ता करो और तब यहाँ वापस आओ।'' मुझे और अधिक दबाव देने की आवश्यकता नहीं थी– मैं भूखा था और मैं ये चाहता भी नहीं था। थोड़ा–सा, जो मैं तब जानता था, यद्यपि यह पहले ही कथन कर दिया गया था! – कि भूख, मेरे जीवन के अनेकों वर्षों तक, मेरा पीछा करती रहेगी।———17

एक अच्छे नाश्ते से तरो–ताजा हुए, परंतु अधिक कार्य करने के विचार से, आत्मा में दंडित किया गया मैं, लामा मिंग्यार डोंडुप के पास वापस लौटा। ज्यों ही मैंने प्रवेश किया, वे अपने पैरों पर खड़े हो गए। ''आओ!'' उन्होंने कहा, ''हम पोटाला में एक सप्ताह गुजारने के लिए जा रहे हैं।'' लंबे डग भरते हुए, और रास्ते का नेतृत्व करते हुए, वे हॉल के बाहर आये। बाहर, जहाँ एक साईस भिक्षु, दो घोड़ों के साथ प्रतीक्षा कर रहा था। उदासी के साथ, मैंने उस घोड़े का निरीक्षण किया, जो मुझे आबंटित किया गया था। उसने, उस तुलना में, जितना कि मैंने उसके बारे में सोचा था, मेरे बारे में कम सोचते हुए, और अधिक उदासी के साथ, मुझे घूरा। निकटवर्ती कयामत को महसूस करने के साथ, मैं घोड़े पर चढ़ा और सवार हुआ। घोड़े भयानक प्राणी थे, असुरक्षित, क्रोधी और बिना ब्रेक के। घुड़सवारी, जो मेरे पास हो सकती थी, किन्हीं भी अन्य निपुणताओं में न्यूनतम थी। ————18

हमने, चाकपोरी से नीचे की तरफ के, पहाड़ी रास्ते को, झूमते–झूमते तय किया। पार्गो कलिंग (Pargo Kaling) को अपने दायीं ओर रखते हुए, मनी लखांग (Mani Lakhang) सड़क को पार करते हुए, हम शीघ्र ही, श्यो (Shö) गॉव में पहुँचे– जहाँ मेरे शिक्षक ने एक संक्षिप्त विराम लिया, तब हम पोटाला की खड़ी सीढ़ियों पर चढ़ गए। घोड़े के ऊपर सवार होते हुए सीढ़ियों पर चढ़ना, एक असुखद अनुभव होता है और मेरा मुख्य दुःख था, घोड़े पर से गिरना पड़ना! भिक्षु, लामा और यात्री, उनकी असीम भीड़, सीढ़ियों पर ऊपर–नीचे चल रही थी, कुछ लोग दृश्य की प्रशंसा करने के लिए रुक जाते थे, दूसरे, जिनका स्वयं दलाईलामा के द्वारा स्वागत किया जाता था, केवल उस साक्षात्कार पर विचार करते थे। हम सीढ़ियों के शिखर पर रुके और मैं अपने घोड़े से, आभार सहित परंतु, फूहड़ ढंग से फिसला। उस, बेचारे गरीब ने, एक निराशापूर्ण आवाज निकाली और अपनी पीठ को मेरी तरफ घुमा दिया!

जबतक कि, हम पोटाला में ऊँचेतल तक नहीं पहुँचे, सीढ़ियों के बाद सीढ़ियॉ चढ़ते हुए, पैदल आगे चलते गए, जहॉ विज्ञान के कक्षों के समीप, उन्हें आवंटित, लामा मिंग्यार डोंडुप का स्थाई कक्ष था। संसार के विभिन्न देशों से मंगाये गये अनोखे यंत्र और युक्तियॉ वहॉ रखीं थीं, परंतु उनमें सबसे अधिक अजीब चीज, सर्वाधिक दूर भूतकाल (remotest past) से थी। और इसप्रकार अंत में, हम वहॉ अपने गंतव्य पर, जो अब कुछ समय के लिए मेरा कमरा था, पहुँच गए। ——————19

मैं अपनी खिड़की से, पोटाला में, दलाई लामा से मात्र एक तल नीचे की ऊँचाई पर से, घाटी में, ल्हासा को देख सकता था। बहुत दूर पर मैं, महान केथेड्रल (जो कांग) को, उसकी चमकती हुई सुनहरी छत के साथ देख सकता था। कुछ दूरी पर, ल्हासा शहर का, पूरा चक्कर बनाते हुए, मुद्रिका पथ (ring road) फैला हुआ था। वहॉ धर्मनिष्ठ तीर्थयात्रियों की भीड़ थी। सभी, रहस्यमयी विद्या (occult learning) के, विश्व के महानतम पीठ पर, अपना दंडवत् निवेदन करने आये थे। इतने अद्भुत् शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप को पाने के लिए, मैंने अपने अच्छे भाग्य को याद किया ! उनके बिना, मैं विश्व के लगभग उच्चतम स्थान में होने के बजाय, एक अंधकारपूर्ण शायिका (dormitory) में रहने वाला, मात्र एक सामान्य चेला होता। सहसा, इतना अचानक कि, मैंने एक आश्चर्य की चीख निकाली, कठोर भुजाओं ने मुझे पकड़ लिया और हवा में उठा दिया। एक गहरी आवाज ने कहा, ''इस तरह! और इस तरह से तुम सोचते हो कि, तुम्हारे शिक्षक ने तुम्हें पोटाला में इतना ऊँचा पहुँचाया है और वे उन अस्वास्थ्यकर मिठाइयों को, जो भारत से आती हैं, तुमको खिलाते हैं ?'' वे मेरी दण्डवत् के ऊपर हॅसे और मैं ये अनुभव करने के लिए कि, जो मैंने उनके बारे में सोचा, वे जानते थे, अत्यधिक अंधा या भ्रमित हो गया!

अंत में उन्होंने कहा, ''हम दोनों घनिष्ठता (rapport) में हैं, हम दोनों, एक–दूसरे को, पिछले जीवन से, अच्छी तरह जानते हैं। तुम्हें उस पिछले जीवन का पूरा ज्ञान है और इसे मात्र दुबारा याद दिलाये जाने की आवश्यकता है। मेरे कमरे में आओ।'' मैंने अपनी पोशाक को सीधा किया और अपने कटोरे को, जो तब गिर गया था, जब मुझे हवा में उठाया गया, वापस रखा। तब मैं जल्दी से, अपने शिक्षक के कमरे की ओर गया। उन्होंने मुझे बैठने का संकेत किया और जब में व्यवस्थित हो गया, ''उन्होंने कहा, ''और तुम, हमारी पिछली रात के वार्तालाप पर, जीवन के मामले में आश्चर्यचकित हुए हो ?'' ज्यों हीं मैंने, किसी घबराहट में जबाव दिया, मैंने अपना सिर लटका लिया, ''श्रीमान् ? जब मुझे सोना था, तब मठाध्यक्ष स्वामी ने मुझसे मिलना चाहा, तब मुझे खाना खाना पड़ा और तब आपने मुझे दुबारा मिलना चाहा। मुझे आज किसी भी चीज के बारे में सोचने का समय नहीं मिला!'' जैसे ही उन्होंने कहा, उनके चेहरे पर एक मुस्कान थी ''हम खाने के प्रभाव के ऊपर बाद में चर्चा करेंगे परंतु पहले हमें जीवन के बारे में, विषय पर लौटें।'' वे रुके और एक किताब, जो किसी विदेशी भाषा में लिखी गयी थी, को उठाने के लिए आगे बढ़े। अब मैं जानता हूँ कि, यह अंग्रेजी भाषा थी।

पेजों को उलटते हुए, अंत में उन्होंने वह पाया, जिसे वह चाहते थे। एक चित्र की ओर खुली हुई किताब को मुझे देते हुए, उन्होंने पूछा, ''तुम जानते हो वह क्या है ?'' मैंने चित्र की ओर देखा, और ये इतना अधिक साधारण था कि, मैंने उसके नीचे लिखे हुए अजनबी शब्दों को देखा। इसका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था। मैंने पुस्तक को वापस करते हुए, उलाहने में कहा, ''आप जानते हैं, मैं इसे पढ़ नहीं सकता, आदरणीय लामा!'' ''परंतु तुम चित्र को पहचानो ?'' उन्होंने जोर दे कर कहा, ''ठीक है, हॉ ये मात्र, एक प्राकृतिक आत्मा (natural spirit) है, किसी दूसरी चीज से कतई अलग नहीं।'' मैं और अधिक उलझन में फंसता जा रहा था। ये सब किस संबंध में था। लामा ने फिर से पुस्तक खोली और कहा, ''समुद्र के बहुत दूर, उस पार एक देश में, प्राकृतिक आत्माओं को देखने की सामान्य सामर्थ्य समाप्त हो चुकी है। यदि कोई, ऐसी आत्मा को देखता है, तो वह मजाक का विषय बनता है। देखने वाले को, शाब्दिक रूप में, ''चीजों को देखने का'' अभियुक्त माना जाता है। पश्चिमी लोग, इन चीजों में

तब तक विश्वास नहीं करते, जबतक कि वे, उसे टुकड़ों में तोड़ न दें या हाथों में पकड़ न लें या उसे किसी पिंजरे में न डाल दें। पश्चिम में प्राकृतिक आत्मा को परी (fairy) कहा जाता है– और परी कथाओं के ऊपर विश्वास नहीं किया जाता।'' इसने मुझे अत्यधिक तीव्रता के साथ, आश्चर्यचकित किया। मैं सभी कालों में, आत्मा को देख सकता था और उन्हें पूरी तरह से प्राकृतिक मानता था। मैंने अपने सिर को, उस पर जमे हुए कुछ कोहरे को हटाने के लिए, हिलाया।––––––––––––––21

लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''सभी जीवन, जैसा मैंने तुम्हें पिछली रात को बताया था, तेजी से कंपन करने वाले, एक विद्युत आवेश से पैदा करने वाले, पदार्थ से बने होते हैं। विद्युत, पदार्थ का जीवन है। जैसे कि संगीत में विविध सप्तक (octave) होते हैं। कल्पना करो कि, गली का एक साधारण आदमी, किसी निश्चित सप्तक के कंपन करता है, तब एक प्राकृतिक आत्मा और एक प्रेत आत्मा, एक उच्चतर सप्तक में कंपन करेगी। क्योंकि, एक औसत आदमी, केवल एक सप्तक पर ही जीता है, सोचता है और विश्वास करता है, दूसरे सप्तक वाले लोग, उसे दिखाई ही नहीं देते!'' इसके ऊपर विचार करते हुए, मैंने अपनी पोशाक के साथ, थोड़ी छेड़खानी की; इसका अर्थ मेरी समझ में नहीं आया। मैं प्रेत आत्माओं और प्राकृतिक आत्माओं को देख सकता था, इसलिए कोई दूसरा भी, उन्हें देखने में सक्षम होना चाहिए। लामा ने मेरे विचारों को पढ़ते हुए उत्तर दिया, ''तुम मानवों के प्रभामंडल (aura) को देखते हो। अधिकांश दूसरे मानव नहीं देखते। तुम प्राकृतिक आत्माओं और प्रेत आत्माओं को देखते हो, अधिकांश दूसरे लोग नहीं देखते। सभी जवान बच्चे इन चीजों को देखते हैं, क्योंकि छोटे बच्चे इनके प्रति अधिक सुग्राही (receptive) होते हैं। तब, जैसे ही बच्चा बड़ा होता जाता है, जीने की चिंताऐं, इस दृष्टिकोण को भोंतरा कर देती हैं। पश्चिम में, बच्चे, जो अपने माता–पिता को बताते है कि, (उनका) आत्माओं के साथ एक खेल चल रहा था, तब उसके खिलाड़ी साथियों को झूठ बोलने के लिए दंडित किया जाता है, या उनकी जीवंत कल्पनाओं के लिए, उनका मजाक उड़ाया जाता है। बच्चा ऐसे व्यवहार पर पर क्षोभ करता है, कुछ समय बाद अपने आपको समझा लेता है कि, ये सब कुछ कल्पना मात्र थी! तुम, अपने विशेषरूप से पाले–पोसे जाने के कारण, प्रेत आत्माओं और प्राकृतिक आत्माओं को देखते हो और हमेशा देखते रहोगे–जैसे तुम हमेशा मानवीय प्रभामंडल को देखोगे।'' ––––––––––22

''तब प्राकृतिक आत्माऐं भी, जो फूल भेजती हैं, हमारी जैसी हैं ?'' मैंने पूछा। ''हॉ'' उन्होंने जवाब दिया, ''वे ऐसी ही होती हैं सिवाय इसके कि, वे अधिक तेजी से कंपन करतीं हैं और उनको बनाने वाले पदार्थ के कण अधिक फैले हुए होते हैं। यही कारण है कि, तुम अपने हाथ को उनके बीच में घुसाकर रख सकते हो, ठीक वैसे ही जैसे कि, तुम अपने हाथ को धूप की किरण में घुसा देते हो।'' ''क्या तुमने कभी छुआ है– तुम जानते हो, क्या तुमने – एक प्रेत आत्मा को कभी पकड़ा है ?'' मैंने पूछा ''हॉ मैंने किया है!'' उन्होंने जबाव दिया। ''यह किया जा सकता है, यदि कोई, अपने खुद के कंपनों की दरों को बढ़ा ले। मैं इसके संबंध में बताऊॅगा।''

मेरे शिक्षक ने, तिब्बत के सबसे अच्छे समझे जाने वाले लामामठों में से एक के, उच्चमठाध्यक्ष द्वारा दिए गए उपहार, अपनी चांदी की घंटी को छुआ। भिक्षु सेवक, हमें अच्छी तरह जानने के कारण, त्सम्पा नहीं, भारतीय पौधों की चाय, और वे मिठाईयॉ चकतियॉ, जो ऊॅचे पहाड़ों के पार से, विशेषरूप से, पवित्रतम दलाई लामा के लिए लाईं गईं थीं और जिनका मैं, मात्र एक गरीब चेला, इतना अधिक लुत्फ उठा रहा था, लाया। ''अध्ययन के लिए विशेष प्रयास करने का परिणाम, जैसा कि पवित्रतम अक्सर कहते थे। लामा मिंग्यार डोंडुप ने विश्व का दौरा किया था, परंतु भौतिक और सूक्ष्मशरीर दोनों से। उनकी कुछ कमजोरियों में से एक थी, भारतीय चाय, जिसके वे आदी थे। एक कमजोरी, जिसको मैं दिल से स्वीकार करता हूॅ! हम आराम से बैठ गए, और जैसे ही मैंने अपनी चकतियों को समाप्त किया, मेरे शिक्षक और मित्र बोले।––––––––––––––23

''अनेक वर्षों पहले, जब मैं जवान था, मैं यहॉ पोटाला में, एक कोने में घूम रहा था–वैसे ही, लोबसांग, जैसे तुम करते हो! मैं प्रार्थना के लिए, बिलम्बित हो गया था, इसलिए अपने डर के अनुसार, मैंने एक दरबारी मठाध्यक्ष को, अपने रास्ते को रोकते हुए देखा। वह जल्दी भी मचा रहा था! उससे बचने का कोई समय नहीं था! मैं अपने खेद को व्यक्त करने का प्रयास कर रहा था, जब मैं ठीक उसमें होकर टकराया। वह उतना ही घबराया हुआ था, जितना कि मैं। तथापि, मैं इतना आश्चर्यचकित था कि, मैं दौड़ता रहा और इस तरह बिलंबित नहीं हुआ, कुल मिला कर, बहुत अधिक देर से नहीं।'' मैं दौड़ते हुए, भव्य लामा मिंग्यार डोंडुप के संबंध में सोचते हुए हॅसा, वे मेरे ऊपर मुस्कुराये और उन्होंने कहना जारी रखा।

''बाद में, उस रात मैंने इस संबंध में सोचा। मैंने सोचा, ''मैंने प्रेतात्मा को क्यों नहीं छुआ ?'' मैं इसके बारे में जितना ज्यादा सोचता, उतना ही ज्यादा, मैं सुनिश्चित होता कि, मैं उसको छू सकता था। मैंने सावधानी से अपनी योजना बनाई, और सभी पुरानी लिपिबद्ध पुस्तकों को पढ़ा। ऐसे सभी मामलों के संबंध में, मैंने एक अत्यंत, अत्यधिक, विद्वान व्यक्ति से परामर्श किया, जो ऊॅचाई पर, पहाड़ों में रहता था। उसने मुझे बहुत कुछ बताया, उसने मुझे ठीक रास्ते पर पहुॅचा दिया, और मैं तुम्हें, वही सब बताने जा रहा हूॅ, क्योंकि ये सीधे ही, प्रेतात्मा को छूने के तथ्य पर ले जाता है।''

उन्होंने खुद के लिए थोड़ी सी चाय डाली और (बात) जारी रखने से पहले, एक चुस्की ली। ''जीवन, जैसा मैंने तुम्हें बताया, छोटे–छोटे विश्व, छोटे सूर्यों के चारों तरफ घूमते हुए, कणों के समूहों का बना होता है। ये गति, एक पदार्थ को उत्पन्न करती है, जिसे अच्छे शब्द की इच्छा के साथ, हम कहेंगे विद्युत। यदि हम ध्यानपूर्वक खाते हैं, तो हम अपने कंपनों की दर को बढ़ा सकते हैं। एक नाजुक खुराक, जिसमें टेढ़े–मेढ़े विचार न हों, किसी के स्वाद का सम्बर्द्धन करती है, किसी के कंपनों की मूल दर को बढ़ाती हैं। इसलिए हम प्रेतात्मा के कंपनों की दर के समीप पहुॅच जाते हैं।'' वह रुके और उन्होंने अगरबत्ती की एक नयी काड़ी (stick) को जलाया। इस पर संतुष्ट होते हुए कि, उसका सिरा संतोषजनकरूप से जल रहा था, उन्होंने अपना ध्यान, फिर मेरी तरफ मोड़ दिया।

''अगरबत्ती का एकमात्र उद्देश्य, उस क्षेत्र के कंपनों की दर को बढ़ाना होता है, जिसमें यह जलाई जाती है, और जो उस क्षेत्र में है, उनकी भी दरों को बढ़ाना। उचित अगरबत्ती का प्रयोग करने से, क्योंकि, सभी एक निश्चित कंपन के लिए बनाई जाती हैं, हम कुछ निश्चित परिणाम पा सकते हैं। एक सप्ताह के लिए, मैंने स्वयं को, एक कठोर भोजन के ऊपर रखा, कोई वह, जिसने मेरे कंपनों या आवृति को बढ़ा दिया। उस सप्ताह, मैंने अपने कमरे में, उचित अगरबत्तियों को लगातार जलाया। उस समय की समाप्ति पर, मैं लगभग स्वयं से बाहर था; मैंने अनुभव किया कि, मैं चलने के बजाय तैर रहा था, मैं अपने सूक्ष्मशरीर को, अपने भौतिक शरीर में बनाये रखने में कठिनाई अनुभव कर रहा था।'' ज्यों ही उन्होंने मुझे कहा, उन्होंने मेरी तरफ देखा और वे मुस्कराये, ''तुमने उस प्रतिबंधित भोजन की प्रशंसा नहीं की होती!'' ''नहीं'' मैंने सोचा, ''मैं किसी अच्छी प्रेतात्मा को छूने के बजाय, एक बढ़िया खाने को छूना चाहूॅगा।''————————————24

''सप्ताह के अंत में,'' मेरे शिक्षक, लामा ने कहा, ''जब मैंने एक प्रेतात्मा का आवाहन किया और उसने मुझे छुआ, मैं नीचे आंतरिक अभयारण्य में गया, औरअधिक अगरबत्तियॉ जलाईं। अचानक मैंने अपने कंधे के ऊपर, एक मित्रतापूर्ण हाथ की गर्मी को महसूस किया। ये देखने के लिए मुड़ते हुए कि, ध्यान लगाने में, मुझे कौन परेशान कर रहा है, जब मैंने देखा कि, मुझे एक आत्मा के द्वारा स्पर्श किया जा रहा था, जो एक साल से अधिक पहले, मर चुकी थी, मैं अपनी पोशाक में से, करीब–करीब, एकदम ऊॅचा उछल पड़ा।'' लामा मिंग्यार डोंडुप अचानक ही रुक गए, और जब उन्होंने उस अत्यधिक पुराने अनुभव पर चिंतन किया, तब तेजी से हॅसे।———————— 25

''लोबसांग!'' अंत में वह प्रसन्नता से चीखे, ''बूढ़ा 'मृत' लामा मेरे ऊपर हॅसा और उसने मुझे

पूछा कि, मैंने ये सब परेशानी क्यों ली, जबकि मुझे केवल सूक्ष्मशरीर में जाना था! मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने ये सोचकर, एक सीमा से अधिक अपमानित महसूस किया कि, ऐसा एक स्पष्ट हल मुझसे फिसल गया। अब, जैसा तुम अच्छी तरह जानते हो, कि हम, प्रेतों और प्राकृतिक लोगों से बात करने के लिए, सूक्ष्मशरीर में जाते हैं।'' ''वास्तव में, आपने दूरानुभूति के द्वारा बात कीं,'' मैंने टिप्पणी की, ''और मैं, दूरानुभूति के लिए, किसी स्पष्टीकरण को नहीं जानता। मैं इसे करता हूँ, परंतु मैं इसे कैसे करता हूँ ?''

''तुम बहुत कठिन प्रश्न पूछते हो, लोबसांग!'' मेरे शिक्षक हँसे। ''सरलतम चीजें, स्पष्ट करने के लिहाज से सबसे कठिन होती हैं। मुझे बताओ, तुम श्वसन की प्रक्रिया की, किस प्रकार व्याख्या करोगे ? तुम इसे करते हो, हर आदमी इसे करता है, परंतु कोई भी इस प्रक्रिया को कैसे समझा सकता है ?'' मैंने उदासतापूर्वक गर्दन हिलाई। मैं जानता था कि, मैं हमेशा प्रश्न पूछता ही रहता था, परंतु औरअधिक जानने का, मात्र यही एक तरीका था। दूसरे चेलों में से अधिकांश को कोई रुचि नहीं थी, जबतक कि उन्हें अपना खाना मिलता रहे और काम करने को बहुत अधिक न हो, वे संतोष से रहते थे। मैं और अधिक चाहता था, मैं जानना चाहता था।

''मस्तिष्क,'' लामा ने कहा, एक रेडियो सेट की तरह है, एक युक्ति, जिसे वह आदमी, मार्कोनी (Marconi), समुद्र के आरपार संदेश भेजने के लिए, उपयोग में ला रहा है। कणों और विद्युत आवेशों के एकत्रीकरण, जो एक मानवप्राणी को बनाते हैं, के पास भी, विद्युतीय या रेडियो जैसी एक युक्ति, मस्तिष्क, है, जो इसे बताती है कि, इसे क्या करना है। जब कोई व्यक्ति, अपनी भुजा को चलाने की सोचता है, विद्युत धाराऐं, वांच्छित क्रिया के लिए, मांसपेशियों में हलचल उत्पन्न करने के लिए, समुचित नाड़ियों में होकर दौड़ती हैं। उसी तरह से, जब कोई व्यक्ति सोचता है, रेडियो या विद्युतीय तरंगें–वास्तव में, वे रेडियो वर्णक्रम के उच्च भागों में से आती हैं–मस्तिष्क के द्वारा विकीर्णित की जाती हैं। कुछ उपकरण, इन विकिरणों को पहचान सकते हैं और उनको कागज पर लिख भी सकते हैं, जिसे पश्चिमी डॉक्टर 'अल्फा, बीटा, डेल्टा और गामा,' लाइनें कहते हैं।'' मैंने धीमे से हामी (nod) भरी, मैं ऐसी चीजों को, चिकित्सीय लामाओं से, पहले ही सुन चुका था।————————26

''अब,'' मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा, ''संवेदनशील मनुष्य, इन विकरणों को भी पहचान सकते हैं, और उन्हें समझ सकते हैं। मैं तुम्हारे विचारों को पढ़ता हूँ, और यदि तुम प्रयास करो, तुम भी मेरे (विचार) पढ़ सकते हो। दो लोग, जितने अधिक घनिष्ठ, एक–दूसरे के साथ सामंजस्य में होते हैं, उनके लिए एक–दूसरे के मस्तिष्क के विकिरणों को, जो विचार भी हैं, पढ़ना आसान होता है। इसप्रकार हमें दूरानुभूति होती है। जुड़वॉ बच्चे, अक्सर, एक दूसरे के प्रति, पूरी तरह से दूरानुभूति वाले होते हैं। एक समान जुड़वॉ, जहॉ एक का दिमाग, दूसरे के दिमाग की, ठीक नकल है, एक–दूसरे के लिए, इतने अधिक दूरानुभूतिपूर्ण होते हैं कि, अक्सर ये पता लगााना मुश्किल होता है कि, दोनों में से किसने, किसी विचार को उत्पन्न किया।

''आदरणीय श्रीमान्,'' मैंने कहा, ''जैसा आप जानते हैं, मैं अधिकांश मनों (minds) को पढ़ सकता हूँ। ऐसा क्यों है ? क्या इस विशेष क्षमता के साथ, दूसरे और भी हैं ?'' ''तुम, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने उत्तर दिया, ''विशेषरूप से, इसके लिए उपहार और विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त हो। तुम्हारी शक्तियॉ, हमारे निर्देशों के अनुसार, तुम्हारे लिए, हर तरीके से बढ़ाई जा रहीं हैं, क्योंकि आगे आने वाले जीवन में, तुम्हें एक बहुत मुश्किल कार्य करना है।'' उन्होंने अपने सिर को हिलाया, ''वास्तव में एक मुश्किल कार्य। पुराने जमाने में, लोबसांग, मानवजाति जानवरों के साथ दूरानुभूति से परस्पर संचार कर लेती थी। आने वाले दिनों में, युद्धों की नादानी को देख लेने के बाद, मानवजाति, इस शक्ति को फिर से प्राप्त कर लेगी; मानव और पशु एक बार फिर, दूसरों को हानि पहुँचाने की कोई इच्छा न रखते हुए, एक दूसरे के साथ शांति से रहेंगे।''————————27

फिर, हमारे नीचे, घंटे, घड़ियाल, शोर करते गये और धूम मचाते गए। तुरहियों के बजने की आवाजें आई, और लामा मिंग्यार डोंडुप, ये कहते हुए अपने पैरों पर उछल पड़े, हमें जल्दी करनी चाहिए, लोबसांग, मंदिर की प्रार्थना सेवा शुरू होने ही वाली है, और पवित्रतम स्वयं वहॉ होंगे।'' अब मैं हड़बड़ाकर, अपने पैरों पर खड़ा हुआ, अपनी पोशाक को पुनः व्यवस्थित किया और गलियारे में काफी नीचे और लगभग दृष्टि के बाहर, अपने शिक्षक के पीछे दौड़ा।

अध्याय दो

महान मंदिर, एक सजीव चीज दिखाई दिया। ऊपर छत पर (रहते हुए), अपने लाभ की दृष्टि से, मैं नीचे देख सकता था और उस स्थान की पूरी विस्तृत सीमाओं को देख सकता था। दिन में, पहले, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोडुप और मैंने, एक विशेष उद्देश्य के लिए, इस स्थान की यात्रा की थी। अब लामा, एक उच्च व्यक्ति के साथ, स्वयं को एकांत में रखे हुए थे और– घूमने–फिरने के लिए स्वतंत्र–मैंने, शक्तिशाली शहतीरों के मध्य, जो छत को टिकाये हुए था, पुजारी जैसे, अपने एक इस प्रेक्षण खम्बे को ढूंढ लिया था। छत पर चलने के रास्ते पर धीमे–धीमे, चुपके–चुपके चलते हुए, मैंने दरवाजे को खोज लिया और दुस्साहसपूर्वक, धकेल कर इसे खोल दिया। प्रचण्ड रोष की किसी जोरदार आवाज ने, इस क्रिया का अभिवादन नहीं किया, मैंने अंदर झांका। स्थान खाली था, इसलिए मैं घुसा और मैंने स्वयं को, मंदिर की दीवार के अंदर बने हुए, पत्थर के छोटे कमरे की तरह के, पत्थर के एक छोटे कक्ष में पाया। मेरे पीछे, लकड़ी का एक छोटा दरवाजा था, उसके एक तरफ पत्थर की दीवारें, और मेरे सामने, शायद तीन फुट ऊँचे, पत्थर के टांड़ थे।

मैं शांतिपूर्वक आगे बढ़ा और अपने घुटनों पर बैठ गया, जिससे केवल मेरा सिर, उस पत्थर के टांड़ के ऊपर था। मैंने अपने आपको, स्वर्ग में एक देवता की तरह, नाचीज मृत्य लोगों (mortals) की तरफ झांकते हुए, मंदिर के फर्श पर, अनेक–अनेक फुट नीचे, मंद–मंद अंधेरे में नीचे की तरफ झांकते हुए, अनुभव किया। मंदिर के बाहर, जामुनी (purple) संध्या, अंधकार के लिए रास्ता छोड़ रही थी। बर्फ से ढकी चोटियों से पीछे, डूबते हुए सूर्य की मंद पड़ रहीं अंतिम किरणें, बहुत ऊँची–ऊँची पर्वत श्रेणियों में उड़तीं हुईं, आनंददायक फुहारों को, प्रकाश के बर्फ के आवासी झाग में होकर भेज रहीं थीं।

मक्खन के टिमटिमाते हुए सैकड़ों दीपों के द्वारा, मंदिर का अंधियारा खत्म हुआ, और (दूसरे) कुछ स्थानों में बढ़ गया। दीप, जो प्रकाश के सुनहरे बिन्दुओं के रूप में चमक रहे थे, फिर भी, वे अपने चारों ओर, एक आभा बिखेर रहे थे। ऐसा लगा, मानो तारे मेरे सिर के ऊपर होने के बजाय, मेरे पैरों के नीचे हों। बंधीं हुई छायाऐं, अब पतली और लंबाई में बढ़ी हुईं, छायाऐं, अब छोटी और मोटीं, परंतु हमेशा हास्यास्पद और अजीब छायाऐं, इस सामान्य से दिखने वाले प्रकाश को, असामान्य, अपार्थिव, अद्भुत और वर्णनातीत बनाते हुए, शांतिपूर्वक, मजबूत स्तंभों के आर–पार प्रकाश को चुरा रही थीं।

ये अनुभव करते हुए, मानो कि, एक आधे संसार में, जिसे मैं देख रहा था और जिस पर मैं विचार कर रहा था, उसके प्रति अनिश्चित्ता के साथ ताकते हुए, मैंने नीचे झांका। मेरे और फर्श के बीच में, मुझे ईश्वर जैसे दिखने वाले दृष्टिकोण का और अधिक ध्यान दिलाते हुए, नीली अगरबत्तियों के धुऐं, पर्त के बाद पर्त उठाते हुए, पृथ्वी के बादलों में होकर नीचे तैरते रहे। धूपदानों, जो जवान और श्रृद्धालु चेलों के द्वारा झुलाये जा रहे थे, में से धीमे–धीमे उठने वाले अगर (inscence) के बादल, मोटे हो कर घुमड़े। वे कदमों से शांत और चेहरे से अटल, धीमे–धीमे, ऊपर और नीचे चल रहे थे। जैसे ही वे घूमे और फिर घूमे, स्वर्णिम धूपदानों में से, प्रकाश के लाखों बिन्दु परावर्तित हुए और उन्होंने प्रकाश की जगमगाती किरणों को आगे भेजा। अपने लाभ की दृष्टि से, मैं नीचे, लाल चमकने वाले धूपदानों को, जो हवा के प्रवाह के द्वारा बहाये जाते हुए, कई बार लगभग लपटों के रूप में, भड़क उठते थे, और लाल प्रकाश के झरनों को भेजते थे, शीघ्र ही मर जाने वाली चमक के साथ, देख सकता था। ताजा जीवन दिए जाने पर, अगरबत्तियों का नीला धुऑ, मोटे–मोटे स्तंभों के रूप में, एक खिंचाव वाला रास्ता बनाते हुए और चेलों के पीछे, ऊपर की तरफ उठा। ऊपर उठते हुए धुऐं ने, मंदिर के अंदर, एक दूसरा बादल बनाया। मंद वायु का प्रवाह, भिक्षुओं पर से गुजरते हुए, उन्हें फूलों के हार की तरह घेरते और मरोड़ते हुए, एक जिंदा चीज की तरह, एक प्राणी की तरह, मंदा सा दिखता हुआ, सांस लेता हुआ और नींद में घूमता हुआ, दिखाई दिया। इस कल्पना से लगभग सम्मोहित होते हुए कि, मैं एक जीवित प्राणी के अंदर था, उसके अंगों के उठाव और हलचल को देखते हुए, उसके स्वयं के जीवन की, शरीर

की, ध्वनियों को सुनते हुए, थोड़ी देर के लिए, मैंने टकटकी लगाई।

उदासी के माध्यम, से अगरबत्ती के धुऐं के बादलों में से, मैं कंधे से कंधा मिला कर चलते हुए लामाओं, ट्रापाओं और चेलों की श्रेणियों को देख सकता था। वे फर्श पर पालथी मार कर बैठे हुए, असीम पंक्तियों में विस्तारित थे; वे सभी, जबतक कि वे मंदिर के दूर भागों में अदृश्य नहीं हो गए, परिचित रगों के पेबंदों के कामों की हिलकारी देते हुए, अपनी श्रेणी की पोशाकों में, सजीव दिखाई दिए। सुनहरा, केसरिया, लाल, भूरा, और एक अत्यंत मंद भूरे रंग की फुलझड़ी जैसा, (ये सभी) रंग, जैसे–जैसे उनके पहनने वाले चलते थे, सजीव होते हुए और एक दूसरे में बहते हुए दिख रहे थे। मंदिर के मुॅहाने पर, दलाईलामा के तेरहवें अवतार, संपूर्ण बौद्ध विश्व में सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति, पवित्रतम, अंतरतम बैठे।

कुछ समय के लिए मैंने घ्यानपूर्वक देखा, गहरी आवाज वाले लामाओं के जोर से किये गये मंत्रजाप को, छोटे चेलों की तिगुनी तीव्रता के स्वर के साथ सुना। अगरबत्ती के धुओं को, गहरे कंपनों के साथ सहानुभूति में, कंपन करते हुए देखा। रोशनियॉ अंधेरे में टिमटिमाईं और विस्थापित हुईं, अगरबत्ती धीमी जल रही थी और फिर से लाल चिनगारियों के झरने से भरपूर हो उठी थी। प्रार्थना सभा भिनभिनाती रही और मैं वहॉ घुटनों के बल बैठा देखता रहा। मैं नृत्य करती हुई छायाओं को, बढ़ते हुए और दीवारों पर मरते हुए देखता रहा, जबतक कि मैं कठिनाई से ही जान सका कि, मैं क्या कर रहा था और कहॉ नहीं था, मैंने प्रकाश के चमकते हुए महीन–महीन बिन्दुओं को देखा।

सामान्य जीवन अवधि से परे, सालों के भार से झुका हुआ, एक वयोवृद्ध लामा, धीमे से अपनी श्रेणी के बंधुओं के बीच चला। उसके पीछे, हाथ में एक प्रकाश और अगरबत्तियों की काड़ियों के साथ, सावधान ट्रापा लोग उछले। अंतरतम को दंडवत करते हुए, और पृथ्वी के चारों कोनों को नमन करने के लिए धीमे से मुड़ते हुए, अंत में, उसने मंदिर के अंदर, भिक्षुओं की एक सभा का सामना किया। इतने अधिक वृद्ध के लिए आश्चर्यजनक रूप से मजबूत आवाज में, उसने जपना प्रारंभ किया;

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो। ये माया का लोक है। पृथ्वी पर जीवन, एक स्वप्न के अतिरिक्त कुछ नहीं है परंतु शाश्वत जीवन के समय (की तुलना) में, ये मात्र, एक पलक झपकने के समान है। तुम सभी जो उदास हो, दबे हुए हो, हमारी आत्माओं की आवाज सुनो। छायाओं और दुःखों का ये जीवन समाप्त हो जायेगा और न्यायपूर्ण व्यक्तियों पर, शाश्वत जीवन की भव्यता, आगे जाकर चमकेगी। अगरबत्ती की पहली काड़ी जलाई जाती है ताकि, परेशानी में पड़ी हुई किसी आत्मा का पथप्रदर्शन किया जा सके।

एक ट्रापा आगे बढ़कर खड़ा हुआ और धीमे से मुड़ने से पहले (उसने) अंतरतम को नमन किया और मुड़ने में, पृथ्वी के चारों कोनों को नमन किया। अगरबत्ती की एक काड़ी जलाते हुए, वह फिर मुड़ा और उसने, उससे चारों कोनों की ओर संकेत किया। मंत्रजाप की गहरी आवाज फिर बढ़ी और उसे छोटे चेलों द्वारा तीन गुना बढ़ाते हुए, अनुगमन (drifting) में समाप्त हो गई। एक स्थूलकाय लामा ने, अंतरतम की उपस्थिति के कारण, कुछ निश्चित गद्यांशों को, उनमें उचित स्थानों पर विराम देने के लिए, केवल एक अवसर पर, चांदी की घंटी को सशक्त रूप से बजाते हुए, गाया। शांति में डूबते हुए, उसने चोरी–चोरी देखा कि, क्या उसकी इस क्रिया को उचित अनुमोदन मिल रहा है अथवा नहीं।

बूढ़े लामा ने, एक बार फिर, आगे कदम बढ़ाया, और विभिन्न विरामों के साथ, अंतरतम के प्रति नमन किया। धर्म और राज्य के प्रमुख की उपस्थति के कारण अत्यधिक डरा हुआ दूसरा ट्रापा, ध्यान आकर्षित किए जाने पर, उछला। वृद्ध लामा ने उच्चारित किया :

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो। ये माया का लोक[4] है, पृथ्वी पर जीवन, परीक्षण में है, ताकि

4 अनुवादक की टिप्पिणी : यहॉ सभी मोह की निद्रा में सो रहे हैं, और विविध प्रकार के स्वप्न देख रहे हैं। रामचरित मानस में कहा गया है,

मोह निशा सब सोबनिहारा । देखहि सपन अनेक प्रकारा।।

हमको अपनी तलछट (मलदोषों) को हटाकर शुद्ध किया जा सके और हमेशा ऊपर की तरफ प्रगति की जा सके। तुम सभी, जो दुविधा में हो, हमारी आत्माओं की आवाज सुनो। शीघ्र ही, पृथ्वी के जीवन की स्मृति समाप्त हो जायेगी और तब पीड़ाओं से मुक्ति और शांति (प्राप्त) होगी। अगरबत्ती की दूसरी काड़ी जलाई जाती है, ताकि, दुविधाग्रस्त आत्मा को पथप्रदर्शन किया जा सके।''

मेरे नीचे, भिक्षुओं के उच्चारण बढ़ते गए और विस्तारित हो गए। दोबारा, जैसे ही ट्रापा ने अगरबत्ती की दूसरी काड़ी जलाई और वह अंतरतम के प्रति नमन करने की प्रक्रिया से होकर गुजरा और अगरबत्ती को बदल–बदलकर हर कोने में दिखाया, मंदिर की दीवारें सांस लेती हुईं, उच्चारण के साथ–साथ स्वरैक्य (unison) में हिलती हुईं दिखाई दीं। बायोवृद्ध लामा के आसपास, प्रेत आकृतियॉं, जो अभी निकट भूतकाल में, बिना किसी तैयारी के, इस जीवन से गुजर गईं थीं, और जो अब, पथप्रदर्शन के बिना, अकेले घूम रहीं थीं, इकट्ठी हो गईं।

लहराती हुई छायाऐं, उछलती हुईं और अभिश्राप से ग्रस्त आत्माओं की तरह छटपटाती हुईं दिखाई दीं : मेरी स्वयं की चेतना, मेरे दृष्टिकोण, मेरी भावनाऐं भी, दोनों लोकों के बीच झूलती रहीं। एक में, मैं, अपने नीचे होने वाली प्रार्थना की प्रगति पर तन्मय होकर, ध्यानपूर्वक झांक रहा था, और दूसरे में, मैंने 'लोकों के बीच (between worlds)' को देखा, जहॉं निकट भूत में गई हुईं आत्माऐं, अजनबीपन के अज्ञात डर से, परेशान हो गई थीं। पृथक्कृत आत्माऐं (isolated souls), चिपकने वाले अंधकार में तर, लपेटी हुई, अपने भय और अकेलेपन के कारण चीख रहीं थीं। एक दूसरे से अलग–अलग, अपने विश्वास की कमी के कारण दूसरी सबों से अलग, वे इतनी अचल थीं, जैसे कि कोई याक, पहाड़ी दल–दल में फंसकर होता है। 'बीच के लोकों' के चिपकने वाले अंधकार में, जिससे केवल मंदी नीली रोशनी के द्वारा छुटकारा पाया जा सकता है, वयोवृद्ध लामा ने, उन प्रेत आकृतियों के प्रति, फिर उच्चारण, आमंत्रण किया ;

''हमारी आत्माओं की आवाज सुनो। ये माया का लोक है। जैसे ही मनुष्य, महान यथार्थता में मरा कि वह पृथ्वी पर फिर दुबारा जन्म ले सकता है, इसलिए उसको पृथ्वी पर मरना चाहिए, ताकि वह बृहत्तर यथार्थता में पृथ्वी पर दुबारा जन्म ले सके : मृत्यु कहीं नहीं है, केवल जन्म है, मृत्यु की पीड़ा, जन्म की पीड़ा है। अगरबत्ती की तीसरी काड़ी, इसलिए जलाई जाती है कि एक आत्मा, जो यातना में है, का पथ प्रदर्शन किया जा सके।''

मेरी चेतना में, दूरानुभूति से एक आदेश (telepathic command) आया; ''लोबसांग! तुम कहॉं हो ? अब मेरे पास आओ!'' एक बड़े प्रयास के द्वारा, स्वयं को इस लोक में वापस झटका देते हुए, मैं अपने सुन्न पड़े पैरों पर लड़खड़ाया और डगमगाता हुआ, छोटे दरवाजे से बाहर गया। ''मैं आ रहा हूँ, आदरणीय श्रीमान्!'' मैंने अपने शिक्षक के बारे में सोचा। ठंडी रात में, पानी आती हुई अपनी ऑखों को मलते हुए, मंदिर की सुगंधित धूम और ऊष्मा के बाद, मैं टटोलकर चला और अपना रास्ता, पृथ्वी के आधार के काफी ऊपर, अनुभव किया, जहॉं मुख्य प्रवेशद्वार के ठीक ऊपर एक कमरे में, मेरे शिक्षक, मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्यों ही उन्होंने मुझे देखा, वे मुस्कराये। ''हे भगवान! लोबसांग!'' वह खुशी से चिल्लाये, ''तुम ऐसे दिख रहे हो, मानो तुम एक प्रेत हो!'' ''श्रीमान्'' मैंने उत्तर दिया, ''मैंने अनेक देखे हैं।''

''आज रात को, लोबसांग, हम यहीं रहेंगे,'' लामा ने कहा। ''हम कल जायेंगे और राज्यज्योतिषी को मिलेंगे, तुमको रुचिपूर्ण अनुभव होगा; परंतु अभी ये समय है, पहले खाने का, और तब सोने का .....'' जब हमने खाना खाया ; जो मैंने मंदिर में देखा था, उस पर विचार करते हुए और इस पर आश्चर्य करते हुए कि, ये किस प्रकार से ''माया का लोक था,'' हम पहले से ही विचार मग्न थे। शीघ्र ही, मैंने अपने अच्छे से भोजन को समाप्त किया और मुझे आवंटित किये गए अपने कमरे में गया। अपनी पोशाक में खुद को लपेटते हुए, मैं लेट गया और शीघ्र ही गहरी नींद में सो गया। सपने

(dreams), रात्रिचित्र (nightmares) और अनोखे प्रभावों ने, मुझे पूरी रात पीड़ा पहुँचायी।

मैंने सपना देखा कि मैं पूरी तरह जगा हुआ, उठकर बैठा हुआ था,, और जैसे कि, किसी चीज के बड़े–बड़े गोले, तूफान में धूल की तरह, मुझ पर आये। मैं उठकर बैठा हुआ था, तभी बहुत दूरी से, छोटे–छोटे धब्बे, बड़े, औरबड़े होते हुए, जबतक कि मैं ये नहीं देख सका कि गोले, जैसे वे अब थे, सभी रंगों के थे, उभरते रहे। किसी आदमी के सिर के आकार तक बढ़ते हुए, वे मेरी तरफ दौड़े और मुझे निशाना बनाया। मेरे सपने में– यदि ये स्वप्न था!–मैं अपने सिर को यह देखने के लिए नहीं घुमा सकता था कि, वे कहॉ चले गए; वहॉ केवल, ये अंतहीन गोले थे, न कहीं से आते हुए और मेरे पीछे, न कहीं को जाते हुए ? इसने मुझे बहुत बड़े आश्चर्य में डाल दिया कि, इनमें से कोई भी गोला मुझको टकराया नहीं। वे ठोस दिखाई देते थे, फिर भी, मेरे लिए ये कोई पदार्थ नहीं था। ऐसी भयानक उदासी के साथ, जिसने मुझे पूरा जगाकर, चौंका दिया, एक आवाज ने मेरे पीछे कहा, ''जैसे कोई प्रेत, किसी मजबूत, मंदिर की ठोस दीवार को देखता है, अब तुम भी, वैसे ही देख रहे हो!'' मैं डर से कांप गया; क्या मैं मर चुका था ? क्या मैं रात को मर गया था ? परंतु मैं मृत्यु के बारे में चिंत्ति क्यों था ? मैं जानता था कि, तथाकथित मृत्यु, मात्र पुर्नजन्म है। मैं लेट गया और अंत में, एक बार फिर सो गया।

पूरा लोक हिल रहा था टूट रहा था और पागलपन के ढंग से उलट–पुलट हो रहा था। मैं, ये सोचते हुए कि मंदिर मेरे आसपास गिर रहा है, बड़े खतरे के साथ उठ बैठा। रात अंधेरी थी, ऊपर तारों के प्रकाश की, मात्र भ्रमपूर्ण छाया के साथ, तारों की प्रेतात्मक चमक। अपने ठीक ऊपर टकटकी लगाते हुए, भय के कारण मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मुझे लकवा मार गया था; मैं अपनी उॅगली नहीं हिला सकता था और उससे भी खराब–संसार बड़ा होता जा रहा था। दीवारों के चिकने पत्थर खुरदरे हो गए और वे नष्ट हो चुके ज्वालामुखियों की छिद्रमय चट्टानें बन गए। पत्थरों के छेद बढ़े, और बढ़े और मैंने देखा कि वे सपने के प्राणियों के द्वारा, जो मैं लामा मिंग्यार डोंडुप के अच्छे जर्मन सूक्ष्मदर्शी के द्वारा देख चुका था, आबाद हो गए।

संसार बढ़ा, और बढ़ा, डरे हुए प्राणी आश्चर्यजनक आकार तक बढ़े, समय के साथ इतने बड़े होते हुए कि, मैं उनके रंध्रों (pores) को देख सकता था! संसार बढ़ा और बढ़ता गया, इसने मुझे अपने अन्दर समाहित कर लिया और मैं छोटा और छोटा होता जा रहा था। मैं इसके प्रति सावधान हुआ कि, धूल का एक तूफान घुमड़ता आ रहा था। मेरे पीछे कहीं किसी स्थान से, धूल के कण चीख रहे थे, परंतु फिर भी किसी ने मुझे छुआ नहीं। वे शीघ्रता से बढ़े और बड़े बढ़ते गए। उनमें से कुछ इतने बड़े थे जैसे कि आदमी का सिर, दूसरे इतने बड़े थे जैसे कि हिमालय पर्वत। परंतु फिर भी किसी ने मुझे छुआ नहीं। फिर भी, वे तबतक इतने बड़े होते गए, जबतक कि मेरे आकार सम्बंधी सभी ज्ञान समाप्त नहीं हो गए, जबतक कि मैंने समय के सभी ज्ञानों को खो नहीं दिया। अपने सपने में, मैं तारों के बीच में ठंडा और गतिहीन, लेटा हुआ दिखाई दिया, जबकि निहारिका (galaxy) के बाद निहारिका, मेरे पीछे गुजरती गई और बहुत दूरी में समाप्त होती गई। मैं कितनी देर तक इसप्रकार बना रहा, मैं नहीं कह सकता। ऐसा लगा, मानो मैं, शाश्वत्ता की पूरी अवधि भर वहॉ लेटा रहा। काफी लंबे समय बाद, एक पूरी निहारिका, ब्रह्माण्डों की एक पूरी श्रृखंला, सीधे मेरे ऊपर झूल गई। ''यह अंत है!'' मैंने सोचा, ज्यों ही लोकों की बहुलता ने, अस्पष्टरूप से मेरे अंदर टक्कर मारी।

''लोबसांग! लोबसांग! क्या तुम स्वर्ग के क्षेत्रों को चले गए हो?'' आवाज बढ़ी और मेरे पत्थर के प्रकोष्ठ की दीवारों से बार–बार गॅूजती हुई, ब्रह्माण्ड के आस–पास के लोकों से टकराकर आती हुई....., बार–बार गूंजी। कष्ट के साथ, मैंने अपनी ऑखें खोलीं और उनको अपने केन्द्र में लाने का प्रयास किया। मेरे ऊपर, चमकदार तारों का एक गुच्छा था, जो कुछ हदतक परिचित दिखाई दिया। तारे, जो लामा मिंग्यार डोंडुप के कृपालु चेहरे के द्वारा विस्थापित किए जाने पर, धीमे–धीमे गायब हुए। वह मुझे धीमे से झकझोर रहे थे। चमकदार धूप, कमरे में प्रवाहित हो रही थी। सूर्य की एक किरण

ने धूल के कुछ कणों को प्रकाशित किया, और वे इन्द्रधनुष के सभी रंगों के साथ चमके।

''लोबसांग! सबेरा बहुत आगे बढ़ गया है। मैंने तुम्हें सोने दिया परंतु अब, ये तुम्हारे खाने का समय है और तब हम अपने रास्ते पर चलेंगे।'' डर के साथ, मैं अपने पैरों पर हड़बड़ाया। आज सुबह, मैं 'उदास' था! मेरा सिर, मुझे अत्यधिक बड़ा लग रहा था और मेरा मन अभी भी रात के स्वप्नों में खोया हुआ था। अपनी नाममात्र की वस्तुओं को, अपनी पोशाक के सामने के हिस्से में रखते हुए, मैंने त्सम्पा की खोज में कमरा छोड़ दिया, हमारा सह खाद्य। गिरने के भय से, कठोरता से लटकते हुए, मैं, खूंटी वाली सीढ़ियों से नीचे गया। नीचे वहॉ, जहॉ रसोईये भिक्षु, आस–पास मटरगस्ती कर रहे थे।

''मैं खाने के लिए आया हूँ,'' मैंने मधुरता से कहा। ''खाना ? सुबह के इस वक्त ? यहॉ से दफन हो जाओ!'' प्रमुख रसोईया भिक्षु दहाड़ा। बाहर पहुँचते हुए, वह मुझे एक मुक्का मारने ही वाला था, तब एक दूसरा भिक्षु भर्राई हुई आवाज में फुसफुसाया, ''ये लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ है !'' प्रमुख रसोईया भिक्षु उछल पड़ा, मानो कि उसे बर्र ने डंक मार दिया हो, तब उसने अपने सहायक को दहाड़ते हुए कहा, ''ठीक है! ? तुम किस चीज का इंतजार कर रहे हो ? इस बच्चे को अपना नाश्ता दो!'' सामान्यतः, मेरे अपने चमड़े के बटुऐ में, जिसे सभी भिक्षु अपने साथ ले जाते है, पर्याप्त जौ (barley) होना चाहिए था, परंतु चूँकि हम यात्रा में थे, मेरी आपूर्तियॉ (supplies) समाप्त हो गईं थीं। सभी भिक्षु, कोई बात नहीं, भले ही वे चेला, ट्रापा या लामा हों, जौ से भरा हुआ चमड़े का थैला, और उसे खाने के लिए एक कटोरा, अपने साथ ले जाते थे। त्सम्पा को मक्खन वाली चाय के साथ मिलाया जाता था और इस प्रकार तिब्बत का सहखाद्य उपलब्ध कराया जाता था। यदि तिब्बत के लामामठ अपनी भोजन सूचियों (menus) को छपवायें, तो वहॉ केवल एक ही शब्द छापना पड़ेगा, त्सम्पा!

अपना खाना खाने के बाद कुछ हद तक तरोताजा होते हुए, मैं लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ चला और हमने घोड़े की पीठ पर सबार होकर, राज्यज्योतिषी (state oracle) के लामामठ के लिए, यात्रा प्रारंभ की। जब तक हमने यात्रा की, हमने (परस्पर) बात नहीं की, मेरे घोड़े की एक विशेष चाल थी, जिसके कारण, यदि मैं अपने स्थान पर बैठे रहना चाहूँ, तो मुझे पूरा ध्यान देने की आवश्यकता होती थी। जैसे ही हम लिंगखोर वाली सड़क पर आगे बढ़े, तीर्थयात्रियों ने मेरे शिक्षक की उच्चश्रेणी की पोशाक को देखते हुए, उनसे आशीर्वाद देने के लिए निवेदन किया। इसे पा लेने पर, ये देखते हुए, मानो कि वे मोक्ष के आधे रास्ते पर थे, उन्होंने अपनी पवित्र परिक्रमा जारी रखी। शीघ्र ही, हमने अपने घोड़ों को, फर (willow) के पेड़ों के झुरमुटों के बीच चलाया और पथरीले रास्ते पर, जो राज्यज्योतिषी के घर की ओर जाता था, आ गए। ऑगन में, भिक्षु सेवकों ने हमारे घोड़ों को हमसे ले लिया और कम–से–कम मैं, धन्यवादपूर्वक, अंत में, जमीन पर उतरा। वह स्थान भीड़ भरा था। वहॉ उपस्थित होने के लिए, उच्चतम लामा लोग, हमारे देश की सभी दिशाओं से आये थे। राज्यज्योतिषी, उन शक्तियों के साथ वार्तालाप करने जा रहे थे, जो सम्पूर्ण विश्व के ऊपर शासन करतीं हैं। मुझे, अंतरतम के खास आदेशों के द्वारा, खास व्यवस्था के अंतर्गत, वहॉ उपस्थित होना था। लामा मिंग्यार डोंडुप के बगल में, हमें वह स्थान दिखाया गया, जहॉ हमें सोना था, दूसरे अनेक चेलों के साथ, किसी शायिका (dormitory) में नहीं। जैसे ही हम, प्रमुख भवन के एक छोटे मंदिर से होकर गुजरे, मैंने सुना ''हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो। ये मायालोक है।''

''श्रीमान्!'' जब हम अकेले थे, मैंने अपने शिक्षक से कहा, ''यह लोक, किस प्रकार से माया का लोक है ?'' उन्होंने एक मुस्कुराहट के साथ मेरी तरफ देखा। ''ठीक है,'' उन्होंने उत्तर दिया, ''यथार्थ क्या है ? तुम इस दीवार को छुओ और (तुम देखोगे कि) तुम्हारी उंगली पत्थर के द्वारा रोक दी जाती है। इसलिए तुम ये तक्र देते हो कि दीवार, एक ठोस के रूप में मौजूद है, जिसमें से कोई भी चीज आर'–पार नहीं जा सकती। खिड़कियों के परे, हिमालय की पर्वत श्रेणियॉ, पृथ्वी की रीढ़ की हड्डी की तरह, मजबूती से खड़ी हैं। फिर भी, एक प्रेत (ghost) और तुम, अपने सूक्ष्मशरीर से, पर्वतों के पत्थरों

के बीच से, जैसे कि तुम हवा में चल फिर सकते हो, स्वतंत्रतापूर्वक घूम सकते हो।'' ''परंतु ये सब माया कैसे है ?'' मैंने पूछा। ''रात को मैंने एक सपना देखा, जो वास्तव में, एक भ्रम था; मैं इसके सोचने के विचार पर भी, पीला पड़ता अनुभव करता हूँ!'' मेरे शिक्षक ने, जब मैंने उन्हें उस स्वप्न के बारे में बताया, इसे असीम धैर्य के साथ सुना, और जब मैंने अपनी कहानी खत्म की तो उन्होंने कहा, ''मुझे तुम्हें माया के लोक के बारे में बताना पड़ेगा। यद्यपि, एक क्षण के लिए ही सही, हम पहली बार राज्यज्योतिषी से मिल लें।''

राज्यज्योतिषी, आश्चर्यजनक रूप से, पतले और बहुत बीमार से दिखते हुए, एक नौजवान व्यक्ति थे। मुझे उनके सामने प्रस्तुत किया गया और उनकी घूरती हुई ऑखों ने, मेरी रीढ़ में होकर ऊपर नीचे दौड़ते हुए, डर के कारण खुजलाहट पैदा करते हुए, सीधा मुझ में होकर, मुझे जला दिया। ''हॉ! तुम हो, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ,'' उन्होंने कहा। ''तुम्हारे अंदर शक्ति है; तुम्हें ज्ञान भी मिलेगा। मैं तुम्हें बाद में मिलूँगा।'' लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरे प्रिय मित्र, मुझसे अच्छी तरह प्रसन्न दिखाई दिए। ''तुम हर बार, हर परीक्षा पास करते हो, लोबसांग!'' उन्होंने कहा। ''अब आओ, हम देवताओं के अभयारण्य में आराम करेंगे और बात करेंगे।'' जब हम साथ–साथ चले, वे मुझे देखकर मुस्कुराये। ''बात करो, लोबसांग,'' उन्होंने टिप्पणी की, ''मायालोक के संबंध में।''

जैसे कि मेरे शिक्षक पहले से ही जानते थे, अभयारण्य उजड़ा हुआ था। पवित्र प्रतिमाओं के सामने, उनकी छायाओं को उछलता और चलता–फिरता बनाते हुए, मानो कि वे किसी उत्तेजक नृत्य में हों, टिमटिमाते हुए दीपक जल रहे थे। अगरबत्ती का धुंआ, हमारे ऊपर निचले स्तर का बादल बनाते हुए, ऊपर की तरफ घुमड़ रहा था। हम व्याख्याता पीठ (lectern) के बगल से बैठे, जहॉ से पाठक, पवित्र पुस्तकों में से पढ़ेगा। हम चिंतन के मनोभाव में, उँगलियॉ आपस में फंसाये हुए, पालथी मारकर बैठे।

''ये भ्रम का लोक है,'' मेरे शिक्षक ने कहा, कारण, हम आत्माओं से, हमें सुने जाने के लिए कहते हैं क्योंकि, वे अकेले ही यथार्थलोक में हैं। हम कहते हैं, जैसा कि तुम अच्छी तरह जानते हो, हमारी आत्माओं की आवाज को सुनो, हम ये नहीं कहते, कि हमारी भौतिक आवाज को सुनो। मुझे सुनो और बीच में मत टोको, क्योंकि, ये हमारी आंतरिक आस्थाओं का आधार है। जैसा मैं तुम्हें बाद में समझाऊँगा, लोग, जो पर्याप्त रूप से उन्नत नहीं हैं, उनको पहले से ही विश्वास, जो उन्हें बचाकर रखता है, उन्हें ये अनुभव कराता है कि, एक शुभेच्छु पिता, या माता, उनकी देखभाल कर रही है, रखना चाहिए। केवल तब, जब कोई उचित स्थिति तक उन्नत हो जाता है, कोई उसे स्वीकार कर सकता है, जो अब मैं तुम्हें बताऊँगा।'' मैंने अपने शिक्षक को, ये सोचते हुए घूरा कि, मेरे लिए वह पूरा संसार थे, ये आशा करते हुए कि हम सदैव ही साथ–साथ रहेंगे।

''हम आत्मा के प्राणी हैं,'' उन्होंने कहा, ''हम बुद्धि का उपहार प्राप्त, विद्युत आवेशों के समान हैं। ये विश्व, ये जीवन, नक्र है, ये परीक्षण स्थल है, जहॉ, अपने पूरे हाड़–मांस के शरीर के ऊपर नियंत्रण को सीखने की पीड़ा के द्वारा, हमारी आत्मा शुद्ध की जाती है। जैसे एक कठपुतली, डोरियों के द्वारा नियंत्रित की जाती है और कठपुतली नचाने वाले के द्वारा नचाई जाती है, वैसा ही, विद्युत बलों के द्वारा, हमारा हाड़–मांस का शरीर, हमारा आत्मा[5], हमारे अधिस्वयं (overself) के अधीन किया जाता है। एक अच्छा कठपुतली नचाने वाला, ये भ्रम पैदा कर सकता है कि, लकड़ी की कठपुलियॉ जिंदा है, और वे अपनी खुद की इच्छाशक्ति के द्वारा अभिनय करती हैं। उसी प्रकार हम, जबतक कि हम अच्छा न सीख लें, मानते हैं कि, हमारा केवल हाड़–मांस का ये शरीर, वह चीज है, जो अर्थ रखता है। पृथ्वी के, आत्मा को दबाने वाले वातावरण में, हम आत्मा को, जो वास्तव में, हमको नियंत्रित करता है, भूल जाते हैं। हम सोचते हैं कि, हम चीजों (क्रियाओं) को अपनी इच्छा से करते हैं और हम केवल अपनी चेतना

5 अनुवादक की टिप्पिणी : संस्कृत भाषा में आत्मा को पुल्लिंग (masculine) माना जाता है।

के प्रति उत्तरदायी हैं। इसलिए, लोबसांग, हमें पहला भ्रम ये होता है कि हम, भ्रम की कठपुतलियॉ, हाड़–मांस का शरीर ही, वह चीज है, जो सार्थक है। मेरी उलझी हुई अभिव्यंजना (expression) के ऊपर नजर डालते हुए वे रुके। ''ठीक है ?'' उन्होंने पूछा, ''तुम्हें और क्या परेशानी है ?''

''श्रीमान्!'' मैंने कहा, ''मेरे विद्युत बलों की डोरियॉ कहॉ हैं ? मैं कोई भी चीज नहीं देखता, जो मुझे मेरे अधिस्वयं के साथ सम्बंधित करती हो!'' जैसे ही उन्होंने जबाव दिया, वे हॅसे, ''क्या तुम हवा को देख सकते हो, लोबसांग ? नहीं, जबतक कि, तुम हाड़–मांस के शरीर में हो।'' आगे की तरफ झुकते हुए, ज्यों ही मैंने उनकी चुभती हुई ऑखों पर टकटकी लगाई, मुझ में से जीवन को पूरी तरह बाहर निकालते हुए, उन्होंने मेरी पोशाक को पकड़ लिया। ''लोबसांग!'' उन्होंने कठोरता से कहा, ''क्या तुम्हारा दिमाग पूरा उड़ गया है ? क्या तुम, वास्तव में, गर्दन से ऊपर की तरफ, केवल हड्डी हो ? क्या तुम रजत तंतु (silver cord), जो विद्युतबल को जोड़ने वाली रेखाओं का समूह है – यहॉ – तुम्हारी आत्मा के साथ, को भूल गये ? वास्तव में, लोबसांग, तुम माया के लोक में हो!'' मैंने अपना चेहरा लाल होता हुआ महसूस किया। वास्तव में, मैं रजत तंतु के संबंध में जानता था, नीले से रंग की वह तंतु, जो भौतिक शरीर को आत्मा के साथ जोड़ती है। कई बार, जब मैंने सूक्ष्मशरीर से यात्रायें कीं, इस तंतु को प्रकाश और जीवन के साथ कांपते हुए और झटका खाते हुए, देखा था। ये गर्भनाल (umbilical cord) की तरह थी, जो मॉ को, उसके नवजात शिशु के साथ जोड़ती है, यदि रजत तंतु को काट दिया जाये, 'बच्चा' जो केवल भौतिक शरीर था, एक क्षण के लिए भी अस्तित्व में नहीं रह सकता था।

मैंने ऊपर देखा, मेरे शिक्षक, मेरी टोका–टोकी के बाद, उसे जारी रखने के लिए तैयार थे। ''जब हम भौतिक विश्व में हैं, हम ये सोचना प्रारंभ कर देते हैं कि, केवल भौतिक विश्व ही सार्थक है। ये अधिस्वयं की रक्षात्मक युक्तियों (safty devices) में से एक है; यदि हम आत्मा के लोक को, उसकी प्रसन्नता के साथ याद रख पाते, हम केवल इच्छा के प्रबल प्रयास के द्वारा ही, यहॉ बने रहने में समर्थ हो सकते थे। यदि हम अपने पिछले जीवनों को याद रखते, तब हम शायद, इस जीवन की तुलना में, अधिक महत्वपूर्ण होते, हमको आवश्यक विनम्रता नहीं मिलती। हम लाई हुई कुछ चाय पियेंगे और तब मैं तुम्हें, एक चीनी आदमी के, मृत्यु से वापस लाये हुए जीवन को, और मृत्यु के साथ, आगामी विश्व में उसके पुनर्जन्म को दिखाऊॅगा या कहूॅगा।'' लामा ने अपना हाथ, अभ्यारण्य में, उस छोटी चांदी की घंटी को बजाने के लिए, आगे बढ़ाया, तब वे मेरी अभिव्यक्ति (expression) के ऊपर रुके।'' ठीक है ?'' उन्होंने पूछा, ''तुम्हारा प्रश्न क्या है ?'' ''श्रीमान्!'' मैंने उत्तर दिया, ''केवल एक चीनी आदमी ही क्यों ? कोई तिब्बती आदमी क्यों नहीं ?'' ''क्योंकि,'' उन्होंने जबाव दिया, ''यदि मैं एक तिब्बती कहता हूॅ, तो तुम – गलत परिणामों के साथ, उसके साथ एक नाम, जिसे तुम जानते हो, सम्बंधित करना चाहोगे। उन्होंने घंटी को बजाया और एक सेवक भिक्षु हमारे लिये चाय लाया। मेरे शिक्षक ने विचारपूर्वक मेरी तरफ देखा। ''क्या तुम अनुभव करते हो कि, इस चाय को पीने में, हम करोड़ों विश्व निगल रहे हैं ?'' उन्होंने पूछा। ''तरल पदार्थों में आण्विक चीजें अधिक दूरी पर होती हैं। यदि तुम इस चाय के परमाणुओं को बढ़ा सको, तो तुम पाओगे कि वे, एक उफनती हुई झील के किनारे से, बालू की भॉति लुढ़कते हैं। एक गैस, हवा स्वयं, अणुओं से, छोटे–छोटे कणों से मिलकर बनी होती है। तथापि, ये विषयांतर है, हम एक चीनी आदमी की मृत्यु और उसके जीवन की चर्चा करने जा रहे थे।'' उन्होंने अपनी चाय समाप्त की और जबतक, मैं अपनी चाय को समाप्त कर पाऊॅ, मेरी प्रतीक्षा की।''

''सेंग (seng) एक वृद्ध चीनी अधिकारी था,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''उसका जीवन भाग्यशाली रहा था और अब, उसके जीवन के संध्याकाल में, उसे महान संतोष का अनुभव हुआ। उसका परिवार बड़ा था, उसकी तमाम रखेलैं (concubines) और गुलाम थे। चीन का सम्राट, स्वयं ही उसके समर्थन में था। जैसे ही उसकी बूढ़ी ऑखें, निकट दृष्टि से, उसके कमरे की खिड़कियों के माध्यम से घुसतीं, वह नाचते हुए मोरों के साथ, सुन्दर बगीचों को मंद–मंद पहचान सकता था। चूॅकि दिन बूढ़ा हो चुका

था, पेड़ों पर वापस जाती हुई चिड़ियों का कोमल गाना, उसके असफल होते हुए कानों में पड़ा। सेंग वापस लेटा, (उसने) अपनी गद्दी के ऊपर आराम किया। वह अपने आप में, मृत्यु की सरकती हुई उँगलियों को, अपने जीवन के बंधनों को खोलते हुए अनुभव कर सकता था। धीमे–धीमे, खूनी लाल रंग का सूर्य, प्राचीन पेगोड़ा (pagoda)[6] के पीछे डूब गया। धीमे–धीमे, बूढ़ा सेंग अपनी गद्दियों पर वापस लेट गया, उसके दांतों में से भटकती हुई, एक कठोर सरसराती हुई सांस। सूर्य का प्रकाश मंद पड़ गया, और कमरे में छोटे दीपक जलाये गये, परंतु बूढ़ा सेंग जा चुका था, वह सूर्य की अंतिम मरती हुई किरणों के साथ, चला गया।'' मेरे शिक्षक ने, ये निश्चय करने के लिए कि, मैं उन्हें समझ पा रहा हूँ, मेरी तरफ देखा और तब उन्होंने कहना जारी रखा।

''बूढ़ा सेंग, अपने शरीर की चटकती हुई और खामोशी में जोर–जोर से सांस लेती हुई आवाजों के साथ, अपनी गद्दियों पर, कंधे से झुका हुआ लेटा था, अब धमनियों और शिराओं में और अधिक खून नहीं दौड़ रहा था, शरीर के तरल, उसमें और अधिक आवाज नहीं कर रहे थे। बूढ़े सेंग का शरीर मर चुका था, पूरी तरह समाप्त हो गया था और अब किसी उपयोग का नहीं था। परंतु, एक अतीन्द्रियज्ञानी, यदि कोई वहॉ उपस्थित होता, तो वह नीले प्रकाश की एक बाड (haze), बूढ़े सेंग के शरीऱ के आसपास से होकर निकलती हुई देखता। क्षैतिज रूप से उसके ऊपर तैरती हुई, पतली होती हुई, रजत तंतु से जुड़ी हुई, एक आकृति, तब उस शरीर से ऊपर उठती। धीमे–धीमे, रजत तंतु पतला होता और अलग हो जाता। आत्मा, जो बूढ़ा सेंग थी, तैर कर अलग चली जाती। एक सुगंध के धुए की तरह से तैरती, दीवारों में होकर, बिना प्रयास ही गायब हो जाती।'' लामा ने अपने कप को दोबारा भर दिया, देखा कि मैं भी चाय पी लूँ, तब उन्होंने कहना जारी रखा।

''आत्मा, उन आयामों में होकर, जिसे पदार्थवादी मन नहीं समझ सकता, वेरोकटोक वाले राज्य में, तैरती चली गई। अंत में, ये एक आश्चर्यजनक उद्यान के क्षेत्र में पहुँची, जिसमें जहॉ–तहॉ छितरी हुईं बड़ी–बड़ी इमारतें बनी थीं, जिनमें से एक पर जाकर वह रुक गया, यहॉ उस आत्मा ने, जो बूढ़े सेंग की थी, प्रवेश किया और दमकते हुए तल के आर–पार, उसने अपना रास्ता बनाया। एक आत्मा, लोबसांग, अपने खुद के आसपड़ौस में, उतनी ही ठोस है, जैसे कि तुम, इस विश्व में हो। आत्मा के लोक में, आत्मा दीवारों के द्वारा सीमित की जा सकती है, और एक समतल पर चलती है। वहॉ आत्मा की क्षमताऐं और प्रतिभाऐं, उनसे भिन्न होतीं हैं, जिन्हें हम पृथ्वी पर जानते हैं। यह आत्मा घूमती रही और अंत में, एक छोटे प्रकोष्ठ में घुसी। नीचे बैठते हुए, उसने अपने सामने वाली दीवार को घूरा। अचानक ही दीवार गायब होती हुई दिखी, और उसके स्थान पर उसने दृश्य देखे, अपने जीवन के दृश्य। उसने वह देखा, जिसे हम आकाशीय अभिलेख (akashic record) कहते हैं, जो उस सबका अभिलेख है, जो कभी यहॉ हुआ और जिसे तुरंत ही, जो प्रशिक्षण प्राप्त हैं, उनके द्वारा देखा जा सकता है। यह उस हर एक के द्वारा देखा जाता है, जो इस पृथ्वी के जीवन से परे, अगले जीवन में गुजर जाता है, क्योंकि आदमी, अपनी खुद की सफलता और असफलताओं के लेखे देखता है। मनुष्य अपने भूतकाल को देखता है, स्वयं के बारे में निर्णय लेता है। यहॉ कोई कठिनतर निर्णायक नहीं है। हम भगवान के सामने कांपते हुए नहीं बैठते; हम बैठते हैं और वह सबकुछ देखते हैं, जो हमने किया और

---

6 अनुवादक की टिप्पिणी : पेगोडा (Pagoda), परंपरागत रूप से बनाई गई, कई तलों वाली मीनार होती है, जिसमें अनेक गुफाऐं होती हैं मूलतः पूर्व एशिया, नेपाल, भारत, चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम, बर्मा, श्रीलंका और एशिया के दूसरे भागों में, परंपरागत रूप से बनाए गए अधिकांश पोगोडा, अधिकांशतः बौद्ध धर्म के धार्मिक उत्सवों को मनाये जाने के लिए बनाये गए थे और इसलिए अक्सर बौद्ध विहारों के आसपास होते थे। कुछ देशों में पोगोडा का अर्थ धार्मिक संरचना होता है। वियतनाम और कंबोडिया में फ्रांसीसी प्रभाव के अंर्तगत, अंग्रेजी शब्द पोगोडा सबसे अधिक सामान्य शब्द है, जिसका अर्थ है पूजा का स्थान, यद्यपि ये इसको वर्णन करने के लिए सही शब्द नहीं है। बौद्ध विहार, आधुनिक पेगोडा, प्राचीन नेपाली स्तूपों का उन्नयन है, जो समाधि जैसी संरचना में होता था और जहॉ पवित्र अवशेष सुरक्षित और सम्मान के साथ रखे जाते थे। प्राचीनतम पेगोडाओं में से सबसे पुराना, पांच मंजिला, लकड़ी का पेगोडा, जो सातवीं शताब्दी में बनाया गया और जो विश्व में लकड़ी की बनी हुई प्राचीनतम इमारत है, जापान में है। काईफेंग का लोहे का पेगोडा, 1049 ईसवीं में चीन में बनाया गया। वियतनाम में, हनोई में, एक स्तंभ वाला पेगोडा है।

सबकुछ भी, जो हम करना चाहते हैं। मैं खामोश होकर बैठा, मुझे ये सब चीज अत्यधिक डुबाने वाली, अभिरुचिपूर्ण लगी। मैं इसको–किसी नीरस पाठ के कार्य से अधिक अच्छी तरह से, घंटों तक सुन सकता था!

आत्मा, जो बूढ़े चीनी सभ्यपुरूष सेंग का था, बैठा और उसने अपने जीवन, जिसमें वह इस पृथ्वी पर, अपने आपको इतना सफल समझा करता था, को दुबारा देखा,'' मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा। ''उसने देखा और उसने अपने अनेकों दोषों के लिए खेद अनुभव किया, और तब वह उठा और उसने, एक बड़े कमरे की तरफ तेजी से जाते हुए, जहॉ आत्मालोक के नर और नारी, बैठकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, प्रकोष्ठ को छोड़ दिया। शांति से, करुणा और समझदारी के साथ मुस्कराते हुए, उन्होंने इसके पहुॅचने की प्रतीक्षा की, उसके मार्गदर्शन पाने की प्रार्थना की। उसने उनके साथ में बैठ कर अपने दोषों को, उन चीजों को, जो उसने करने का प्रयास किया था, करना चाहता था, और उनमें असफल हो गया, उन्हें बताया।'' ''परंतु मैंने सोचा, आपने कहा कि उसका निर्णय नहीं किया गया, उसने स्वयं ही, स्वयं के संबंध में निर्णय लिया!'' मैंने जल्दी से कहा। ''ऐसा है, लोबसांग,''मेरे शिक्षक ने जवाब दिया। ''अपने भूतकाल और उसकी गलतियों को को देखते हुए; वह अब इन सलाहकारों के पास, इनसे कुछ सुझाव पाने के लिए पहुॅचा–परंतु बीच में टोकना नहीं, मुझे सुनो और अपने प्रश्नों को, बाद के लिए बचाकर रखो।''

''जैसे मैं कह रहा था,'' लामा ने कहना जारी रखा, ''आत्मा, सलाहकारों के साथ बैठा और उसने अपनी असफलताओं को उन्हें बताया, इससे पहले कि वह और आगे उन्नति कर सके, उन्हें उन गुणों के बारे में बताया, जो उसे इस आत्मा में बढ़ाने पड़े। पहले आता है, अपने शरीर को देखने के लिए वापस आना; तब विश्राम का एक समय–सैकड़ों साल का समय–और तब उसे, उन अवस्थाओं को पाने के लिये, जो कि, उसकी आगामी प्रगति के लिए आवश्यक होंगे, सहायता दी जायेगी। अंत में, बूढ़े सेंग का आत्मा, अपने शरीर को टकटकी लगाकर देखने के लिए, जो अब दफनाये जाने के लिए तैयार था, पृथ्वी पर वापस गया। तब, बूढ़े सेंग का आत्मा और अधिक नहीं, परंतु आराम करने के लिए तैयार एक आत्मा, परे की भूमि में वापस लौटा। बिना बताये हुए, उसने कुछ अनिश्चित समय के लिए विश्राम किया और पिछले जीवनों के पाठों से सीखते हुए, आने वाले जीवन के लिए तैयार होते हुए, वह पुनः स्वस्थ हुआ। यहॉ, उसके स्पर्श के अनुसार, मृत्यु के परे इस जीवन में, वस्तुऐं और सामिग्रियॉ, उतनी ही ठोस थीं जितनी कि वे, पृथ्वी पर होती थीं। उसने, उस समय तक इंतजार नहीं किया और परिस्थितियों को पहले से पुनर्व्यवस्थित किया गया।''

''मैं इसे पसंद करता हूॅ!'' मैं हर्षातिरेक में चिल्लाया, ''मुझे ये बहुत मजेदार लगा,'' जारी रखने से पहले, मेरे शिक्षक, मेरे ऊपर मुस्कुराये। ''किसी पूर्वनिश्चित समय पर, प्रतीक्षारत आत्मा को बुलाया गया और उसे किसी एक के द्वारा, जिसका कार्य ही ऐसी सेवा प्रदान करने का था, मानव लोक की ओर भेजा गया। वे, होने वाले माता–पिता और घर को देखते हुए, उन संभावनाओं का अनुमान करते हुए कि, उनको यह घर, पाठ सीखने के लिए बांछित सुविधाओं को बर्दाश्त कर सकता है, जिन्हें इसबार सीखा जाना है, उन लोगों की ऑखों से अदृश्य रहते हुए, हाड़–मांस में रुके। संतुष्ट होकर, उन्होंने खुद को वापस कर लिया, महीनों बाद, होने वाली मॉ ने, जब आत्मा ने उसमें प्रवेश किया और जब बच्चा जीवन में आया, अचानक अपने अंदर प्रसन्नता अनुभव की। समय पर मनुष्यों के लोक में बच्चा पैदा हुआ। आत्मा, जिसने कभी बूढ़े सेंग के शरीर को सक्रिय बनाया था, अब बच्चे ली बोंग, जो चीन के मछुआरों के एक गॉव में, कोमल परिस्थितियों में लहलहा रहा था, की अनिच्छुक नाड़ियों और मस्तिष्क के साथ, नये सिरे से संघर्ष कर रहा था। एक बार फिर, आत्मा के उच्चकम्पन, हाड़–मांस के शरीर के निम्नसप्तक (lower octave) के कम्पनों में बदल गये।''

मैं बैठा और मैंने सोचा। तब मैंने कुछ और सोचा। अंत में मैंने कहा, ''आदरणीय लामा, लोग

मृत्यु से क्यों डरते हैं, जो पृथ्वी के कष्टों से मुक्ति के अलावा कुछ नहीं है ?'' ''ये एक संवेदनशील प्रश्न है, लोबसांग'' मेरे शिक्षक ने जबाव दिया। ''हम यदि दूसरे लोकों के आनंदों को याद करते, तो हममें से अधिकांश, यहॉ कठिनाईयों को झेलने में समर्थ नहीं होते, इस कारण से, हमारे अंदर मृत्यु का एक भय जमा दिया गया है।'' मुझ पर एक हास्यास्पद, तिरछी दृष्टि, डालते हुए उन्होंने टिप्पणी की, ''हम में से कुछ, स्कूल को पसंद नहीं करते, उस अनुशासन को पसंद नहीं करते, जो स्कूल में इतना आवश्यक होता है। फिर भी, जैसे–जैसे कोई बड़ा होता जाता है और प्रौढ़ हो जाता है, उसके सामने, स्कूल के लाभ, स्पष्ट होने लगते हैं। वह स्कूल से नहीं भागता और सीखने में आगे बढ़ने की अपेक्षा करता है; न ही, किसी को भी, उसको आवंटित समय से पहले, अपना जीवन समाप्त करने की, ये सलाह देने योग्य है।'' मैंने इस पर आश्चर्य किया, क्योंकि मात्र कुछ दिन पहले, एक निरक्षर और बीमार बूढ़े भिक्षु ने, अपने आपको, ऊॅची लामा कुटी (hermitage) में से फैंक दिया था। वह एक चिड़चिड़ा, बूढा आदमी था, जिसने निराशा के साथ, दूसरों की मदद के सभी प्रस्तावों को मना कर दिया था। हॉ, बूढ़ा जिग्मे (Jigme), लीक से हटकर, अच्छा था, मैंने सोचा। स्वयं के लिए अच्छा था। दूसरों के लिए अच्छा था।

''श्रीमान्!'' मैंने कहा, जब उसने अपने खुद के जीवन को समाप्त किया, तब, जिग्मे भिक्षु गलती पर था ?'' ''हॉ, लोबसांग, वह पूरी तरह गलती पर था,'' मेरे शिक्षक ने जवाब दिया। ''कोई आदमी या औरत, एक निश्चित आवंटित समय की अवधि के लिये, पृथ्वी पर होती है। यदि कोई अपने जीवन को, इस समय से पहले समाप्त कर देता है, तब वह लगभग तुरंत ही, वापस लौटता है। इसप्रकार, जीने के लिए शायद, केवल कुछ महीनों का जीवन, हमको एक बच्चे का चश्मा (दृष्टि) मिलता है। तब आत्महत्या करने वाली आत्मा, शरीर को लेने के लिए वापस आते हुए और उसमें उतना समय बिताते हुए, जो उसे पहले रहना चाहिए था, रहती है। आत्महत्या कभी तक्रसंगत नहीं होती; ये स्वयं के प्रति, स्वयं के अधिस्वयं (overself) के प्रति, भयानक अपराध है।'' ''परंतु श्रीमान्,'' मैंने कहा, ''उनके बारे में क्या, जो उच्चकुल में जन्म लेने वाले जापानी हैं, जो परिवार के अपमान का प्रायश्चित करने के लिए, समारोहपूर्वक आत्महत्या करते हैं ? जो ऐसा करता है, निश्चितरूप से वह, एक बहादुर आदमी है।'' ''ऐसा नहीं है, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक, अत्यधिक जोर देकर कह रहे थे। ''ऐसा नहीं है, बहादुरी, मरने में नहीं है बल्कि, कठिनाईयों के विरुद्ध जीवित रहने में, पीड़ाओं का मुकाबला करने में है। मरना आसान है, जीना–एक बहादुरी का काम है! 'समारोहपूर्ण आत्महत्या' में, गर्व का नाट्कीय प्रबंधन भी, किसी को, अपनी त्रुटियों के प्रति, अंधा कर सकता है। हम यहॉ सीखने के लिए हैं और हम केवल अपने आवंटित समय को पूरा जीकर ही सीख सकते हैं। आत्महत्या कभी भी तक्रसंगत नहीं है!'' मैंने फिर से बूढ़े जिग्मे के संबंध में सोचा। जब उसने खुद की हत्या की, वह बहुत बूढ़ा था। इसलिए जब वह वापस आयेगा, मैंने सोचा, यहॉ पर ये उसका, केवल एक छोटा सा –निवास ही होगा।

''आदरणीय लामा,'' मैंने कहा, ''डर का क्या उद्देश्य है ? हमको, डर के माध्यम से इतना क्यों झेलना पड़ता है ? मैंने पहले ही खोज लिया है कि, अधिकांश चीजें, जिनसे मैं सबसे अधिक डरता हूॅ, कभी नहीं होतीं, फिर भी मैं उनसे डरता हूॅ!'' लामा हॅसे और उन्होंने कहा, ''यह हम सबके साथ होता है। हम अज्ञात से डरते हैं। फिर भी, डर आवश्यक है। डर हमें उस समय प्रेरित करता है, जब हम अन्यथा, आलसी रहे होते। डर हमको अतिरिक्त शक्ति प्रदान करता है, जिसके साथ दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है। डर एक प्रवर्धक (booster) है, जो हमें अतिरिक्त शक्ति, अतिरिक्त प्रोत्साहन देता है, जो हमें अपने आलस्य की प्रवृति (inclination) से, खुद को पार पाने (overcome) के योग्य बनाता है। जबतक कि तुम्हें शिक्षक का या दूसरों के सामने मूर्ख दिखने का डर न हो, तुम अपने स्कूल का काम नहीं करोगे।

भिक्षु अभयारण्य में आते जा रहे थे; चेला लोग, अतिरिक्त सुगंधियों, मक्खन के दीपों को जलाते

हुए इधर–उधर घूम फिर रहे थे। हम अपने पैरों पर खड़े हुए और संध्या की ठंडक में बाहर की तरफ टहल गए, जहॉ हल्की सी हवा ने फर (willow) की पत्तियों के साथ, थोड़ी–सी खिलवाड़ की। बहुत दूर पर, महान तुरहियॉ, पोटाला से बजीं और राज्य के ज्योतिष लामामठ की दीवारों से, धुंधली गूंजें लुढ़क कर बाहर आईं।

अध्याय तीन

राज्यज्योतिषी का लामामठ छोटा था, घनीभूत और अत्यधिक निष्क्रिय (compact and secluded)। कुछ छोटे चेले लापरवाही से आवारा घूम रहे थे। मध्यान्ह के घंटों में, ट्रापाओं का कोई भी समूह, आलस्यपूर्ण गपशप में, धूप से पूरी तरह भीगे हुए आंगन में, आलस्य से नहीं सुस्ता रहा था। बूढ़े आदमी–बूढ़े लामा भी! यहॉ बहुत संख्या में थे। सफेद बालों वाले और वर्षों के भार से झुके हुए वयोवृद्ध आदमी, धीमे–धीमे, अपने कार्यों की ओर जा रहे थे। ये भविष्यदृष्टाओं, सामान्यतः बयोवृद्ध लामाओं, और स्वयं राज्यज्योतिषी का घर था, जिन्हें भविष्यवाणियों, शकुन विचार, भविष्यकथन करने का कार्य सौंपा गया था। कोई भी अनामंत्रित व्यक्ति यहॉ प्रवेश नहीं करता था, कोई भी फालतू व्यक्ति, आराम या खाने की तलाश में, यहॉ नहीं आ सकता था। ये एक स्थान था, जिसके प्रति अनेक लोगों में डर था और जो विशेषरूप से आमंत्रित लोगों के सिवाय, बाकी सभी के लिए वर्जित था। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, इसका अपवाद थे; वह किसी भी समय वहॉ प्रवेश कर सकते थे और वे, वास्तव में, वहॉ स्वागतयोग्य आगंतुक माने जाते थे।

भव्यतापूर्ण पेड़ों की एक झाड़ी, लामामठ को, तांक–झांक करने वाली ऑखों से, निजता (privacy) प्रदान करती थी। पत्थर की मजबूत दीवारें, अतिउत्सुक लोगों से, यदि कोई हो, जो अपनी निष्क्रिय उत्सुकता के कारण, शक्तिमान राज्यज्योतिषी लामा के लिए, अपने आपको जोखिम में डाले, भवनों को सुरक्षा प्रदान करती थीं। पवित्रतम, अंतरतम, जो यहॉ ज्ञान के इस मंदिर में अक्सर आया करते थे, के लिए सावधानीपूर्वक संभाले गए कमरे, एक तरफ हटाकर, रखे गए थे। हवा शांत थी, सामान्य प्रभाव शांति का था। लोग शांति के साथ अपने–अपने महत्वपूर्ण कार्यों को करने जा रहे थे।

वहॉ, शोर करने वाले घुसपैठियों के द्वारा, गुल–गपाड़ा करने का कोई अवसर नहीं था। इस स्थान का गश्त, खाम के शक्तिशाली पुरुषों द्वारा किया जाता था; लंबे–चौड़े आदमी, उनमें से अधिकांश सात फुट लंबे, और कोई भी दो सौ पचास पाउंड (लगभग 115 किलो) से कम वजन का नहीं, जो कई बार हजारों भिक्षुओं के समुदायों के ऊपर व्यवस्था बनाये रखने के प्रभार के साथ, पूरे तिब्बत में पुलिस भिक्षु के रूप में काम पर लगाये जाते थे। भिक्षु–पुलिस, मैदान पर सजग रह कर लगातार घूमती फिरती रहती थी। दोषयुक्त भावना वाले लोगों के लिए, मजबूत लाठी– डंडों को लिए हुए, लगातार निगरानी करते हुए, वे वास्तव में, भयानक दृश्य होते थे। किसी भिक्षु की पोशाक, आवश्यकरूप से, किसी धार्मिक व्यक्ति को नहीं घेरती है; सभी समुदायों में गलत काम करने वाले और आलसी मनुष्य होते हैं, इसलिए खाम के मनुष्य व्यस्त रहते थे।

लामामठ की इमारतें भी, उनके इस आशययुक्त उद्देश्य को बनाये हुए थीं। यहॉ ऊॅची इमारतें नहीं थीं। चढ़ने के लिए ऊॅचे खूॅटीदार खंभे नहीं थे, ये बूढ़े लोगों के लिए था, ऐसे आदमी, जिनकी जवानी की लचक, समाप्त हो चुकी थी, जिनकी हड्डियॉ निर्बल हो गईं थीं। गलियारे, पहुॅचने में बहुत आसान थे, और जो सबसे अधिक उम्र के होते थे, वे आधारतल पर रहते थे। राज्यज्योतिषी खुद भी आधारतल पर, शकुनों के मंदिर के बगल से रहते थे, उनके आस–पास, सबसे बूढ़े लोग, सबसे अधिक विद्वान लोग और खाम के लोगों की भिक्षु–पुलिस के वरिष्ठ लोग रहते थे।

''हम राज्यज्योतिषी को मिलने के लिए जायेंगे,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''उन्होंने तुम्हारे अंदर गहरी रुचि व्यक्त की है और वे तुम्हें, अपने समय में से काफी कुछ, देने के लिए तैयार हैं।'' आमंत्रण–या आदेश–ने मुझे सर्वाधिक उत्साह से भर दिया; भूतकाल में, ज्योतिषी या भविष्यदृष्टा के यहॉ की कोई भी यात्रा, अधिक पीड़ा, आगामी कठिनाईयों का अधिक पुष्टिकरण, बुरे समाचारों को पैदा करने वाली रही थी। मुझे सामान्यतः भी, अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहननी पड़ती थी और जब किसी नीरस बूढ़े आदमी से अफलातूनी बातचीत की श्रृंखला को, मिमयाते हुए सुनना हो, अधिकांशतः, जिसे मैं नहीं सुनना चाहता था, एक फूली हुई बतख की तरह बैठना पड़ता था।। मैंने संदेहास्पदरूप से ऊपर देखा; ज्यों ही

उन्होंने मुझे घूरकर देखा, लामा अपनी मुस्कान को छिपाने का संघर्ष कर रहे थे। स्पष्टरूप से, मैंने रूठकर सोचा, वह मेरा मन पढ़ते रहे हैं! उन्होंने हॅसी में फूट पड़ते हुए कहा, ''तुम जैसे हो, वैसे ही जाओ, किसी की पोशाक की हालत के कारण, राज्यज्योतिषी तुम्हारे ऊपर बिल्कुल दबाब नहीं डालेंगे। वह तुम्हारे बारे में उससे भी अधिक जानते हैं, जो तुम स्वयं के बारे में जानते हो!'' मेरी उदासी गहरा गई, अब मैं और आगे क्या सुनने वाला था, मैंने आश्चर्य किया।

हम गलियारे में नीचे चले और अंदर के आंगन में गये। मैंने, फांसी के फंदे पर जाते हुए आदमी जैसी भावना के साथ, उठती हुई पर्वत श्रृखंलाओं को देखा। लगभग, एक चलते हुए पहाड़ की तरह, मुझको देखते हुए, त्योरी चढ़ता हुआ एक पुलिस भिक्षु, मेरे समीप आया। मेरे शिक्षक को पहचानते हुए, वह स्वागतयुक्त मुस्कान में टूट गया और उसने गंभीरता से दंडवत की। ''आपके चरणकमलों में दंडवत्, पवित्र लामा,'' उसने कहा। ''मुझे अपने आपको, आदरणीय राज्यज्योतिषी के पास, आगे ले जाने की आज्ञा देकर कृतार्थ करें।'' वह हमारे बगल से कदम मिला कर चलने लगा और मैंने पूर्ण निश्चय के साथ अनुभव किया कि, उसके आश्चर्यजनक कदमों से जमीन थर्रा उठती थी।

दो लामा दरवाजे के बगल से खड़े थे, लामा, सामान्य भिक्षु–रक्षक नहीं, हमारे पहुॅचने पर, वे एक तरफ बगल से खड़े हो गए, ताकि हम प्रवेश कर सकें। ''पवित्र आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं,'' एक ने, मेरे शिक्षक के ऊपर मुस्कुराते हुए कहा। ''वे आपकी आने की बाट जोह रहे हैं, मिंग्यार स्वामी,'' दूसरे ने कहा। हम अंदर चले और हमने अपने आपको, कुछ–कुछ मंद प्रकाशित कमरे में पाया। कुछ सेकण्ड के लिए, मैं वास्तव में, बहुत कम ही पहचान सकता था; मेरी ऑखें ऑगन की तीव्र धूप के कारण, चौधिया रहीं थीं। धीमे–धीमे, ज्यों ही मेरी दृष्टि सामान्य की ओर लौटी, मैंने एक खाली कमरे को देखा, जिसमें दीवारों पर, दो चित्रमय यवनिकायें (tapestries) थीं और एक कोने में रखा हुआ, एक छोटा अगरदान, धूम उड़ा रहा था। कमरे के केन्द्र में, एक सादा गद्दी के ऊपर, एक काफी नौजवान आदमी बैठा था, वह पतला और आलसी दिखता था, और मैं, वास्तव में आश्चर्यचकित था, जब मैंने महसूस किया कि, ये तिब्बत का राज्यज्योतिषी था। उसकी ऑखें, कुछ हदतक, बाहर निकलीं हुईं थीं और उन्होंने मुझ पर और मुझ में घूरकर देखा। मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि, वह मेरे पार्थिव शरीर को नहीं, मेरी आत्मा को देख रहे थे।

मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, और मैंने, पारंपरिकरूप से दंडवत किया और उन्हें अभिवादन प्रस्तुत किया। और तब प्रतीक्षा करते हुए, हम अपने पैरों पर खड़े हुए। अंत में, जब शांति निश्चितरूप से असुखद हो रही थी, राज्यज्योतिषी ने कहा, ''स्वामी मिंग्यार, स्वागत है, लोबसांग स्वागत है!'' उन्होंने कहा। उनकी आवाज तारत्व (pitch) में कुछ ऊॅची थी और बिल्कुल कठोर नहीं थी; इसने, काफी दूर से आने वाली आवाज का सा प्रभाव दिया। कुछ क्षणों के लिए, मेरे शिक्षक और राज्यज्योतिषी ने उभय अभिरुचि (common insterest) के मामलों में चर्चा की। तब लामा मिंग्यार डोंडुप ने दंडवत की, वे मुड़े, और उन्होंने कमरे को छोड़ दिया। राज्यज्योतिषी मुझे देखते हुए बैठे और (उन्होंने) अंत में कहा, ''एक गद्दी लाओ और मेरे पास बैठो, लोबसांग।'' मैं एक चौकोर गद्दी लाने के लिए पहुॅचा, जो दूर की दीवार के विरुद्ध रखी थी और उसे वहॉ रखा ताकि, मैं उनके सामने बैठ सकूॅ। कुछ समय के लिए उन्होंने मुझे, कुछ–कुछ अस्थिर मन (moody) से शांति में घूरा, परंतु अंत में, काफी लंबे समय बाद, जब मैं उनकी जांच–पड़ताल के अंतर्गत असुविधा महसूस कर रहा था, वे बोले। तुम ही मंगलबार लोबसांग रंपा हो!'' उन्होंने कहा। ''हम अस्त्तिव के किसी दूसरे चरण में, एक दूसरे को अच्छी तरह जानते थे। अब, अंतरतम के आदेश के द्वारा, मुझे तुम्हें उन आने वाली कठिनाईयों के बारे में, उन परेशानियों को, जिन पर तुम्हें पार पानी है, बताना है।'' ''ओह, श्रीमान्!'' मैं चीखा, ''इस जीवन में इस सबको भुगतने के लिए, मैंने अपने पिछले जीवनों में कुछ भयानक चीजें की होंगी। मेरे कर्म, मेरा पहले से तय किया हुआ भाग्य, किसी के भी भाग्य से अधिक कठोर दिखाई देता है।'' ''ऐसा नहीं है,'' उन्होंने जबाव दिया,

''ऐसा सोचना कि, चूँकि उन्हें इस जीवन में परेशानियॉ मिली हैं, वे आवश्यकरूप से, पिछले जीवन के पापों को भुगत रहे हैं, ये लोगों की बहुत सामान्य गलती है। यदि तुम धातु को एक भट्टी में तपाओ तो, क्या तुम इसलिए ऐसा करते हो कि, धातु ने कुछ गलती की थी और उसे दंडित किया जाना चाहिए ; या तुम ऐसा इसलिए करते हो ताकि, तुम उस चीज के गुणों में सुधार कर सको ?'' उन्होंने तीखी नजर से मुझे देखा और मुझे कहा, ''तथापि, तुम्हारे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, उसे तुम्हारे साथ चर्चा करेंगे। मुझे, तुम्हें केवल भविष्य के बारे में बताना है।''

राज्यज्योतिषी ने चांदी की घंटी को छुआ और तब एक सेवक, शांति से प्रविष्ट हुआ। उसने काफी नीची एक मेज को, हमारे पास, मेरे और राज्यज्योतिषी के बीच में रखा, और स्पष्टरूप से उसने मेज के ऊपर, चांदी के एक सुसज्जित कटोरे को, जिसमें चीनी मिट्टी का अस्तर लगा था, रखा। राज्यज्योतिषी के सामने रखने से पहले, जैसे ही सेवक भिक्षु ने उसे हवा में हिलाया, कटोरे के अंदर, चमकीली लाल लपटों के साथ, कोयले के अंगार दहक उठे थे। फुसफुसाते हुए शब्द के साथ, जिसका आयात (import) मुझ में समा गया, उसने एक अच्छी तरह से नक्काशी किए हुए लकड़ी के डिब्बे को, कटोरे के दांयी तरफ रखा और उतनी ही शांति के साथ चला गया, जितनी के साथ वह आया था। मैं, आसानी से परंतु बीमार, आश्चर्य करते हुए कि ये सब मेरे साथ क्यों होना था, शांत बैठा। हर कोई मुझे बता रहा था कि मुझे, कितना कठोर जीवन मिलने वाला है; वे इसमें प्रसन्न होते दिखते थे। कठिनाई–कठिनाई ही थी, यद्यपि स्पष्टरूप से, मुझे इसके लिए, पुराने, पिछले जीवनों के कुछ पापों का भुगतान नहीं करना था। धीमे से राज्यज्योतिषी आगे पहुँचे और उन्होंने डिब्बे को खोला। एक छोटी सोने की चम्मच के साथ, उन्होंने एक महीन चूर्ण को निकाला और उसे भड़कते हुए अंगारों पर छिड़क दिया।

कमरा एक अच्छी नीली बाड़ (haze) से भर गया; मैंने अपने ज्ञानों को लुढ़कते हुए पाया और मेरी दृष्टि मंद पड़ गई। एक नाप रहित दूरी पर, मैंने एक बड़ी घंटी को बजते हुए देखा। आवाज समीप आई, उसकी तीव्रता बढ़ी और बढ़ती गई, जबतक कि मैंने, अपने सिर को फटता हुआ नहीं पाया। मेरी दृष्टि स्पष्ट हो गई और ज्यों ही धुंए का एक स्तंभ, अनंतरूप से कटोरे में से उठा, मैंने जानबूझ कर, ध्यान से देखा। मैंने धुंऐ में हलचल देखी, हलचल, जो मेरे समीप आई और उसने मुझे निगल लिया, जिससे कि मैं उसका ही एक हिस्सा बन गया। और मेरी समझ के परे, कहीं दूर से, राज्यज्योतिषी की तीव्र से तीव्रतर होती हुई आवाज, मुझ तक पहुँची। परंतु मुझे उनकी आवाज की आवश्यकता नहीं थी, मैं उतनी ही जीवंत्ता के साथ, जितनी के साथ वे देख रहे थे, भविष्य को देख रहा था। समय के एक बिन्दु पर, मैं अलग खड़ा हुआ और मैंने अपने जीवन की घटनाओं को, अपने सामने चलचित्र, मानो एक हमेशा चलती हुई फिल्म के चित्र की तरह चलते हुए देखा। मेरा प्रारंभिक बचपन, मेरे जीवन की घटनाऐं, मेरे पिताजी का तीखापन–सभी मेरे सामने दिखाये गए। एकबार फिर, मैं चाकपोरी के महान लामामठ के सामने बैठा। जैसे ही लामामठ की छतों से आने वाली हवा ने, हड्डी तोड़ने वाले बल के साथ, मुझे पहाड़ी की बगल से नीचे गिराते हुए, मुझ पर कोड़े बरसाये, एकबार फिर, मैंने लौहपहाड़ी की कठोर चट्टानों को अनुभव किया। धुंआ घुमड़ा और चित्र (जिन्हें हम आकाशीय अभिलेख कहते हैं), चलते गए। मैंने फिर अपने दीक्षाग्रहण को देखा, धुंऐ में फूलमाला की तरह से गुथे हुए गुप्त उत्सव, मानो कि, मैं उस समय में दीक्षित नहीं था। चित्रों पर मैंने खुद को, चुंगकिंग को जाने वाली पगडंडी पर, चीन में, अकेले लंबी यात्रा करते हुए देखा।''

चुंगकिंग की तीखी चट्टानों पर, एक अजीब प्रकार की मशीन ने, मुझे हवा में उछाला और एक ओर गिराते हुए, मरोड़ दिया, और मैं–मैं–नियंत्रणों (controls) पर था! बाद में मैंने, ऐसी मशीनों के बेड़े को, अपने पंखों पर, जापान के इतराते हुए, उगते हुए सूर्य के साथ देखा। मशीनों से काले धब्बे गिरे, जो लपटों और धुंऐ में से, पृथ्वी की तरफ, एक–एक के लिए दौड़े। टूटी हुई लाशें स्वर्ग की तरफ

बिखर गईं, और कुछ समय के लिए आकाश में से खून और मनुष्यों के अंगों की वर्षा हुई। जैसे–जैसे, एक–एक करके चित्र चलते गए और मुझे खुद को जापानियों के द्वारा प्रताड़ित किए जाते हुए दिखाया गया, मैं दिल से दुःखी हुआ। मैंने अपना जीवन देखा, कठिनाइयों को देखा, कड़वाहट को महसूस किया। परंतु इसमें से सबसे अधिक दुःख था, पश्चिमी विश्व के कुछ लोगों की धोखेबाजी और बुराइयॉं, जो मैंने देखा, केवल एकमात्र कारण से कि वे ईर्ष्यालु थे, भलाई के लिए किए जाने वाले कार्यों को नष्ट करने पर तुली थीं। चित्र चलते गए और चलते गए, और मैंने अपने जीवन का एक संभावित पथ, अपने द्वारा जिए जाने से पहले देखा।

जैसा मैं अच्छी तरह जानता था, संभावनाओं का भविष्यकथन, बहुत अच्छी तरह से, एकदम सही–सही, किया जा सकता है। कई बार, केवल, कुछ छोटे–मोटे विचलन, अलग होते हैं। एक इंजन चालक की भॉंति, जो उसकी न्यूनतम और अधिकतम चालों को समायोजित कर देता है, किसी की ज्योतिषीय संरचनाऐं (configurations), वह सीमा तय कर देती हैं, जो कोई हो सकता है, और झेल सकता है। ''मेरे लिए एक कठोर जीवन, ठीक है!'' मैंने सोचा। तब मैं इतनी कठोरता से उछल पड़ा कि, मैंने गद्दी को लगभग छोड़ दिया; एक हाथ मेरे कंधों पर रखा गया। ज्यों ही मैं मुड़ा, अब मैंने अपने पीछे बैठे हुए, राज्यज्योतिषी का चेहरा देखा। उनकी दृष्टि, आगे आने वाले कठोर पथ के लिए दुःख से भरी हुई, पूरी तरह करुणामय थी। ''क्या तुम अत्यधिक मनोग्रस्त (psychic) हो, लोबसांग'' उन्होंने कहा, ''मैं सामान्यतः, इन चित्रों को, देखने वालों को दिखा देता हूॅं। अंतरतम, जैसा कोई अपेक्षा करेगा, एकदम सही हैं।''

''वह सब, जो मैं चाहता हूॅं,'' मैंने उत्तर दिया, यहॉं शांति में ठहरने के लिए है। मैं पश्चिमी विश्व को क्यों जाना चाहूॅंगा, जहॉं वे इतने उत्साह से धर्म पर प्रवचन देते हैं – और किसी के पीठ पीछे, उसी का गला काटने का प्रयास करते हैं ?'' '' वहॉं एक कार्य करना है, मेरे मित्र!'' राज्यज्योतिषी ने कहा, ''जिसको पूरा किया ही जाना चाहिए। सभी प्रकार के विरोधों के बावजूद भी, तुम इसे कर सकते हो। इसलिए विशिष्ट और कठिन प्रशिक्षण, तुम जिसमें से गुजर रहे हो (तुमको दिया जा रहा है)'' कठिनाईयों और कार्यों के संबंध में इन सारी बातों ने, मुझे बहुत अधिक उदास अनुभव कराया। मैं केवल शांति, और शांति, और जब कभी, हानिरहित कुछ आनंद चाहता था। ''अब,'' राज्यज्योतिषी ने कहा, ''ये तुम्हारे शिक्षक के पास लौट जाने का समय है, क्योंकि उन्हें, तुमको बहुत कुछ बताना है और वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'' मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ और मैंने, मुड़ने तथा कमरे को छोड़ने से पहले नमन किया। बाहर, एक बहुत बड़ा पुलिसभिक्षु, मुझे लामा मिंग्यार डोंडुप के पास ले जाने के लिए, मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। हम साथ–साथ, बगल–बगल से चले, मैंने एक चित्रमय पुस्तक (picture book), जिसे मैंने देखा था, के बारे में सोचा, जिसमें एक हाथी, एक चींटी के साथ–साथ, जंगल में, बगल–बगल में चल रहा था।

''ठीक है, लोबसांग!'' लामा ने कहा, जब मैं उनके कमरे में प्रविष्ट हुआ ''मैं आशा करता हूॅं, तुम उस सबके ऊपर, जो तुमने देखा, बहुत अधिक अवसादग्रस्त (depressed) नहीं हो ?'' वह मेरी तरफ देख कर मुस्कुराये और मुझे बैठने का इशारा किया। ''पहले शरीर के लिए खाना, लोबसांग, और तब आत्मा के लिए खाना,'' जैसे ही उन्होंने, हमारी चाय लाने के लिए, सेवक भिक्षु को बुलाने के लिये, अपनी चांदी की घंटी को बजाया, वह हॅसते हुए चीखे। स्पष्टरूप से, मैं ठीक समय में आ पहुॅंचा था! लामामठ के नियम कहते थे कि, जब कोई खा रहा हो, किसी को आसपास नहीं देखना चाहिए, किसी की ऑंखें इधर–उधर नहीं भटकनी चाहिए, और उसे अपना पूरा ध्यान पाठक की आवाज को देना चाहिए। यहॉं, लामा मिंग्यार डोंडुप के कमरे में, हमारे ऊपर उपदेश देने वाला, हमारे विचारों को ऐसी सामान्य चीजों जैसे कि, खाने में बनाये रखने के लिए, पवित्र पुस्तकों में से जोर से पढ़ने वाला, कोई पाठक नहीं था। न ही यहॉं, नियमों के छोटे से उल्लंघन के लिए भी हम पर झपटने के लिए, कठोर

कुलानुशासक थे। ये सोचते हुए कि, शीघ्र ही वह समय आयेगा, जब मैं उनके ऊपर और अधिक घूर पाऊॅगा, मैंने खिड़कियों के बाहर, अपने सामने अनंतरूप से विस्तारित होते हुए हिमालय की तरफ देखा। मुझे भविष्य की झलकियॉ प्राप्त हो चुकी थीं–मेरा भविष्य–और मैंने एक–एक चीज को, जो मैंने स्पष्ट नहीं देखी थी परंतु, जो आंशिकरूप से धुंऐं से ढकी हुई थी।

''लोबसांग!'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''तुमने काफी अधिक देखा है परंतु, फिर भी बहुत अधिक छिपाकर रखा गया है। यदि तुम महसूस करो कि तुम योजित (planned) भविष्य का सामना नहीं कर सकते, तब हम इस तथ्य को स्वीकार करेंगे–यद्यपि दुःखपूर्वक–और तुम तिब्बत में रह सकते हो।'' ''श्रीमान्!'' मैंने उत्तर दिया, ''आपने एक बार कहा था कि, एक आदमी, जो जीवनपथों में से किसी एक पर चलना प्रारंभ कर देता है, गलतियॉ करता है और वापस मुड़ जाता है, वह आदमी नहीं है। अपने सामने की इन कठिनाइयों को जानने के बावजूद, मैं आगे जाऊॅगा।'' वे मुस्कुराये, और अनुमोदन में अपना सिर हिलाया। ''जैसीकि मैंने अपेक्षा की थी,'' उन्होंने कहा, ''अंत में तुम सफल होगे।'' ''श्रीमान्!'' मैंने पूछा, ''लोग इस विश्व में, इस जानकारी के साथ क्यों नहीं आते कि, वे पिछले जीवन में क्या रहे हैं और उनसे इस जीवन में क्या किए जाने की अपेक्षा की जाती है ? क्यों वहॉ ऐसा होना चाहिए, जिसे आप छिपा हुआ ज्ञान कहते हैं ? हम सब को, हर चीज ज्ञात क्यों नहीं होनी चाहिए ?

लामा मिंग्यार डोंडुप ने अपनी भौंहों को चढ़ाया और हॅसे। ''तुम निश्चितरूप से बहुत अधिक जानना चाहते हो!'' उन्होंने कहा। ''तुम्हारी स्मृति, सोटे से, अत्यधिक पीटी जा रही है; अभी हाल में ही, मैंने तुम्हें बताया था कि, सामान्यतः हम अपने पिछले जीवनों को याद नहीं रखते क्योंकि, ऐसा किया जाना, इस विश्व में हमारे ऊपर भार बढ़ाने जैसा होगा। जैसे हम कहते है, ''जीवनचक्र, किसी को अमीरी और किसी को गरीबी लाने के लिए, घूमता है। आज का भिखारी कल का राजकुमार हो सकता है।'' यदि हम अपने पिछले जीवनों को नहीं जानते हैं, तो बिना इस बात पर ध्यान दिए हुए कि, हम अपने पिछले जन्म में क्या थे, हम नये सिरे से प्रारंभ कर सकते हैं। ''लेकिन,'' मैंने पूछा, ''छिपे हुए ज्ञान के संबंध में क्या ? यदि सभी लोगों को वह मिल जाता, तो यह हर एक के लिए अच्छा होता, वह और अधिक तेजी के साथ आगे बढ़ता।'' मेरे शिक्षक मेरे प्रति मुस्कराये, वह इतना अधिक सरल नहीं है! उन्होंने जबाव दिया। एक क्षण के लिए वह शांति में बैठे, तब वह फिर बोले।

''जिन क्षमताओं से आदमी, पदार्थ या सांसारिक चीजों को, भौतिकविश्व को, बनाने में समर्थ होता है, हमारे अंदर, हमारे अधिस्वयं के नियंत्रण में, किसी भी चीज की तुलना में, नापे न जा सकने वाली सीमा से भी अधिक, शक्तियॉ हैं। पश्चिमी लोग, विशेषरूप से, ऐसी शक्तियों को बुरा कहेंगे, जबकि हम उन पर नियंत्रण करते हैं, क्योंकि पश्चिमी लोग, केवल धन की चिंता करते हैं। पश्चिमी मनुष्य के पास कुल दो प्रश्न हैं : क्या तुम इसे सिद्ध कर सकते हो ? और – मुझे इसमें क्या मिलेगा ?'' वे लड़के की तरह से हॅसे और उन्होंने कहा, ''जब मैं बेतार के एक संदेश को भेजने के लिए, मशीनों और उपकरणों, जिनका आदमी, समुद्रपार संदेश भेजने के लिये उपयोग करता है, की लंबी–लंबी कतारों के बारे में सोचता हूॅ, मैं हमेशा ही अत्यधिक आनंद अनुभव करता हूॅ। 'बेतार' अंतिम शब्द है, जिसका उन्हें उपयोग करना चाहिए, क्योंकि उपकरण मीलों–मील तार का उपयोग करते हैं। परंतु यहॉ, तिब्बत में, हमारे प्रशिक्षित लामालोग, दूरानुभूति संदेशों को, कुल मिला कर, किसी उपकरण के बिना भेज देते हैं। हम सूक्ष्मशरीर में जाते हैं और अपने विश्व के दूसरे भागों और दूसरे लोकों की यात्रा करते हुए, आकाश और समय में होकर यात्रा करते हैं। हम, उन शक्तियों का उपयोग करते हुए, जो सामान्यतः ज्ञात नहीं हैं, गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध उठ सकते हैं–भारों को उठा सकते हैं। सभी आदमी शुद्ध नहीं हैं, लोबसांग, और न ही भिक्षु की पोशाक, हमेशा किसी पवित्र आदमी को ढकती (पहनाई जाती) है। जैसे कि, यहॉ लामामठ में कोई खराब आदमी हो सकता है, वैसे ही, जेल में कोई संत भी हो सकता है।'' मैंने, कुछ उलझन के साथ, उन्हें देखा। ''परंतु यदि सभी आदमियों को इसका

ज्ञान हो जाए, निश्चितरूप से, वे सभी भले हो जायेंगे ?'' मैंने पूछा।

लामा ने दुःखपूर्वक, मेरी तरफ देखा, जब उन्होंने जबाव दिया। ''हम गुप्त (secret) ज्ञान को छिपा कर रखते हैं, ताकि मनुष्य जाति को सुरक्षित रखा जा सके। अनेक आदमी, विशेषरूप से पश्चिम के लोग, केवल धन और दूसरों पर नियंत्रण की सोचते हैं। जैसाकि, राज्यज्योतिषी द्वारा और दूसरों के द्वारा भी, भविष्यकथन में कहा गया है, हमारा ये देश, बाद में, अतिक्रमित किया जायेगा और एक अनजान सभ्यता के द्वारा, भौतिकरूप से, जीत लिया जायेगा, एक ऐसी सभ्यता, जिसमें सामान्य आदमी के प्रति कोई विचार नहीं है, परंतु वह पूरी तरह अस्तित्व में हैं। तानाशाह, जो तानाशाही शक्तियों को सहारा देने के लिए, आधी दुनियॉ को गुलाम बना लेंगे। यहॉ उच्च स्तरीय लामा हैं, जो रूसी लोगों के द्वारा, मृत्यु तक की पीड़ा पाये हुए हैं, क्योंकि, उन लामाओं ने उस छिपाये हुए ज्ञान को प्रकट नहीं किया। औसत मनुष्य, लोबसांग, जिसको अचानक ही छिपा हुआ ज्ञान हाथ लग जाता है, इस प्रकार की प्रतिक्रिया करेगा : पहले वह उस शक्ति से, जो उसकी पकड़ में है, डरेगा। तब उसे ऐसा लगेगा कि, उसके पास, उसके सर्वाधिक निरंकुश (wildest) सपनों के भी परे, खुद को धनवान बनाने का साधन है। वह प्रयोग (experiment) करेगा, और उसके पास धन आयेगा। बढ़ते हुए धन और शक्ति के साथ, वह और अधिक धन और शक्ति की, औरअधिक इच्छा करेगा। लखपति कभी लाखों से संतुष्ट नहीं होता, परंतु करोड़ों चाहता है! ऐसा कहा जाता है कि निरंकुश शक्ति, अविकसित आदमी को भ्रष्ट बना देती है। छिपा हुआ ज्ञान, निरंकुश शक्ति प्रदान करता है।''

मेरे ऊपर भोर का बड़ा प्रकाश हुआ; मैं जानता था, तिब्बत को कैसे बचाया जा सकता है! उत्तेजना से उछलते–कूदते, मैं जोर से चीखा, ''तिब्बत बचा लिया गया! छिपा हुआ ज्ञान, हमको अतिक्रमण से बचाएगा!'' मेरे शिक्षक ने, मुझे करुणा के साथ देखा। ''नहीं, लोबसांग,'' उन्होंने दुःखपूर्वक जबाव दिया, हम शक्तियों का, ऐसी चीजों के लिए, प्रयोग नहीं करते। तिब्बत को, लगभग, विनाश की हद तक, कष्ट पहुॅचेगा, परंतु आने वाले वर्षों में वह फिर से उठ खड़ा होगा और अधिक बड़ा, अधिक शुद्ध होगा। देश पर से तलछट हटाकर, उसे युद्ध की भट्टी में शुद्ध किया जायेगा, वैसे ही, बाद में, पूरा विश्व (भी शुद्ध) होगा।'' उन्होंने मुझे कनखियों से झांका। ''युद्ध होने हैं, तुम जानते हो, लोबसांग!'' उन्होंने शांतिपूर्वक कहा। ''यदि युद्ध नहीं होते तो विश्व की आबादी बहुत अधिक बढ़ गई होती, यदि युद्ध नहीं होते तो यहॉ महामारी होती। युद्ध और बीमारियॉ, दुनियॉ की आबादी को नियंत्रित करतीं हैं और पृथ्वी– और दूसरे लोकों –के लोगों को, दूसरों के प्रति अच्छा करने का अवसर प्रदान करती हैं। जबतक कि विश्व की जनसंख्या, किसी अन्य तरीके से नियंत्रित न की जा सके, यहॉ हमेशा युद्ध होते रहेंगे।

घड़ियालों की आवाज, हमें संध्या की सेवा के लिए बुला रही थी। लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरे शिक्षक, अपने पैरों पर उठे। ''लोबसांग, साथ आओ'' उन्होंने कहा, ''हम यहॉ अतिथि हैं और हमें सेवा में प्रस्तुत होकर अपने मेजबानों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए।'' हम कमरे के बाहर और ऑगन में गए। चाकपोरी के मामले में जैसा होता, उसकी तुलना में, अधिक देर तक बजते हुए घड़ियाल, लगातार बुला रहे थे, हमने आश्चर्यजनकरूप से मंदिर की तरफ, धीमा रास्ता पकड़ा। मैंने अपने धीमेपन के ऊपर आश्चर्य किया, और जैसे ही मैंने आसपड़ौस में देखा, मैंने बहुत बूढ़े और अशक्त लोगों को, ऑगन में, अपने कदमों में लंगड़ाते हुए देखा। मेरे शिक्षक ने मुझे फुसफुसाकर कहा, ''लोबसांग, ये सौहार्द्रता होगी, यदि तुम पार जाओ और इन चेलों के साथ बैठो।'' मैंने हांमी भरते हुए, अपना रास्ता मंदिर की भीतरी दीवारों की तरफ लिया, जबतक कि, मैं वहॉ नहीं आ गया, जहॉ राज्यज्योतिषी मठ के चेले लोग बैठे थे। जैसे ही, मैं उनके एक बगल से बैठा, उन्होंने मुझे उत्सुकता के साथ देखा । लगभग अलक्षितरूप से, जब कुलानुशासक नहीं देख रहे थे, जबतक उन्होंने मुझे घेर नहीं लिया, वे आगे बढ कर मेरे सामने आये।

''तुम कहॉ से आये हो ?'' उस एक लड़के ने पूछा, जो नायक दिखाई देता था। ''चाकपोरी से,'' मैंने फुसफुसाकर जबाव दिया। ''तुम वही हो, जो अंतरतम द्वारा भेजे गए हो ?'' दूसरा फुसफुसाया। 'हॉ,'' मैंने वापस फुसफुसाकर जबाव दिया, ''मैं राज्यज्योतिषी से मिलने आया था, उन्होंने मुझे _____ बताया'' ''शांति!'' मेरे पीछे से एक तीखी आवाज ने जोर से चिल्लाकर कहा, ''तुम बच्चों में से कोई आवाज नहीं!'' मैंने देखा कि वह बड़ा आदमी आगे बढ़ा। ''गा!'' एक लड़के ने कहा, ''उसकी तरफ ध्यान मत दो, उसका भौंकना, काटने से अधिक बुरा है।'' ठीक तभी, राज्यज्योतिषी और एक मठाध्यक्ष, बगल से, एक छोटे दरवाजे में से प्रकट हुए, और सेवा प्रारंभ हुई।

शीघ्र ही, हम फिर से, बाहर खुले में निकल रहे थे। अपने चमड़े के थैले को फिर से जौ से भरने और चाय पाने के लिए, दूसरों के साथ, मैं रसोई घर में गया। वहॉ बात करने का कोई मौका नहीं था; रात को सोने के लिये जाने से पहले, अंतिम क्षण में, चर्चा करते हुए, सभी प्रकार के भिक्षु, आसपास खड़े थे। मैंने, मुझे आवंटित कमरे की तरफ का रास्ता लिया, अपने आपको पोशाक में लपेटा और सोने के लिए लेट गया। यद्यपि, नींद जल्दी नहीं आई। स्वर्णिम ज्वालाओं वाले मक्खन के दीपों की तरफ ध्यान केन्द्रित करते हुए, मैंने बाहर की ओर, बैंगनी अंधेरे पर टकटकी लगाई। काफी दूर, शाश्वत हिमालय ने, मानो कि, इस विश्व के देवताओं के प्रति याचना करते हुए– आकाश की ओर इशारा करती हुईं, अपनी चट्टानी उॅगलियॉ फैलाईं। ज्यों ही चंद्रमा और ऊॅचा चढ़ा, चंद्रमा की सफेद चांदनी की जीवंत किरणें, पहाड़ियों की दरारों में से होकर, गायब होने और दुबारा फिर चमकने के लिए चमकीं। आज रात, यहॉ हवा नहीं थी, प्रार्थना के ध्वज, असूचीबद्धरूप से, अपने खम्भों पर टंगे थे। बादल का एक मात्र चिन्ह, आलस्य से ल्हासा के शहर के ऊपर तैरा। मैं मुड़ा, और स्वप्नरहित नींद में चला गया।

मैं सुबह के काफी प्रारंभिक घण्टों में, डर के प्रारंभ के साथ जागा; मैं बहुत अधिक सोया था और पहली प्रार्थना के लिए विलंबित हो सकता था। मैंने अपने पैरों पर उछलते हुए, तेजी के साथ, अपनी पोशाक लपेटी और दरवाजा बंद किया। मैं, खाली पड़े गलियारे में नीचे की तरफ दौड़ता हुआ, ऑगन में आया–सीधे खाम के एक आदमी की भुजाओं में। ''तुम कहॉ जा रहे हो ?'' ज्यों ही उसने मुझे अपनी कड़ी पकड़ में लिया, वह चुभती हुई नजर से फुसफुसाया। ''सुबह की सेवा में भाग लेने, ''मैंने जबाव दिया, ''मैं ज्यादा सो गया होऊॅगा,'' वह हॅसा और उसने मुझे छोड़ दिया। ''ओह!'' उसने कहा, ''तुम एक आगंतुक (visitor) हो। यहॉ सुबह की कोई सेवा नहीं होती। बापस जाओ और फिर से सो जाओ।'' ''सुबह की कोई सेवा नहीं ?'' मैं चीखा, हर आदमी सुबह की सेवा क्यों करता है!'' पुलिस भिक्षु अच्छी मनःस्थिति (mood) में रहा होगा, क्योंकि उसने मुझे सभ्यता के साथ जबाव दिया, हमारे यहॉ बूढ़े आदमी हैं और कुछ बीमार भी हैं, इस वजह से हम उन्हें, सुबह की सेवा में राहत प्रदान करते हैं। जाओ, शांति में कुछ देर आराम करो। उसने मुझे सिर के ऊपर, अपने हिसाब से धीमे से, परंतु मेरे हिसाब से, मेघगर्जना की तरह थपथपाया, और मुझे वापस गलियारे में धकेल दिया। मुड़ते हुए, उसने ऑगन की तरफ अपने कदम रखना शुरू किया, जैसे ही हर कदम के साथ, लाठी का निचला सिरा जमीन पर ठोका जाता, उसके आश्चर्यजनक कदम, लाठियों के द्वारा ठकठक करती हुई भारी आवाज के साथ, चोट पर चोट करते हुए, आगे बढ़ते जाते। मैंने वापस गलियारे में दौड़ लगाई और कुछ ही मिनटों में, मैं फिर से, गहरी नींद में सो गया।

दिन में, बाद में, मुझे मठाध्यक्ष और दो वरिष्ठ लामाओं के समक्ष प्रस्तुत किया गया। उन्होंने मुझसे, जान बूझ कर, मेरे घरेलू जीवन के संबंध में प्रश्न पूछते हुए, प्रश्न पूछे, क्या पिछले जीवनों से मुझे, अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ, अपना संबंध याद है। अंत में वे तीनों, अपने पैरों पर लड़खड़ाते हुए उठे और पंक्तिबद्ध हो कर दरवाजे की तरफ खड़े हो गये। ''आओ,'' मेरी दिशा में उॅगली दिखाते हुए अंतिम ने कहा। हतप्रभ होते हुए, जैसे कोई नींद में हो, चलते हुए, मैं दब्बूपन से उनके पीछे चला। वे बाहर जाने के, एक धीमे रास्ते से गुजरे और आलस्यपूर्ण ढंग से, गलियारे की

तरफ चले। काफी धीमा चलने के प्रयास में, अपने पैरों पर, लगभग ठोकर खाते हुए, मैं पीछे चला। खुले कमरों के गुजर जाने के बाद, जहाँ ट्रापा और चेले, दोनों, हमारे धीमे गुजरने की उत्सुकता में, एक जैसे दिखे, हम झुककर चले। इस जलूस के अंतिम छोर पर होने के कारण, मैंने अपने गालों को, स्तब्धता में जलते हुए, अनुभव किया; मठाध्यक्ष (सबसे आगे), इसके सिर पर, अपनी दो लाठियों की सहायता से, धीमे–धीमे रेंगते हुए (चले)। इसके बाद दो लामा, जो इतने अधिक जीर्ण और निश्तेज थे कि वे मुश्किल से ही, पिछले हिस्से को लाते हुए, मठाध्यक्ष के साथ चल पा रहे थे और मैं मुश्किल से ही, काफी धीमे से चल पा रहा था।

काफी देर बाद या मुझे ऐसा लगा ''लम्बे अंत में,'' हम एक छोटे द्वार पर, जो बहुत दूर, दीवार में लगाया हुआ था, पहुँचे। जबतक कि मठाध्यक्ष ने एक चाभी को नहीं टटोला और अपनी श्वास के नीचे नहीं बड़बड़ाया, हम रुके रहे। लामाओं में से एक, उन्हें सहायता करने के लिए आगे बढ़ा, और अंत में धक्का देने पर दरवाजा, कब्जों की विरोध भरी आवाज के साथ खुल गया। पहले लामा और बाद में दूसरे लामा के पीछे चलते हुए, मठाध्यक्ष प्रविष्ट हुए। किसी ने मुझसे कुछ नहीं कहा, इसलिए मैं भी वैसे ही चला। एक बूढ़े लामा ने मेरे पीछे का दरवाजा बंद किया। वहाँ मेरे सामने, पुरानी और धूल से ढकी हुईं चीजों से लदी हुई, एक काफी लंबी मेज थी। पुरानी पोशाकें, पुराने प्रार्थनाचक्र, पुराने कटोरे और प्रार्थना के मनकों की मिली–जुली मालाऐं। मेज के ऊपर, ताबीजों के कुछ डिब्बे, और दूसरी अन्य चीजें, जिन्हें मैं पहली नजर में नहीं पहचान सका, बिखरी पड़ीं थीं। ''हमममम्। मममम्। मेरे बच्चे यहाँ आओ!'' मठाध्यक्ष ने आदेश दिया। मैं अनिच्छा के साथ, उनकी तरफ आगे बढ़ा और उन्होंने अपने हड्डियों जैसे हाथ से, मेरी वांयी भुजा पकड़ ली। मैंने अनुभव किया, मानो मैं एक अस्थिपंजर की पकड़ में होऊँ! ''हममम्। हममम्न्। बच्चे! हममम्म्। इन चीजों और वस्तुओं में से क्या कोई, पिछले जीवन में, तुम्हारे सामान थे ?'' उन्होंने मुझे मेज की पूरी लंबाई पर चलाया और मेरी ओर मुड़े और कहा, ''हममम्। ममम्। यदि तुम्हें विश्वास है कि, कोई चीज तुम्हारी थी। हममम्, उसे उठाओ और हममम्, मममम् उसे ले लो या मेरे पास लाओ।'' वे भारीपन से नीचे बैठ गए और मेरी गतिविधियों में अधिक रुचि लेते नहीं प्रतीत हुए। दोनों लामा उनके साथ बैठे और कोई शब्द उच्चारित नहीं किया गया।

''ठीक है!'' मैंने खुद में सोचा, ''यदि तीनों बूढ़े मनुष्य, इसे इसी तरह खेलना चाहते हैं– ठीक है, मैं उनके तरीके से खेलूंगा!'' मनोमति (psychometry), वास्तव में, किए जाने वाली सबसे आसान चीज है। मैं, विभिन्न वस्तुओं के ऊपर, अपने बढ़ाये हुए बांये हाथ की हथेली को, नीचे की ओर किये हुए, धीमे से आगे चला। कुछ निश्चित चीजों से, मैंने अपने हथेली के केन्द्रीय भाग में, एक विशेष प्रकार की खुजली और थोड़ी सी कंपकंपी, या कंपन, अनुभव किये, जिन्होंने मेरी भुजा को रोमांचित कर दिया। मैंने एक प्रार्थनाचक्र को, पुराने सुधारे हुए एक कटोरे को, और मनकों की एक माला को उठाया। तब मैंने, लंबी मेज के बगल से, अपनी यात्रा को दुहराया। केवल एक और चीज, अपने समाप्त होने की अंतिम अवस्था में एक पुरानी जीर्णशीर्ण पोशाक, ने मेरी हथेली में खुजली (itch) और बॉह में गुदगुदी (tingle) उत्पन्न की ; एक उच्च अधिकारी की केशरिया पोशाक, जिसका रंग, समय के द्वारा पूरी तरह धो दिया गया हो, उसका माल पूरी तरह सड़ा हुआ और छूने में ही चूर्ण–चूर्ण होने वाला था। सतक्रतापूर्वक, आधा डरते हुए कि, ये मेरे सावधान हाथों में आते ही बिखर जायेगी, मैंने उसे उठा लिया। सावधानी के साथ, मैं उसे बूढ़े मठाध्यक्ष के पास ले गया, उनके चरणों में जमा किया और प्रार्थनाचक्र, सुधारे हुए कटोरे और मनकों की माला की ओर वापस लौटा। बिना एक भी शब्द कहे, मठाध्यक्ष और दोनों लामाओं ने, चीजों की परीक्षा की और उस पुरानी काली पुस्तक, जिसे मठाध्यक्ष ने प्रस्तुत किया, के साथ में कुछ निश्चित चिन्हों या गुप्त अंकनों (secret markings) का मिलान किया। कुछ समय के लिए, पुराने मस्तिष्क से सोचने के प्रयास में लगभग टूटते हुए, गर्दनों पर झुके हुए सिरों से हामी भरते हुए, वे एक–दूसरे के आमने–सामने बैठे।

''हरमफ! आरफ!'' मठाध्यक्ष ने, एक अधिक लदे हुए याक की तरह, कष्ट से जोर से सांस लेते हुए फुसफुसाया। ''मममन्। ये वास्तव में वही है। हममन्। एक उल्लेखनीय उपलब्धि। मममन्। अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के पास जाओ, मेरे बच्चे और हमम्, उन्हें बताओ कि हमें, उनकी उपस्थिति से सम्मानित किया जाए। मेरे बच्चे, तुमको वापस आने की जरूरत नहीं है। हरमफ! आरफ!'' मैं मुड़ा और इन जीवित ममियों (living mummies), जिनकी मुरझाई हुई (desiccated) दूरी ने मुझे, लामा मिंग्यार डोंडुप की, उष्ण मानवता (warm humanity) से हटा दिया था, से स्वतंत्र होने पर प्रसन्न होते हुए, कमरे से भाग गया। जल्दी से भागते हुए, अपने शिक्षक से कुछ इंच दूर, एक कोने के बगल से, मैं पूरी तरह से थम गया। वे मेरे ऊपर हॅसे और उन्होंने कहा, ''ओह! इतने भौंचक्के मत दिखो, मुझे भी संदेश मिल गया है।'' मुझे पीठ पर एक मित्रवत् थपकी देते हुए, उन्होंने उस कमरे की ओर जाने की जल्दी की, जिसमें मठाध्यक्ष और दो बूढ़े लामा बैठे हुए थे। मैं ऑगन में बाहर घूमता रहा और मैंने फालतू में ही, एक या दो पत्थरों को ठोकर मारी।

''तुम, दोस्त, क्या वह हो, जिसका पूर्वजन्म पहचाना जा रहा है ?'' मेरे पीछे एक ध्वनि ने पूछा। मैं एक चेले को देखने के लिए मुड़ा, जो जानबूझकर मेरे पीछे पड़ा था। ''मैं नहीं जानता, वे क्या कर रहे हैं।'' मैंने जवाब दिया। ''जो कुछ मैं जानता हूॅ, वह ये है कि, मुझे गलियारों की तरफ घसीटा गया ताकि, मैं अपनी पुरानी चीजों में से कुछ को उठा सकूॅ। कोई भी आदमी ऐसा कर सकता था!'' बच्चे, अच्छे भले स्वाभाविकरूप से हॅसे। ''तुम चाकपोरी के आदमी, अपनी चीजों को अच्छी तरह जानते हो।'' उसने कहा, ''अन्यथा तुम उस लामामठ में नहीं होते। मैंने ये कहते हुए सुना कि, तुम अपने पिछले जीवन में, कुछ बड़े आदमी थे। तुम रहे होगे, स्वयं राज्यज्योतिषी ने तुम्हारे लिए आधा दिन लगाया होगा।'' उसने सांकेतिक भय के साथ, अपने कंधे उचकाये और टिप्पणी की, ''तुम्हारा प्रदर्शन अच्छा रहा। इससे पहले कि तुम जान पाओ, क्या हो रहा है, उन्होंने तुम्हें पहचान लिया और उन्होंने तुम्हें मठाध्यक्ष बना दिया। तब तुम, और अधिक लंबे समय तक, हमारे चाकपोरी के दूसरे लोगों के साथ खेलने के योग्य नहीं रहोगे।''

बहुत दूरी पर, आंगन के अंत में एक दरवाजे से, मेरे शिक्षक की आकृति दिखाई दी। वे तेजी से चलते हुए हमारी तरफ आए। चेले ने, जिसके साथ मैं बात कर रहा था, नीचे झुक कर, उनको नम्र दंडवत किया। लामा उसके ऊपर मुस्कुराये और–हमेशा की भॉति–कृपापूर्ण ढंग से कहा। ''हमको अपने रास्ते पर होना चाहिए, लोबसांग!'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझसे कहा, शीघ्र ही ''हमारे ऊपर रात घिर आएगी, और हम अंधेरे में घुड़सवारी नहीं करना चाहते।'' हम लोग, साथ–साथ, अस्तबल की तरफ गए, जहॉ साईस भिक्षु, हमारे घोड़ों के साथ, हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। अनिच्छुकरूप से, मैं (घोड़े पर) सवार हुआ और अपने शिक्षक के पीछे–पीछे, फर के पेड़ों के बीच से होकर, रास्ते पर चला। हम खामोशी में उछलते रहे; मैं, घोड़े की पीठ पर (सबार रहते हुए) कभी प्रखरतापूर्वक बात नहीं कर सका, चूॅकि, मेरी सारी ऊर्जाऐं, वहॉ टिके रहने के लिये समप्रित थीं। मेरे आश्चर्य के लिए, हम चाकपोरी की तरफ नहीं मुड़े, परंतु हमने अपना रास्ता पोटाला की तरफ लिया। धीमे से, घोड़े सीढ़ियों वाली सड़क पर चढ़े। हमारे नीचे, रात की छायाओं के अंतर्गत, घाटी पहले से ही मंद पड़ रही थी। प्रसन्न होते हुए, मैं घोड़े से उतरा और अब सुपरिचित पोटाला में, खाने की तलाश में जल्दी से भागा।

जब मैं, रात का अच्छा–पूरा खाना खाने के बाद, अपने कमरे में गया, मेरे शिक्षक मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे ।'' मेरे पास अंदर आओ, लोबसांग,'' उन्होंने कहा। मैं अंदर गया और उनके कहने पर खुद को बैठाया। ''ठीक है!'' उन्होंने कहा, ''मैं आशा करता हूॅ कि, तुम आश्चर्य कर रहे होगे कि, ये सब किसके संबंध में है।'' ''ओह! मैं एक अवतार के रूप में पहचाने जाने की आशा करता हूॅ !'' मैंने लापरवाही से जबाव दिया। ''जब आपने मुझे बाहर बुलाया, आदमियों में से एक, और मैं, राज्यज्योतिषी के मठ में इस पर चर्चा कर रहे थे!'' ''ठीक है, ये तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है,'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने

कहा। ''अब हमें कुछ समय लेना है और कुछ चीजों पर चर्चा करनी है। तुम्हें आज रात की सेवा में शामिल होने की आवश्यकता नहीं है। अधिक आराम से बैठो और सुनो, और बीच में टोका–टोकी मत करना।''

''अधिकांश लोग, इस विश्व में चीजों को सीखने के लिए आते हैं,'' मेरे शिक्षक ने कहना शुरू किया। ''दूसरे, जो आवश्यकता में हैं, वे इसलिए कि, उनकी मदद की जा सके, या अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य, कुछ विशेष कार्य को पूरा करने के लिए आते हैं।'' ये निश्चित करने के लिए कि, मैं समझ रहा था, उन्होंने तीखेपन से मुझे देखा, तब उन्होंने कहना जारी रखा, ''अनेक धर्म, नक्र को, दंड का स्थान या किसी के पापों का प्रायश्चित करने का स्थान, के संबंध में उपदेश देते हैं। नक्र यहीं, इसी पृथ्वी पर है। हमारा वास्तविक जीवन, दूसरे लोक पर है। हम, पिछले जीवन में की गई गलतियों का भुगतान करने के लिए– जैसा मैंने कहा –किसी महत्वपूर्ण उच्चकार्य को पूरा करने का प्रयास करने के लिए, सीखने के लिए, यहॉ आते हैं। मानवीय प्रभामंडल के संबंध में, एक कार्य करने के लिए, तुम यहॉ हो। तुम्हारे 'उपकरण' होंगे, एक अपवादस्वरूप संवेदनशील, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवीय प्रभामंडल को देखने की, बहुत तीव्र की गई तुम्हारी क्षमता, और वह सभी ज्ञान, जो हम तुम्हें, सभी रहस्यमय गूढ़ कलाओं के संबंध में दे सकते हैं। अंतरतम ने आदेश दिया है कि, तुम्हारी क्षमताओं और प्रतिभा को बढ़ाने के लिए, हर सम्भव उपाय किया जाये। प्रत्यक्ष शिक्षण, वास्तविक अनुभव, सम्मोहन; हम उन सब का उपयोग करने वाले हैं ताकि, तुम्हारे अंदर अधिकांश ज्ञान, न्यूनतम समय में डाला जा सके।''

''ये नरक है, ठीक है!'' मैंने उदास होकर चीखते हुए कहा। लामा मेरी अभिव्यक्ति के ऊपर हॅसे। ''परंतु ये नरक, तुम्हारे अच्छे जीवन के लिए, मात्र एक सीढ़ी की तरह है,'' उन्होंने जवाब दिया। ''हम यहॉ, कुछ मूल दोषों से छुटकारा पाने में समर्थ हैं। यहॉ, पृथ्वी के जीवन के कुछ वर्षों में, हम दोषों को, जो दूसरे लोकों में, हमको, समय की असीम अवधि के लिए, रोक रहे होते, बहा देते हैं। इस लोक पर पूरा जीवन, दूसरे लोकों की तुलना में, पलक झपकने की तरह से है। ''पश्चिम में अधिकांश लोग,'' वे कहते गए, ''सोचते हैं कि, जब कोई मरता है, वह एक बादल पर बैठता है और एक वीणा बजाता है। दूसरे सोचते है कि, जब कोई, इस लोक को, दूसरे लोक में जाने के लिये छोड़ता है, तो वे, शून्यता की एक रहस्यमय अवस्था में या उसके ही समान अस्तित्व में रहते हैं।'' वे हॅसे और उन्होंने कहना जारी रखा, ''यदि हम उन्हें, केवल ये अनुभव करा सकें कि, मृत्यु के बाद का जीवन, पृथ्वी की किसी भी चीज की तुलना में, अधिक वास्तविक है! इस लोक में हर चीज, कंपनों से बनी होती है; पूरा लोक ही कंपनों का है– और इस लोक में हर चीज –को संगीत के पैमाने पर एक सप्तक (octave) के समान समझा जा सकता है। जब हम मृत्यु के दूसरी तरफ गुजरते हैं, तो संगीत के पैमाने पर ये सप्तक, औरऊॅचा उठ जाता है। मेरे शिक्षक रुके, मेरे हाथ को पकड़ लिया और फर्श पर मेरे नक्कलों (knuckles) पर धौल मारी। ''तब, लोबसांग,;'' उन्होंने कहा, ''पत्थर है, कंपन, जिन्हें हम पत्थर का नाम देते है।'' फिर उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी उॅगलियों को मेरी पोशाक पर रगड़ा। ''वह,'' उन्होंने हर्षपूर्वक कहा, ''कंपन हैं, जो ऊन को इंगित करते हैं। यदि हम कंपनों के पैमाने पर हर चीज को चलायें, तो हमें, कड़ेपन और कोमलता की सापेक्षित श्रेणियॉ बनाये रखनी पड़ेगीं। इसप्रकार, मृत्यु के बाद जीवन, वास्तविक जीवन में, ठीक वैसे ही, जैसे कि, हम इस पृथ्वी पर करते हैं, हम चीजों को अपने कब्जे में रख सकते हैं। क्या तुम्हें ये ठीक से समझ में आ गया।'' उन्होंने पूछा।

प्रगटरूप से ये स्पष्ट था कि, मैं इसप्रकार की चीजों को, बहुत लंबे समय से जान चुका था। लामा ने मेरे विचारों को तोड़ा। ''हॉ, मैं समझता हूॅ कि यहॉ, ये सब सामान्य ज्ञान है, परंतु यदि हम, इन 'अनकहे विचारों को' स्वर प्रदान कर दें (vocalप्रe), तो हम, बाद में, इन्हें तुम्हारे मन में और अधिक स्पष्ट बना सकेंगे। ''उन्होंने कहा, ''तुम पश्चिमी विश्व के देशों की यात्रा करोगे। वहॉ तुम्हें, पश्चिमी धर्मों के माध्यम से, तमाम दिक्कतें होंगी।'' वह कुछ–कुछ व्यंगपूर्वक मुस्कुराये और (उन्होंने) टिप्पणी की,

''ईसाई लोग हमें मूर्तिपूजक (heathens) कहते हैं। उनकी बाईबिल में ये लिखा गया है कि, ''ईसा (Christ) फालतू घूमता फिरा।'' हमारे अभिलेखों में ये बताया गया कि, ईसा पूरे हिंदुस्तान में, भारतीय धर्मों का अध्ययन करते हुए घूमा और तब वह ल्हासा में आया और उसने हमारे त्तकालीन प्रधान पुजारियों के अंतर्गत, जो कांग (Jo Kang) में अध्ययन किया। ईसा ने एक अच्छा धर्म चलाया था, परंतु आज, जिस ईसाई धर्म का पालन किया जाता है, वह, वह धर्म नहीं है, जो ईसा ने प्रारंभ किया था।'' मेरे शिक्षक ने कुछ–कुछ गहराई से, मेरी तरफ देखा और कहा, ''मैं जानता हूँ, तुम इस पर ये सोचते हुए, थोड़े से ऊब रहे हो कि, ये सब मैं केवल कहने के लिए कह रहा हूँ, परंतु मैं पूरे पश्चिमी विश्व में घूमा हूँ और जो तुम अनुभव करोगे, तुम्हें उसकी चेतावनी देना, मेरा कर्तव्य है। तुम्हें उनके धर्म के बारे में बताते हुए, मैं सबसे अच्छा कर सकता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी स्मृति फोटो के समान दृश्य (eidetic) है।'' मुझे शर्मिंदा होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ; मैं सोचता रहा था ''बहुत अधिक शब्द!''

बाहर गलियारों में, शाम की सेवा के लिए मंदिर की तरफ जाते हुए भिक्षु, चुप रहने, शांत रहने को कह रहे थे। तुरही बजाने वालों के ऊपर की छत पर से, घाटी के आरपार दिखाई दिया और उन्होंने समाप्त होते हुए दिन के अंतिम सुर (tone) सुनाए। यहॉ, अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप के सामने, मैंने अपनी बातचीत को जारी रखा। ''पश्चिम में, मुख्य रूप से दो मूल धर्म हैं, परंतु उनके असंख्य उपविभाग है। यहूदी धर्म पुराना और उदारवादी है। यहूदियों (Jews) के द्वारा कोई परेशानी पैदा नहीं की जायेगी, तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी। वे शताब्दियों तक सताये गए हैं और उनमें दूसरों के प्रति, अधिक सहानुभूति और समझदारी है। रविवार को छोड़ कर, ईसाई उतने सहिष्णु नहीं हैं। मैं व्यक्तिगत विश्वासों के संबंध में, कुछ भी कहने नहीं जा रहा हूँ, तुम उसके सम्बंध में पढ़ोगे परंतु मैं ये कहने जा रहा हूँ कि, धर्म कैसे प्रारंभ हुए।

''पृथ्वी पर जीवन के प्रारंभिक दिनों में,'' लामा ने कहा, ''लोग पहले बहुत छोटे–छोटे समूहों, बहुत छोटी–छोटी जातियों में थे। तब कोई नियम नहीं थे, व्यवहार की कोई संहिता (code) नहीं थी। शक्ति, एकमात्र नियम था; एक शक्तिशाली और तीखी जाति ने, कमजोरों के विरुद्ध युद्ध किया। समय के पथ पर, कोई प्रबल और विद्वान मनुष्य उठा। उसने अनुभव किया कि उसकी जाति, यदि उसे संगठित किया जाए, सबसे मजबूत होगी। उसने एक धर्म बनाया और आचार संहिता बनाई। उसने, यह जानते हुए कि यदि, अधिक और शक्तिशाली बच्चे पैदा हुए, तो उसकी जाति पनपेगी, आदेश दिया, ''लाभदायी बनो और बहुगुणित हो (be fruitful and multiply)[7]''। उसने, ये जानते हुए कि यदि, उसने माता–पिता को अपने बच्चों के ऊपर अधिकार दे दिया तो, उसे माता–पिता के ऊपर अधिकार मिल जायेगा, आदेश दिया, ''अपने माता और पिता का सम्मान करो (honour thy father and thy mother)।'' ये भी जानते हुए कि, यदि उसने बच्चों को, अपने माता–पिता के प्रति ऋणी अनुभव करने के लिये राजी कर लिया तो, अनुशासन बनाये रखना अधिक आसान हो जायेगा। ''तुम व्यभिचार नहीं करोगे (Thou shalt not commit adultry)[8],'' उस समय के पैगम्बरों ने गरजते हुए घोषणा की।

---

7 अनुवादक की टिप्पिणी : वेदों में कहा गया है, प्रजापति ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की और आदिपुरुष मनु से कहा ''प्रजा की उत्पति करो और उसका पालन करो।

8 अनुवादक की टिप्पिणी : मनुस्मृति में वर्णसंकरों की निंदा की गयी है। गीता के प्रथम अध्याय में, अर्जुन, युद्ध की स्थिति में पुरुषों के मारे जाने के बाद, स्त्रियों के दुराचरण के फलस्वरूप, वर्णसंकर संतति उत्पन्न होने और पिण्डदान की क्रिया के लोप हो जाने के कारण, पितरों के स्र्वग से पतित होने की शंका प्रगट करता है।

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः। स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः।।41।।

हे कृष्ण! पाप के अधिक बढ़ जाने से कुल की स्त्रियॉ दूषित हो जाती हैं और हे वार्ष्णेय! स्त्रियों के दूषित हो जाने पर वर्णसंकर उत्पन्न होता है।

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च। पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः।।42।।

वर्णसंकर कुलघातियों को और कुल को नरक में ले जाने के लिए ही होता है। लोप हुई पिण्ड और जल की क्रिया वाले, इनके पितरलोग भी गिर जाते हैं।

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः।।43।।

उनके वास्तविक आदेश थे कि, दूसरी जाति के सदस्यों के रक्त के साथ, जाति को वर्णसंकर नहीं किया जाये क्योंकि, इन मामलों में वफादारियॉ बॅट जाती हैं। समय के अंतराल में, पुजारियों ने पाया कि कुछ लोग थे, जो धार्मिक शिक्षाओं का हमेशा पालन नहीं करते थे। काफी विचार विमर्श और काफी चर्चा करने के बाद, उन पुजारियों ने 'पारितोषिक और दंड' की एक योजना निकाली। ''स्वर्ग,'' ''बैकुंठ,'' ''बलहल्ला,''– तुम जो भी चाहो, नाम दो, शब्द हैं–उनके लिये, जिन्होंने पुजारियों की आज्ञा का पालन किया। नरक की आग और बहुत लंबी चलने वाली प्रताड़नाओं के साथ राक्षसपन, उनके लिए हैं, जिन्होंने उनकी अवज्ञा की।'' ––––––––––73

तब क्या आप, पश्चिम के व्यवस्थित सुसंगठित धर्मों के विरोध में हैं, श्रीमान् ?'' मैंने पूछा। ''नहीं, सर्वाधिक निश्चयपूर्वक, नहीं (most certainly not),'' मेरे शिक्षक ने उत्तर दिया, ''अनेक लोग हैं, जो जबतक कि वे सभी को देखने वाले एक पिता की, जो प्रत्येक अच्छे और बुरे कार्य का लेखा करने के लिए, एकदम तैयार, अभिलेखित करनेवाले एक देवदूत के साथ, उन पर नजर गड़ाए हुए है, कल्पना न कर सकें, अनुभव न कर सकें, स्वयं को खोया हुआ महसूस करते हैं! अतिसूक्ष्म प्राणियों, जो हमारे शरीर में रहते हैं, और अतिसूक्ष्म प्राणियों, जो अपने स्वयं के अणुओं में रहते हैं, के लिए हम ईश्वर हैं ! प्रार्थना के सम्बंध में, लोबसांग, क्या तुम उन प्राणियों की, जो तुम्हारे अणुओं के ऊपर अस्तित्व में हैं, प्रार्थनाओं को हमेशा सुनते हो ?'' ''परंतु आपने कहा कि प्रार्थनाऐं प्रभावशाली होती हैं,'' मैंने कुछ आश्चर्य के साथ अपना प्रत्युत्तर दिया। ''हॉ, लोबसांग, यदि हम अपने स्वयं के अधिस्वयं से, अपने वास्तविक अंश से, जो दूसरे लोक में हैं, हमारा अंश, जो हमारी कठपुतलियों की डोरियों को, हमें नियंत्रित करता है, प्रार्थना करें। प्रार्थना काफी प्रभावशाली होती हैं। यदि हम सरल, स्वाभाविक नियमों का पालन करें, जो उसे ऐसा बनाते हैं, तो प्रार्थना बहुत प्रभावशाली होती हैं।''

वे मेरे ऊपर मुस्कराए और उन्होंने कहा, ''इस दुख भरी दुनियॉ में, मनुष्य, मात्र एक धब्बा है। मनुष्य केवल तभी आराम में होता है, जब वह, मॉ के आलिंगन में, किसी भी प्रकार से सुरक्षित महसूस करे।'' मरने की कला में प्रशिक्षण न पाये हुए उन लोगों के लिए, जो पश्चिम में हैं, अंतिम विचार, अंतिम पुकार, ''मॉ'' ही होती है। एक मनुष्य, जो स्वयं के प्रति अनिश्चित है, विश्वास के प्रगटन करने का प्रयास करते समय, एक सिगार या सिगरेट को ठीक वैसे ही फूॅकता है जैसे कि, एक बच्चा अपनी चुसनी को चूसता है। मनोवैज्ञानिक सहमत हैं कि, धूम्रपान की आदत, प्रारंभिक बचपन की विशेषताओं का, जहॉ एक बच्चा अपनी मॉ से, पोषण और आत्मविश्वास प्राप्त करता है, मात्र प्रत्यावर्तन (reversion) है। धर्म एक सुखप्रदाता है। जीवन –और मृत्यु– के सत्य की जानकारी, और भी अधिक, बड़ा सुख है। हम, जब पृथ्वी पर हैं, पानी की तरह हैं, जब हम मृत्यु में होकर गुजरते हैं भाप की तरह हैं, और जब हम, इस विश्व में एकबार फिर, दुबारा पैदा होते हैं, हम फिर से पानी के रूप में संघनित हो जाते हैं।

''श्रीमान्! मैं प्रसन्नता से बोला, ''क्या आप सोचते हैं कि, बच्चों को अपने मॉ बाप का आदर नहीं करना चाहिए ?'' मेरे शिक्षक ने कुछ आश्चर्य के साथ मुझे देखा ; ''अच्छा भव्य (gracious), लोबसांग, वास्तव में, बच्चों को अपने मॉ –बापों के प्रति सम्मान रखना चाहिए, जबतक कि, मॉ–बाप इसके पात्र हैं। यद्यपि, अधिक दवाब देने वाले मॉ–बापों को, अपने बच्चों का नाश करने की आज्ञा नहीं मिलनी चाहिए, और निश्चितरूप से, एक वयस्क बच्चे की, पहली जिम्मेदारी, उसके पति या पत्नी के प्रति है। मॉ बाप को, अपने वयस्क बच्चों पर निरंकुश शासन और तानाशाही करने की आज्ञा नहीं दी जानी चाहिए। मॉ–बाप को इस तरह करने देना, मॉ–बाप को और उनके साथ–साथ स्वयॅ को भी, नुकसान पहुॅचाना है; यह एक ऋण पैदा करता है, जिसका मॉ–बाप को, किसी दूसरे जीवन में भुगतान

इन वर्णसंकरकारक दोषों से कुलघातियों के सनातन कुलधर्म और जातिधर्म नष्ट हो जाते हैं।
उत्सन्न कुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम।।44।।
हे जनार्दन! नष्ट हुए कुलधर्मवाले मनुष्यों का, अनन्त काल तक, नरक में वास होता है, ऐसा हमने सुना है।

करना पड़ता है।'' मैंने अपने मॉ–बाप का विचार किया। मेरे कठोर और कक्रश पिताजी, एक पिता, जो कभी भी, मेरे लिए 'पिता' नहीं रहे थे। मेरी मॉ, जिनका मुख्य विचार, सामाजिक जीवन था। तब मैंने लामा मिंग्यार डोंडुप के विषय में सोचा, जो मेरे माता और पिता से अधिक थे, मात्र व्यक्ति, जिन्होंने हर समय, मेरे प्रति दयालुता और प्रेम प्रदर्शित किया था।

एक भिक्षु संदेशवाहक, जल्दी से अन्दर आया और उसने गम्भीरता से नमन किया। ''आदरणीय लामा मिंग्यार,'' उसने आदरपूर्वक कहा, ''मुझे अंतरतम की ओर से, सम्मान और अभिवादन सहित, आपको यह सूचित करने और आपसे यह पूछने का आदेश दिया गया है कि, क्या आप उनके पास जायेंगे। क्या मैं आपको, उनके पास ले जा सकता हूँ, श्रीमान् ?'' मेरे शिक्षक, अपने पैरों पर उठ खड़े हुए और संदेशवाहक के साथ–साथ चले गए।

मैं बाहर की तरफ टहला और पोटाला की छत के ऊपर चढ़ गया। थोड़ा सा ऊपर, चाकपोरी का चिकित्सीय शिक्षामठ, रात में चमक उठा। मेरे बगल से, एक प्रार्थनाध्वज अपने स्तम्भ के विरुद्ध, हल्का सा फड़फड़ाया। समीप की एक खिड़की में खड़े होते हुए, मैंने एक बूढ़े भिक्षु को प्रार्थनाचक्र को घुमाने में व्यस्त देखा, रात की शान्ति में उसकी चटचट की आवाज, जोर की एक आवाज। सिर के ऊपर तारे, अनन्त जलूस के रूप में विस्तारित हो गए, और मैंने आश्चर्य किया, क्या हम दूसरे प्राणियों को कहीं वैसे ही दिखते हैं ?

अध्याय चार

तिब्बतीय नववर्ष लोगसार (logsar) का समय था। हम –चेला और ट्रापा लोग– भी, अब कुछ समय के लिए, अपनी मक्खन की प्रतिमाओं को बनाने में व्यस्त थे। पिछले साल हमने चिंता नहीं की थी और इसलिये (हमारे सम्बंध में), कुछ खराब विचारों को पनपने का मौका मिल गया था; दूसरे लामामठ इस विचार के थे (ठीक ढंग से!) कि हम चाकपोरी के लोगों के पास, ऐसे बचकाने उद्यमों को करने के लिए, न तो समय है और न रुचि। तब, इस वर्ष, स्वयं अंतरतम के आदेश से, हमें मक्खन की प्रतिमाऐं बनानी थीं और प्रतिस्पर्धा में शामिल होना था। दूसरे लामामठों की तुलना में, हमारा प्रयास सामान्य था। कुछ बीस फुट ऊँचे और तीस फुट लम्बे, लकड़ी के एक ढॉचे के ऊपर, हम पवित्र पुस्तकों में से विभिन्न दृश्यों को, मक्खन में ढाल रहे थे। हमारी आकृतियॉ, पूरी तरह से त्रिआयामी (three dimensional) थीं और हमें आशा थी कि, जब उन्हें मक्खन के दीपों की टिमटिमाती हुई रोशनी में देखा जायेगा तो, उनमें गति का एक भ्रम उत्पन्न होगा।

अंतरतम स्वयं, और सभी वरिष्ठ लामाओं ने, हर साल की तरह, प्रदर्शनी को देखा और जीतने वाले प्रयासों को बनाने वालों की, अधिक प्रशंसा की गई। लोगसार के सत्र के समाप्त होने के बाद, मक्खन को पिघलाया गया और उसे पूरे साल जलने वाले मक्खन के दीपों के लिए उपयोग में लाया गया। जैसे ही मैंने कार्य किया– मुझे प्रादर्श बनाने (modeling) में कुछ दक्षता हासिल है– मैंने उस पर, जो कुछ भी मैंने पिछले कुछ महीनों में सीखा है, विचार किया। धर्म के सम्बन्ध में, कुछ चीजों ने मुझे अभी भी उलझन में डाल दिया और मैंने पहले ही अवसर पर, अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप से, उस सम्बन्ध में पूछने का निश्चय किया परंतु अब मक्खन की मूर्तिकला सामने की चीज थी ! मैंने झपट्टा मारा और ताजे रंगीन मक्खन का एक खण्ड खींच लिया और सावधानीपूर्वक मचान के ऊपर चढ़ गया ताकि मैं, कानों को बुद्ध जैसे अनुपात में बना सकूँ। मेरे दाहिनी ओर, थोड़ा हट कर, दो जवान चेले, हाथ के मक्खन के भारों को उछालते हुए, उसको मोटे तौर से गोल–गोल ढ़ालते हुए, तब उस भारी मिसाइल (missile) को 'दुश्मन' की ओर फैंकते हुए, मक्खन की गेंद की लड़ाई लड़ रहे थे। वे बहुत अच्छा समय गुजार रहे थे, दुर्भाग्यवश, पत्थर के एक खम्भे के बगल से, ये देखने के लिए कि, ये सारा शोर किस बजह से था, एक कुलानुशासक भिक्षु प्रकट हुआ। बिना एक भी शब्द कहे हुए, उसने दोनों बच्चों को, एक को अपने सीधे हाथ में और दूसरे को अपने उल्टे हाथ में, पकड़ लिया और उन्हें गरम मक्खन की बड़ी टंकी में फैंक दिया!

मैं मुड़ा और अपने काम में लग गया। काजल के साथ मिले हुए मक्खन से बहुत अच्छी भौंऐं बनाईं। पहले से ही, आकृति में जीवन होने का भ्रम था। ''ये माया का लोक है, कुल मिला कर,'' मैंने सोचा। मैं नीचे उतरा, और फर्श पर चला, ताकि मैं काम में एक अच्छा प्रभाव ला सकूँ। कला के स्वामी मुझ पर मुस्कुराये; चूँकि मैं प्रादर्श बनाना और चित्रकारी करना पसन्द करता था और वास्तव में, उनसे सीखने के लिए कार्य क्रता था, इसलिये मैं शायद, उनका प्रिय शिष्य था। ''हम ठीक कर रहे हैं, लोबसांग,'' उन्होंने प्रसन्नता के साथ कहा, ''देव जीवन्त दिखते हैं।'' वह टहलते हुए दूर तक चले गए ताकि, वह दृश्य के दूसरे भागों में परिवर्तनों को सुझा सकें और मैंने सोचा, ''देव जीवन्त दिखते हैं; क्या देवता होते हैं ? यदि कोई नहीं हैं तो, हमें उनके बारे में क्यों पढ़ाया जाता है ? मुझे अपने शिक्षक से पूछना चाहिए।''

विचारपूर्वक, मैंने अपने हाथों से मक्खन को पौंछा। ऊपर कोंने में, दो चेले, जो गर्म मक्खन में फैंक दिये गये थे, महीन भूरी बालू के साथ, अपने शरीरों को रगड़ते हुए, वास्तव में, जैसे–जैसे वे रगड़ते गए, एकदम मूर्ख दिखते हुए, अपने आपको साफ करने का प्रयास कर रहे थे। मैं मुस्कुराया और जाने के लिए मुड़ा। एक भारी भरकम चेला, मेरे बगल से चला और उसने टिप्पणी की, ''देवता भी उस पर हॅसे होंगे!'' ''देवता भी–देवता भी–देवता भी'' मेरे मन में, समय में, मेरे कदमों के साथ–साथ टेक

(refrain) गूंजी। देवता, क्या देवता थे ? मैं मंदिर की तरफ नीचे चलता गया और सुपरिचित सेवा के प्रारम्भ होने का इंतजार करते हुए, अपने आपको व्यवस्थित किया। ''हमारी आत्माओं की आवाजों को सुनो, तुम सभी जो घूमते हो। यह माया का लोक है। जीवन, मात्र एक स्वप्न है। जो भी पैदा हुए हैं, उन सभी को मरना पड़ेगा।'' शब्द, जिन्होंने मेरी उत्सुकता पर चोट की, सुपरिचित शब्दों को दुहराते हुए, गाते हुए पुजारियों की आवाज गूंजती गई; ''तीसरी अगरबत्ती जलाई जाती है, एक घूमनेवाले प्रेत को बुलाने के लिए, ताकि उसे मार्गदर्शन दिया जा सके।''

जिसको देवताओं द्वारा मदद नहीं मिल सकी है,'' मैंने सोचा, ''परंतु उसे अपने साथी लोगों के द्वारा मार्गदर्शन दिया जा रहा है, देवताओं के द्वारा क्यों नहीं ? हम अपने अधिस्वयं से प्रार्थना क्यों करें और भगवान से क्यों नहीं ?'' न तो शेष सेवा में कोई आकर्षण था, और न मेरे लिए उसका कोई अर्थ। अपनी पसलियों में बहुत जोर से खोदते हुए, मैं अपने विचारों पर, कोहनी पर उछला। ''लोबसांग ! लोबसांग ! तुम्हारे साथ क्या परेशानी है, क्या तुम मर गये हो ? उठो, सेवा समाप्त हो चुकी है!'' मैंने अपने पैरों पर ठोकर खाई और दूसरे लोगों के पीछे मंदिर के बाहर की ओर चला।

कुछ घन्टों बाद, मैंने अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, से कहा, ''श्रीमान् ! क्या भगवान है ? या देवता ?'' उन्होंने मेरी ओर देखा कहा, '' हम चलें और छत पर बैठें, लोबसांग, हम यहॉ इस भीड़ भरे स्थान में मुश्किल से ही बात कर सकते हैं।'' वे मुड़े और गलियारे में आगे की ओर चले, लामाओं के क्वार्टरों में से होते हुए बाहर की तरफ, ऊपर और खूंटीदार खम्भे के ऊपर और इस प्रकार छत पर (पहुॅचे)। एक क्षण के लिए, हम अपने प्रिय दृश्यों को, देखते हुए खड़े रहे, ऊॅची–ऊॅची गगनचुम्बी पर्वतश्रेणियॉ, क्यी चू (Kyi Chu) नदी का चमकता हुआ पानी और कलिंग चू (Kaling Chu) की गोलाई, हमारे नीचे नोरबू लिंगा (norbu linga) या नगीना पाक्र (jewel park), हमको एक जीवन्त हरियाली को दिखा रहा था। मेरे शिक्षक ने अपना हाथ हिलाया। ''क्या तुम सोचते हो ये सब एक जुआ है, लोबसांग ? वास्तव में भगवान हैं !'' हम छत पर, सबसे ऊॅचे भाग में गये और बैठ गये।

तुम सोचने में भ्रमित हो गए, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''भगवान है; देवता हैं। जबतक हम पृथ्वी के ऊपर हैं, हम भगवान की आकृति और प्रकृति की प्रशंसा करने की स्थिति में नहीं हैं। हम, जिसे एक त्रिआयामी विश्व कहा जाता है, में जीते हैं : भगवान, एक ऐसे विश्व में, जो मनुष्य के मस्तिष्क से, यदि वह पृथ्वी पर हो, एकदम दूर हटा दिया गया है, रहता है। वह भगवान के आवश्यक विचार को बनाये नहीं रख सकता और इस प्रकार मनुष्य, युक्तिपूर्ण तक्र करने लगता है। ''भगवान कुछ–कुछ मानव, अतिमानव यदि तुम ऐसा कहना अधिक पसन्द करो, की तरह माना जाता है, परंतु मनुष्य, अपने अहंकार के कारण, विश्वास करता है कि, वह भगवान की छवि में बना है! मनुष्य यह भी विश्वास करता है कि, दूसरे लोकों में जीवन नहीं है। यदि मनुष्य को भगवान की प्रतिकृति के रूप में बनाया गया है और दूसरे लोकों के लोग, भिन्न छवियों में हैं–(तब) हमारे (इस) विचार का क्या होगा कि, केवल मनुष्य को ही भगवान की छवि में बनाया गया है ?'' लामा ने, ये निश्चित करने के लिए कि मैं उनकी टिप्पणियों को समझ रहा था, ध्यान से मेरी तरफ देखा। मैं संपूर्ण निश्चय के साथ, समझ रहा था; ये सभी स्वयंसिद्ध प्रतीत हुआ।

''हर विश्व का, हर विश्व के प्रत्येक देश का अपना भगवान या संरक्षक देवदूत (guardian angel) होता है। हम इस विश्व के प्रभारी देवता को मनु[9] कहते हैं। वह उच्चतमरूप से उन्नत हो चुका आत्मा है, एक मानव, जो अवतारों के माध्यम से, अवतारों के बाद अवतार, इतना परिष्कृत हो गया है। उसकी सब तलछट (मैल) हटा दी गई है और पीछे केवल शुद्धतम बचा है। वहॉ, महान प्राणियों का एक समूह है, जो आवश्यकता के समय, इस पृथ्वी पर आते हैं, ताकि वे उदाहरण प्रस्तुत कर सकें,

9 अनुवादक की टिप्पिणी : वैदिक सनातन धर्म में सृष्टि के आदिपुरुष को मनु कहा जाता है। इससे उत्पन्न संतान मानव कहलाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक, सत्ताईस मनु हो चुके हैं। एक मनु से दूसरे मनु के बीच का समय मन्वंतर कहलाता है। वर्तमान में अट्ठाईसवॉ मन्वंतर चल रहा है।

जिनके द्वारा सामान्य मृत्य पुरुष, गंदी सी सांसारिक इच्छाओं से उठने में समर्थ हो सकें।''

मैंने अपना सिर हिला कर हामी भरी ; मैं इसके बारे में जानता था, जानता था कि, बुद्ध, मौसेस, ईसा और दूसरे अनेक इसी श्रेणी के थे। मैं मैत्रेय को भी जानता था जो, बौद्ध धर्मग्रन्थों में कहा गया है कि, बुद्ध के गुजर जाने के या अधिक ठीक कहा जाए गौतम बुद्ध के जाने के 565 करोड़ वर्ष बाद, इस विश्व में आयेंगे। यह सब, और अधिक, हमारे मानक धार्मिक शिक्षाओं और ज्ञान का एक अंग था, कि किसी भी भले आदमी को समान अवसर मिलेगा, कोई बात नहीं, उसके खुद के धार्मिक विश्वास का नाम कुछ भी क्यों न हो। हम कभी विश्वास नहीं करते थे कि, कोई एक ही धार्मिक पंथ, स्वर्ग को जायेगा और विभिन्न प्रकार के आश्चर्यों के लिए खून के प्यासे शापों के लिए, दूसरे सभी नक्र में गिरेंगे। परंतु मेरे शिक्षक जारी रखने के लिए तैयार थे।

हमारे इस विश्व का मनु है, महान उन्नत प्राणी, जो पूरे विश्व के भाग्य को नियंत्रित करता है। छोटे मनु भी हैं, जो किसी देश के भाग्य को नियंत्रित करते हैं। अंतहीन वर्षों में, विश्व का मनु आगे बढ़ता जाएगा और अगला सबसे अच्छा, जो भलीभाँति प्रशिक्षित, उन्नत होगा, पृथ्वी का भार ग्रहण करेगा।'' ''आह ! मैं कुछ विजयोल्लास में चिल्लाया, ''तब सभी मनु अच्छे नहीं हैं ! रूस का मनु, रूसी लोगों को, हमारे हितों के विरुद्ध कार्य करने दे रहा है। चीन का मनु, चीनियों को हमारी सीमाओं पर हमला करने की और हमारे लोगों को मार डालने की इजाजत देता है।'' लामा मेरे ऊपर मुस्कुराए। ''तुम भूल गए, लोबसांग,'' उन्होंने जवाब दिया, ''ये लोक नक्र है, हम यहॉ पाठ सीखने के लिए आते हैं। हम यहॉ पीड़ा झेलने के लिए आते हैं, ताकि हमारी आत्माऐं उन्नत हो सकें। कठिनाइयॉ सिखाती हैं, दर्द सिखाते हैं, दयालुता और विचारशीलता नहीं। युद्ध होते हैं, ताकि मनुष्य युद्ध क्षेत्र में साहस दिखा सके– एक लोह अयस्क के भट्टी में होने की भाँति– युद्ध की अग्नि के द्वारा, उस पर पानी चढ़ाया जाता है और मजबूत बनाया जाता है। हाड–मांस का शरीर कोई अर्थ नहीं रखता, लोबसांग, ये मात्र एक अस्थाई कठपुतली है। अहम्, आत्मा, अधिस्वयं (तुम इसे जो कुछ भी कहना चाहो) ही वह है, जिस पर विचार किया जाना चाहिए। पृथ्वी पर, अपने अंधेपन में, हम सोचते हैं कि, केवल शरीर ही का तात्पर्य है। शरीर का डर हमारे विचारों को ढक लेता है और हमारे निर्णयों को झुका देता है। हमें अपने खुद के लिए, खुद के अधिस्वयं के लिए, साथ ही साथ, दूसरों को भी सहायता पहुॅचाते हुए, कार्य करना पड़ता है। जो दबंग माता–पिता के द्वारा निर्देशित होते हुए, अंधे हो कर उनका अनुगमन करते हैं, वे अपने साथ–साथ, अपने मातापिता के ऊपर भी भार डालते हैं। जो अंधेपन से, किसी घिसेपिटे धार्मिक विश्वास का अनुगमन करते हैं, वे भी अपने उन्नयन को रोक देते हैं।

''आदरणीय लामा !'' मैंने प्रतिरोध किया, ''क्या मैं दो टिप्पणी जोड़ सकता हूॅ ?'' ''हॉ, तुम कर सकते हो,'' मेरे शिक्षक ने जवाब दिया। ''आपने कहा कि यदि स्थितियॉ खराब हों तो, हम अधिक तेजी से सीखते हैं। मैं थोड़ी सी अधिक, दयालुता को प्राथमिकता दूॅगा। मैं उस तरीके से सीख सका।'' उन्होंने विचारपूर्वक मुझे देखा। ''क्या तुम कर सके ?'' उन्होंने पूछा। ''यदि तुमको अपने शिक्षकों का डर नहीं होता, तो क्या तुम पवित्र पुस्तकों को पढ़ सकते थे ? क्या तुम रसाईघर में अपना हाथ बॅटाते, यदि तुम्हें आलस का दण्ड पाने का डर नहीं होता, क्या तुम सीखते ?'' मैंने अपना सिर लटका दिया, ये ठीक था, जब ऐसा करने का आदेश मिलता था, मैं रसोई घर में काम करता था। मैं पवित्र पुस्तकों को पढ़ता था, क्योंकि मैं फेल होने के परिणाम से डरता था। ''और तुम्हारा अगला प्रश्न ?'' लामा ने कहा। ''ठीक है, श्रीमान्, परम्परावादी धर्म, किसी की उन्नति को किस प्रकार बाधित करता है ?'' ''मैं तुम्हें दो उदाहरण दूॅगा,'' मेरे शिक्षक ने जवाब दिया। ''चीनी लोग विश्वास करते थे कि, उन्होंने इस जीवन में क्या किया, इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि, जब वे दुबारा यहॉ आऐंगे, उन गलतियों और पापों के लिए भुगतान कर सकते हैं। इसप्रकार, उन्होंने मानसिक आलस की नीति अपनाई। यदि आध्यात्मिक आलस्य की नशे की दवा या अफीम, उनको दी जाए, कोई भी धर्म वैसा हो

जायेगा; वे केवल अगले जीवन के लिए जीते हैं, और इसप्रकार उनकी कलायें और हस्तकलाऐं अनुपयोगी हो गईं। इसप्रकार चीन, तृतीय श्रेणी की शक्ति हो गया, जिसमें बंदी युद्ध–स्वामियों ने आतंक और लूटमार का राज्य प्रारम्भ कर दिया।''

मैंने ध्यान दिया कि, ल्हासा में चीनी, अनावश्यकरूप से नृशंस और पूरी तरह से भाग्यवादी दिखाई देते थे। उनके लिए मृत्यु का अर्थ, एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने से अधिक, कुछ नहीं था ! मैं मृत्यु से बिल्कुल नहीं डरता, परंतु मैं आलस करने, और इस दुनियॉ में बार–बार आने के बजाय, एक जीवनकाल में, अपना काम पूरा कर लेना चाहता हूँ। पैदा होने, एक असहाय बच्चा होने, और मजबूरी में स्कूल जाने की, ये सारी प्रक्रिया, मेरे लिए कष्टपूर्ण थी। मैंने आशा की कि, मेरा ये जीवन, इस पृथ्वी पर अंतिम होगा। चीनी लोगों ने आश्चर्यजनक आविष्कार किए, कला के आश्चर्यजनक कार्य, एक आश्चर्यजनक सभ्यता। अब, एक धार्मिक विश्वास के प्रति, काफी अधिक दासतापूर्ण चिपकने से, साम्यवाद के लिए एक तैयार चारे के रूप में, चीनीलोग अनैतिक, पतनोन्मुख हो गए हैं। एक समय में आयु और ज्ञान, चीन में, जैसा होना चाहिए, बहुत गम्भीरता से सम्मानित किया जाता था, अब– और अधिक नहीं, संतों को जो आदर मिलना चाहिए था वह नहीं मिलता; अब जिसका अर्थ था, वह थी, हिंसा, व्यक्तिगत प्राप्ति और स्वार्थपरता।

''लोबसांग!'' मेरे शिक्षक की आवाज मेरे विचारों में कौंधी। ''हम एक धर्म रहे हैं जो अक्रियता (inaction)[10] को सिखाता है, जो सिखाता है कि, किसी एक को, किसी भी अवस्था में, किसी भी अन्य को अपने कर्म में जोड़ने के लिए, दूसरे को प्रभावित नहीं करना चाहिए – यह ऋण है, जो (एक) जीवन से (दूसरे) जीवन में चलता चला जाता है।'' उन्होंने ल्हासा के शहर के ऊपर, हमारी शांतिमय घाटी को देखा, तब फिर मेरी तरफ मुड़े। ''पश्चिम के धर्म, बहुत अधिक युद्धप्रिय हैं। यहॉ के लोग, जिस पर वे विश्वास करना चाहते हैं, उस पर विश्वास (मात्र से) करने से संतुष्ट नहीं हैं, परंतु वे वैसा ही विश्वास करने के लिए, दूसरों को मारने की इच्छा रखते हैं।'' ''मैं नहीं देखता कि, किसी व्यक्ति को मारना, एक अच्छा धर्म व्यवहार, कैसे हो सकता है,'' मैंने टिप्पणी की। ''नहीं, लोबसांग,'' परन्तु स्पेन की जॉच की अवधि में ईसाइयों की एक शाखा ने, किसी भी दूसरी शाखा को प्रताड़ित किया ताकि, उनका 'धर्म परिवर्तन' किया जा सके और उनको 'बचाया' जा सके।'' लोगों को पटियों के ऊपर लिटाया गया और दॉव पर लगा कर जला दिया गया कि, इसप्रकार उनको अपने विश्वासों को बदलने के लिए, राजी किया जा सकेगा! ये लोग अब भी, मिशनरियों को, जो लगभग किसी भी तरीके से धर्म परिवर्तन कराते हैं, बाहर भेजते हैं। ऐसा लगता है कि वे, अपने विश्वास के बारे में इतने अनिश्चित हैं कि वे, इसी दिशा में, मानते हुए कि, संख्याओं में सुरक्षा होती है, दूसरे लोगों से उनका अनुमोदन और अपने धर्म के प्रति सहमति–व्यक्त कराते हैं''

''श्रीमान्!'' मैंने कहा, ''क्या आप सोचते हैं कि लोगों को एक ही धर्म का पालन करना चाहिए ?'' ''क्यों, निश्चितरूप से, यदि वे ऐसा चाहें,'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने जवाब दिया। ''यदि लोग अभी तक उस अवस्था में नहीं पहुॅच पाये हैं, जहॉ वे अपने अधिस्वयं को और विश्व के मनु को, स्वीकार कर सकें, तब किसी भी औपचारिक धार्मिक व्यवस्था से चिपके रहना, उनके लिए सुखदायक नहीं होगा। ये मानसिक और आध्यात्मिक अनुशासन है, ये कुछ लोगों को अनुभव कराता है कि, एक शुभेच्छु पिता के साथ, जो उन पर (सत्त्) निगरानी करता है, और एक करूणामयी मॉ के साथ, जो उनकी तरफ से पिता के साथ, मध्यस्थता करने के लिए हमेशा तैयार रहती है, वे एक परिवार के समूह से जुड़े हैं। हॉ, उन्नयन की एक निश्चित स्थिति में, उन लोगों के लिए, ऐसा धर्म अच्छा है। परंतु जितना जल्दी, ऐसे लोग महसूस करते हैं कि, उन्हें अपने अधिस्वयं से प्रार्थना करनी चाहिए, उतनी ही जल्दी वे उन्नत हो जायेंगे। हमसे कई बार पूछा जाता है कि, हमारे मंदिरों (Temples) में पवित्र प्रतिमाऐं क्यों होती हैं, या

10 अनुवादक की टिप्पिणी : यहॉ लेखक का आशय, योग के 'अकर्म' पद से अथवा सांख्य के 'निष्काम कर्म' पद से है, निष्क्रियता से नहीं।

हमारे मंदिर क्यों होते हैं। उसके लिए हम जवाब दे सकते हैं कि, ऐसी प्रतिमाऐं याद दिलाने वाली हैं कि, हम भी उन्नत हो सकते हैं और कुछ समय में एक उच्च आध्यात्मिक प्राणी बन सकते हैं। हमारे मंदिर वे स्थान हैं, जहॉ एक दूसरे को शक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से, किसी के अधिस्वयं तक किसी कार्य को पहुॅचाने के लिए, एक समान विचारधारा के लोग इकट्ठे हो सकते हैं। प्रार्थना के द्वारा, तब भी, जबकि प्रार्थना करनेवाले को ठीक से दिशानिर्देश नहीं किया गया हो, कोई, कंपन करने की उच्च दर पर पहुॅचने की सामर्थ्य रखता है। एक मंदिर के अन्दर, यहूदी उपासना ग्रह (Synagogue) में, या किसी इसाई गिरजाघर (Church) में, ध्यान लगाना और चिंतन करना, लाभदायक होता है।''

जो मैंने सुना था, मैंने उसके ऊपर आश्चर्य किया। हमारे नीचे कलिंग चू (Kaling Chu) ठनक रही थी और तेजी से दौड़ रही थी, मानो ये, लिंगखोर सड़क के पुल के नीचे, अपने आपको समेटने के लिए निचोड़ दी गई हो। दक्षिण में कुछ दूर, मैंने लोगों के एक दल को, क्ची चू (Kyi Chu) के एक नाविक की प्रतीक्षा करते हुए देखा। व्यापारी, मेरे शिक्षक के लिए, भारत और विश्व के अनजान देशों से समाचारपत्रों और पत्रिकाओं को लाते हुए, दिन में जल्दी ही आ गये थे। लामा मिंग्यार डोंडुप, अक्सर और बहुत दूर की, यात्रा करते थे और तिब्बत के बाहर के मामलों में, समाचार–पत्र, पत्रिकाओं से काफी निकट का सम्पक्र रखते थे। मेरे मन के पिछले हिस्से में, एक विचार आया। ऐसा कुछ, जो इस चर्चा में सार्थक था। समाचार–पत्र ? मानो कि, बिच्छू के द्वारा काटा हुआ मैं, सहसा उछल पड़ा। समचार–पत्र नहीं, परंतु एक पत्रिका! कुछ चीज, जो मैं देख चुका था, अब ये क्या थी ? मैं जानता था ! ये सब मेरे सामने स्पष्ट था ! मैं, विदेशी भाषाओं का एक शब्द भी न समझते हुए, परंतु केवल चित्र देखते हुए, कुछ प्रश्नों के ऊपर भटक गया था। एक ऐसा ही पृष्ठ, मेरे तलाशते हुए अंगूठे के नीचे रुका। एक खूनी युद्धक्षेत्र के ऊपर, बादलों में तैरते हुए पंखों वाले प्राणी का एक चित्र। मेरे शिक्षक, जिनको मैंने वह चित्र दिखाया, उन्होंने शीर्षक को पढ़ा और मेरे लिए उसे अनुवादित किया।

''आदरणीय लामा!'' मैं उत्तेजनापूर्वक चीखा, ''आज आपने, पहले मुझे इस चित्र को बताया– आपने इसे मौन्स (Mons) का देवदूत कहा–अनेक लोग जिसे, एक युद्ध क्षेत्र के ऊपर देखने का दावा करते हैं। क्या ये एक देवता था ?'' ''नहीं, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने जवाब दिया, ''अनेक–अनेक लोग, अपनी निराशा के क्षणों में, एक संत अथवा एक देवदूत, जैसा उन्हें वे कहते हैं, की आकृति देखने की इच्छा करते हैं। उनकी तात्कालिक आवश्यकता और एक युद्धक्षेत्र में छिपी हुई प्रबल भावनाऐं, उनकी इच्छाऐं और उनकी प्रार्थनाऐं, उनको अपने विचारों के प्रति शक्ति प्रदान करतीं हैं। इस प्रकार, उस ढंग से, जो मैंने तुम्हें बताया, उन्होंने अपनी खुद की विशिष्टताओं के साथ, एक विचार बनाया। जैसे ही एक चित्र का प्रेतात्मा रूप ढॉचा, पहले उनके सामने प्रकट हुआ, प्रार्थनाऐं और आदमी के विचार, जिन्होंने इसे उत्पन्न किया प्रबलित किए गये और इसप्रकार, आकृति ने घनापन और शक्ति प्राप्त की और एक उचित समय तक चलती रही। हम यहॉ, अपने अंदर वाले मंदिर में, ''विचार आकृति बनाते हैं, हम भी वही चीज करते हैं।'' परंतु आओ, लोबसांग, दिन काफी आगे बढ़ गया है और लोगसार के उत्सव, अभी भी समाप्त नहीं हुए हैं।

हम गलियारे में नीचे चले, दौड़–धूप करते हुए दृश्यों की व्यस्त हड़बड़, जो उत्सवों के एक सत्र की अवधि में, एक लामामठ में रोजमर्रा का जीवन था। कलाओं के स्वामी, चबूतरे पर चढ़ने के लिए और किसी प्रतिमा के सिर पर, सबसे ऊपर, कुछ परिवर्तन करने के लिए, एक छोटे, हल्के लड़के की इच्छा रखते हुए, मेरी तलाश में आए। स्वामी की एक फुर्तीली चाल के साथ, मक्खन के कमरे के फिसलन भरे, पगडण्डी के रास्ते पर चलते हुए मैं, उनके पीछे चला। मैंने, रंगे हुए मक्खन से पूरी तरह भरी हुई एक पुरानी पोशाक पहनी, और अपनी कमर में एक हल्का नाड़ा, जो सामग्रियों को मुझे पेश कर सके, बांधते हुए, मैं मचान पर चढ़ा। ये वह था, जिसका स्वामी ने अनुमान किया था, लकड़ी की पट्टियों से, सिर का हिस्सा टूट गया था। जो मैं चाहता था, उसे नीचे बुलाते हुए, मैंने अपने रस्से को झुलाया

और मक्खन का एक थक्का ऊपर खींचा। मैंने, लकड़ी की पतली खपच्चियों को मरोड़ते हुए, सहारा देने वाले ठूंठ (stud) को गोल करते हुए, सिर को एक बार फिर, अपने स्थान पर पुनः पकड कर सॉचे में ढालते हुए, कुछ घन्टों के लिए काम किया। काफी देर बाद, अंत में, कलाओं के स्वामी ने, जमीन से आलोचनापूर्वक निगरानी रखते हुए, मुझे इशारा किया कि, वे संतुष्ट थे। धीरे–धीरे, कड़ाई के साथ, मैंने अपने आपको रंगमंच से अलग किया और धीरे से जमीन पर उतरा। धन्यवादपूर्वक, मैंने अपनी पोशाक को बदला और तेजी से भाग गया।

अगले दिन, मैं और दूसरे अनेक चेले, श्यो के गॉव के द्वारा, नीचे ल्हासा के पठार पर, पोटाला के चरणों में, बुलाये गये थे। सिद्धान्तरूप से, हम जलूस, खेलों, और दौड़ों को देख रहे थे। वास्तव में, हम नम्र तीर्थयात्रियों, जो पथरीले रास्ते पर भीड़ बनाये खड़े थे, के सामने दिखावा कर रहे थे, ताकि, वे लोगसार के समय पर ल्हासा में रह सकें। वे यहॉ, बौद्धधर्म की मक्का (Mecca) पर, बौद्धविश्व के सभी स्थानों से आये थे। उम्र के द्वारा अपंग किये गये बूढ़े आदमी, और छोटे–छोटे बच्चों को लिए हुए नौजवान औरतें, सभी इस विश्वास में आये थे कि, पोटाला शहर की पवित्र परिक्रमा को पूरी कर लेने के बाद, वे सभी, पुराने पापों को धो डालेंगे और पृथ्वी पर अगले जीवन के लिए, अच्छा सुनिश्चित कर लेंगे। भाग्य बताने वालों ने, लिंगखोर की सड़क पर भीड़ लगा रखी थी, पुराने भिखारी, भीख के लिए रिरिया (whine) रहे थे, और कंधों पर लटकाये हुए अपने माल–असबाबों के साथ व्यापारी, ग्राहकों की तलाश में, भीड़ में हो कर अपने रास्ते पर धकिया रहे थे। शीघ्र ही, मैं इस उन्मादी दृश्य से थक गया, इस खुले हुए बहुआयामी और उनके अंतहीन, अनर्थक प्रश्नों से थक गया। धीमे से, मैं अपने साथियों से निकल लिया और अपने लामामठ के घर की तरफ, पहाड़ी रास्ते पर घूमता रहा।

छत पर, मेरे मनपसंद स्थान पर, सब कुछ शान्त था। सूर्य ने हल्की सी गर्मी प्रदान की। मेरे नीचे, अब दृष्टि के बाहर, भीड़ में से एक भ्रमित बड़बड़ाहट उठी, एक बड़बड़ाहट, जिसने अपनी अस्पष्टता में, मुझे शान्ति प्रदान की और मुझे, दोपहर की गर्मी में, झपकी दिला दी। एक छायादार आकृति, लगभग मेरी दृष्टि की सीमान्त अवस्था में, घनीभूत हुई। सोते–सोते, मैंने अपना सिर हिलाया और अपनी ऑखों को झपकाया। जब मैंने उन्हें फिर खोला, अब और अधिक स्पष्ट और और अधिक घनीभूत हो कर चमकती हुई आकृति, अब भी वहॉ थी। मेरी गर्दन के पिछले भाग में, मेरे बाल अचानक ही खड़े हो गए। ''तुम प्रेत आत्मा नहीं हो !'' मैं चीखा। ''तुम कौन हो ?'' आकृति धीमे से मुस्कुराई और उसने जवाब दिया, मेरे बच्चे! नहीं, मैं कोई प्रेत आत्मा नहीं हूॅ। एकबार मैं भी यहॉ चाकपोरी में पढ़ता था, और अलसाया रहता था, जैसे कि, तुम यहॉ इस छत पर अलसा रहे हो। तब मैंने, तेजी के साथ, अपनी पार्थिव इच्छाओं के ऊपर, सबसे ऊपर उठने की इच्छा की। मैंने स्वयं, अपने को उस साधु की कुटी की दीवारों में कैद कर लिया,'' उसने ऊपर की ओर इशारा किया, और मैं उसकी फैलाई हुई बॉह की दिशा में समझने के लिए मुड़ा। ''अब,'' उसने दूरानुभूति से, (कहना) जारी रखा, ''इस ग्यारहवे लोगसार पर, उस तिथि के बाहर, मैंने वह प्राप्त किया है, जो मैं चाहता था; अपनी घूमने की इच्छानुसार, अपने शरीर को सुरक्षित रूप से साधु कुटी के कोष्ठ में छोड़ते हुए, मेरी पहली यात्रा यहॉ के लिए है, ताकि मैं एकबार फिर, भीड़ को घूर सकूॅ, ताकि मैं एक बार फिर, इस भलीभॉति याद रखे हुए स्थान की यात्रा कर सकूॅ। स्वतन्त्रता, बच्चे, मुझे स्वतन्त्रता मिल गई है।'' वह मेरी निगाह के सामने से गायब हो गया, रात की हवाओं के द्वारा, अगरबत्ती के बादल की तरह से बिखर गया।

साधु कुटियाऐं! हम चेले लोगों ने, इसके बारे में काफी कुछ सुन रखा था, हम अक्सर आश्चर्य करते थे, वे अंदर से कैसी थीं ? हम उसके ऊपर भी आश्चर्य करते थे कि मनुष्य, जोखिम भरी पहाड़ियों के किनारों के ऊपर लटकते हुए इन पहाड़ी प्रकोष्ठों में, अपने आपको, क्यों कैद कर लेता है ? मैंने निश्चय किया कि, मैं अपने प्रिय शिक्षक से पूछूॅगा। तब मुझे याद आया कि, एक बूढ़ा चीनी भिक्षु, यहॉ, जहॉ मैं था से, कुछ गज दूरी पर रहता है। बूढ़े वू ह्सी (Wu Hsi) का, एक दिलचस्प

जीवन रहा था; कुछ वर्षों के लिए वह, पेकिंग में सम्राटों के महलों से संलग्न, एक भिक्षु रहा था। ऐसे जीवन से थक कर, वह ज्ञान प्राप्त करने की तलाश में तिब्बत में घूमता फिरा। अंत में, वह चाकपोरी पहुँचा, और उसे स्वीकार कर लिया गया। उससे थक जाने पर, कुछ वर्षों बाद, वह एक साधु कुटीर में चला गया और उसने वहाँ रहते हुए, सात साल तक एकान्त जीवन व्यतीत किया। अब, यद्यपि मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए, वह चाकपोरी में वापस आ गया था। मैं मुड़ा और मैंने नीचे की तरफ गलियारे में जाने की जल्दी की। अपना रास्ता छोटे प्रकोष्ठ की ओर बनाते हुए, मैं बूढ़े आदमी से मिलने जा पहुँचा।

''अंदर आओ ! अंदर आओ !'' उसने एक ऊँची, काँपती हुई आवाज में पुकारा। मैंने उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया और पहली बार चीनी भिक्षु, वू ह्सी को मिला। वह पालथी मारकर बैठा था और अपनी आयु के बावजूद, उसकी पीठ, एक जवान बाँस की तरह से, सीधी थी। उसके गालों की हड्डियाँ ऊँची उठी हुईं और खाल, बहुत बहुत कमाये हुए चमड़े की तरह की एकदम पीली थी। उसकी आँखें एकदम काली और झुकी हुईं थीं। उसकी ठोड़ी से, कुछ छितरे हुए बाल, और उसके ऊपर के ओंठ से, एक दर्जन या ऐसे ही कुछ बाल, उसकी लंबी मूछों से उगे हुये थे। बड़ी उम्र के कारण, उसके हाथ पीले भूरे और चित्तीदार थे। जबकि उसकी शिराऐं (veins), एक पेड़ की टहनियों की तरह से निकली पड़ रहीं थीं। जैसे ही मैं उसकी तरफ चला, उसने अनुभव करते हुए देखने के बजाय, अंधेपन से मेरी दिशा में देखा। ''हमममम, हमममम,'' उसने कहा, ''एक लड़का, एक छोटा लड़का, उस रास्ते से, जिससे तुम चलते हो। तुम क्या चाहते हो, बच्चे ?'' ''श्रीमान् !'' मैंने उत्तर दिया, ''आप एक लंबे समय तक साधु की कुटी में रहे हैं। क्या आप, पवित्र श्रीमान्, मुझे इस सम्बन्ध में बताने की कृपा करेंगे?'' वह बड़बड़ाया और उसने अपनी मूंछों के अंतिम सिरों को चबाया और तब कहा, ''बैठो बच्चे, काफी लम्बा समय हो चुका, जब मैं भूत की बात करता था, यद्यपि, अब मैं लगातार, इसी की सोचता हूँ।''

''जब मैं एक लड़का था,'' उसने कहा, ''मैंने बहुत दूर तक यात्राऐं कीं और भारत में गया। वहाँ मैंने एकान्त में, अपनी गुफाओं में बंद साधुओं को देखा और उनमें से कुछ, ज्ञान प्राप्त करते हुए प्रतीत हुए।'' उसने अपना सिर हिलाया; ''सामान्य आदमी, अपने दिनों को पेड़ों के नीचे व्यर्थ गंवाते हुए, बहुत आलसी थे। आह! ये एक दुखमय दृष्टि थी !'' ''पवित्र श्रीमान्!'' मैंने बीच में टोका, ''मैं तिब्बत की कुटीरों के बारे में सुनने को अधिक प्राथमिकता दूँगा।'' ''ए ? वह क्या है ?'' उसने मंद स्वर में पूछा। ''ओह हाँ, तिब्बत की साधु–कुटियाँ। मैं भारत से लौटा और अपनी मातृभूमि पेकिंग में गया। वहाँ के जीवन ने मुझे अवसादग्रस्त कर दिया, क्योंकि मैं सीख नहीं रहा था। मैंने फिर से, अपना कटोरा और अपनी लाठी पकड़ी और कई महीनों तक, तिब्बत की सीमाओं की तरफ, अपना रास्ता लिया।'' मैंने स्वयं की खीज में आह भरी। बूढ़ा आदमी जारी रहा, ''समय के अंतराल में, हमेशा ज्ञान प्राप्ति की तलाश में, एक के बाद एक, लामामठों में रुकते हुए, मैं चाकपोरी पहुँचा। चूँकि मैं, चीन में, एक वैद्य के रूप में योग्यता प्राप्त था, मठाध्यक्ष ने मुझे यहाँ रुकने की आज्ञा दे दी। मेरी विशेषता, सूची भेद (accupuncture) था। कुछ वर्षों के लिए, मैं संतुष्ट रहा, तब मेरे अन्दर किसी साधुकुटी में प्रवेश करने की इच्छा बलवती हुई।'' अबतक, मैं (लोबसांग) लगभग अधीरता के साथ नाच रहा था। यदि बूढ़ा आदमी और अधिक समय लगाता, तो मैं अत्यधिक विलंबित हो जाता– मैं शाम की सेवा को चूक नहीं सकता था ! यदि मैं ऐसा सोचता भी, तो मैं घड़ियालों की पहली तेज आवाज को सुनता। अनिच्छापूर्वक, मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ और मैंने कहा,'' आदरणीय श्रीमान्, अब मुझे जाना है।'' बूढ़ा आदमी मन ही मन मुस्कुराया। ''नहीं, बच्चे,'' उसने जवाब दिया, ''तुम यहाँ रुक सकते हो, क्योंकि क्या तुम यहाँ अपने बड़े भाई से शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहे हो ? रुको, तुमको शाम की सेवा से मुक्त किया जाता है।'' मैं यह जानते हुए कि वह सही था, फिर से, अपने आप बैठ गया ; यद्यपि वह अभी भी एक ट्रापा था, लामा नहीं, फिर भी, वह अपनी आयु, अपनी यात्राओं, और अपने अनुभव के कारण, बड़ा समझा जाता था। ''चाय बच्चे, चाय!'' वह प्रसन्नता से बोला, ''हम चाय लेंगे, मांस के लिए यह दोष है

और वर्षों का भार, मुझे भयानक रूप से दबा रहा है। चाय जवानों के लिए और बूढ़ों के लिए।'' उसके बुलाने के जवाब में, बूढ़े आदमी का एक भिक्षु सेवक, हमारे लिये चाय और जौ लाया। हमने अपना त्सम्पा मिलाया, और वह बात करने के लिये और मैं सुनने के लिए, हम व्यवस्थित होकर बैठ गये।

''मठाध्यक्ष स्वामी ने मुझे चाकपोरी छोड़ने के लिए और एक साधू कुटीर में प्रवेश करने के लिए आज्ञा दे दी। सेवक भिक्षु के साथ, मैंने इस स्थान से यात्रा की और पहाड़ों में चढ़ता गया। पॉच दिन की यात्रा के बाद, हम एक स्थान पर पहुॅचे, जिसे हमारी (चाकपोरी की) ऊपर की छत से देखा जा सकता था।'' मैंने सिर हिलाया, मैं उस स्थान को जानता था, हिमालय में, ऊॅचाई पर स्थिति एक उजाड़ इमारत। बूढ़ा आदमी कहता गया, ''ये स्थान खाली था, पहले रहने वाला, अभी हाल में ही मर गया था। सेवक और मैंने स्थान को साफ किया और तब मैं खड़ा हुआ और (मैंने) अंतिम बार, ल्हासा की घाटी में बहुत दूर–दूर तक देखा। मैंने पोटाला को और चाकपोरी को देखा, तब मुड़ा और अंदर के प्रकोष्ठ में गया। सेवक ने सीमेंट के द्वारा, पूरी तरह, पक्की तरह, दरवाजे को दीवार से बंद कर दिया और मैं अकेला था।'' ''परंतु श्रीमान्! अंदर से यह कैसा है ?'' मैंने पूछा, बूढ़े वू ह्सी ने, अपना माथा रगड़ा। ''ये पत्थर की एक इमारत है,'' उसने धीमे से जबाव दिया ''मोटी दीवारों वाली एक इमारत। एकबार जब कोई, अंदर वाले प्रकोष्ठ में, अंदर है, इसमें कोई दरवाजा नहीं क्योंकि, दरवाजे का रास्ता चुनकर बंद कर दिया गया है। दीवार में, वहॉ पूरी तरह से प्रकाश से अप्रभावित, एक आला (trap) है, जिसमें होकर साधू खाना प्राप्त करता है। अंदर वाले प्रकोष्ठ को, उस कमरे से, जिसमें सेवक रहता है, एक अंधेरी सुरंग जोड़ती है। मुझे चुन दिया गया था। अंधेरा इतना गहरा था कि, मैं इसे लगभग अनुभव कर सकता था। प्रकाश की एक झलक भी प्रविष्ट नहीं होती, न ही किसी प्रकार की ध्वनि सुनी जा सकती थी। मैं फर्श पर बैठा और अपना ध्यान प्रारंभ किया। ये कल्पना करते हुए कि, मैंने प्रकाश की धारियों और धब्बों को देखा, पहले मुझे मतिभ्रम पैदा हुए। तब मैंने अनुभव किया कि, अंधेरा मेरा गला घोंट रहा है, मानो कि, मैं मुलायम, सूखी, दलदल में घिरा हुआ हूॅ। समय ने अपना अस्त्तिव समाप्त कर दिया। शीघ्र ही, मैंने अपनी कल्पना में, घंटियों और घड़ियालों तथा लोगों के मंत्र जाप करने की आवाजें सुनी। बाद में, बलपूर्वक बाहर निकलने का एक रास्ता बनाने के प्रयास के पागलपन में, मैंने खुद को घेरने वाली दीवारों के विरुद्ध पीटना शुरू किया। मुझे दिन और रात का अंतर ज्ञात नहीं था, क्योंकि यहॉ, सभी इतना काला था, इतना शांत, जैसे की कब्र। कुछ समय बाद, मैं शांत हो गया, मेरी भगदड़ दब गई।''

मैं बैठा और दृश्य को अपनी कल्पना में देखा, बूढ़ा वू सी– तब जवान वू ह्सी! –सर्वव्यापी शांति के बीच, लगभग जीवंत अंधेरे में। ''हर दो दिन बाद,'' बूढ़े आदमी ने कहा, ''सेवक आता और थोड़ा त्सम्पा ताक के बाहर रख जाता। इतना धीमे से आता कि, मैं उसे कभी सुन नहीं पाता। पहली बार, अंधकार में, अपने खाने के लिए अंधा महसूस करते हुए, मैंने इसे ठुकराया और उस तक नहीं पहुॅच सका। मैंने पुकारा और चिल्लाया, परंतु मेरे प्रकोष्ठ में से कोई आवाज नहीं निकली; मुझे अगले दो दिन के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी।'' ''श्रीमान्!'' मैंने पूछा, क्या होता है, यदि साधू बीमार हो या मर जाता है।'' ''मेरे बच्चे,'' बूढ़े वू ह्सी ने कहा, ''यदि साधू बीमार है – वह मर जाता है। सेवक, उसके लिए हर दो दिन में एकबार, चौदह दिन तक, खाना रखता है। चौदह दिन के बाद, यदि खाना अभी भी, बिना छुआ रहता है, आदमी आते हैं और दीवार को तोड़ देते हैं और साधू की लाश को बाहर निकाल लेते हैं।''

''बूढ़ा वू ह्सी, सात वर्ष के लिए, साधू रहा था।'' ''आपके जैसे मामले में क्या होता है, जबकि आप एक पूर्व निर्धारित समय के लिए वहॉ रुकते हैं ?'' ''(पहले) मैं दो वर्ष के लिए रुका और तब सात (वर्ष) के लिए। जब मेरा बाहर आने का समय लगभग समीप था तो छत में, छोटे– से–छोटे, छेद बनाये गए, ताकि, एक बहुत हल्के–से प्रकाश की किरण, प्रविष्ठ हो सके। अधिक प्रकाश को प्रवेश देने के

लिए, हर थोड़े दिन बाद, छेद को थोड़ा बढ़ाया गया। अंत में, मैं पूरे दिन की रोशनी को सहन करने में सक्षम हुआ। चूँकि उसकी ऑखें अंधेरे में, इतने लंबे समय तक विस्तारित हो चुकी हैं कि, वे अब संकुचित नहीं हो सकतीं। यदि साधू को एकदम ही प्रकाश में बाहर ले आया जाए, वह तुरंत ही अंधा हो जायेगा। जब मैं बाहर आया मैं, धोकर सफेद बनाया हुआ जितना सफेद था और मेरे बाल ऐसे सफेद थे जैसे कि, पहाड़ों की बर्फ। मेरी मालिश की गई और (मुझे) व्यायाम कराया गया, क्योंकि उपयोग में न लाने के कारण, मेरी मांसपेशियॉ बेकार हो चुकीं थीं। धीमे–धीमे, मैंने अपनी शक्ति पुनः प्राप्त की, जबतक कि मैं, अपने सेवक के साथ, पर्वत से नीचे उतरने के लिए, दुबारा चाकपोरी में रहने के लिए, फिर से योग्य नहीं हुआ।''

अंधेरे के अंतरहित वर्षों के ऊपर विचार करते हुए, मैंने उसके शब्दों के ऊपर आश्चर्य किया। अपने खुद के स्रोतों के ऊपर थोपी हुई एकदम शांति और मैंने आश्चर्य किया, ''आपने इससे क्या सीखा, श्रीमान् ?'' मैंने अंत में पूछा, ''क्या यह इस लायक था ?'' ''हॉ, बच्चे, हॉ, वह इस लायक था!'' बूढ़े भिक्षु ने कहा। ''मैंने जीवन की प्रकृति को समझा, मैंने मस्तिष्क के उद्देश्य को सीखा। मैं शरीर में से मुक्त हुआ और तुम्हारी तरह से, जैसा तुम अब सूक्ष्मशरीर से करते हो, मैं अपनी आत्मा को बहुत दूर भेज सकता था।'' ''परंतु आप कैसे जानते हैं कि, आपने इसकी कल्पना नहीं की ? आप कैसे जानते हैं कि, आप विचारवान थे ? आप सूक्ष्मशरीर से यात्रा क्यों नहीं कर सके, जैसे कि, मैं करता हूँ ?'' जबतक कि ऑसू लुढ़क कर, उसके शिकनयुक्त गालों पर, नहीं आ गए, वू ह्सी हॅसता रहा। ''प्रश्न–प्रश्न–प्रश्न, बच्चे, जैसे मैं उन्हें पूछा करता था !'' उसने जबाव दिया।

''पहले मुझे विपत्ति के द्वारा घेर लिया गया था। तब मैंने उस दिन को कोसा, जब मैं भिक्षु बना था। उस दिन को कोसा, जब मैंने प्रकोष्ठ में प्रवेश किया था। धीमे–धीमे, मैं सांस लेने और ध्यान करने के इन तरीकों को समझने में समर्थ हो गया। प्रारंभ में मुझे मतिभ्रम, बेकार की कल्पनाऐं भी हुईं। तब एक दिन, मैं अपने शरीर में से स्वतंत्ररूप से फिसल गया और अंधेरा, मेरे लिए अब अंधेरा नहीं था। मैंने अपने शरीर को, ध्यान की मुद्रा में बैठे हुए देखा। मैंने अपनी दृष्टिहीन, ताकती हुई, एकदम खुली हुई ऑखों को देखा। मैंने अपने खाल के पीलेपन को और अपने शरीर के पतलेपन को देखा। उठते हुए, मैं प्रकोष्ठ की छत में से गुजर गया और अपने नीचे मैंने, ल्हासा की घाटी को देखा। मैंने कुछ परिवर्तनों को देखा, उन लोगों को देखा, जिनके साथ मैं परिचित था और मंदिर में से गुजरते हुए, मैं एक दूरानुभूतिपूर्ण लामा से बातचीत करने में सफल हुआ, जिसने मेरे आत्मा की मुक्ति की पुष्टि की। मैं, कहीं अधिक दूर तक (far and wide), और इस देश की सीमाओं के बाहर भी घूमता फिरा। हर दो दिन बाद, मैं लौटता और शरीर को पुर्नजीवित करते हुए, अपने शरीर में प्रवेश करता, ताकि मैं खाना खा सकूँ और उसे पोषित कर सकूँ।'' ''परंतु इस पूरी तैयारी के बिना, तुम सूक्ष्मशरीर से यात्रा क्यों नहीं कर सके?'' मैंने फिर से पूछा।

''हम में से कुछ, अत्यंत सामान्य मृत्य (mortal) हैं, हम में से कुछ को ही, किसी विशेष कार्य को करने के लिए, जैसे कि तुमको करना है, विशेष योग्यता प्रदान की जाती है। तुम भी सूक्ष्मशरीर से काफी यात्राऐं कर चुके हो, दूसरे को, जैसे कि मुझे, इससे पहले कि उसकी आत्मा, उसके हाड–मांस से अलग हो सके, एकांत और कठिनाइयॉ झेलनी पड़तीं हैं। तुम, बच्चे, सौभाग्यशालियों में से एक हो, अत्यधिक सौभाग्यशालियों में से भी एक!'' बूढ़े लामा ने आह भरी, और कहा, ''जाओ! मुझको आराम करना चाहिए, मैं काफी देर तक बात कर चुका हूँ। आओ और मुझसे दुबारा मिलो, तुम्हारे प्रश्नों के बावजूद, आगंतुक के रूप में, तुम्हारा हमेशा स्वागत होगा।'' वह मुड़ गया, और धन्यवाद के फुसफुसाते हुए शब्दों के साथ, मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ, नमन किया और धीमे से, शांति से, उसके कमरे में से खिसक लिया। मैं अपने विचार में इतना व्यस्त था कि, मैं सीधे ही सामने वाली दीवार की तरफ चला और अपनी आत्मा को, धकेल कर अपने शरीर से बाहर निकाल दिया। अपने दुखते हुए सिर को रगड़ते

हुए, मैं दुःख के साथ गलियारे में चलता गया, जबतक कि मैं, अपने खुद के कमरे में नहीं पहुॅच गया।

मध्यरात्रि की सेवा, लगभग समाप्त हो चुकी थी। भिक्षु, कुछ अधिक घण्टों के लिए सोने से पहले, जल्दी करने की तैयारी में, लौटते हुए, थोड़े से घूम–फिर रहे थे। बूढ़े पाठक ने, व्याख्यान पीठ (podium) के ऊपर, सावधानी से, पुस्तक के पृष्ठों के बीच, एक पुस्तक चिन्ह लगाया और नीचे उतरने की तैयारी में मुड़ा। असावधान छोटे बच्चों या गड़बड़ियों के लिए हमेशा सजग, तीखी निगाह वाले कुलानुशासक ने अपनी निगाहों को स्थिर किया। सेवा लगभग समाप्त हो चुकी थी। छोटे चेले, अगरबत्तीदानों को आखिरी प्रयास के लिए, हिला रहे थे, और वहॉ, चलने के लिए तैयार, एक बड़ी भीड़ की, मुश्किल से ही दबाई हुई गूंज, थी। सहसा ही वहॉ, कान खोलने वाली एक चीख आई, और बैठे हुए भिक्षुओं के सिरों के ऊपर बंधी हुई एक अजनबी आकृति ने, एक नौजवान ट्रापा, जो अगरबत्ती की दो काड़ियों को पकड़े था, को पकड़ने का प्रयास किया। हम एक झटके के साथ, एकदम सीधे बैठ गये। हमारे सामने, अंदर से झाग उड़ाते हुए ओठों से, प्रताड़ित गले में से छिपी हुई चीखें निकालते हुए, वह जंगली आकृति घूमी और घुमड़ी। समय के एक क्षण के लिए, विश्व एकदम स्थिर प्रतीत हुआ; पुलिस भिक्षु आश्चर्य के साथ, निश्चलता में जम गए। प्रभारी पुजारी, अपनी भुजाओं को ऊपर उठाते हुए, खड़े हो गए। तब कुलानुशासक, मारक सक्रियता में झूल गये। उन्होंने, उन दुष्ट शापों को चुप कराने के लिए, जो वह, धाराप्रवाह के रूप में मुॅह से निकाल रहा था, उस पागल आकृति के ऊपर इकट्ठे होते हुए, शीघ्रता से उसकी पोशाक को उसके सिर पर बांधते हुए, काबू में कर लिया। कुशलतापूर्वक, तेजी से, उसे उठा लिया गया और मंदिर से हटा दिया गया। सेवा समाप्त हुई। हम अपने पैरों पर खड़े हुए और आतंकित हुए हम, जल्दी से मंदिर की सीमाओं के परे बाहर निकल गए, ताकि हम उस पर वार्तालाप कर सकें, जो हमने अभी देखा था।

''वह केन्जी तेक्युची (Kenji Tekeuchi) है,'' मेरे समीप एक नौजबान ट्रापा ने कहा। ''वह एक जापानी भिक्षु है, जो हर जगह आता–जाता रहता है।'' '' पूरे विश्व में चारों तरफ घूम चुका है, ऐसा वे कहते हैं कि,'' किसी दूसरे ने जोड़ा, ''और बजाय इसके कि उसके ऊपर कार्य किया जाये, उसे अपने आप पाने की आशा में, सत्य की खोज करते हुए।'' तीसरे ने टिप्पणी की। मैं कुछ हद तक, अपने मन में कष्ट पाता हुआ, घूमता हुआ, दूर चला गया। कोई आदमी सत्य की खोज में क्यों पागल हो ? कमरा ठण्डा था, और जैसे ही मैंने अपनी पोशाक को अपने चारों तरफ लपेटा और सोने के लिए लेटा, मैं थोड़ा–सा कॉप गया। ऐसा लगा कि, इससे पहले कि घण्टे अगली सेवा के लिए, फिर से शोर करने लगें, इस बीच में कोई भी समय नहीं लगा। जैसे ही मैंने खिड़की में से देखा, मैंने सूर्य की पहली किरणों को पर्वतों के ऊपर आते हुए देखा, प्रकाश की किरणें जैसे कि, आकाश की जॉच करती हुईं, सितारों तक पहुॅचती हुईं दैत्यकार उॅगलियॉ। मैंने आह भरी, और मंदिर में अंतिम घुसने वाला न होने के प्रति आशंकित होते हुए और इसप्रकार कुलानुशासक की नाराजगी का शिकार न बनते हुए, जल्दी से गलियारे की तरफ नीचे भागा।

''तुम विचारमग्न दिखाई दे रहे हो, लोबसांग'' मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, जब मैं उन्हें बाद में, मध्यान्ह की सेवा के बाद, दिन में मिला, उन्होंने मुझे बैठने का इशारा किया। ''तुमने जापानी भिक्षु, केन्जी तेक्युची को देखा, जब वह मंदिर में प्रविष्ट हुआ। मैं तुम्हें उसके बारे में बताना चाहता हूॅ, क्योंकि बाद में, तुम उसे मिलोगे।'' मैंने अपने आपको अधिक आराम के साथ व्यवस्थित किया। ये सत्र, छोटा नहीं होने वाला था– मुझे बाकी पूरे दिन के लिए 'पकड़ लिया' गया था। ज्यों ही उन्होंने मेरी भावभंगिमा को देखा, लामा मुस्कराये। ''शायद हमको भारतीय चाय..... और भारतीय मिठाईयॉ ..... गोली को मीठा करने के लिए, लेनी चाहिए, लोबसांग, ए ?'' मैं थोड़ा–सा खिल उठा, और वे मुॅह बंद करके मुस्कुराये और उन्होंने कहा, ''सेवक उसे अभी ला रहा है, मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था!'' हॉ, जैसे ही भिक्षु सेवक प्रविष्ट हुआ, मैंने सोचा ''मुझे ऐसा शिक्षक और कहॉ मिलेगा ?''

भारत से लाई हुई टिकियॉ (cakes) मेरे विशेष पसंदीदा थे, और उस संख्या के ऊपर, जो मैं चट कर जाता था, कई बार, लामा की ऑखें भी, आश्चर्य के साथ चोंधिया जातीं थीं।

''केन्जी तेक्युची'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''एक बहुमुखी प्रतिभा का आदमी है – था। बहुत अच्छी तरह से घूमा फिरा हुआ। अपने पूरे जीवन में (अब वह 70 का है) वह पूरी दुनियॉ में, उसकी तलाश में, जिसे वह 'सत्य' कहता है, घूमता फिरा। सत्य उसके अंदर है, परंतु फिर भी, वह इसे नहीं जानता। बदले में वह घूमता फिरा, और फिर घूमा। हमेशा ही वह धर्मों का, आस्थाओं का, अध्ययन करता रहा है। हमेशा ही वह अपनी खोज के प्रयत्न में, अपने जनून में, अनेक देशों की पुस्तकों का अध्ययन करता रहा है। अब अंत में, बहुत देर बाद, उसे हमारे पास भेजा गया है। उसने विरोधाभासी प्रकृति का, इतना ज्यादा पढ़ लिया है कि, उसका प्रभामंडल दूषित हो गया है। उसने इतना अधिक पढ़ लिया है और इतना कम समझा है कि, वह लगभग अधिकांश समय के लिए, पागल रहता है। वह सभी ज्ञानों को पोंछते हुए और उसमें से बहुत थोड़ा पचाते हुए, एक मानव अवशोषक गद्दी (sponge) है। ''तब श्रीमान्! '' मैं विस्मय से बोला! आप पुस्तकों के अध्ययन के खिलाफ हैं ?'' ''बिल्कुल नहीं, लोबसांग,'' लामा ने जवाब दिया, ''सभी विचारवान मनुष्यों की भॉति, मैं उन के प्रति खिलाफ हूँ, जो तथाकथित गूढ़विज्ञान के संबंध में, विवरणिका (brochures), इश्तहार (pamphlets), और विचित्र सभ्यताओं के सम्बंध में लिखी हुई पुस्तकों को पढ़ते हैं। जबतक कि वे, पूरी, झूठी जानकारी को, बहा न दें और एक छोटे बच्चे की भॉति न हो जाऐं, ये लोग, अपनी आत्मा को विष देते हैं, वे, और आगे की (further) उन्नति को, अपने लिए असंभव बना देते हैं।''

''आदरणीय लामा,'' मैंने पूछा, ''कोई पागल कैसे हो जाता है ? कैसे कईबार, गलत पठन, भ्रमों को जन्म देता है ? ''ये एक लंबी कहानी है,'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने जबाव दिया। पहले हमको कुछ मूलभूत बातों के ऊपर विचार करना चाहिए। अपने अंदर धैर्य धारण करो और सुनो! पृथ्वी पर हम कठपुतली की तरह हैं, कठपुतली, जो एक विद्युत आवेशों के द्वारा घिरे हुए कंपनशील अणुओं से बनी है। हमारा अधिस्वयं, बहुत अधिक दर पर कंपन करता है और उस पर बहुत अधिक विद्युत आवेश होता है। हमारे और हमारे खुद के अधिस्वयं के कंपनों की दर के बीच, एक निश्चित संबंध है। कोई, इस पृथ्वी पर, हम में से हर एक के बीच, और कहीं दूसरी जगह, एक नये ढंग के लोक में, हमारे अधिस्वयं के बीच संपक्र करने के तरीके को, जिसके द्वारा, इसप्रकार एक देश में स्थित एक व्यक्ति को, किसी दूसरे देश में स्थिति व्यक्ति के साथ बहुत दूर देश में संपक्र करने के लिए, महाद्वीप और समुद्रों के आरपार, रेडियो तरंगे भेजी जातीं हैं, पसंद कर सकता है। इस मामले में कि, वे अधिस्वयं से उच्च आवृतियों के आदेश और निर्देश संदेशों को प्राप्त करते हैं, और उन्हें निम्न आवृति के आवेगों में, जो हमारी क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं, परिवर्तित कर देते हैं, हमारे मस्तिष्क, रेडियो के संग्राहक (receiver) की तरह हैं। मस्तिष्क, विद्युतीय – यांत्रिक – रासायनिक युक्ति है, जो हमको पृथ्वी पर उपयोगी बनाती है। रासायनिक प्रतिक्रियायें, हमारे मस्तिष्क को दोषपूर्ण तरीके से कार्य करने के लिए, शायद संदेशों के कुछ हिस्सों को बाधित करते हुए, क्योंकि क्या हम पृथ्वी पर अपने अधिस्वयं द्वारा विरले रूप से, भेजे गए, सही संदेश प्राप्त करते हैं। अधिस्वयं के संदर्भ के बिना, मन सीमित क्रियाओं के लिए सक्षम है। मन कुछ निश्चित उत्तरदायित्वों को स्वीकार करने में, कुछ निश्चित मत बनाने में सक्षम है, और अधिस्वयं की 'आदर्श' और पृथ्वी पर किन्हीं कठिन अवस्थाओं के बीच, खाई को पाटने का प्रयास करता है।''

''परंतु क्या पश्चिमी लोग, मस्तिष्क में विद्युत के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं ?'' मैंने पूछा। ''हॉ,'' मेरे शिक्षक ने जबाव दिया, ''कुछ निश्चित अस्पतालों में, रोगियों की मस्तिष्क तरंगों के नक्शे (chart) बनाये गए हैं, और ये पाया गया है कि, कुछ निश्चित मनोविकार का एक 'लाक्षणिक मस्तिष्क तरंग प्रादर्श (characteristic brain wave pattern)' होता है। इसप्रकार, मस्तिष्क तरंगों से, ये

बताया जा सकता है कि कोई व्यक्ति, किसी मनोविकार या बीमारी से पीड़ा सहन करता है या नहीं करता। बहुधा शरीर में कोई बीमारी, मस्तिष्क को कुछ निश्चित रसायन भेजती है, इसकी तरंग आकृति को दूषित करती है, और इसप्रकार पागलपन के लक्षण प्रदर्शित करती है।'' ''क्या जापानी बहुत पागल होता है ?'' मैंने पूछा। ''आओ! अब हम उसे देखेंगे, उसके पास सुस्पष्ट कहानियों में से एक है।'' लामा मिंग्यार डोंडुप अपने पैरों पर खड़े हुए और तेजी से कमरे के बाहर चले गए। मैं अपने पैरों पर उछला और उनके पीछे भागा। वे गलियारे में नीचे की तरफ रास्ते पर चलते गए, नीचे के एक दूसरे तल पर, और बहुत दूर एक खंड (wing) की तरफ, जहॉ वे (मरीज) जिनकी चिकित्सा चल रही थी, रखे गये थे। जापानी भिक्षु, खाती लिंगा (Khati Linga) के ऊपर, एक छोटी सी कुटी में, बाहर की तरफ ध्यान में देखते हुए, बैठा हुआ था। लामा मिंग्यार डोंडुप के पहुॅचते ही, अपने हाथों को जोड़ता हुआ, वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ, और उसने नीचे झुक कर दण्डवत की। ''बैठे रहो,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''मैं तुम्हारे पास एक नौजवान आदमी को लाया हूॅ, ताकि वह तुम्हारे शब्दों को सुन सके। वह अंतरतम के विशेष निर्देशों के अंतर्गत है।'' लामा ने झुक कर नमन किया मुड़े और उन्होंने कुटी को छोड़ दिया। कुछ क्षणों के लिए, जापानी ने मुझे घूरा और तब मुझे बैठने का इशारा किया। मैं होशियारी से, कुछ दूरी पर बैठा क्योंकि, मैं नहीं जानता था कि, वह कब हिंसक हो उठेगा!

''अपने सिर को, गूढ़रहस्यों की सामाग्री से, जिसे तुम पढ़ सकते हो, मत जकड़ो लड़के!'' जापानी भिक्षु ने कहा। ''ये न पच सकने योग्य सामिग्री है, जो तुम्हारी आध्यात्मिक प्रगति को रोक देगी। मैंने सभी धर्मों को पढ़ा है। मैंने सभी पराभौतिक संस्कृतियों को, जो मुझे मिल सकती थीं पढ़ा है। उन्होंने मुझे जहर दे दिया, मेरे विचारों को ढक लिया, मुझे ये मानने के लिए विवश कर दिया कि, मैं विशेषरूप से चुना गया, एक हूॅ। अब मेरा दिमाग अपंग हो गया है और एक समय, मैं अपने ऊपर नियंत्रण खो देता हूॅ। – अपने अधिस्वयं के निर्देशों से भागता हूॅ।'' ''परंतु श्रीमान्!'' मैं खुशी से चिल्लाया, ''यदि कोई पढ़ न सके तो कोई कैसे सीख सकता है ? छपे हुए शब्दों से क्या हानियॉ संभव हो सकतीं है ?'' ''परंतु बच्चे! ''जापानी भिक्षु ने कहा,'' निश्चितरूप से कोई पढ़ सकता है, परंतु जो तुम पढ़ते हो, उसका सावधानी के साथ चुनाव करो और सुनिश्चित करो कि, जो तुम पढ़ रहे हो, उसे तुम पूरी तरह समझते हो। छपे हुए शब्दों में कोई खतरा नहीं है परंतु उन विचारों में खतरा है, जो ये शब्द पैदा कर सकते हैं। किसी को भी, अनुकूल (compatible) को प्रतिकूल (incompatible) के साथ मिलाते हुए, कुछ भी, नहीं खाना लेना चाहिए; न तो किसी को, उन चीजों को, जो परस्पर विरोध करती हैं या भिन्न मत रखती हैं, पढ़ना चाहिए। न ही किसी को, उन चीजों को, जो रहस्यमयी शक्तियों के वायदे करतीं हैं, पढ़ना चाहिए। एक विचार आकृति बनाना, जिसको कोई नियंत्रित न कर सके, सरलतापूर्वक संभव है, जैसा कि मैंने किया, और तब वह आकृति, किसी को घायल करती है।'' ''क्या आप विश्व के सभी देशों में गए हैं ?'' मैंने पूछा। जापानी ने मेरी तरफ देखा, और उसकी ऑखों में एक हल्की सी चमक दिखाई दी।

''मैं एक छोटे जापानी गॉव में पैदा हुआ था।'', ''और जब मैं काफी बड़ा हो गया, तो मैं पवित्र सेवा में प्रविष्ट हुआ। सालों तक, मैंने धर्मो और गूढ़रहस्यमय अभ्यासों को पढ़ा। तब मेरे वरिष्ठ ने मुझे, उन्हें छोड़ देने और समुद्र पार के, दूर देशों की यात्रा करने के लिए कहा। पचास वर्षो तक, एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक, देश–देशांतर तक, हमेशा अध्ययन करते हुए, मैं घूमता रहा हूॅ। मैंने अपने विचारों के द्वारा, शक्तियॉ, जिन्हें मैं नियंत्रित नहीं कर सका, सृजित कीं। शक्तियॉ, जो सूक्ष्मस्तरों पर रहती हैं और कईबार, मेरे रजत्तंतु को प्रभावित करती हैं। बाद में, शायद मुझे, तुम्हें और अधिक बताने की इजाजत मिल जाये परंतु वर्तमान में, पिछले आक्रमण से, मैं थोड़ा कमजोर (हो गया) हूॅ और इसप्रकार मुझे आराम करना चाहिए। अपने शिक्षक की आज्ञा के साथ, तुम किसी बाद के दिन, मेरे पास आ सकते हो।'' मैंने (उसके प्रति) अपने नमन किए और उसे कुटी में अकेला छोड़ दिया। एक

चिकित्सीय भिक्षु ने मुझे बाहर निकलता देख कर, उस तक पहुॅचने की जल्दी की। उत्सुकतापूर्वक मैंने खुद को देखा, चाकपोरी के इस भाग में, वहॉ लेटे हुए, बूढ़े भिक्षु की ओर देखा। तब, मैं एक अतिआवश्यक, दूरानुभूतिपूर्ण पुकार के जबाव में, जल्दी से अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप की तरफ चला।

अध्याय पॉच

मैंने, गलियारों में चलते हुए, कोनों की तरफ दौड़ते हुए, जो मेरे रास्ते में पड़े, उनको परेशानी में डालते हुए, जल्दी की। गुजरते समय, एक बूढ़े भिक्षु ने मुझे पकड़ लिया, हिलाया, और कहा, '' इतनी तेजी, जल्दी करना अच्छा नहीं है, लड़के, ये सच्चे बौद्ध का रास्ता नहीं है!'' तब उसने मेरे चेहरे की ओर ताका और मुझे लामा मिंग्यार डोंडुप के पालित की तरह से, पहचान लिया। एक फुसफुसाहट भरी आवाज के साथ, जो 'अरे!' दिखाई दी उसने मुझे, एक दहकते हुए कोयले की तरह से पटक दिया और अपने रास्ते पर जल्दी से चला गया। मैंने संयत ढंग से, अपने रास्ते का अनुगमन किया। अपने शिक्षक के कमरे के प्रवेशद्वार पर, मैं एक ऐसे झटके के साथ रुका कि, मैं लगभग गिर पड़ा; उनके साथ, दो बहुत वरिष्ठ मठाध्यक्ष थे। मेरी भावना ने, मेरे सामने काफी बुरा समय ला दिया था; अब मैंने क्या कर दिया ? सबसे खराब, मेरे अनेक 'पापों' में से सबसे खराब, खोज लिया गया था ? वरिष्ठ मठाध्यक्षों ने, छोटे बच्चों की प्रतीक्षा नहीं की, जबतक कि वह छोटे बच्चों के लिए, कोई खराब खबर न हो। मेरी टांगे विशिष्टरूप से रबड़ जैसी लचकदार हो गई और ये देखने के लिए कि क्या मैंने ऐसा कुछ कर दिया है, जो मुझे चाकपोरी से निष्कासित करा दे, मैंने अपनी स्मृति लुटा दी। मठाध्यक्षों में से एक ने, मेरी तरफ देखा और वह एक पुराने हिमखंड की गर्माहट के साथ मुस्कुराया। दूसरे ने मेरी तरफ, एक चेहरे के साथ, जो हिमालय के एक टुकड़े में से गढ़ा गया (carved) दिखाई दिया, देखा। मेरे शिक्षक हॅसे। ''निश्चितरूप से तुम्हारी भावना दोषी है, लोबसांग। आह! ये आदरणीय मठाध्यक्ष भाई भी, दूरानुभूति सम्पन्न लामा हैं, उन्होने एक दबी हुई मुस्कान के साथ जोड़ा।

दोनों मठाध्यक्षों में से अधिक विकट ने, कठोरता के साथ, मुझे देखा, और गिरती हुई चट्टानों की याद दिलाने वाली आवाज में कहा, ''मंगलवार लोबसांग रंपा, अंतरतम ने एक जॉच गठित की है, जो प्रारंभ की जाने वाली है, जिसके द्वारा यह निश्चित किया जाना है कि, तुम्हें .....के एक वर्तमान अवतार के रूप में मान्य किया जाये'' मेरा सिर चकरा गया, मैं मुश्किल से समझ पाया कि वह क्या कह रहा था, और मुश्किल से ही उसकी निष्कर्षयुक्त टिप्पणियों को पकड़ पाया, ''इस विशेषता के कारण तुम्हें, एक उत्सव में, जिसका समय और स्थान, किसी बाद के समय में, निश्चित किया जायेगा, ... मठाध्यक्ष स्वामी की उपाधि, पद, और शैली, प्रदान की जायेगी।'' दोनों मठाध्यक्षों ने अलग–अलग, लामा मिंग्यार डोंडुप को नमन किया और तब मुझे भी दण्डवत् किया। एक पुस्तक को उठाते हुए, वे बाहर पंक्तिबद्ध हो गए और धीमे–धीमे जाते उनके कदमों की आवाज, समाप्त हो गई। एक स्तब्धित की तरह से मैं, उनके पीछे गलियारे में नीचे की तरफ, टकटकी लगाता हुआ खड़ा रहा। एक दिलखुश हॅसी, और हाथ की ताली की एक आवाज, मेरे कंधे पर थपकी की एक आवाज, मुझे वर्तमान में वापस लाई। ''अब तुम जानते हो कि, ये सब भागदौड़ किसलिए थी। परीक्षणों ने, मात्र वह सुनिश्चित कर दिया है, जिसे हम हर समय जानते थे। इससे, तुम्हारे और मेरे बीच, एक विशेष उत्सव का आमंत्रण मिला है, तब मेरे पास, तुम्हारे लिये कुछ मजेदार खबरें हैं।'' वे मुझे दूसरे कमरे की तरफ ले गए, और वहॉ एक वास्तविक भारतीय खाना, बिखरा हुआ था। प्रोत्साहित किए जाने की किसी आवश्यकता के बिना, मैंने खाना शुरू कर दिया।

बाद में, जब मैं और अधिक नहीं खा सकता था, जब बचे हुए खाने की दृष्टि ने भी, मुझ में बैचेनी की भावना उत्पन्न की, मेरे शिक्षक उठे और दूसरे कमरे की ओर वापस ले गए। ''अंतरतम ने मुझे, तुम्हें पुरातनों की गुफा के बारे में, बताने की आज्ञा दी है।'' उन्होंने तुरंत ही, ये जोड़ते हुए कहा कि, अंतरतम ने सुझाव दिया है कि, मैं तुम्हें इस सम्बंध में बताऊॅ।'' उन्होंने मुझे कनखियों से झॉका, तब लगभग एक फुसफुसाहट में, उन्होंने टिप्पणी की,'' हम वहॉ कुछ दिनों में, एक अभियान भेज रहे हैं।'' मैंने अपने अंदर उभरती हुई एक उत्तेजना अनुभव की और ये असंभव छाप अपने अंदर डाली कि, शायद मैं एक स्थान को घर बनाने जा रहा था, जिसे मैं पहले से जानता था। मेरे शिक्षक, वास्तव में,

मुझे बहुत समीप से देख रहे थे। ज्यों ही मैंने, उनकी टकटकी की तीव्रता के अंतर्गत, ऊपर देखा, उन्होंने अपना सिर हिलाया। '' लोबसांग, मुझे भी तुम्हारी तरह से, विशिष्ट प्रशिक्षण, विशिष्ट अवसर मिला था। मेरे खुद के शिक्षक, एक आदमी थे, जो काफी लंबे समय पहले, इस जीवन से गुजर गए, जिनका खाली खोल, अभी भी, स्वर्णिम छवियों के हॉल (Hall of Golden Images) में रखा है। उनके साथ मैंने, संपूर्ण विश्व में, बहुतायत के साथ यात्रा की। तुम, लोबसांग, अकेले ही यात्रा करोगे। अब शांत बैठो और मैं तुम्हें पुरातनों की गुफा की जानकारी के संबंध में बताऊँगा।'' मैंने अपने होठों को गीला किया, ये वह था, जो मैं कुछ समय से सुनना चाहता था। एक लामामठ में, जैसे कि हर समाज में होता है, गोपनीय रूप से, अफवाहें बहुधा फैल रहीं थीं, कुछ अफवाहें, अफवाहों की स्वयं गवाह थीं और इससे अधिक कुछ नहीं। ये यद्यपि भिन्न था, जो मैंने सुना (उस पर) किसी प्रकार, मैंने विश्वास किया।

''मैं एक बहुत नौजवान लामा था, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहना शुरू किया। ''अपने शिक्षक और तीन नौजवान लामाओं के साथ, हम कुछ दूरस्थ पर्वतश्रेणियों की तलाश कर रहे थे। वहॉ, कुछ सप्ताह पहले, एक जोरदार, सर्वाधिक जोर का धमाका हुआ, जिसके बाद एक भारी चट्टान का पतन हुआ था। हम इस मामले में जॉच–पड़ताल करने के लिए बाहर थे। कई दिनों तक हम, शक्तिशाली चट्टानों की चरम सीमाओं के आधार के आस–पास, रेंगते रहे। पॉचवें दिन के प्रारंभिक भोर में, मेरे शिक्षक जगे, यद्यपि पूरी तरह नहीं जगे; वह उनींदे से दिखाई दिए। हमने उनसे कुछ बात की, कोई उत्तर नहीं मिला। ये सोचते हुए कि वे बीमार थे, आश्चर्य करते हुए कि, हम उन्हें, अनंत मीलों तक सुरक्षितरूप से नीचे कैसे लायेंगे, मैं चिंता से घिर गया। आलस्य के साथ, मानो किसी अजनबी शक्ति की पकड़ में रहते हुए, उन्होंने अपने पैरों के साथ संघर्ष किया, गिर पड़े, और लड़खड़ाते हुए झटका खाते हुए, अंत में, वे सीधे खड़े हो गए। सम्मोहन में चलने वाले आदमी की भांति, वे आगे चले। हमने लगभग भय और रौंदते हुए पदचापों के साथ, उनका अनुगमन किया। खुद पर छोटे पत्थरों की बरसात की मार पड़ते हुए, हम तीखी चट्टान के ऊपर की तरफ चढ़े। अंत में, हम श्रृंखला की चोटी पर, तीखी धार पर पहुॅचे और ताकते हुए खड़े हुए। मैंने गहरी निराशा की भावना को अनुभव किया; अब हमारे सामने, लगभग बड़ी–बड़ी चट्टानों से भरी हुई, एक छोटी घाटी थी। यहॉ वह जगह थी, जहॉ चट्टानों का गिरना शुरू हुआ था। चट्टानों में कुछ दोष विकसित हो गया था या कुछ भूकम्प आया था, जिसने पहाड़ों के इस तरफ के हिस्से को, अपनी जगह से हिला दिया था। नयी खुली हुई चट्टानों की विशाल दरारों ने, चमकदार धूप में, हमारे ऊपर रोशनी फेंकी। किसी सहारे के वंचित होने के कारण, काई (Moss) और शैवाल (Lichen) हतोत्साहित हो कर, लटक कर गिर गईं। मैं निराशा में मुड़ा। मेरे ध्यान को स्थिर करने के लिए यहॉ कुछ नहीं था, केवल एक बड़ी चट्टान के पतन के अलावा कुछ नहीं। मैं उतरना प्रारंभ करने के लिए मुड़ा परंतु तुरंत ही एक फुसफुसाहट के द्वारा रोक लिया गया। ''मिंग्यार!'' मेरे साथियों में से एक, इशारा कर रहा था। मेरे शिक्षक, अभी भी किसी विचित्र मजबूरी के दवाब में, पर्वत के बगल से, नीचे की तरफ लटके थे।'' मैं सम्मोहित हुआ बैठा, मेरे शिक्षक ने एक क्षण के लिए बात करना बंद कर दिया और पानी की एक चुस्की ली, तब आगे कहना शुरू किया।

''हमने कुछ निराशा के साथ, उनको देखा। वे धीमे से, बगल से, छोटी घाटी के चट्टान बिखरे हुए फर्श पर, नीचे उतरे। हमने अनिच्छापूर्वक, उस खतरनाक पहाड़ी पर, हर क्षण फिसलने की आशा रखते हुए, उनका पीछा किया। तल पर, मेरे शिक्षक ने हिचकिचाहट नहीं की परंतु जबतक कि अंत में, वे एक पथरीली घाटी के दूसरी तरफ नहीं पहुॅच गए, उन्होंने बड़े–बड़े पत्थरों के बीच, एक सावधान रास्ता चुन लिया। हमें भयभीत कराते हुए, उन्होंने अपने हाथों और पैरों की पकड़ का उपयोग करते हुए, जो उनके कुछ गज पीछे, हमें दिखाई नहीं दे रहे थे, ऊपर की तरफ चढ़ना प्रारंभ किया। हमने अनिच्छापूर्वक, उनका अनुगमन किया। हमारे लिए कोई दूसरा रास्ता खुला नहीं था, और हम, ये कहने

के लिये कि हमारे वरिष्ठ, हमसे ऊपर चढ़ गए हैं, कि हमें उनके पीछे चलने में डर लग रहा था–यद्यपि चढ़ाई खतरनाक थी, वापस नहीं लौट सकते थे। अत्यंत सावधानीपूर्वक एक रास्ता पकड़ते हुए, मैं पहले चढ़ा। ये एक कठोर चट्टान थी, हवा पतली थी। शीघ्र ही, सांस मेरे गले को छीलने लगी और मेरे फैंफड़ों में एक कठोर, सूखा दर्द भर गया। मैं, शायद घाटी से पॉच सौ फुट दूर, सांस के लिए भटकते हुए, एक संकरे टॉड़ के ऊपर, पसर कर लेट गया। चढ़ाई के लिए तैयारी की पुनः व्यवस्था करते हुए, ज्यों ही मैंने ऊपर देखा, मैंने देखा कि, उस ऊॅचे टाड़ के ऊपर से मेरे शिक्षक की पीली पोशाक गायब हो गई। उदासी के साथ, मैं ऊपर की तरफ धार किए हुए, पहाड़ के फलक के साथ चिपक गया। मेरे साथी, उतने ही अनुत्सुक जितना कि मैं, पीछे–पीछे चले। अबतक हम, छोटी घाटी में, हमें बर्दाश्त कर सकने योग्य, उस शरणस्थल से, बाहर थे, और तीखी हवा, हमारी पोशाकों के कोड़े, हमें मार रही थी। छोटे पत्थर, लगातार नीचे गिर रहे थे और हमारे लिये चलते रहने की कठोर मजबूरी थी।'' एक क्षण के लिए, मेरे शिक्षक, पानी का दूसरा घूॅट लेने के लिए और ये देखने के लिए कि, मैं सुन रहा था, रुके। मैं सुन रहा था!''

''अंत में,'' उन्होंने कहना जारी रखा, ''अपनी तलाशती हुई उॅगलियों से, मैंने टॉड़ का एक तल अनुभव किया। मजबूत पकड़ के साथ, और दूसरों को पुकारते हुए कि, हम ऐसे स्थान पर पहुॅच चुके थे, जहॉ हम आराम कर सकते थे, मैंने खुद को ऊपर किया। वहॉ, पीछे की तरफ, थोड़ी सी नीचे की तरफ झुकी हुई, एक पटिया थी और इसप्रकार पहाड़ी श्रृंखला के पीछे की तरफ से वह पूरी तरह अदृश्य थी। पहली नजर में, पटिया लगभग दस फुट चौड़ी दिखाई दी। मैं आगे देखने के लिए नहीं रुका, परंतु घुटनों के बल झुक गया ताकि मैं एक–एक करके, दूसरों की मदद कर सकूॅ। शीघ्र ही, थकान के बाद, हवा में कॉपते हुए, हम सब, एक साथ खड़े हुए। स्पष्टतः चट्टानों के गिरने ने, इस पटिया को पूरी तरह से खुला छोड़ दिया था, और – ज्यों ही, मैंने अधिक निकट से झांका, पहाड़ी दीवार में, वहॉ एक पतली दरार थी। क्या वहॉ थी ? जहॉ से हम खड़े हुए, वह एक छाया या गहरी काई का दाग, हो सकता था। हम एक साथ आगे चले। ये एक दरार थी, एक वह, जो लगभग दो फुट छः इंच चौड़ी गुणा लगभग पॉच फुट ऊॅची। वहॉ मेरे शिक्षक का कोई निशान नहीं था।'' मैं परिदृश्य को अच्छी तरह देख सकता था। परंतु ये आत्मविश्लेषण का समय नहीं था। मैं एक भी शब्द चूकना नहीं चाहता था!''

मैं ये देखने के लिए पीछे उतरा कि, मेरे शिक्षक और ऊॅचे चढ़ गए हैं,'' मेरे शिक्षक चलते गए, ''परंतु वहॉ उनका कोई चिन्ह नहीं था। भयभीत होते हुए, मैंने दरार में झॉका। यह कब्र की तरह काली थी। इंच–इंच करके कष्ट के साथ मुड़ते हुए, मैं अंदर की ओर चला। लगभग पंद्रह फीट अंदर जाने पर, मैं एक तीक्ष्ण, अत्यंत तीक्ष्ण कोने में मुड़ा, दूसरा, और तब तीसरा। यदि मैं भय के कारण, लकवे से ग्रसित न हुआ होता, तो मैं आश्चर्य के साथ बहुत जोर से चीखता; यहॉ प्रकाश था, चॉदी जैसा एक नम्र प्रकाश, तेज से तेज चॉदनी से भी अधिक तेज। प्रकाश, जो मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था। गुफा, जिसमें अब मैंने स्वयं को पाया, काफी बड़े स्थान वाली थी, जिसमें अंधेरे में ऊपर अदृश्य छत थी। मेरे एक साथी ने मुझे रास्ते से अलग हट कर धक्का दिया और बदले में उसे दूसरे के द्वारा धक्का दिया गया। शीघ्र ही, हम में से चार शांत खड़े हुए और अपने सामने के अकल्पनीय दृश्य पर टकटकी लगाते हुए, डर गए। एक नजर, जिसने हमको, हममें से किसी भी अकेले को, ये सोचने के लिए मजबूर कर दिया होता कि, उससे उसके संज्ञानों ने छुट्टी ले ली है। गुफा एक बड़े बहुत बड़े हॉल की तरह, अधिक थी, वह दूरी में काफी फैली हुई थी, मानो कि पर्वत स्वयं खोखला हो। हर जगह प्रकाश था, काफी संख्या में गोलों से हम पर गिरता हुआ, जो अंधेरे में लटकती हुई छत से लटका हुआ दिखाई दिया। अनजान मशीनें स्थान में ठूंसी हुई थी, ऐसी मशीनें, जिनकी हम कल्पना नहीं कर सकते थे। ऊॅची छत से भी उपकरण और यांत्रिकी लटकी थी। कुछ, मैंने महान आश्चर्य के साथ देखा, वह एक ऐसी चीज से ढकी हुई थी, जो सबसे अधिक साफ कॉच जैसा दिख रहा था।'' मेरी ऑखें आश्चर्य से

गोल हो गईं होतीं, क्योंकि, अपनी कहानी को वापस प्रारंभ करते हुए, लामा मेरे ऊपर मुस्कुराये।

''अब तक हम, अपने शिक्षक को पूरी तरह भूल चुके थे, जब वह अचानक प्रकट हुए, हम डर के कारण, जमीन से सीधे उछल पड़े! वे हमारे चोटिल चेहरों पर और ताकती हुई ऑखों को देखते हुए, मंद–मंद मुस्कराये। अब हमने देखा, मजबूरीवश उसे काबू में करते हुए, वह उस अनजान की औरअधिक पकड़ में नहीं थे। उन अनोखी अनजान मशीनों को देखते हुए, हम लोग साथ–साथ घूमे। हमारे लिये, उनका कोई अर्थ नहीं था, वे असाधारण रूप से, धातुओं और अनजान रेशों का समूहमात्र थीं। मेरे शिक्षक, एक बड़े काले दरवाजे की तरफ चले, जो स्पष्टरूप से, गुफा की दीवारों में से एक के अंदर बना था। जैसे ही, वह उसकी सतह को छूने वाले थे, वह झटक कर खुल गया। अबतक हम, लगभग ये विश्वास करने के बिन्दु पर थे कि, पूरा का पूरा स्थान, जादूमय किया हुआ था, या हम किसी मतिभ्रम शक्ति के चारे बन चुके थे। मेरे शिक्षक, खतरे में, पीछे की तरफ कूदे। काला दरवाजा झटक कर बंद हो गया। महान रूप से डरते हुए, मेरे साथियों में से एक ने, अपना हाथ फैलाया और वह दरवाजा, फिर से झटक कर खुल गया। एक शक्ति, जिसका हम विरोध नहीं कर सके, ने हमको आगे की तरफ फैंक दिया। निरर्थकरूप से हर कदम के विरुद्ध लड़ते हुए, हम किसी भी प्रकार, खिसकने वाले दरवाजे में अंदर प्रविष्ट हुए। इसके अंदर अंधेरा था, ऐसा अंधेरा, जैसा कि, किसी साधू के प्रकोष्ठ में होता है। अभी–भी अनिवार्य मजबूरी के अंतर्गत, हम कई फुट तक चले और तब फर्श पर बैठे। मिनटों के लिए, हम डर में कॉपते हुए बैठे रहे। चूँकि कुछ नहीं हुआ, हमने अपनी शांति को पुनः प्राप्त किया, और तब हमने चटाक–चटाक की आवाज की एक श्रृंखला सुनी, मानो कि धातु को ठोक रही हो और रगड़ रही हो।'' अनिच्छापूर्वक, मैं कॉप गया। मुझ में ये विचार आया कि, मैं शायद, डर से मर जाऊँगा! मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा।

''धीमे–धीमे, लगभग अतिसूक्ष्मरूप से, एक कुहॉसे भरी आभा, हमारे सामने अंधेरे में बनी। पहले ये नीले गुलाबी प्रकाश की, मात्र एक धोखा थी, लगभग मानो कि, कोई प्रेत आत्मा, हमारी नजर के सामने घनीभूत हो रही हो। कुहॉसे भरा प्रकाश, अधिक चमकदार होते हुए फैल गया, ताकि, हम अविश्वसनीय मशीनों के ढांचों को, जो कि सभी, जिस फर्श पर हम बैठे थे, के केन्द्र को छोड़ कर, इस बड़े हॉल में भरीं हुईं थीं, देख सकें। प्रकाश ने घुमड़ते हुए, मंद पड़ते हुए, और अधिक चमकदार होते हुए, अपने आपको, अंदर की तरफ खींच लिया और तब उसने आकार लिया और गोलीय आकृति में बना रहा। धीमी गति से, युगों का समय गुजर जाने के बाद, मुझ पर, युगों पुरानी मशीनों के चटकने का, चीखने का, अजीब और व्याख्या न करने योग्य प्रभाव पड़ा। हम में से पॉच शब्दशः मोहित होते हुए, फर्श के ऊपर सिमिट गए। वहॉ मेरे मस्तिष्क में, एक जॉच करने की आई, मानो कि कोई दीवाना दूरानुभूतिपूर्ण लामा, खेल कर रहा हो, तब छाप बदल गई और ऐसे स्पष्ट हो गई जैसे कि बोली।'' मेरे शिक्षक ने, अपना गला साफ किया, और अपने हाथ को वायु के मध्य में रखे हुए, फिर से एक पेय के लिए पहुॅचे। ''हम चाय पियें, लोबसांग,'' जैसे ही उन्होंने अपनी चांदी की घंटी बजाई, उन्होंने कहा। सेवक भिक्षु, स्पष्टरूप से जानता था कि हमें क्या चाहिए, क्योंकि वह चाय और टिकियों के साथ अंदर आया!

''प्रकाश के गोले के अंदर, हमने चित्र देखे,'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''पहले धुंधले, तब शीघ्र ही वे स्पष्ट हो गए और उनका चित्रित होना बंद हो गया। बदले में, हमने वास्तव में, घटनाऐं देखी।'' मैं अपने आपको और अधिक काबू में नहीं रख सका : ''परंतु आदरणीय लामा, आपने क्या देखा ?'' मैंने अपने अधैर्य के ज्वर में पूछा। लामा आगे की तरफ पहुॅचे और उन्होंने खुद के लिए अधिक चाय उड़ेली। तब मुझे ऐसा लगा कि, मैंने उनको कभी, उन भारतीय मिठाई, चकतियों को खाते हुए नहीं देखा था। चाय, हॉ, वे अत्यधिक चाय पीते थे, परंतु मैंने उन्हें, कोई भी चीज लेते हुए और अत्यधिक अल्प और साधारण से भी साधारण खाना लेते हुए, कभी नहीं देखा था। मंदिर की सेवा के लिए घंटे

बजने लगे, परंतु लामा नहीं हिले। जब भिक्षुओं में से आखिरी ने जल्दी की, तो उन्होंने गहराई से आह भरी, और कहा, ''अब मैं जारी रखूँगा।''

उन्होंने फिर प्रारंभ किया, ''ये वह है, जो हमने देखा और सुना, और तुम निकट भविष्य मे देखोगे और सुनोगे। हजारों हजार साल पहले, इस संसार में, एक उच्च सभ्यता थी। लोग मशीनों के माध्यम से, जो गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देती थीं, हवा में उड़ सकते थे। मनुष्य मशीन बनाने में सक्षम थे, जो विचारों को प्रभावित करतीं थीं, दूसरों के मन के ऊपर–विचार, जो चित्रों के रूप में प्रकट होते थे। उन्हें नाभिकीय विखण्डन (nuclear fission)[11] का ज्ञान था, और अंत में, महासागरों के नीचे, महाद्वीपों को सिकुड़ने का और दूसरों को उठने का कारण बनते हुए, उन्होंने एक बम का बिस्फोट किया, जिसने पूरी दुनियॉ को तबाह कर दिया। संसार पूरी तरह तबाह हो गया, और इसप्रकार सभी धर्म, इस पृथ्वी पर महाप्रलय की बाढ़ की कहानी कहते हैं।'' मैं इस बाद वाले भाग से अप्रभावित रहा। '' श्रीमान्!'' मैं उत्तेजना से चिल्लाया, ''हम चित्र देख सकते हैं, जैसे कि आकाशीय अभिलेखों में। केवल ये देखने के लिए, हम इन खतरनाक पहाड़ों में संघर्ष क्यों करें, जो यहीं अधिक आसानी से अनुभव किया जा सकता है ?'' ''लोबसांग'', मेरे शिक्षक ने गंभीरता से कहा, ''हम इस सबको, सूक्ष्मशरीर से और आकाशीय अभिलेखों में देख सकते हैं, क्योंकि बाद वालों में, वह सब पूरी–पूरी जानकारी होती है, जो हुआ था। हम देख सकते हैं परंतु छू नहीं सकते। सूक्ष्मशरीर की यात्राओं मे जा सकते हैं और वापस लौट सकते हैं, परंतु संसार की किसी भी चीज को छू नहीं सकते। हम छू नहीं सकते।'' वह हल्के से मुस्कुराये, ''समझो एक अतिरिक्त पोशाक, एक फूल, को वापस नहीं ला सकते। ऐसा ही आकाशीय अभिलेखों के साथ है, हम सब कुछ देख सकते हैं परंतु हम पहाड़ों के हॉलों में भंडारित की हुई, उन अद्भुत मशीनों की, किसी भी चीज की, विस्तार से, समीप से, जॉच नहीं कर सकते। हम पहाड़ों में जा रहे हैं, और हम मशीनों की जॉच करने के लिए जा रहे हैं।''

''कितना अद्भुत,'' मैंने कहा, ''कि पूरे संसार की ये मशीनें केवल हमारे ही देश में हैं!'' ''ओह! परंतु तुम गलत हो!'' मेरे शिक्षक ने स्पष्ट किया। ''मिस्र (Egypt) देश के एक निश्चित स्थान में भी, एक ऐसा ही प्रकोष्ठ है, एक स्थान में, जिसे दक्षिणी अमेरिका कहा जाता है, वहॉ एक दूसरा प्रकोष्ठ है, जिसमें ऐसी ही मशीनें स्थित हैं। मैंने उन्हें देखा है, मैं जानता हूँ, वे कहॉ हैं। ये गुप्त प्रकोष्ठ, पुराने लोगों के द्वारा छिपा दिए गए थे, ताकि, जब समय इसके लिए तैयार हो, उनकी कलाकृतियॉ, बाद वाली पीढ़ियों के द्वारा पाई जा सकें। इस चट्टान के सहसा दुर्घटना वश गिरने ने, तिब्बत के प्रकोष्ठ में प्रवेश से वंचित कर दिया, और एकबार अंदर होने पर, हमें दूसरे प्रकोष्ठों की जानकारी प्राप्त हुई। परंतु दिन बहुत चढ़ आया है। शीघ्र ही, हम सातों लोग–और जिसमें तुम शामिल हो–एकबार फिर, पुरातनों की गुफा की ओर, साथ यात्रा प्रारंभ करेंगे।''

कुछ दिनों के लिए, मैं उत्तेजना के ज्वर में रहा। मुझे अपना ज्ञान, अपने तक ही रखना पड़ा।

---

11 अनुवादक की टिप्पिणी : यूरेनियम से अधिक भारी परमाणु भार वाले तत्व, स्थाई प्रकृति के नहीं होते। ये प्राकृतिक रूप से अन्य हल्के तत्वों में टूटते रहते हैं, ऐसे तत्व रेडियोधर्मी कहलाते हैं। यह घटना प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक (natural) रेडियोधर्मिता (radioactivity) कहलाती हैं। भारी परमाणु भार वाले तत्वों को कृत्रिम विधियों से भी अन्य हल्के तत्वों में तोड़ा जा सकता है। यह घटना कृत्रिम रेडियोधर्मिता (artifitial radioactivity) कहलाती हैं। नाभिकीय विखंडन भी, एक प्रकार से प्रेरित (induced) अथवा कृत्रिम रेडियोधर्मिता ही होती है। 92–यूरेनियम–235 (U-235) पर निम्न उर्जा वाले न्यूट्रॉनों की बौछार कराने पर वह 56–बेरियम तथा 36–क्रिप्टॉन, दो तत्वों में टूट जाता है। इस प्रक्रिया में पदार्थ का कुछ द्रव्यमान, आइंस्टीन के प्रसिद्ध द्रव्यमान–उर्जा सूत्र के अनुसार, उर्जा के रूप में परिवर्तित हो जाता है तथा नाभिकीय विखंडन (nuclear fission) की एक श्रंखला शुरू हो जाती है, जिसमें असीम उर्जा उत्पन्न होती है। परमाणु बम (atom bomb) तथा नाभिकीय प्रतिकारक (nuclear reactors) एवं परमाणु बिजलीघर (atomic power station), इसी सिद्धान्त पर बनते हैं। दुनियॉ का पहला परमाणु बम द्वितीय विश्वयुद्ध में 6 अगस्त 1945 को जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर गिराये गये थे।

इसके विपरीत, अत्यधिक उच्चताप पर, दो हल्के नाभिक जुड़ कर (संगलित होकर) एक भारी नाभिक बनाते हैं, यह क्रिया नाभिकीय संगलन (nuclear fusion) कहलाती है। इस प्रक्रिया में भी, पदार्थ का कुछ द्रव्यमान, आइंस्टीन के प्रसिद्ध द्रव्यमान–उर्जा सूत्र के अनुसार, उर्जा के रूप में परिवर्तित हो जाता है और एक श्रंखला प्रतिक्रिया (chain reaction) के फलस्वरूप असीम उर्जा उत्पन्न होती है। हाइड्रोजन बम इसी सिद्धान्त पर बनते हैं। यह प्रक्रिया सूर्य में निरंतर चलती रहती है, जिसके कारण सूर्य हमें इतनी उर्जा, युगों से, लगातार दे रहा है।

दूसरे लोग जानते थे कि हम, जड़ी–बूटी इकट्ठी करने के एक अभियान पर, पहाड़ों की ओर जा रहे हैं। ल्हासा जैसे, एक ऐसे अलग–थलग स्थान पर भी, वित्तीय लाभों के लिए, लगातार निगाह रखने वाले कुछ लोग हमेशा वहॉ थे; दूसरे देशों, जैसे कि चीन, रूस, और इंग्लैण्ड, के प्रतिनिधि, कुछ मिशनरियॉ और व्यापारी, जो भारत से आये थे, वे सभी सुनने के लिए तैयार थे कि, हमने अपने सोने और जबाहरातों को कहॉ रखा था, किसी भी चीज को, जिसमें उन्हें लाभ प्राप्त होने का वायदा हो, दुहने के लिए हमेशा तैयार। इसलिए हमने अपने अभियान की अत्यंत गुप्त प्रकृति को, वास्तव में, छिपा कर रखा।

लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ, उस बात के लगभग दो हफ्तों के बाद, हम ऊॅचे–नीचे चट्टानी रास्तों पर जाने और अत्यल्प ज्ञात घाटियों में, दूर–दूर पर्वतों पर चढ़ाई करने के लिए तैयार थे। साम्यवादी, अब तिब्बत में हैं, इसलिए पुरातनों की गुफा की स्थिति, जानबूझ कर छिपाई जा रही है, क्योंकि गुफा वास्तव में, एक सत्य स्थान है, और वहॉ की कलाकृतियों पर कब्जा, साम्यवादियों को पूरी दुनियॉ को जीतने में कामयाब बना देगा। सिवाय गुफा के एकदम सही रास्ते के, ये सब, जो मैं लिख रहा हूॅ, सत्य है। एक गुप्त स्थान में, रहस्यमय स्थान को, संदर्भो और नक्शों के साथ, कागज पर पूरा उतार दिया गया है ताकि, जब समय आये–स्वतंत्रता की शक्तियॉ, उस स्थान को ढूंढ़ सकें।

हम धीमे से, चाकपोरी मठ के रास्ते से नीचे उतरे और अपना रास्ता काश्या लिंगा (Kashya Linga) की तरफ लिया, उस उद्यान से गुजरते हुए, हमने नाव का रास्ता लिया, जहॉ, अपनी याक की खाल की फुलाई हुई नावों के साथ, उन्हें एक बगल से लगाये हुए, नाविक हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। मुझ सहित, हम सात लोग थे, और –क्यी चू (Kyi Chu) नदी–को पार करने मैं कुछ समय लगा। अंत में, हम एक साथ, फिर, एक दूर किनारे पर थे। कंधों पर अपने भारों, खाने, रस्से, प्रत्येक के पास एक फालतू पोशाक और धातु के कुछ औजारों को टॉगे हुए, हमने दक्षिण–पश्चिम की ओर, यात्रा शुरू की। हम सूर्य के छिपने तक, तबतक चलते रहे, जब तक कि, लंबी होती हुई छायाओं ने, चट्टानी रास्ते पर अपना रास्ता पकड़ पाना, हमारे लिए मुश्किल न बना दिया। तब, बढ़ते हुए अंधेरे में, बड़ी–बड़ी चट्टानों की ओट में सोने के लिए व्यवस्थित होने से पहले, हमने त्सम्पा का एक सामान्य सा खाना लिया। जैसे ही मेरा सिर मेरी फालतू पोशाक के ऊपर टिका, मैं लगभग उतनी ही जल्दी सो गया। लामाओं की श्रेणी के अनेक तिब्बती भिक्षु, जैसे कि नियम, उन पर लागू होते हैं, बैठे–बैठे ही सो गए। मैं, और दूसरे अनेक लेट कर सोये, परंतु हमें उन नियमों का पालन करना था कि, हम केवल तभी लेट कर सो सकते हैं, जब दायीं बगल में हों। नींद में गिरने से पहले, मेरी अंतिम नजर, लामा मिंग्यार डोंडुप पर थी, जो काली रात के विरुद्ध, एक गढ़ी हुई मूर्ति की तरह से बैठे थे।

भोर की पहली किरण आने से पहले, हम जग गए और हमने एक अल्पाहारी खाना लिया, तब अपने भारों को उठाते हुए, हम आगे बढ़े। हम पूरे दिन, और उसके बाद भी चलते रहे। पहाड़ियों के आधारों से गुजरते हुए, हम वास्तव में, पहाड़ी श्रृंखलाओं तक आ गए। शीघ्र ही, हमने अपने आपको, रस्सों से आपस में बांध कर, घटा लिया और सबसे पहले, मुझ सबसे हल्के आदमी को, खतरनाक चट्टानों के ऊपर भेजते हुए ताकि, चट्टानों की सीमाओं से रस्सों को पक्की तरह बांधा जा सके और इसप्रकार, सबसे भारी आदमी के लिए, सुरक्षित रास्ता तैयार किया जा सके। इसलिए पहाड़ों में ऊपर चढ़ते हुए, हमने अपने आपको ढाल लिया, अंत में, ज्यों ही हम लगभग हाथ और पैरों की पकड़ से पूरी तरह वंचित, एक बड़े पहाड़ की कद्दावर चट्टान के एक फलक के ऊपर खड़े हुए, मेरे शिक्षक ने कहा, ''इस पत्थर के ऊपर, दूसरी तरफ के नीचे, छोटी घाटी, जो हमें मिलेगी के पार, और तब हम उस गुफा के आधार पर पहुॅचेंगे।'' हमने एक हाथ से पकड़ को तलाशते हुए, पटिया के आधार के आसपास चहल कदमी की। स्पष्टरूप से, साल–दर–साल, पूरे साल, दूसरी चट्टान के गिरने ने, छोटी पटियाओं और दरारों को बाधित कर किया था। लगभग एक दिन बरबाद करने के बाद, हमें चट्टान के ऊपर एक

चिमनी मिली, जिस पर हम, हाथ और पैरों का उपयोग करते हुए चढ़ गए, और अपनी पीठों को चिमनी के दूसरी बगल की तरफ से टिका दिया। बिरली हवा में हॉफते हुए और हवा से फुलाते हुए, हम चोटी पर चढ़ गए और ऊपर जा कर देखा और अंत में, घाटी, हमारे सामने थी। दूर की दीवार को जानबूझ कर घूरने पर भी, हमें कोई गुफा नहीं दिखाई दी, चिकनी चट्टानी सतह के ऊपर कोई दरार नहीं। हमारे नीचे की घाटी, बड़े–बड़े पत्थरों से ठुसी हुई थी– और सबसे ज्यादा खराब–एक दौड़ती हुई पहाड़ी जलधारा को, अपने केन्द्र में उड़ेल रही थी।

डरते–डरते, हम नीचे की तरफ, घाटी में उतरे और जबतक कि, हम उस हिस्से में नहीं आ गए, जहॉ बड़े–बड़े पत्थर, उन लोगों के लिए, जो चट्टान से चट्टान तक कूद पाने की क्षमता रखते हों, एक अस्थिर रास्ते को झेल सकते थे, हमने उस तेज दौड़ती हुई जलधारा के किनारों की तरफ, अपना रास्ता लिया। मैं, सबसे छोटा होने के कारण, मेरी टॉगों की लंबाई कूदने के लिए, इतनी नहीं थी और इसप्रकार तिरिस्कारपूर्ण ढंग से बर्फीली जलधारों के बीच में से, एक रस्से से किनारे पर, खींच लिया गया। दूसरा भाग्यहीन, एक छोटा, कुछ–कुछ गोलमटोल लामा, कम दूरी कूद पाया – और उसे रस्से के एक किनारे पर समेट लिया गया। दूर के किनारे पर हमने अपनी गीली पोशाकों को निचोड़ा और फिर से पहन लिया। फुहारों ने, हम सबको खाल से गीला कर दिया। पत्थरों के ऊपर से, सावधानीपूर्वक अपना रास्ता चुनते हुए, हमने घाटी को पार किया और अंतिम बाधा, चट्टानी पत्थर, तक पहुॅचे। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने एक ताजे चट्टानी चिन्ह की ओर इशारा किया। देखो!'' उन्होंने कहा चट्टान की एक अगली बार की गिरावट ने, पहली टॉड़ को, जिसके द्वारा हम चढ़े थे, धक्का दिया है। अपने सामने उपस्थित, चढ़ाई के दृश्य को देखने का प्रयास करते हुए, हम काफी पीछे खड़े हुए। पहली परत, जमीन से लगभग बारह फुट ऊपर थी, और वहॉ दूसरा कोई रास्ता नहीं था। सबसे लंबा और मजबूत लामा अपनी भुजाओं को फैलाये हुए, अपने आपको, चट्टान के विरुद्ध, छाती से लगाये हुए खड़ा हुआ, तब लामाओं में से सबसे हल्का, उसके कंधों पर चढ़ा और उसीप्रकार से उसने चट्टान को छाती से लगा लिया। अंत में, मुझे ऊपर उठाया गया, ताकि मैं, एक रस्से को अपनी कमर में बांधे हुए, सबसे ऊपर, चोटी के आदमी के कंधों पर चढ़ सकूॅ । मैंने अपने आपको, उस टॉड़ के ऊपर सहज किया।

मेरे नीचे के भिक्षुओं ने निर्देश दिए, जबकि, लगभग डर के मारे मरते हुए धीमे–धीमे, मैं और ऊॅचा चढ़ गया जबतक कि मैं, रस्से के अंत के छल्ले को, बाहर निकली हुई पहाड़ी की चोटी के चारों तरफ, नहीं बांध सका। मैं टॉड़ के बगल से दुबक गया। एक के पीछे एक, छः लामा रस्से पर चढ़े, मुझ पर से गुजरे और उन्होंने ऊपर की तरफ चढ़ना जारी रखा। आखिरी वाले ने रस्से को खोल दिया। अपनी कमर के चारों तरफ लपेट कर उसका कुडंल बना दिया (घड़ी कर दी) (coiled) और दूसरों के पीछे चला। शीघ्र ही रस्से का अंतिम सिरा, मेरे सामने लटकने लगा, और एक चीख ने मुझे, अपने चारों तरफ एक फंदा बॉधने के लिए, सावधान किया ताकि मैं, घसीटा जा सकूॅ। बिना किसी सहायता के, सभी छज्जों पर चढ़ने के लिए, मेरी ऊॅचाई पर्याप्त नहीं थी। मैं फिर, काफी अधिक ऊॅचाई की स्थिति में टिक गया, और रस्से को ऊपर की तरफ खींच लिया गया। अंत में, मुझे सबसे ऊॅचे टॉड़ पर खींच लिया गया, जहॉ दल के दूसरे लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। दयालु और विचारवान आदमी होने के नाते, उन्होंने मेरी प्रतीक्षा की ताकि, हम सभी, एक साथ गुफा में प्रवेश कर सकें, और मैं स्वीकार करता हूॅ कि, मेरा हृदय, उनकी विचारशीलता के ऊपर गर्माहट पा गया। ''अब हमने यंत्र (Mascot) को खींच लिया है और हम जारी रख सकते हैं!'' कोई टरटराया। ''हॉ,'' मैंने उत्तर दिया, ''परंतु सबसे छोटे को सबसे पहले चलना पड़ेगा या तुम यहॉ नहीं रहोगे!'' वे हॅसे, और भली भॉति छिपी हुई दरार की तरफ मुड़े।

मैंने विचार करने योग्य आश्चर्य में देखा। पहले, मैं प्रवेशद्वार को नहीं देख सका था, जो कुछ

मैंने देखा वह अधिकाशतः, सूखे हुए पानी के पथ के जैसी दिखती हुई, एक काली छाया, या काई का महीन धब्बा था। तब, ज्यों ही हमने टॉड़ को पार किया, मैंने देखा कि, वास्तव में, चट्टान के फलक पर, वहॉ एक दरार थी। एक बड़े लामा ने मुझे कंधों से पकड़ा और मुझे चट्टान की दरार में, अंदर की ओर, अच्छे स्वभाव से, ये कहते हुए, धक्का दे दिया, ''तुम पहले जाओ, और तब तुम किसी भी चट्टान के दैत्य का पीछा करो और इस प्रकार हमें बचाओ!'' इसलिए मैं, सबसे छोटा और दल में सबसे कम महत्वपूर्ण, पुरातनों की गुफा में प्रवेश करने वाला पहला व्यक्ति था। मैं अंदर किनारे पर खड़ा हुआ और रेंग कर, चट्टान के कोनों के आसपास गया। ज्यों ही भारी भरकम आदमियों ने, अपने रास्ते को, अंदर की तरफ अनुभव किया, मैंने अपने पीछे, कदमों की और रगड़ने की आवाज सुनी। एक क्षण के लिए, मुझे डर से लगभग लकवाग्रस्त करते हुए, प्रकाश सहसा मेरे ऊपर टूट पड़ा। मैं, अंदर के कल्पनातीत दृश्य को घूरते हुए, चट्टानी दीवार के सहारे से, गतिहीन खड़ा रहा। ल्हासा के महान केथेड्रल (Cathedral) के अंतःभाग की तुलना में, गुफा लगभग दो गुनी बड़ी दिखाई दी। उस केथेड्रल की तरह नहीं, जो हमेशा गौधूलि (dusk) के अंधेरे में लिपटा रहता था, जिसे मक्खन के दीपक व्यर्थ ही भगाने का प्रयास करते थे, यहॉ, बादलरहित रात के पूर्ण चंद्र (full moon) की तुलना में, अधिक तेज रोशनी थी। नहीं, ये उससे भी और अधिक प्रकाशित था; प्रकाश की गुणता ने मुझे चॉदनी का प्रभाव दिया होता। मैंने ऊपर की तरफ, गोलों के ऊपर, जो प्रकाश पैदा कर रहे थे, टकटकी लगाई। लामा लोग, भीड़ बना कर, मेरे बगल से खड़े हो गए, और मेरी तरह से उन्होंने भी, पहले, प्रकाश के स्रोत की ओर टकटकी लगाई। मेरे शिक्षक ने कहा, ''पुराने अभिलेख बताते हैं कि, यहॉ का प्रकाश, मूलतः अधिक चमकदार था, ये दीपक, सैकड़ों शताब्दियों के गुजर जाने के साथ–साथ, धीमे जल रहे हैं।''

लंबे क्षणों तक हम शांत खड़े रहे, स्थिर, मानो उन लोगों के जग जाने से डरे हुए, जो वहॉ अंतहीन वर्षों से लगातार सो रहे थे। तब, नब्ज सामान्य रूप से चली। हम, पत्थर के ठोस फर्श पर, पहली मशीन की तरफ, जो हमारे सामने सुसुप्त अवस्था में खड़ी हुई थी, आरपार चले। उसको छूने से आधा डरे हुए, हम इसके आसपास जमा हुए, यद्यपि अत्यधिक उत्सुक थे कि, ऐसा कैसे हो सकता हैं। ये युगों से मंद पड़ गई थी, फिर भी– यदि कोई जानता कि, ये किसलिए थी और इसे कैसे चलाया जा सकता है–यह त्तकाल उपयोग के लिए तैयार दिखाई दी। दूसरी युक्तियों ने, बिना किसी परिणाम के, हमारे ध्यान को आकर्षित किया। हमारे लिए ये मशीनें, बहुत–बहुत आगे बढ़ीं हुई (too advanced) अवस्था की थीं। मैं वहॉ के लिए घूमा, जहॉ, लगभग तीन फुट चौड़ा एक छोटा वर्गाकार प्लेटफॉर्म, रक्षक रेलिगों के साथ, जमीन पर टिका हुआ था। जो हमको लंबी, धातु की मुड़ी हुई नलिका, समीप की मशीन से विस्तारित होती प्रतीत हुई और प्लेटफॉर्म नली के दूसरे सिरे पर जुड़ा हुआ था। आलस्य के साथ, मैं रेलिंग वाले वर्गाकार प्लेटफॉर्म पर, आश्चर्य करते हुए कि ये क्या हो सकता था, चढ़ा। अगले ही क्षण में, मैं सदमे से लगभग मर गया; प्लेटफॉर्म ने मुझे एक हल्का सा स्पंदन दिया और हवा में ऊॅचा उठ गया। मैं इतना डरा हुआ था कि, मैं निराशा में, रैलिंगों से चिपक गया।

मेरे नीचे, छः लामा, घबराहट में, ऊपर की तरफ, टकटकी लगाकर देख रहे थे। नली खुल चुकी थी और प्लेटफोर्म को सीधे, प्रकाश के गोलों में से एक की तरफ, हिला रही थी। मैंने निराशा में, बगल से देखा। पहले से ही मैं, औरऊपर चढ़ता हुआ, कुछ तीस फुट, हवा में था। मेरा डर था कि, प्रकाश का स्रोत मुझे, मक्खन के दीपक की ज्वाला में एक पतंगे की तरह, जला कर खस्ता कर देगा। 'चटाक' की एक आवाज हुई और प्लेटफॉर्म रुक गया। मेरे चेहरे से इंचों दूर, बत्ती जल उठी। कायरता से मैंने अपने हाथ फैलाये–और पूरा का पूरा गोला इतना ठंडा था, मानो बर्फ। अब तक मैं कुछ शांति पा चुका था, और मैंने अपने आसपास घूर कर देखा। तब मेरे मन में, एकदम ठंडा एक विचार कौंधा; मैं कैसे नीचे उतरने जा रहा हूॅ ? मैं, भागने का रास्ता खोजने का प्रयास करते हुए, एक किनारे से दूसरे किनारे की तरफ कूदा, परंतु मुझे ऐसा कोई भी (रास्ता) दिखाई नहीं दिया। तब मैंने, नीचे उतरने की

आशा में, लंबी नली तक पहुॅचने का प्रयास किया, परंतु ये बहुत दूर थी। ठीक तभी, जब मैं अत्यधिक निराश हो रहा था, वहॉ दूसरा स्पंदन हुआ और प्लेटफॉर्म ने नीचे उतरना प्रारंभ कर दिया। इसको जमीन को छूने की, मुश्किल से प्रतीक्षा करते हुए, मैं उछला! मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था कि, वह चीज फिर से ऊपर जाये।

एक बहुत दूर की दीवार के विरुद्ध, एक बड़ी प्रतिमा दुबककर बैठी थी, जिसने मेरी रीढ की हड्डी में कंपकपी पैदा कर दी। ये दुबक कर बैठी हुई एक बिल्ली के शरीर की प्रतिमा थी, परंतु इसका सिर और कंधे औरत के थे। ऑखें सजीव दिखाई दीं; चेहरा आधा नकल उतारता, आधा पहेली के भाव वाला था, जिसने मुझे डरा दिया। लामाओं में से एक, किन्हीं अनोखे चिन्हों पर, जानबूझ कर घूरते हुए, घुटनों के बल, फर्श पर, बैठा था । ''देखो!'' उसने पुकारा, ''ये चित्र–लेखन, आदमियों और बिल्लियों को बात करते हुए दिखाता है, ये स्पष्टरूप से शरीर को छोड़ती हुई और निम्नतरलोकों (under-worlds) में घूमती हुई आत्मा को दिखाता है।'' वह फर्श के चित्रों के ऊपर गौर से देखते हुए, वैज्ञानिक उमंग में भर गया, और ये आशा करते हुए कि प्रत्येक दूसरा भी उसी प्रकार से उत्साहित होगा– उसने उन्हें ''चित्रलिपि (hieroglyphs)'' कहा–। ये लामा, अत्यधिक उच्चरूप से प्रशिक्षित आदमी था, एक वह, जिसने प्राचीन भाषाओं को, बिना किसी कठिनाई के पढ़ लिया। दूसरे, आसपास, ये निश्चय करने का प्रयास करते हुए कि वे किसलिए थीं, अजीब–अजीब मशीनों को कुरेदते फिर रहे थे। एक अचानक शोर ने, हमको खतरे में, घुमा दिया। लंबा पतला लामा, दूर की दीवार पर था और ऐसा लगा कि, उसका चेहरा, धातु के एक धुंधले बक्से में फंस गया। वह अपना सिर झुकाये हुए वहॉ खड़ा रहा और उसका पूरा का पूरा चेहरा, छिपा हुआ था। दो लोग, उसकी तरफ दौड़े और उसे खतरे से बाहर की तरफ खींचा। उसने राहत की सांस ली और तेजी से पीछे की तरफ भागा!

''अजीब!'' मैंने सोचा, ''कि गंभीर, विद्वान लामा लोग भी, इस स्थान में पागल होने जा रहे हैं!'' तब लंबा, पतला (लामा) एक तरफ से खिसका और दूसरे ने उसका स्थान लिया। मैं जहॉ तक समझ सका, वे उस डिब्बे में चलती हुई मशीनों को देख रहे थे। अंत में, मेरे शिक्षक ने मेरे ऊपर दया की और मुझे ऊॅचा उठाया, जो प्रकटरूप से 'नेत्रिकायें' (eyepieces) थीं। ज्यों ही मुझे ऊपर उठाया गया और मैंने अपने हाथों को, जैसा बताया गया था, एक हत्थे के ऊपर रखा, मैंने डिब्बे के अंदर, आदमी और मशीनों, जो हॉल में थीं, को देखा। आदमी मशीनों को चला रहे थे। मैंने देखा कि प्लेटफॉर्म, जिस पर मैं चढ़ चुका था, प्रकाश के गोलों (की ऊॅचाई) तक नियंत्रित किये जा सकते थे और एक प्रकार की चलनशील सीढ़ी, या एक 'युक्ति' थी, जो सीढ़ियों को अनावश्यक बना देती थी। मैंने प्रेक्षित (observe) किया कि, यहॉ की अधिकांश मशीनें, एकदम सही काम करते हुए प्रादर्श (working models), थे जैसे कि, बाद के वर्षों में, पूरे विश्वभर के वैज्ञानिक संग्रहालयों में मुझे देखने थे।

हम खिसकने वाले दरवाजे की तरफ गए, जिसके संबंध में, लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे पहले से बता दिया था, और हमारे वहॉ पहुॅचने पर, उस स्थान की शांति में, वह एक रगड़ने वाली चीख के साथ, इतनी अधिक जोर से चरचराते हुए खुल गया कि, मैं सोचता हूॅ, हम सभी खतरे से उछल पड़े। अंदर अंधेरा था, बहुत अधिक, लगभग ऐसा, मानो कि, हमारे पास, हमारे चारों तरफ घुमड़ते हुए, अंधियारे के बादल हों। जमीन पर हमारे पैर, खोखले चैनलों के द्वारा, निर्देशित किए जा रहे थे। हम गड़बड़ा गए, और जब चैनल समाप्त हो गए, हम बैठ गए। ज्यों ही हमने ऐसा किया, वहॉ धातु के विरुद्ध रगड़ने जैसी, चटाक–चटाक की, श्रेणीबद्ध आवाज (series of clicks) हुई, और लगभग अतिसूक्ष्मरूप से, प्रकाश ने अंधकार को चुरा लिया और उसे एक तरफ धकेल दिया। हमने अपने आसपास देखा और अधिक मशीनों को देखा, अजीब मशीनें। यहॉ प्रतिमाऐं, और धातुओं में नक्काशी किए गए चित्र थे। इससे पहले कि हमें एक झलक पाने से अधिक समय मिले, प्रकाश अपने आप सिमट गया और हॉल के केन्द्र में एक चमकता हुआ गोला बन गया। रंग, निरर्थकरूप से लहराये, और

प्रकाश की धारियॉ, किसी प्रगट अर्थ के बिना, गोले के चारों तरफ घूमतीं रहीं। पहली बार में धुंधले और अस्पष्ट, तब जीवंत रूप से बढ़ते हुए और वास्तविक और त्रिआयामी प्रभाव के साथ चित्र बने, हमने जान बूझ कर देखा .....

ये बहुत–बहुत पहले का विश्व था। जब दुनियॉ बहुत जवान थी। पहाड़ वहॉ खड़े थे, जहॉ अब समुद्र है, और सुखदायी समुद्रतट के आरामगाह, अब पहाड़ी चोटियॉ हैं। मौसम गर्म था और अनोखे प्राणी जमीन पर घूमते फिरते थे। ये वैज्ञानिक प्रगति का विश्व था। अजीब–अजीब मशीनें, एक साथ घूमतीं थीं, जमीन से कुछ इंच की ऊॅचाई पर, या मीलों ऊपर, हवा में उड़तीं थीं। बड़े–बड़े मंदिरों ने, अपने पीछे की चोटियों को, मानोकि बादलों को चुनौती देते हुए, गगनचुम्बी ऊॅचाई तक उठा दिया था। जानवर और मनुष्य, आपस में दूरानुभूति से बात करते थे। परंतु सब कुछ हर्षमय नहीं था; राजनेता, राजनेताओं के खिलाफ लड़ते थे। संसार, कुछ खेमों (camps) में बॅटा हुआ था, जिसमें हर पक्ष, दूसरे की जमीन को चाहता था। धोखा और डर, वे बादल थे, जिनके नीचे सामान्य आदमी रहता था। दोनों पक्षों के पुजारी लोग घोषणा करते थे कि, केवल वे अकेले ही, देवताओं के पक्ष के है। अपने सामने के चित्रों में हमने,– अब की तरह से–एक मूल्य पर प्रबंध करते हुए, पुजारियों को, अपने खुद के मोक्ष पाने के तरीके को–परोसते हुए, बड़बड़ाते हुए देखा। हर संप्रदाय के पुजारी लोग पढ़ाते थे कि, दुश्मन को मारना उनका पवित्र कर्तव्य है। लगभग उसी सांस में, वे उपदेश देते थे कि, पूरे विश्व में मनुष्यजाति, भाई–भाई थे। भाई को भाई को मारने की अताक्रिकता, उनमें घटित होती नहीं दिखती थी।

हमने अधिकांश नागरिकों की मौतें होने के साथ, महान युद्धों को लड़ा जाते हुए देखा। सशस्त्रबल, अपने तीरंदाजों के पीछे सर्वाधिक सुरक्षित थे, बूढ़े, औरतें और बच्चे, जो लड़ नहीं सकते थे, वे थे, जिन्होंने पीड़ा झेली। हमने, प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों को, औरअधिक घातक हथियारों को पैदा करने का काम करते हुए, शत्रुओं पर छोड़ने के लिए, बड़े और अच्छे संक्रामक बीमारियों के कीट उत्पादन करते हुए, झलकियॉ देखीं हैं। चित्रों का एक क्रम, विचारशील मनुष्यों के समूहों को एक योजना बनाते हुए, जिसे वे टाइम केप्सूल (time capsule) कहते हैं (जिसे हमने ''पुरातनों की गुफा'' कहा है), जिसमें वे अपनी मशीनों के कार्यशील प्रादर्शों को, अपनी सभ्यता और उसकी बुराईयों का, एक संपूर्ण चित्रमय अभिलेख, बाद की पीढ़ियों के लिए भण्डारित कर सकें, प्रदर्शित करता है। बड़ी–बड़ी मशीनें, जीवंत चट्टानों को खोदती हैं। आदमियों के झुण्ड, प्रादर्शों और मशीनों को जमाकर बैठाते हैं। हमने अपने स्थान में टांगे हुए ठंडे प्रकाश के गोलों को, निष्क्रिय रेडियोधर्मी पदार्थों को, लाखों वर्षों तक प्रकाश देते हुए देखा। इस दृष्टि में निष्क्रिय, कि ये मनुष्यों को नुकसान नहीं पहुॅचा सकता, इस दृष्टि में सक्रिय, कि प्रकाश, लगभग, समय की समाप्त होने तक जारी रहेगा।

हमने पाया कि हम भाषा को समझ सकते हैं, जब हम दूरानुभूतिपूर्ण ढंग से भाषण प्राप्त कर रहे थे, तब उसकी व्याख्या दिखाई गई। इसके जैसे प्रकोष्ठ, या ''टाइम केप्सूल'', मिस्र की रेत के नीचे, दक्षिणी अमेरिका में एक पिरामिड के नीचे और साइबेरिया में किसी निश्चित स्थान पर, छिपाये गए थे। प्रत्येक स्थान को, उस समय के प्रतीकों के द्वारा चिन्हित किया गया था; कल्पित नरसिंह (Sphinx)[12]। हमने कल्पित नरसिंह की एक महान प्रतिमा, जो मिस्र में नहीं बनाई गयी थी, देखी, और हमें इसकी आकृति के सम्बंध में स्पष्टीकरण मिल गया। उन पुराने गए गुजरे दिनों में, आदमी और जानवर, परस्पर वार्तालाप करते थे और साथ–साथ काम करते थे। शक्ति और बुद्धि की प्रखरता के लिए, बिल्ली सर्वाधिक पूर्ण (most perfect) जानवर थी। मनुष्य स्वयं एक जानवर है, इसलिए, शक्ति और सहनशक्ति को इंगित करने के लिए, पुरातनों ने बड़ी बिल्ली के शरीर की एक आकृति बनाई और उन्होंने उस शरीर के ऊपर, औरत के सिर और स्तन बना कर रखे। सिर, मानवीय प्रखरता को और

12 अनुवादक की टिप्पिणी : यूनानी लोककथाओं के अनुसार, (Sphinx) एक कल्पित प्राणी था, जिसका शरीर सिंह जैसा तथा मुॅह स्त्री जैसा होता है। इसे टाइफन (Typhon) की पुत्री माना जाता है। प्राचीन मिस्र निवासी, बड़े–बड़े पत्थरों से शेर के शरीर और मानव चेहरे वाली ऐसी मूर्तियॉ बनाते थे।

कारण को प्रदर्शित करने के लिए था, जबकि स्तन, इंगित करते थे कि, मनुष्य और पशु, अध्यात्मिक–मानसिक पोषणों को एक दूसरे से प्राप्त कर सकते थे। तब ये प्रतीक इतना अधिक सामान्य था, जितना कि बुद्ध की प्रतिमाऐं अब है, या वर्तमान समय में क्रूस (Crucifix)[13], या डेविड का सितारा (star of David)[14] ।

हमने, तैरते हुए बड़े–बड़े शहरों के साथ, जो एक देश से दूसरे देश तक जाते थे, महासागर देखे। आसमान में उतने ही बड़े वायुयान तैरते थे, जो बिना ध्वनि के चलते थे। जो उछल सकते थे और लगभग त्तकाल विस्मयकारी गति पकड़ सकते थे। किसी विधि, जिसे हम अभी नहीं खोज पाये हैं, के द्वारा समर्थित वाहन, स्वयं पृथ्वी की सतह से कुछ इंच ऊपर, हवा में चलते थे। शहरों के मध्य, पतले–पतले तारों पर बनाये हुए पुल विस्तारित थे, जो सड़क की भॉति दिखाई देते थे। जैसे ही हमने ध्यान से देखा, हमने आकाश में एक जीवंत चमक देखी, और शहतीरों और तारों में उलझे हुए, सबसे बड़े पुलों में से एक, धराशायी हो गया। दूसरी झलक में, स्वयं शहर का अधिकांश भाग, चमकदार गैसों के रूप में गायब हो गया। खंडहरों के ऊपर, दुष्ट दिखते हुए लाल बादल, मोटे तौर से, अनोखे कुकुरमुत्ते की शक्ल में मीलों ऊॅचे उठे।

हमारे चित्र मंदे पड़ गए और फिर हमने मनुष्यों के समूह को देखा, जिन्होंने ''टाइम केप्सूल'' की योजना बनाई थी। उन्होंने तय किया कि, उनके लिये अब ये उन्हें बंद करने का समय था। हमने उत्सव देखे, समारोह देखे, हमने ''भंडारित की गईं स्मृतियॉ,'' मशीन में जोड़ी जाती हुईं देखीं। हमने बिदाई के भाषण को सुना, जिसने हमें बताया – ''भविष्य के लोग, यदि कोई हों!'' – कि मानव जाति स्वयं को नष्ट करने के कगार पर थी, या शायद ऐसा होने की संभावना थी, ''और इन कोष्ठों के अंदर, हमारी उपलब्धियों और मूर्खताओं के, ऐसे अभिलेख भंडारित किए गए हैं, जो भविष्य की प्रजाति को, जिनमें इन्हें खोज लेने की प्रतिभा है, और जो उसे खोज लेने के बाद, उसे समझने में समर्थ हों, लाभप्रद हो सकते हैं।'' दूरानुभूतिपूर्ण आवाज मंदी पड़ गयी, चित्र का पर्दा, बदल कर काला हो गया। उसके द्वारा जो हमने देखा था, हम जड़वत्, शांति में बैठे। बाद में, जैसे ही हम बैठे, प्रकाश फिर से तेज हो गया और हमने देखा कि, यह वास्तव में, कमरे की दीवारों के अंदर से आ रहा था।

हम उठे और अपने आसपास देखा। ये हॉल भी मशीनों से भरा हुआ था और यहॉ नगरों और सेतुओं के अनेक प्रादर्श थे, सभी किसी प्रकार के पत्थर, या किसी प्रकार की धातु, जिसकी प्रकृति, निश्चय कर पाने में हम असमर्थ थे, से बने हुए थे। कुछ नमूने, कुछ एकदम पादर्शी पदार्थों से, जिन्होंने हमें चकरा दिया, संरक्षित किए गए थे। ये कॉच नहीं था; हम नहीं जानते थे कि ये पदार्थ क्या था, हम केवल इतना ही जानते थे कि, इसने प्रभावशालीरूप से हमको कुछ प्रादर्शों को छूने से वंचित रखा। अचानक ही हम सब उछल पड़े; एक डरावनी लाल ऑख, हम पर पलक मारते हुए हमारी निगरानी कर रही थी। मैं दौड़ने के लिए तैयार था क्योंकि, जब मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने, लाल ऑख वाली मशीन की तरफ लंबे–लंबे डग भरे, उन्होंने इसको देखा और हत्थों को छुआ। लाल ऑख गायब हो गई। इसके बदले में हमने, एक छोटे पर्दे के ऊपर, मुख्य हॉल से आगे वाले दूसरे कमरे का एक चित्र देखा। हमारे मस्तिष्कों में एक संदेश आया, ''जैसे ही तुम यहॉ से कमरे की तरफ (???) जाओगे, वहॉ तुम्हें वे पदार्थ, जिनके साथ तुम्हें उस निकास को बंद करना होगा, जहॉ से तुम प्रविष्ट हुए थे, मिलेंगे। यदि तुम उन्नयन के इस चरण तक नहीं पहुॅचे हो, तो उन लोगों के लिए, जो बाद में आयेंगे, इसे ज्यों का त्यों, सही सलामत बना रहने दो।''

शांति से, हमने तीसरे कमरे में, जिसका दरवाजा हमारे पहुॅचने पर खुल गया, कतार बनाई।

---

13 अनुवादक की टिप्पिणी : ईसा को जिस सूली पर लटकाया गया था, उसे क्रूस कहते हैं, आजकल ईसाई लोग इस प्रतीक चिन्ह को, अपने गले में धारण करते हैं।

14 अनुवादक की टिप्पिणी : (Star of David) छै नौंक वाला सितारा होता है, जो दो समबाहु त्रिभुजों को, उल्टा–सीधा मिलाकर रखने से बनता है। ये यहूदी धर्मावलम्बियों का प्रतीक चिन्ह है।

इसमें सावधानीपूर्वक सीलबंद की हुईं, अनेक कट्टियॉ और एक ''चित्र–विचार (picture-thought)'' मशीन, जो हमारे लिए वर्णन करती थी कि, हम कट्टियों को कैसे खोल सकते हैं और गुफा के प्रवेशद्वार को कैसे बंद कर सकते हैं, थी। हम फर्श पर बैठ गए और जो हमने देखा, और अनुभव किया था, उसके ऊपर चर्चा की। ''आश्चर्यजनक! आश्चर्यजनक!'' एक लामा ने कहा। ''इसके अंदर कोई आश्चर्यजनक चीज मत देखो,'' मैंने ठिठाई से कहा। ''ये सब, हम आकाशीय अभिलेखों को देखने पर भी देख सकते थे। हमने उन समय–प्रवाहित चित्रों और इस स्थान को सीलबंद करने के बाद क्या हुआ, को क्यों नहीं देखा ?'' दूसरे लोग, दल के वरिष्ठ लोगों से, लामा मिंग्यार डोंडुप से, पूछताछ करते हुए मुड़ गए उन्होंने हॉ में, हल्का–सा सिर हिलाया और टिप्पणी की, ''कई बार, हमारा लोबसांग, बुद्धि की झलक दिखाता है! हम लोगों को स्वयं में शांत होना चाहिए और देखना चाहिए कि क्या हुआ, क्योंकि, मैं भी उतना ही उत्सुक हूँ, जितने कि तुम।'' हर आदमी अंदर की तरफ मुँह किए हुए, और अपनी उंगलियॉ, उचित ढंग से आपस में फंसाये हुए, हम, लगभग एक वृत में बैठ गया। मेरे शिक्षक ने, श्वसन की आवश्यक लय को प्रारंभ किया और हम सब ने उनके नेतृत्व का अनुगमन किया। धीमे–धीमे, हमने पृथ्वीलोक की अपनी पहचानें खो दीं और समय के समुद्र में, तैराक के समान हो गए। वह सबकुछ, जो कभी भी हुआ था, उन लोगों के द्वारा देखा जा सकता था, जिनमें चेतनतापूर्वक सूक्ष्मशरीर में जाने की और – चेतना – ज्ञान प्राप्ति के साथ, वापस आने की क्षमता हो। इतिहास का कोई भी दृश्य, किसी भी काल से, भले ही वह कितना ही दूर क्यों न हो देखा जा सकता है, मानो कि, हम यथार्थ में वहॉ उपस्थित हैं।

मैंने पहली बार को याद किया, जब मैंने ''आकाशीय अभिलेखों'' का अनुभव किया था। मेरे शिक्षक मुझे ऐसी चीजों के बारे में, बताते रहे थे और मैंने उत्तर दिया था, ''हॉ, परंतु ये क्या है ? ये कैसे काम करता है ? कोई कैसे, उन चीजों के संपर्क में आ सकता है, जो गुजर चुकीं हैं, जो समाप्त हो चुकीं हैं और जा चुकीं हैं ?'' ''लोबसांग!'' उन्होंने जबाव दिया था, ''तुम सहमत होगे कि तुम्हारे पास स्मृति है। तुम याद कर सकते हो, कल क्या हुआ था और उससे एक दिन पहले, और उससे भी एक दिन पहले। एक थोड़े प्रशिक्षण के बाद, तुम हर चीज, जो तुम्हारे जीवन में हुई, याद रख सकते हो। प्रशिक्षण के साथ तुम, अपने पैदा होने की प्रक्रिया को भी याद कर सकते हो। तुम वह, जिसे हम ''पूर्ण स्मृति (total recall)'' कहते हैं और जो तुम्हें अपने जन्म से पहले की स्मृति, में भी पीछे ले जायेगा, (past life regression) कर सकते हो। आकाशीय अभिलेख, संपूर्ण विश्व की 'स्मृति' मात्र है। कोई भी चीज, जो इस पृथ्वी पर कभी भी हुई, ठीक वैसे ही तरीके से, जैसे कि तुम, अपने जीवन की गुजरी हुई घटनाओं को याद करते हो, याद की जा सकती है। इसमें कोई जादू निहित नहीं है, परंतु हम, बाद के किसी दिन में, इसके साथ–एक अत्यंत संबंधित विषय–जिसे सम्मोहन (hypnotism) कहते हैं, की चर्चा करेंगे।''

वास्तव में, हमारे प्रशिक्षण के साथ, उस बिन्दु को चुनना, जहॉ पर मशीन ने अपने चित्रों को धुंधला कर दिया था, आसान था। हमने निस्संदेह, गुफा के बाहर पंक्तिबद्ध हुए, उससमय के भद्रपुरुषों, आदमियों और औरतों के जुलूसों को देखा। विशाल भुजाओं वाली मशीनें, प्रवेशद्वार, जो आधा पहाड़ दिखता था, जहॉ सतहें मिलती थीं, के ऊपर खिसका दीं गयीं थीं। दरारें और धारियॉ, सावधानीपूर्वक सीलबंद की गई थीं, और लोगों का समूह और काम करने वाले आदमी दूर चले गए। मशीनें कुछ दूरी तक लुढ़कती रहीं और थोड़े समय, कुछ महीनों के लिए, दृश्य शांत रहे। हमने एक उच्चपुजारी को, अपने श्रोताओं को, युद्ध के संबंध में समझाते हुए, एक बहुत बड़े पिरामिड की सीढ़ियों पर खड़े हुए देखा। समय की पट्टियों (scrolls of time) पर प्रभाव डालते हुए चित्र, लुढ़कते गए, आगे बढ़ते गए, बदलते गये, और हमने विरोधियों के शिविर को भी देखा। नेताओं को डींग हॉकते हुए और शिकायत करते हुए देखा। समय चलता गया। हमने नीले आकाश में, सफेद वाष्प की धारियों को देखा, और तब

आकाश, बदल कर लाल हो गया। पूरा विश्व कॉप गया और हिल गया। हम लोगों ने, (इसे) देखते हुए, चक्कर (vertigo) अनुभव किए। दुनियॉ में रात का अंधकार, छा गया। विविध लपटों के साथ, काले बादल, फूट पड़े, और पूरे गोले (globe) के चारों तरफ घुमड़ते रहे। नगर संक्षिप्तरूप से जल उठे और गुम हो गए।

देशों के पार, कुपित होते हुए समुद्र उमड़े। ऊॅचे से ऊॅचे भवन, जो उस समय रहे होंगे, से भी अधिक ऊॅची, एक दैत्याकार तरंग, मरती हुई सभ्यता के कचरे को अपनी चोटी पर, समुद्र में बहाते हुए, अपने सामने की हर चीज का सफाया करते हुए, जमीन के आरपार, दहाड़ी। पृथ्वी हिली और कष्ट में धड़की, बड़ी–बड़ी खाइयॉ, प्रकट हुई और दुबारा, जैसे एक दैत्याकार के मुॅह में जाते हुए, बंद हो गईं। पहाड़, तूफान में फर की टहनियों की तरह से हिले, कॉपे, और समुद्र में नीचे डूब गए। पानी में से, जमीन के भारी–भारी पिण्ड उठे और पहाड़ बन गए। पृथ्वी की पूरी सतह, लगातार गतिशील परिवर्तन की अवस्था में थी। करोड़ों में से कोई–कोई बचे बचाये लोग, चीखते हुए, कुछ छितरे हुए, नये उठे पहाड़ों पर भाग गए। दूसरे, जो किसी प्रकार इस उथल–पुथल से बच गए थे, तैरते हुए जहाजों में भाग कर, चीखते हुए ऊॅचे आधार पर और किसी भी छिपने वाले स्थान पर, जो उन्हें मिला, पहुॅच गए। पृथ्वी स्वयं में स्थिर खड़ी हो गई, उसके घूमने की दिशा रुक गई, और तब बदल कर उल्टी दिशा में घूमने लग गई। जंगल, पलक झपकने में, पेड़ों से छितरी हुई राख के रूप में बदल गए। पृथ्वी की सतह, उजाड़, बरबाद, जल कर काला, भुरभुरा कोयला बन गई। गहरे छेदों में, या मृत ज्वालामुखियों के लावे की सुरंगों में, विपत्ति के पागलपन के द्वारा चलाया हुआ, पृथ्वी की भरी–पूरी आबादी का एक छितराव, पीछे हटा और भय में बड़बड़ाया। काले आकाश में से, जीवन को बचाने वाला, स्वाद में मीठा, एक श्वेत सा पदार्थ गिरा।

शताब्दियों के अंतराल के बाद, पृथ्वी फिर से बदल गई; समुद्र अब स्थल बन गए और जो कभी स्थल थे, वे अब समुद्र बन गए। चटकी हुईं और अलग–अलग, निचली सतहें, अब चट्टानी दीवारें बन गईं और पानी समुद्र से उसे, जिसे आजकल मध्यसागर (Mediterranean sea) कहा जाता है, बनाने के लिये दौड़ा। समीपवर्ती समुद्र, एक दरार के माध्यम से, समुद्र की शैया में डूब गया और जैसे ही पानी ने (वह स्थान) छोड़ा और शैया सूखी, सहारा का मरुस्थल बन गया। जंगली जातियॉ, पृथ्वी के फलक के ऊपर, घूमती फिरती रहीं, जिन्होंने अपने शिविरों की अग्नि (camp fire) के द्वारा, उन्होंने पुरानी किंबदंतियों को बताया, लेमूरिया (Lemuria) और एटलांटिस (Atlantis) की बाढ़ को बताया। उन्होंने उस दिन के बारे में भी बताया, जब सूर्य स्थिर हो गया था।

पुरातनों की गुफा, आधे डूबे हुए विश्व के कचरे में दफन हो गई। घुसपैठियों से सुरक्षित, ये पृथ्वी की सतह के काफी नीचे बनी रही। समय के अंतराल में, तेजी से दौड़ती हुई धारायें, उस मिट्टी के जमाव को, मलबे को, धो देंगी, और चट्टानों को एकबार फिर, सूर्य के प्रकाश में खड़ा होने देगीं। अंत में, सूर्य से गर्मी पा कर, और सहसा बर्फीली धाराओं से ठंडा हो कर, चट्टानी फलक, गरजती हुई आवाज के साथ फट जायेगा और हम प्रवेश करने में समर्थ होंगे।

हमने, स्वयं को हिलाया, अपनी कसी हुई भुजाओं को फैलाया और अपने कांपते हुए पैरों पर खड़े हुए। अनुभव, कंपा देने वाला था। अब हमें खाना खाना था, सोना था, और कल फिर अपने आसपास देखना था ताकि, शायद, हम कुछ और सीख सकें। तब, हमारा मिशन पूरा होगा, हम, जैसा कहा गया था, प्रवेशद्वार की दीवार को बंद करेंगे। गुफा फिर से, शांति में सो जायेगी, जबतक कि साख (goodwill) और उच्च प्रखरता (intelligence) वाले लोग दुबारा, फिर न आयें। मैं गुफा के मुॅह की तरफ टहला और फटी हुई चट्टानों के ऊपर, सुनसान स्थानों को देखा, और मैंने आश्चर्य किया कि पुराने जमाने का आदमी क्या सोचेगा, यदि वह इस कब्र में से, यहॉ मेरे बगल से खड़े होने के लिए, उठ खड़ा हो। जैसे ही मैं आंतरिक भाग में मुड़ा, मैंने विभेदता (contrast) पर आश्चर्य किया; एक

लामा, चकमक पत्थर और लकड़ी से, कुछ सूखे हुए याकोबर से, जिसे हम, उस उद्देश्य के लिए यहॉ लाये थे, आग जला रहा था। हमारे आसपास, गुजरे हुए युगों की मशीनें और कलाकृतियॉ थीं। हम–आधुनिक मनुष्य–ऐसी अद्भुत मशीनों से घिरे हुए कि वे हमारे समझ के परे थीं, पानी को, गोबर की आग के ऊपर गर्म कर रहे थे। मैंने आह भरी और अपने विचारों को, चाय और त्सम्पा मिलाने के लिए, मोड़ दिया।

अध्याय छैः

मध्य–प्रातः (mid-morning) सेवा समाप्त हो चुकी थी; हम लड़के, इस प्रयास में कि, हम अंदर जाने वालों में अंतिम न हों, ठेलते हुए, धकेलते हुए, अपनी कक्षा की तरफ दौड़े। शिक्षा में अपनी अभिरुचि के कारण नहीं, परंतु इस कारण से कि, कक्षा के शिक्षक की, अंदर आने वाले अंतिम लड़के को अंधाधुंध, अपनी छड़ी से जबरदस्त मारने की आदत थी! मैं, आनंदों के आनंद, ने पहले अंदर जाने की व्यवस्था की और शिक्षक की मुस्कान की आभा का उष्ण अनुमोदन प्राप्त किया। अधीरता के साथ, दरवाजे के पास खड़े होते हुए और जो भी सुस्त दिखाई दिए, उनमें चॉटा मारते हुए, उसने दूसरों को जल्दी करने का इशारा दिया। अंत में, हम सब, फर्श पर फैली हुईं अपनी गद्दियों पर, पालथी मार कर बैठ गए। जैसा कि हमारी परंपरा है, हमारी पीठ शिक्षक, जो लगातार हमारे पीछे गस्त कर रहे थे, की तरफ थी, ताकि हम, कभी ये न जान सकें कि वह कहॉ थे और इसप्रकार हमें कठिन परिश्रम करना पड़े।

''आज हम चर्चा करेंगे कि सभी धर्म किसप्रकार एक समान हैं,'' उन्होंने गुनगुनाया। ''हमने देखा है कि प्रलय की कहानी, सभी आस्थाओं में पूरे संसार में क्यों पाई जाती है। अब हम अपना ध्यान, कुमारी मॉ के थीम पर पर देंगे। सबसे ओछी बुद्धि भी,'' मेरी ओर कठोरता से देखते हुए उन्होंने कहा, ''जानती है कि, हमारी कुमारी मॉ, शुभाशीष प्राप्त डोलमॉ, दया की कुमारी मॉ, ईसाई धर्म के कुछ निश्चित विभागों की, कुमारी मॉ के सुसंगत (corresponds) है।'' तेज चलते हुए कदम, कक्षा के प्रवेशद्वार पर रुक गए। एक भिक्षुक संदेशवाहक प्रविष्ट हुआ और उसने शिक्षक को दण्डवत की। ''विद्वान पुरुष, आपको अनेक नमन,'' वह फुसफुसाया। ''स्वामी लामा मिंग्यार डोंडुप, अपने अभिवादन प्रस्तुत करते हैं और निवेदन करते हैं कि, छात्र मंगलवार लोबसांग रंपा को यहॉ से तुरंत छोड़ दिया जाये – मामला अतिआवश्यक है।'' शिक्षक ने नाक भौं चढ़ाई; ''बच्चे ?'' वह गुर्राया, ''तुम एक उत्पाती और कक्षा को बिगाड़ने वाले हो, बाहर जाओ'' मैं अपने पैरों पर तेजी से उछला, शिक्षक को झुककर नमन किया, और जल्दी करते हुए संदेश वाहक के पीछे दौड़ा। ''यह क्या है ?'' मैंने गहरी सांस ली। ''मैं नहीं जानता'', उसने कहा, ''मुझे खुद आश्चर्य हुआ। पवित्र लामा डोंडुप को कुछ शल्यचिकित्सीय चीजें तैयार करनी हैं, घोड़े भी तैयार हैं।'' हमने जल्दी की।

''आह! लोबसांग! तुम ऐसी जल्दी कर सकते हो!'' मेरे शिक्षक, जैसे ही हम उनके पास आये, मेरे ऊपर हॅसे। ''हम नीचे श्यो (Shö) के गॉव की ओर जा रहे हैं, जहॉ हमारी शल्यचिकित्सा की सेवाओं की आवश्यकता है।'' वे अपने घोड़े पर चढ़े और मुझे अपने (घोड़े) पर चढ़ने का इशारा किया। जब भी ये सवार होने का मामला होता, ये हमेशा एक कठिन क्रिया होती थी; घोड़ा और मैं कभी एक मन के नहीं लगते थे। मैं घोड़े की तरफ चला, और वह प्राणी मुझसे दूर, बगल की तरफ खिसक गया। मैं फिसल कर दूसरी तरफ गिरा और इससे पहले कि घोड़ा ये जान पाये कि क्या हो रहा है, मैने एक दौड़ती हुई उछाल लगाई। तब मैंने अपनी पकड़ की जिद्द के कारण, पर्वतीय काई (lichen) के साथ प्रतियोगिता की। निवृति की घरघराहट के साथ उत्तेजित घोड़ा, मेरी मदद के बिना मुड़ गया और वह मेरे शिक्षक के घोड़े के पीछे–पीछे, नीचे की तरफ चला। मेरे इस घोड़े में, अपने सिर को नीचा करते हुए और एकप्रकार से डगमगाते हुए, सबसे तीखे भाग पर रुकने और किनारी को देखने की, एक डराने वाली आदत थी। मैं पक्की तरह से विश्वास करता हूॅ कि, उसमें (गलत समय पर) हास्य का एक गजब का पुट था और वह, मेरे ऊपर इसका जो प्रभाव पड़ने वाला था, उसके प्रति पूरी तरह सजग था। हम खनकते हुए नीचे वाले रास्ते पर गए और शीघ्र ही, पार्गो कलिंग, या पश्चिमी दरवाजे से गुजरे, और इसप्रकार श्यो के गॉव में आये। मेरे शिक्षक ने, गलियों में हो कर पथ का नेतृत्व किया, जबतक कि वे एक बड़ी इमारत के पास नहीं पहुॅचे, जिसको मैंने जेल के रूप में पहचाना। प्रहरियों ने जल्दी की और हमारे घोड़ों को (हमसे) ले लिया। मैंने अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप की दो पेटियों को उठाया

और उन्हें उदास स्थान में अंदर ले गया। यह नीरस था, वास्तव में, एक भयानक स्थान। मैं भय को सूंघ सकता था, और गलत काम करने वालों की, बुरी विचार आकृतियों को देख सकता था। ये वास्तव में, एक स्थान था, जिसका वातावरण मेरी गर्दन के पीछे रोंगटे खड़े कर रहा था।

एक काफी बड़े कमरे में, मैंने अपने शिक्षक का अनुगमन किया। धूप खिड़कियों में होकर अंदर आ रही थी। काफी संख्या में प्रहरी आसपास खड़े थे, और लामा मिंग्यार डोंडुप, जो श्यो गॉव के दण्डाधिकारी भी थे, का अभिवादन करने की प्रतीक्षा में थे। जबतक उन्होंने बातें कीं, मैंने अपने आसपास देखा। तब, मैंने निश्चय किया, कि यहॉ अपराधियों की सुनवाई होती थी और उन्हें सजा सुनाई जाती थी। दीवारों के आसपास, फर्श पर, अभिलेख और पुस्तकें थीं। एक बगल में, एक उदास बंडल पड़ा था। मैंने इसकी तरफ देखा, और तब मैंने जनपदाधीश (magistrate) को अपने शिक्षक के साथ बात करते हुए सुना! ''चीनी, हमारा ख्याल है, एक जासूस था, आदरणीय लामा। वह इस पवित्र पहाड़ पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था, स्पष्टतः, रेंग कर पोटाला में जाने के प्रयास में वह फिसला और गिर गया, कितनी दूर ? शायद सौ फुट। वह अभी खराब अवस्था में है।'' मेरे शिक्षक आगे बढ़े, और मैं उनके बगल में गया। एक आदमी ने (उसके) आवरणों को उतारा और हमने अपने सामने लगभग मध्य आयु के, एक चीनी आदमी को देखा। वह काफी छोटा था और ऐसा दिख रहा था मानो कि, वह उल्लेखनीय रूप से कुछ–कुछ–एक कलाबाज नट की तरह से मुस्तेद हो, मैंने सोचा। अब वह दर्द से कराह रहा था, उसका चेहरा पसीने से लथपथ था, और उसका रंग दलदली हरी आभा की तरह था।

कष्ट के कारण कांपता हुआ और अपने दांतों को घिसता हुआ आदमी खराब अवस्था में था। लामा मिंग्यार डोंडुप ने, करुणा के साथ उसे देखा। ''जासूस, होने वाला हत्यारा, या ये जो कुछ भी है, हमें उसके लिए कुछ करना चाहिए।'' उन्होंने कहा। मेरे शिक्षक, बगल से, घुटनों के बल बैठ गए और अपने हाथ उस बेचारे आदमी की दुखती हुईं कनपटियों के ऊपर रखे और उसकी ऑखों में घूर कर देखा। सेकण्डों में उस बीमार आदमी को आराम पड़ गया, ऑखें आधी खुली हुईं, उसके होठों पर एक प्रतीकात्मक मुस्कान (उभरी)। मेरे शिक्षक ने, आवरणों को खींच कर, एक बगल से थोड़ा और खोला और तब उसकी टॉगों पर झुके। जो मैंने देखा, उस पर मैं दुःखी हुआ; आदमी की टॉगों की हड्डियॉ, उसके पजामे में से बाहर निकल रहीं थीं। टॉगें, पूरी तरह से टूटी हुई दिखाई दीं। एक तीखे चाकू के द्वारा, मेरे शिक्षक ने, आदमी के कपड़ों को काट कर फाड़ा। आसपास खड़े हुए लोगों ने, जब टॉग को देखा, उनके मुॅह से कराह निकली, पैर से लगाकर जांघों तक की हड्डियॉ पूरी तरह चूर–चूर। लामा ने धीमे से उनको अनुभव किया। घायल आदमी न हिल सकता था और न ही पीछे हट सकता था, वह बहुत गहराई तक सम्मोहित था। टॉग की हड्डियॉ घिस गई थीं और उनमें से, आधे भरे हुए रेत के बोरे की तरह से, आवाज निकल रही थी। ''उन्हें दुबारा जमाने के लिए, हड्डियॉ पूरी तरह चूर–चूर हो गई हैं,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''उसकी टॉगें पिसकर चूरा हो गई दिखाई देती हैं; हमें उन्हें काटना पड़ेगा।'' ''आदरणीय लामा,'' मजिस्ट्रेट ने कहा ''आप उसे, हमें ये बताने के लिए कहें कि, वह क्या कर रहा था ? हमें डर है कि वह एक हत्यारा था।'' ''हम पहले उसकी टॉगों को हटायेंगे,'' लामा ने जवाब दिया, ''तब हम उसे पूछ सकते हैं।'' वह फिर से आदमी के ऊपर झुके और एक बार फिर, उन्होंने उसकी ऑखों में घूर कर देखा। चीनी को और अधिक आराम हुआ और वह गहरी नींद में जाता हुआ दिखाई दिया।

मेरे पास, बिना लपेटे हुए थैले और जड़ीबूटियों का कीटाणुनाशक तरल, कटोरे में तैयार थे। मेरे शिक्षक ने अपने हाथ उसमें डुबोये ताकि वे (तरल को) सोख सकें। दूसरे कटोरे में, पहले से ही, मेरे पास उनके दूसरे उपकरण थे। उनके निर्देशों पर, मैंने आदमी के शरीर और टॉगों को धोकर साफ किया। (लामा ने) उन टॉगों को छूते हुए, अपने माध्यम से उनमें एक विशेष भावना भेजी; ऐसा लगा मानो हर चीज चूर–चूर हो गई हो। अब वे उदास थे, चित्तीदार विचित्र रंग वाली काली डोरी की तरह

से, बाहर स्थित शिरायें। अपने शिक्षक, जो अभी भी, अपने हाथों को तरबतर कर रहे थे, के निर्देशों के अंतर्गत, मैंने कीटाणुरहित की हुई पट्टियों को, उतना ऊॅचा जितना मैं कर सकता था, चीनी आदमी की टॉगों पर रखा, ऊॅचा, जहॉ वे शरीर से जुड़ती थीं। तब मैंने, एक छड़ी को, गोल घेरे में घुमाते हुए तब तक घुमाया, जबतक कि, दबाव ने रक्त के प्रवाह को बंद नहीं कर दिया। अतिशीघ्रता के साथ, लामा मिंग्यार डोंडुप ने एक चाकू पकड़ा और मांस को (V) के आकार में काट दिया। उन्होंने, टॉग की हड्डी में होकर V के बिन्दु पर सी दिया – जो वहॉ बचा था– और तब उसे V की दो पर्तों में लपेट दिया ताकि, हड्डी का सिरा, मांस की दुहरी परतों के बीच सुरक्षित बना रहे। मैंने उन्हें, याक के अंगों से बना और कीटाणुरहित किया हुआ धागा दिया, और उन्होंने तेजी से, दोनों परतों को आपस में कसकर बांध दिया। मैंने सावधानीपूर्वक, आदमी की टॉगों के आसपास, धीमे से, खून बहते हुए ठूॅठ को कसकर बॉधने के लिए, दोबारा फिर से कसने के लिए तैयार, पट्टी का दबाव थोड़ा कम किया। टांके बने रहे, और अधिक खून नहीं बहा। हमारे पीछे, एक सुरक्षा प्रहरी को, बहुत जोर की उल्टी आई, वह सफेद चॉक (chalk) की तरह बदल गया और जमीन पर गिर कर बेहोश हो गया!

मेरे शिक्षक ने, सावधानीपूर्वक, ठूॅठ की पट्टी की और अपने हाथों को फिर से घोल में धोया। मैंने अपना ध्यान, दूसरी बांयी टॉग पर लगाया,, और डंडी को पट्टी के फंदे में हो कर खिसकाया। लामा ने सिर हिलाया और मैंने छड़ी को, एकबार फिर, खून बंद करने के लिए, उस टॉग से घुमाया। शीघ्र ही वह टॉग, दूसरे के बगल से पड़ी थी। मेरे शिक्षक, घूरते हुए एक प्रहरी की ओर मुड़े और उसे टॉग को ले जाने के लिए और कपड़े में लपेटने के लिए कहा। ''हमें ये टॉगें, चीनी मिशन को वापस लौटा देनी चाहिए,'' लामा ने कहा, '' अन्यथा वे कहेंगे कि, उनके आदमी को प्रताड़ना दी गई है। मैं अंतरतम से कहूॅगा कि, इस आदमी को, उन लोगों को वापस कर दिया जाये। उसके उद्देश्य का कोई फक्र नहीं पड़ता; वह वैसे ही असफल हो गया जैसे कि, दूसरे ऐसे प्रयास भी, असफल हो जायेंगे।'' ''परंतु आदरणीय लामा!'' न्यायअधिकारी ने कहा, ''आदमी को ये बताने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए कि, वह क्या कर रहा था, और क्यों।'' मेरे शिक्षक ने कुछ नहीं कहा, परंतु फिर से, वे सम्मोहित व्यक्ति की ओर मुड़े और अब उन्होंने, उसकी खुली हुई ऑखों में गहराई से देखा। ''तुम क्या कर रहे थे ?'' उन्होंने पूछा। आदमी दुःखी हुआ, कराहा और उसने अपनी ऑखें बंद कर लीं। मेरे शिक्षक ने उसे दुबारा पूछा; ''तुम क्या करने वाले थे ? क्या तुम पोटाला में, किसी उच्चव्यक्ति की हत्या करने वाले थे ? चीनी आदमी के मुॅह के आसपास झाग बन गए, तब अनिच्छापूर्वक, उसने अपना सिर पुष्टि के रूप में हिलाया। ''बोलो!'' लामा ने आदेश दिया। ''केवल हांमी भरना काफी नहीं है।'' इसलिए, धीमे से, कष्टपूर्वक, कहानी बाहर आई। हत्या करने के लिए, एक हत्यारा भाड़े पर लिया गया था, उसे एक शांतिपूर्ण देश में खलबली पैदा करने के लिए, धन दिया गया था। हमारी सुरक्षा युक्तियों को न जानने के कारण, जैसे कि, एक हत्यारा फेल हो गया था, वैसे ही सभी फेल हो जायेंगे,! जैसे ही मैं इसके ऊपर आश्चर्यचकित हो रहा था, लामा मिंग्यार डोंडुप, अपने पैरों पर खड़े हुए। ''मैं अंतरतम से मिलने के लिए जाऊॅगा, लोबसांग, तुम यहॉ रुको और इस आदमी की सुरक्षा करो।''

आदमी ने आह भरी। ''आप मुझे मार डालें ?'' उसने कमजोरी के साथ कहा। ''नहीं!'' मैंने जबाव दिया, ''हम किसी को नहीं मारते।'' मैंने उसके होठों को तर किया और उसकी भौंहों को पोंछा। शीघ्र ही, वह फिर से शांत हो गया; मैंने सोचा कि, वह थकाने वाली कठिन परीक्षा के बाद सो गया है। ये सोचते हुए कि, एक होने वाले हत्यारे को बचाने के लिए, पुजारी लोग पागल होते हैं, न्यायाधीश ने तीक्ष्णरूप से देखा। दिन आगे बढ़ता गया। सुरक्षा प्रहरी चले गए और (उनके स्थान पर) दूसरे आ गए। मैंने अपनी अंतड़ियों को, भूख से टूटते हुए महसूस किया। अंत में मैंने परिचित पदचाप सुने और लामा मिंग्यार डोंडुप ने कमरे में प्रवेश किया। पहले वे आये और उन्होंने ये सुनिश्चित करते हुए मरीज को देखा कि, आदमी उतने आराम में था, जिसकी कि परिस्थितियॉ इजाजत देतीं थीं और ठूंठों में से

रक्तस्राव नहीं हो रहा था। उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होते हुए, वरिष्ठ जनसम्पक्र अधिकारी (senior lay officer) की ओर देखा और कहा, अंतरतम द्वारा मुझे दिए गए और मुझमें निहित अधिकारों के आधार पर, मैं आपको, इन दो गंदगियों को तुरंत उठाने के लिए, और इस आदमी को और इसकी टांगों को चीनी मिशन में ले जाने के लिए, आदेश देता हूँ।'' वे मेरी ओर मुड़े;'' तुम, इन लोगों के साथ जाओगे और यदि वे इस आदमी के कूड़े करकट को लेने में, अनावश्यक रूप से रूखा व्यवहार करें, मुझे सूचना दोगे।'' मैंने विशिष्टरूप से उदास महसूस किया; यहॉ, अपनी दोनों टांगें कटा हुआ, ये हत्यारा था–और मेरा पेट भोजन से खाली होने के कारण, मंदिर के ढोल की तरह से दुःख रहा था। जब आदमी कूड़े–करकट की तलाश में, (वहॉ से) अनुपस्थित थे, मैं बाहर की ओर दौड़ा, जहॉ मैंने अधिकारियों को चाय पीते हुए देखा था! एक गुस्ताखी भरी हुई आवाज में, मैंने मॉग की – और एक उदारतापूर्ण सहायता पाई। जल्दी से त्सम्पा को गले में नीचे ठेलते हुए, मैं वापस दौड़ा।

दो खम्भों के बीच में खींच कर कपड़ा लपेटी हुई, दो भद्दी पालकियों (litters) को शांतिपूर्वक ले जाते हुए, मुँह फुलाये, आदमी कमरे में, मेरे पीछे पंक्तिबद्ध हो गए। उन्होंने बदमिजाजी से, दोनों टॉगों को उठाया और उन्हें एक पालकी पर रखा। लामा मिंग्यार डोंडुप की तीखी निगाहों के अंतर्गत, उन्होंने कोमलतापूर्वक, चीनी आदमी को दूसरी पालकी पर रखा। उसके शरीर के ऊपर एक कपड़ा ढक दिया गया, और पालकी के नीचे बॉध दिया गया ताकि, वह हिचकोले खाकर हट न जाये। मेरे शिक्षक, वरिष्ठ जनसम्पक्र अधिकारी की तरफ मुड़े और उन्होंने कहा, ''आप इन लोगों के साथ जायेंगे और मेरी सद्भावनाऐं चीनी राजदूत को प्रस्तुत करेंगे और ये बतायेंगे कि, हम उनके एक आदमी को लौटा रहे हैं। ''लोबसांग, तुम'' वे मेरी तरफ मुड़े, ''उनके साथ जाओगे और वापसी में, तुम मुझे व्यौरा प्रस्तुत करोगे।'' वह मुड़े, और आदमी कमरे में से, पैर घसीटते हुए बाहर चले गए। बाहर की हवा एकदम ठंडी थी और मैं अपनी हल्की पोशाक में कॉप रहा था। पहले आदमी की टॉगों को ले जाते हुए, तब उस चीनी की पालकी को ढोते हुए दो आदमियों के साथ, हम मनि लखांग (Mani Lhakhang) से नीचे की ओर चले। मैं एक तरफ चल रहा था और वरिष्ठ जनसम्पक्र अधिकारी दूसरी तरफ। हम दांयी ओर मुड़े, दो उद्यानों को गुजारा और हमने चीनी मिशन की तरफ रुख किया।

प्रसन्नता की नदी, हमारे सामने चमकने के साथ ही, पेड़ों के बीच खाली स्थान से, चमकदार प्रकाश के धब्बों को देखते हुए, हम मिशन की सबसे आगे वाली दीवार तक आये। घों–घों करते हुए आदमियों ने, अपने भार को, थोड़े समय के लिए नीचे रखा। तब उन्होंने अपनी दुःखती मांसपेशियों को आराम दिया और उत्सुकतापूर्वक मिशन की दीवार की तरफ देखा। चीनी लोग, जो भी उनके परिसर में घुसने का प्रयास करता, उस किसी के भी प्रति बहुत आक्रमक होते थे। छोटे बच्चों को, ''दुर्घटना से'' गोली मार दिए जाने के प्रकरण हो चुके थे, जबकि उन्होंने, छोटे बच्चों की तरह से, मन की मौज में, अनाधिकार प्रवेश करने का प्रयास किया था। अब हम अंदर जा रहे थे! अपने हाथों पर थूकते हुए, आदमी झुक कर खड़े हुए और उन्होंने एकबार फिर, पालकी को उठा लिया। आगे चलते हुए हम, लिंगखोर रोड पर बांयी ओर मुड़े और हमने मिशन के अहाते में प्रवेश किया। निश्चितरूप से आदमी दरवाजे तक आये और वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ''हम आपके एक आदमी को, सम्मानपूर्वक लौटाने के लिए आये हैं, जिसने पवित्र अहाते में घुसने का प्रयास किया था। वह गिर पड़ा और उसकी टॉगें काटनी पड़ीं। आपके निरीक्षण के लिए टॉगें प्रस्तुत हैं।'' प्रहरियों ने त्यौरियॉ चढ़ाते हुए, हत्थों को जकड़ लिया और आदमी और उसकी टॉगों के साथ, इमारत में अन्दर की तरफ दौड़े। दूसरों ने, बंदूक की नौंक पर, हमको बाहर की तरफ चलता कर दिया। हम रास्ते पर वापस लौटकर आ गए। मैं, अनदेखा, एक पेड़ के पीछे खिसक लिया और दूसरे आगे चलते गए। चीखों और शोर ने, हवा को भर दिया। आसपास देखते हुए, मैंने देखा कि वहॉ कोई सुरक्षाकर्मी नहीं थे; वे सभी, मिशन में प्रवेश कर चुके थे। एक मूर्खतापूर्ण आवेग के कारण, मैंने वृक्ष की संदेहयुक्त सुरक्षा को छोड़ दिया और शांति के

साथ खिड़की की तरफ दौड़ा। घायल आदमी फर्श पर लेटा हुआ था, एक प्रहरी उसकी छाती पर बैठा हुआ था, जबकि दो और, उसकी भुजाओं पर बैठे हुए थे। एक चौथा आदमी, जलती हुई सिगरेट को, उसके कटे हुए ठूंठों पर दाग रहा था। सहसा वह चौथा आदमी अपने पैरों पर उछल पड़ा, अपनी रिवॉल्वर को बाहर निकाला और (उसने) घायल आदमी को, उसकी ऑखों के बीच गोली मार दी।

मेरे पीछे, एक टहनी चटकी। एक चमक की तरह से, मैं अपने घुटनों पर गिरा और पीछे मुड़ा। दूसरा चीनी प्रहरी दिखाई पड़ा और वह, राइफल का निशाना वहॉ लगा रहा था, जहॉ मेरा सिर था। उसे गिराते हुए और उसकी रायफल को गिराने का कारण बनते हुए, मैंने उसकी टॉगों के बीच में गोता लगाया। जल्दी से, मैं पेड़ से पेड़ की तरफ दौड़ा। निचली शाखाओं में होते हुए और उन्हें फाड़ते हुए गोलियॉ आईं और वहॉ मेरे पीछे दौड़ते हुए पैरों की आवाज हुई। यहॉ मुझे इसका लाभ मिला; मैं पैरों पर भाग रहा था और चीनी, अक्सर मुझे गोली मारने के लिए रुक जाते थे। मैं बगीचे के पीछे की तरफ दौड़ा–दरवाजे पर अब प्रहरी थे–एक सुविधाजनक पेड़ पर चढ़ा और एक शाखा के सहारे थोड़ा हटा ताकि, मैं दीवार की चोटी पर कूद सकूँ। कुछ सेकण्डों के बाद, मैं अपने देशी लोगों के आगे–आगे, जो घायल आदमी को ले गए थे, वापस सड़क पर था। जैसे ही उन्होंने मेरी कहानी को सुना, उन्होंने तेजी से अपने कदम बढ़ा दिये। कुछ उत्तेजनापूर्ण दिखाई देने की आशा में, वे वहॉ, औरअधिक नहीं रुकना चाहते थे; अब वे इससे बचना चाहते थे। एक चीनी प्रहरी, दीवार की चोटी से नीचे सड़क पर कूदा और (उसने) सर्वाधिक संदेहभरी दृष्टि से, मुझ पर टकटकी लगाई। मैंने नीरस तरीके से, उसे वापस घूरा। एक तेवर के साथ और एक उच्चारित की हुई कसम के साथ, जिसने मेरे मॉ–बाप के ऊपर उल्टा दोषारोपण किया, वह वापस लौट गया। हमने गति पकड़ ली!

वापसी में, आदमियों ने मुझे श्यो के गॉव पर छोड़ दिया। कुछ–कुछ डरा हुआ सा, अपने कंधों को देखता हुआ, शीघ्र ही, मैं तेजी से चाकपोरी के रास्ते पर चल पड़ा। सड़क के बगल से बैठे हुए, एक बूढ़े भिक्षुक ने मुझे पुकारा, ''लोबसांग तुम्हें क्या परेशानी है ? तुम ऐसे दिखाई देते हो, मानो सारे दैत्य तुम्हारे पीछे पड़े हैं!'' मैं दौड़ता गया और निश्वास के साथ, मैंने अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के कमरे में प्रवेश किया। एक क्षण के लिए, अपनी सांस पुनः प्राप्त करने का प्रयास करते हुए, मैं हॉफता हुआ खड़ा हुआ। ''ओह!'' अंत में मैंने लंबी सांस ली, ''चीनियों ने उस आदमी को मार डाला; उन्होंने उसे गोली मार दी!'' शब्दों के प्रवाह में, मैंने वह सब बताया, जो हुआ था। मेरे शिक्षक, एक क्षण के लिए शांत रहे। तब उन्होंने कहा, ''तुम अपने जीवन में बहुत अधिक हिंसायें देखोगे, लोबसांग, इसलिए तुम इस घटना पर अत्यधिक दुःखी मत हो। उन सभी को मार दो, जो फेल होते है और उन जासूसों का परित्याग कर दो, जो पकड़े जाते हैं; ये कूटनीति का सामान्य तरीका है। पूरे विश्व में, विश्व के सभी देशों में, यही चलता है।''

अपने शिक्षक के सामने बैठते हुए, उनकी उपस्थिति की शुद्धता में, शांति को पुनः प्राप्त करते हुए, मैंने दूसरे विषय में सोचा, जो मुझे परेशान कर रहा था। ''श्रीमान्!'' मैं जोर से चिल्लाया, ''सम्मोहन कैसे कार्य करता है?'' अपने होठों पर एक मुस्कान के साथ, उन्होंने मेरी तरफ देखा। ''तुमने अंतिम बार कब खाना खाया ?'' उन्होंने पूछा। मेरी पूरी भूख, दौड़ते हुए वापस आ गई। ''ओह, लगभग बारह घण्टे पहले,'' मैंने, कुछ हद तक खेदपूर्वक, उत्तर दिया।'' तब, हम अब यहॉ खाना खायें, और तब, जब हम कुछ हद तक तरोताजा हो जायें, हम सम्मोहन के ऊपर चर्चा कर सकते हैं।'' उन्होंने मुझे शांति में तरंगित कर दिया, और ध्यान की मुद्रा में बैठ गए। मैंने उनके द्वारा, अपने सेवकों को दिये गये–खाना और चाय–दूरानुभूतिपूर्ण संदेश को पकड़ लिया। मैंने एक और दूरानुभूतिपूर्ण संदेश को भी पकड़ लिया, जो पोटाला में किसी को भेजा गया था, वह कोई, जो अंतरतम की ओर, एक विस्तृत रिपोर्ट देने के लिए, जल्दी में भेजा जाना था। परंतु दूरानुभूति संदेश में मेरे ''हस्तक्षेप'' को, एक सेवक, चाय और खाना़ लाने वाले सेवक, के प्रवेश के द्वारा विक्षुब्ध कर दिया गया!

मैं, खाने से संतुष्ट हुआ, और भी अधिक, असुखदरूप से पूर्ण महसूस करते हुए, पीछे बैठा । मेरा दिन बहुत–बहुत खराब रहा था, मैं अनेक–अनेक घण्टों तक भूखा रहा था, परंतु (इस विचार ने मुझे आंतरिकरूप से परेशान किया) अब मैंने, बहुत अधिक बेवकूफी से, बहुत अधिक खा लिया होता ? सहसा, संदेहास्पदरूप से, मैंने ऊपर देखा, मेरे शिक्षक, अपने चेहरे पर स्पष्ट आनंद के साथ, मेरे ऊपर नजर टिकाये हुए थे। ''हॉ, लोबसांग,'' उन्होंने टिप्पणी की, ''तुमने बहुत अधिक खा लिया है। मुझे आशा है कि, तुम सम्मोहन पर मेरी चर्चा को समझने में सक्षम होगे।'' उन्होंने मेरे उत्तेजित चेहरे का अध्ययन किया और उनकी खुद की नजर नम्र पड़ गईः 'बेचारे लोबसांग, तुम्हें एक कठिन दिन झेलना पड़ा। अब तुम आराम करने के लिए जाओ और हम अपनी चर्चा कल जारी रखेंगे।'' वे अपने पैरों पर खड़े हुए और उन्होंने अपने कमरे को छोड़ दिया और मैं थके हुए अंदाज में, गलियारे के साथ, लगभग लड़खड़ाता हुआ, अपने कमरे की तरफ चला। सो जाओ! यही वह सब कुछ था, जो मैं चाहता था। खाना ? उफ! मुझे ये अत्यधिक मिल चुका था। मैं अपने सोने के स्थान पर पहुॅचा और अपने आपको पोशाकों में लपेट लिया। वास्तव में, नींद कष्ट में थी; मुझे रात्रिचित्र (night mares) दिखे थे, जिनमें टॉगरहित चीनी, जंगली झाड़ियों में होता हुआ, मेरा पीछा कर रहा था और दूसरे हथियारबंद चीनी, बंदूकों के साथ, मुझे नीचे गिरा लेने के प्रयास में, मेरे कंधों पर कूदते रहे।

''धम्म!'' मेरा सिर जमीन पर लगा। चीनी सुरक्षा प्रहरियों में से एक, मुझे ठोकर मार रहा था। ''ठुक!'' मेरे सिर में फिर से गूॅजा। मैंने अपनी ऑखों को खोला, धुंधली ऑखों से देखा, एक बेदी सहायक (acolyte), जोर से मेरे सिर को खटखटा रहा था और मुझे जगाने के निराशापूर्ण प्रयास में मुझे ठोक रहा था। ''लोबसांग!'' जैसे ही उसने देखा कि, मेरी ऑखें खुल गईं हैं, वह जोर से चीखा। ''लोबसांग, मैंने सोचा कि, तुम मर गए हो। तुम पूरी रात सोते रहे, सेवाओं को चूक गए, और केवल तुम्हारे स्वामी लामा मिंग्यार डोंडुप के हस्तक्षेप ने, तुम्हें कुलानुशासकों से बचाया। उठो,!'' जैसे ही मैं नींद में, लगभग दुबारा से फिसला, वह जोर से चिल्लाया।

मेरे अंदर चेतना की बाढ़ आ गई। खिड़कियों में होकर मैंने, एकदम सुबह की धूप की किरणों को, हिमालय के ऊपर चुभते हुए और घाटी की सबसे अधिक ऊॅची इमारतों को प्रकाशित करते हुए, दूरस्थ सेरा (Sera) की स्वर्णिम छतों को दिखाते हुए, पार्गो कलिंग (Pargo Kaling) की चोटी के साथ–साथ चमकते हुए, देखा। कल मैं श्यो के गॉव को गया था–आह! वह एक स्वप्न नहीं था। आज, और आज मैं कुछ पाठों को चूक जाने की, और सीधे ही, अपने प्रिय शिक्षक मिंग्यार डोंडुप से सीखने की, आशा रखता था। सम्मोहन के सम्बंध में कुछ सीखने की, कुछ अत्यधिक सीखने की! शीघ्र ही, मैंने अपना नाश्ता समाप्त किया और अपनी कक्षा के रास्ते पर चल पड़ा, रुकने और एक सौ आठ पुस्तकों में से उच्चारण करने के लिये नहीं, बल्कि ये स्पष्ट करने के लिए कि, मैं क्यों नहीं था।

''श्रीमान्!'' मैंने कहा, जैसे ही मैंने शिक्षक को कक्षा में प्रवेश करते हुए देखा, ''श्रीमान्! मुझे आज लामा मिंग्यार डोंडुप के समक्ष प्रस्तुत होना है। मुझे कक्षा से मुक्ति दी जाने की प्रार्थना है।'' ''आह, हॉ! मेरे बच्चे,'' शिक्षक ने आश्चर्यचकित हो कर भलमनसाहत भरे स्वरों में कहा। ''तुम्हारे शिक्षक, पवित्रलामा से मेरी बात हो चुकी है। वह, मेरी निगरानी में, तुम्हारी प्रगति को लेकर, काफी अच्छी टिप्पणी करने के समर्थन में थे; मैं स्वीकार करता हूॅ, मुझे अत्यधिक कृतार्थ किया गया है, सर्वाधिक कृतार्थ।'' आश्चर्यजनकरूप से, उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया और कक्षा में प्रवेश करने से पहले मुझे कंधे पर थपथपाया। आनंदित होते हुए और आश्चर्य करते हुए कि, उनके ऊपर किस प्रकार का जादू चला है, मैं लामा के निवास की ओर टहलता हुआ चला।

मैं विश्व में किसी चिंता के बिना, मंथर गति से विचरता रहा। एक अधखुले दरवाजे से गुजरने पर। ''ओह!''एक सहसा विराम आने पर, मैं अचानक ही विस्मय से चिल्लाया। ''अचार के अखरोट!'' उनकी सुगंध बहुत तेज थी। शांतिपूर्वक, पीछे लौटते हुए, मैंने दरवाजे के रास्ते से प्रवेश किया। एक

बूढ़ा भिक्षु, अचार के अखरोटों, जो किसी प्रकार भारत से लाये गये थे, के एक पूरे जार के नुकसान पर दुःख मनाते हुए, कुछ चीजों, जो उसकी प्रार्थनाऐं नहीं थीं, को बड़बड़ाते हुए, नीचे पत्थर के फर्श पर घूर रहा था। ''क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ, आदरणीय लामा ?'' मैंने नम्रता से पूछा। बूढ़े आदमी ने, क्रूर चेहरा मेरी तरफ घुमाया और ऐसा जबाव दिया कि, मैं गलियारे में, दूर तक दौड़ता गया, जबकि मैं अभी भी सक्षम था। ''मात्र कुछ अखरोटों के लिए, इतने सारे शब्द!'' मैंने अपने आपको खिजाते हुए कहा।

''अंदर आओ!'' मेरे शिक्षक ने कहा, ज्यों ही मैं उनके दरवाजे पर पहुँचा। ''मैंने सोचा, तुम फिर से वापस नींद में चले गए होंगे।'' ''श्रीमान्!'' मैंने कहा, ''मैं आपके पास पढ़ने के लिए आया हूँ। मैं सम्मोहन की प्रकृति को जानने के लिए उत्सुक हूँ।'' ''लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''तुम्हें इससे और अधिक सीखना पड़ेगा। तुम्हें पहले सम्मोहन के आधार को सीखना पड़ेगा। अन्यथा, तुम ठीक–ठीक ये नहीं जानोगे कि तुम क्या करते हो। बैठ जाओ।'' मैं, वास्तव में पालथी मारकर फर्श के ऊपर बैठ गया। मेरे शिक्षक, मेरे सामने बैठे। कुछ समय के लिए, वे विचार में खोये हुए दिखाई दिये, और तब उन्होंने कहा; ''अबतक तुमने ये महसूस कर लिया होगा कि, हर चीज कंपन, विद्युत है। शरीर में, विभिन्न प्रकार की संरचनाओं के अनेक रसायन होते हैं। इनमें से कुछ निश्चित रसायन, रक्त की धारा के द्वारा, मस्तिष्क को भेजे जाते हैं। तुम जानते हो, मस्तिष्क में रक्त और उसमें समाहित रसायनों की सबसे अच्छी आपूर्ति होती है। वे, पोटेशियम, मेगनींज, कार्बन और अनेक दूसरे अवयव, मस्तिष्क के तंतुओं को बनाते हैं। उनके बीच की अंतक्रिया (interaction) अणुओं का एक विशेष कंपन पैदा करती है, जिसे हम ''विद्युत धारा'' कहते हैं। जब कोई (अपने मस्तिष्क से) सोचता है, तो वह परिस्थितियों की एक कड़ी को, गति में व्यवस्थित कर देता है, जो इस विद्युतधारा, और इसप्रकार, ''मस्तिष्क तरंगों'' को बनाने के रूप में परिणमित होती है।

मैंने पूरे मामले पर आश्चर्य किया; मैं इस सबको नहीं देख सका। यदि मेरे मस्तिष्क में, विद्युत धाराऐं होती हैं, तो मुझे धक्का क्यों नहीं महसूस होता ? मैंने याद किया, एक लड़का जो पतंग उड़ा रहा था, तूफान में ऐसा कर रहा था। मैंने याद किया कि, तड़ित के रूप में ज्वलंत नीली लपटें, उसकी गीली पतंग की डोर में हो कर गुजरीं; मुझे याद आया, वह एक कंपकपी के साथ, तले हुए भुरभुरे मांस की तरह एकदम सूखा हुआ, कैसे नीचे जमीन पर गिर गया था। और उसी स्रोत के द्वारा, एक बार मुझे भी, एक झटका लगा था, दूसरे की तुलना में मात्र एक सिहरन (tingle) हुई, परंतु ''सिहरन,'' मुझे दर्जन भर फुटों तक, फैंक देने के लिए पर्याप्त थी।

''आदरणीय लामा!'' मैंने प्रतिवाद किया, ''मस्तिष्क में विद्युत कैसे हो सकती है ? ये किसी आदमी को, दर्द से पागल बना देगी!'' मेरे शिक्षक बैठे और मुझ पर हँसे। ''लोबसांग!'' वह मंद–मंद मुस्कुराये, ''एकबार जो झटका तुम्हें लगा, उसने तुम्हें पूरी तरह से, विद्युत का गलत विचार दे दिया है। मस्तिष्क में विद्युत की मात्रा, वास्तव में, अत्यंत छोटे क्रम (order) की होती है। जैसे ही कोई सोचता या कोई भौतिक क्रिया करता है, उसे (उत्पन्न संकेतों को) वास्तव में, अत्यंत सुग्राहक उपकरण ही, नाप सकते हैं और उसके कंपनों को कागज पर उतार (chart) सकते हैं।'' एक आदमी द्वारा, दूसरे आदमी के वोल्टेज नापने का विचार, मेरे लिए लगभग सीमा से परे (too much) था, मैंने हँसना प्रारंभ कर दिया। मेरे शिक्षक, मात्र मुस्कुराये और उन्होंने कहा; ''आज शाम को हम टहलते–टहलते पोटाला तक चलें। वहाँ अंतरतम के पास एक युक्ति है, जो हमें विद्युत के इस विषय में बात करने में अधिक सुविधापूर्ण होगी, अब जाओ और खुद मजे करो–खाना खाओ– अपनी सबसे अच्छी पोशाक पहनो और जब सूर्य दोपहर में हो, तब मुझे मिलो।'' मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ, दण्डवत की, और बाहर चला गया।

मैं, दो घण्टों तक छत पर चढ़ते हुए और आलस के साथ छोटे–छोटे पत्थरों को, नीचे से

गुजरने वाले, संदेहहीन भिक्षुओं के सिरों पर मारते हुए, आसपास मड़राता रहा। इस खेल से थक कर, पहले एक शिकारी पिंजरे में होकर, जो अंधेरे गलियारे में नीचे ले जाता था, मैंने खुद के सिर को नीचे झुकाया। अपने पैंरो पर उल्टा लटकते हुए, समीप पहुँचते हुए कदमों की आहट सुनने के लिये, मैं ठीक समय पर था। मैं देख नहीं सका, क्योंकि अपनी जीभ को बाहर निकालते हुए, और एक क्रोधित चेहरा बनाते हुए, रचना एक कोने में थी। मैंने प्रतीक्षा की। एक बूढ़ा आदमी कोने के समीप आया और, मुझे देखने में सक्षम न होने के कारण, मुझसे टकरा गया। मेरी गीली जीभ ने, उसके गाल को छुआ। उसने एक चीख निकाली, और तश्तरी (tray) को, जो वह ले जा रहा था, टक्कर के साथ नीचे गिरा दिया। वह, ऐसे बूढ़े आदमी में इतनी आश्चर्यजनक गति के साथ, तेजी से गायब हो गया। मुझे भी आश्चर्य हुआ ; जैसे ही बूढ़ा भिक्षु मुझसे टकराया, उसने मेरे पैरों को अपनी अस्थिर पकड़ से छुड़ा लिया। गलियारे में, मैं अपनी पीठ पर गिरा। जाल रचना, एक गूँजती हुई टकराहट के साथ गिरी और गला रौंधने वाली धूल का पूरा भार, मेरे सिर पर गिर पड़ा! अपने पैरों पर ओंघियाते हुए, धक्का–मुक्की करते हुए, मैं, जितना अधिक तेज हो सकता था, उतनी तेजी से, विपरीत दिशा में भागा।

अभी–भी, सदमे से पीड़ित होते हुए, मैंने अपनी पोशाक बदली और खाना खाया; मैं उसे भूलने के लिए पर्याप्त सदमें में नहीं था। ठीक समय पर, जैसे ही छायाऐं गायब हुई, और दिन में दोपहर हुई, मैंने अपने आपको अपने शिक्षक के समक्ष प्रस्तुत किया। कुछ प्रयास के साथ, ज्यों ही उन्होंने मुझे देखा, उन्होंने अपने हालातों को बनाया। ''एक प्रौढ़ भिक्षु, लोबसांग, कसम खाकर कहता है कि, एक भूत ने उत्तरी गलियारे में, उसकी नाक में दम कर दी। उस भूत को भगाने के लिए, तीन लामाओं का एक दल वहॉ गया है। निसंदेह मैं अपना कर्तव्य पूरा करूँगा, यदि मैं, उसे–तुमको–नियोजित व्यवस्थानुसार पोटाला ले जाऊँ। आओ!'' वे मुड़े और कमरे के बाहर चले। मैं, अपने संबंध में भयानक नजर डालते हुए, पीछे–पीछे चला। कुल मिलाकर, कोई कभी निश्चितरूप से नहीं जानता कि यदि लामा ओझागीरी कर रहे हों तो क्या होगा। मैं अपने आपको, किसी अज्ञात, शायद असुखद, स्थान में, हवा में उड़ते हुए पाये जाने की गलत दृष्टि रखता था।

हम, बाहर, खुले में गए। दो पोनी, साईसों के द्वारा पकड़ कर रखे गए थे। लामा मिंग्यार डोंडुप, सवार हुए और धीमे से पर्वत के नीचे की तरफ चढ़े। मुझे अपने पोनी पर चढ़ने में मदद की गई और साईसों में से एक ने, उसे थपथपाया, खेल–खेल में एक चपत लगाई, पोनी भी खेल में था। उसका सिर नीचे गया। उसका पिछवाड़ा ऊपर गया, और उसकी पीठ के ऊपर से, एक महराव में होता हुआ, मैं गया। इस बीच, जबतक कि मैंने स्वयं को जमीन से उठाया और कुछ धूल को झड़ाया, एक साईस ने जानवर को फिर पकड़ा। तब, यदि साईस, किसी भी दूसरे प्रकार की हरकत का प्रयास करें, सावधानीपूर्वक निगरानी करते हुए, थका हुआ सा, मैं फिर सवार हुआ।

पोनी जानता था कि, उसके ऊपर एक भौंदू सवार है; मंदबुद्धि जानवर ने, सर्वाधिक खतरनाक स्थानों की ओर, और ठीक किनारे पर रुकते हुए चलना जारी रखा। तब वह, अपने सिर को नीचा करेगा और ईमानदारी से, नीचे काफी दूर, किसी चट्टानी आधार पर घूरेगा। अंत में, मैं उसकी सवारी से गिर गया और पोनी को अपने पीछे खींचा। ये बहुत जल्दी हुआ। लौहपहाड़ी के निचले सिरे पर, मैं फिर से सवार हुआ और मैंने श्यो गॉव में, अपने शिक्षक का अनुगमन किया। उन्हें वहॉ कुछ काम था, जिसके कारण हमें कुछ क्षणों के लिए रुकना था। ये समय मेरे लिये, अपनी सांस और अपनी कॉपती हुई रचना को फिर से प्राप्त करने के लिए, पर्याप्त था। तब, फिर से सवार होते हुए, मैं चौड़े, सीढ़ीदार रास्ते पर, पोटाला की ओर चढ़ चला। प्रसन्नतापूर्वक, मैंने अपने पोनी को, प्रतीक्षारत साईसों से अलग कर दिया। मैंने, औरअधिक प्रसन्नता के साथ अपने घर में जाते हुए, लामा मिंग्यार डोंडुप का अनुगमन किया। इस जानकारी के साथ कि, मैं एक या ऐसे ही कुछ, दिनों के लिए यहॉ रुकूँगा, मेरा आनंद बढ़ गया।

शीघ्र ही, ये नीचे के मंदिर में, सेवा में शामिल होने का समय था। यहॉ पोटाला में– मैंने

सोचा–सेवाऐं अत्यधिकरूप से औपचारिक थीं, तथा अनुशासन अत्यधिक कठोर था। एक दिन के लिए पर्याप्त से अधिक उत्तेजना होने के साथ–साथ, अनेक छोटी रगड़ों (bruises) से पीड़ित होते हुए, मैं अपने सबसे अच्छे व्यवहार में बना रहा और सेवा बिना किसी घटना के समाप्त हुई। अब एक स्वीकृत चीज थी कि, जब मेरे शिक्षक पोटाला में हों, मैं उनके बगल के, छोटे कमरे में रहूँ। ये जानते हुए कि, लामा मिंग्यार डोंडुप, एक अत्यधिक वरिष्ठ अधिकारी के साथ, जो अभी हाल ही में भारत से वापस आया था, राज्य के मसलों में व्यस्त थे, मैं वहॉ गया और घटनाओं की प्रतीक्षा करते हुए वहॉ बैठा रहा। खिड़की में से बाहर देखना और काफी दूरी पर ल्हासा के शहर को देखना मोहक था। दृश्य असाधारणरूप के सौन्दयों में से एक था; झील के किनारों पर झालर के रूप में फर (willow) के पेड़, जो कॉग (Jo kang) से स्वर्णिम आभाऐं, और तीर्थयात्रियों की पिसती हुई भीड़, जो पवित्र पर्वत के चरणों में, अंतरतम या कम से कम, किसी उच्चाधिकारी के दर्शन पा लेने की आशा में (जो अपने निवास में थे), शोर मचा रही थी। व्यापारियों और उनके जानवरों की एक अपार पंक्ति, पार्गो कलिंग (Pargo Kaling) से गुजरने के बाद, अपने धीमे रास्ते पर मुड़ती जा रही थी। मैंने, एक क्षण के लिए, उनके अत्यधिक भारों पर, विचार किया परंतु मुझे, अपने पीछे के, एक नम्र कदम के द्वारा, हस्तक्षेप किया गया।

''हम चाय लेंगे, लोबसांग, और तब हम अपनी चर्चा को जारी रखेंगे,'' मेरे शिक्षक ने कहा, जो ठीक अभी प्रविष्ट हुए थे। मैं उनके पीछे–पीछे, उनके कमरे में गया, जहॉ सामान्यतः वेचारे भिक्षु को दिये जाने वाले आहार से एकदम अलग आहार, वास्तव में चाय, परंतु भारत से लाई गई मीठी वस्तुऐं भी, रखा हुआ था। ये सब मेरे स्वाद के लिए बहुत अच्छा था। भिक्षु, जब वे खाते हैं, सामान्यतः कभी बात नहीं करते; ये खाने के प्रति असम्मानजनक माना जाता है, परंतु इस अवसर पर मेरे शिक्षक ने मुझे बताया कि, रूसी लोग, तिब्बत के लिए परेशानी पैदा करने का प्रयास कर रहे थे, जासूसों को अंदर घुसाने का प्रयास कर रहे थे। शीघ्र ही, हमने अपना खाना खत्म किया और तब अपना रास्ता कमरों की तरफ पकड़ा, जहॉ दलाईलामा ने, दूर–दूर के देशों से, अनेक अनोखी युक्तियॉ, इकट्ठी कर रखी थीं। कुछ समय के लिए, लामा मिंग्यार डोंडुप ने बेतुकी चीजों की ओर इशारा करते हुए और उनके उपयोग को समझाते हुए अपने आसपास देखा। अंत में, वे एक कमरे के एक कोने में जाकर रुके और उन्होंने कहा, ''इसे देखो,!'' मैं उनके बगल की तरफ चला और जो कुछ मैंने देखा उससे बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुआ।

मेरे सामने, एक छोटी मेज पर, कॉच का एक जार रखा था। उसके अंदर दो पतले धागे लगे थे, और हर एक, किसी चीज की एक छोटी गोली, जो एक फर के पेड़ की, सरकंडे की गूदे जैसी दिखाई दी से, उनके काफी दूर के सिरे पर बंधे हुए थे। जब मैंने इस मामले पर अपनी टिप्पणी की, मेरे शिक्षक ने रूखेपन से टिप्पणी की, ''ये पिथ (pith) है!''। ''तुम, लोबसांग,'' लामा ने कहा, ''बिजली, जिसने तुम्हें झटका दिया, के बारे में कुछ सोचते हो। इसका एक और तरह का प्रगटन (manifestation) भी होता है, जिसे हम स्थिरविद्युत कहते हैं। अब ध्यान से देखो!''

मेज पर से लामा मिंग्यार डोंडुप ने एक चमकदार छड़ उठाई, संभवतः लगभग बारह या पंद्रह इंच लंबी। उन्होंने जल्दी से इसको अपनी पोशाक पर रगड़ा और तब उसे कॉच के जार के समीप लाये। मेरे अत्यधिक आश्चर्य के लिए, वे दोनों सरकंड़े की गोलियॉ, तेजी से एक–दूसरे से अलग हट गईं–और अलग ही बनी रहीं, जबकि छड़ को वहॉ से हटा दिया गया था। ''ध्यान से देखते रहो!'' मेरे शिक्षक ने जोर देकर कहा। ठीक है, ये वह है, जो मैं कर रहा था। कुछ मिनटों के बाद, धीमे–धीमे, सरकंड़े की वे गोलियॉ, गुरुत्व के सामान्य खिंचाव के प्रभाव में, फिर से नीचे होकर डूब गईं। शीघ्र ही, वे नीचे सीधी लटक रही थीं, जैसेकि वे प्रयोग करने से पहले थीं।

''तुम कोशिश करके देखो,'' काली छड़ को मेरी तरफ बढ़ाते हुए, लामा ने आदेश दिया। ''शुभाषीशयुक्त डोलमा की कसम!'' मैं चीखा, मैं उस चीज को नहीं छूऊँगा!'' मेरी इस अत्यधिक

निराशापूर्ण अभिव्यक्ति पर, मेरे शिक्षक दिल खोलकर हॅसे। ''कोशिश करो, लोबसांग,'' उन्होंने धीमे से कहा, ''क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ, अभीतक तो कभी कोई चालाकी नहीं की है।'' ''हॉ,'' मैं बुदबुदाया, ''लेकिन हमेशा, कभी न कभी, प्रथम अवसर होता ही है।'' उन्होंने छड़ को मेरे ऊपर दबाया। उदासी के साथ मैंने उस आश्चर्यजनक चीज को लिया। अनिच्छुकरूप से, आधे मन से, (किसी भी क्षण, एक झटके की आशा करते हुए) मैंने छड़ को अपनी पोशाक से रगड़ा। उसमें कोई अनुभव नहीं हुआ, कोई झटका या सनसनी नहीं। अंत में, मैंने उसे कॉच के जार की तरफ पकड़ा और–आश्चर्यों का आश्चर्य!– सरकंड़े की गोलियॉ, फिर एक–दूसरे से अलग–अलग हो गईं। ''जैसा तुमने देखा, लोबसांग'' मेरे शिक्षक ने टिप्पणी की, ''विद्युत बह रही है, परंतु फिर भी तुम्हें कोई भी झटका महसूस नहीं होता। मस्तिष्क की विद्युत भी ऐसी ही होती है। मेरे साथ आओ,'' वे मुझे दूसरी मेज तक ले गए, जिस पर एक अत्यधिक उल्लेखनीय युक्ति रखी थी। ये एक पहिया जैसा दिखाई दिया, जिसकी सतह पर धातु की असंख्य टुकड़ियॉ (plates) लगी थीं। दो छड़ें अपने स्थान पर जुड़ी थीं ताकि, तारों का एक गुच्छा, हर एक से, उन धातु की प्लेटों में से दो को हल्के से छूता रहे। छड़ों से, दो धात्विक गोलों तक, जो एक–दूसरे से लगभग एक फुट दूर थे, तार जुड़े थे। चीज ने मेरे ऊपर बिल्कुल कोई प्रभाव नहीं डाला। ''दैत्य की प्रतिमा,'' मैंने सोचा। मेरे शिक्षक ने, इस प्रभाव की, अपने अगले कदम से पुष्टि की। एक हत्थे को, जो पहिए के पीछे की तरफ से बाहर निकला हुआ था, पकड़ते हुए उन्होंने इसे जोरदार गड़गड़ाहट दी। गुस्से की एक गर्जना के साथ, चमकते हुए और झपकते हुए, पहिया अपने जीवन में उछल पड़ा; धात्विक गोलों से, घिसती और चटकती हुई नीली रोशनियों की एक बड़ी जीभ लपलपाई। वहॉ एक अनोखी गंध भी आई, मानो कि, हवा खुद जल रही हो। मैंने और अधिक प्रतीक्षा नहीं की; अत्यधिक निश्चितरूप से, ये स्थान मेरे लिए नहीं था। मैं सबसे बड़ी मेज के नीचे घुस गया और अपने तरीके से बहुत दूर स्थित दरवाजे की तरफ छटपटाने का प्रयास किया।

घिसने और चटकने की आवाजें, दूसरी आवाज से बदल जाने के लिए रुकीं। मैंने अपनी उड़ान को जॉचा और आश्चर्य के साथ सुना, क्या ये हॅसने की आवाज थी ? कभी नहीं! उदासी के साथ, मैंने अपने शरणस्थली से ताका, वहॉ हॅसी से दुहरे होते हुए, लामा मिंग्यार डोंडुप थे। खुशी के ऑसू, उनकी ऑखों में से टपक रहे थे, जबकि उनका चेहरा, आनंद के कारण, आश्चर्यजनक लाल था। वह सॉस लेने के लिए, हॉफते हुए से भी दिखाई दिए। ''ओह, लोबसांग!'' उन्होंने अंत में कहा, ''ये पहली बार है, किसी को, जिसको मैं विमशर्ट (Wimshurst) मशीन से डरते हुए जानता हूँ। इसप्रकार की युक्तियॉ, अनेक विदेशी देशों में उपयोग में लाई जाती हैं ताकि, विद्युत के गुण समझाये जा सकें।''

मैं मूर्ख अनुभव करते हुए, रेंगकर बाहर गया और उस अनजान मशीन का अधिक समीप से नजारा किया। लामा ने कहा, ''मैं इन दो तारों को पकडूँगा, लोबसांग, और तुम जितना तेजी से चला सकते हो, हेंडिल को चलाओ। तुम मेरे पूरे (शरीर के) ऊपर चमकती हुई रोशनियॉ देखोगे, परंतु ये मुझे नुकसान नहीं पहुँचायेंगी और न मुझे कष्ट देंगी। आओ अब हम कोशिश करें। कौन जानता है ? शायद तुमको मेरे ऊपर हॅसने का मौका मिल जाए!'' उन्होंने दो तार लिए, प्रत्येक हाथ में एक, और मुझे चालू करने के लिए इशारा किया। उदासी के साथ, मैंने हत्थे को पकड़ा और जितना तेजी से मैं घुमा सकता था, उसे घुमाया। मैं आश्चर्य के कारण जोर से चीखा जैसे ही महान बैंगनी (voilet) और जामुनी (purple) प्रकाश की पट्टियॉ, मेरे शिक्षक के हाथों और चेहरे पर चमकीं। वह पूरी तरह अविक्षुब्ध (unperturbed) थे। इस बीच गंध फिर से प्रारंभ हो गई थी। ''ओजोन (ozone), एकदम हानिरहित,'' मेरे शिक्षक ने कहा।

अंत में, मुझे तारों को पकड़ने के लिए राजी कर लिया गया। लामा द्वारा हत्थे को घुमाने के साथ–साथ, घिसने और चटकने की भयानक आवाजें, अपनी चरम सीमा में थीं। परंतु–तुलनात्मक रूप से किसी दूसरी चीज की अपेक्षा, अनुभव करने के लिए, ये एक ठंडी हवा के प्रवाह के अधिक समान

था! लामा ने एक डिब्बे में से कॉच की विभिन्न चीजें लीं और एक–एक करके उन्हें तारों के द्वारा मशीन से जोड़ा। जैसे ही उन्होंने हत्था घुमाया, मैंने एक चटकदार लपट को, कॉच की बोतल के अंदर, और दूसरी बोतलों में, जलते हुए देखा, और एक क्रोस (cross) और विभिन्न धात्विक ढॉचों के द्वारा, दूसरे आकारों की सजीव अग्नियॉ, बनाई गई। परंतु मुझे बिजली के झटके का अभास कहीं नहीं हुआ। इस विमशर्ट मशीन के साथ, मेरे शिक्षक ने प्रदर्शित किया कि, कैसे एक व्यक्ति, जो अतीन्द्रिय ज्ञानी नहीं है, उसे मानवीय प्रभामंडल देखने के लिए सक्षम बनाया जा सकता है, परंतु इस विषय में और अधिक बाद में।

अंत में, मंद पड़ते हुए प्रकाश ने, हमें अपने प्रयोगों से निवृत कर दिया और हम लामा के कमरे की तरफ लौटे। पहले, संध्या की एक सेवा फिर होनी थी, तिब्बत में, धार्मिक परायणता के लिए, हमारा जीवन पूरी तरह से आवश्यकताओं तक सीमित था। अपने पीछे, सेवा के साथ, हम एकबार फिर, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के निवास खण्ड में लौटे, यहॉ हम अपने बीच, शायद चौदह इंच ऊॅची एक छोटी मेज के साथ, अपनी सामान्य पालथी मारकर बैठने की मुद्रा में फर्श पर बैठे।

''अब लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''हमें सम्मोहन के मामले में, नीचे जाना है परंतु सबसे पहले हमें मानव मस्तिष्क के संचालन के विषय में निर्णय करना होगा। मैंने तुम्हें दिखाया–मुझे आशा है! –कि वहॉ उसके द्वारा बिना किसी प्रकार के कष्ट या असुविधा अनुभव करने के, विद्युत धारा का एक रास्ता हो सकता है। अब, मैं चाहता हूॅ कि तुम विचार करो कि, जब एक व्यक्ति सोचता है, वह एक विद्युत धारा उत्पन्न करता है। हमें इस मामलें में जाने की आवश्यकता नहीं है कि, विद्युतधारा कैसे मांसपेशियों के तंतुओं को उत्तेजित करती है और प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। इस क्षण हमारी पूरी दिलचस्पी विद्युत धारा में है–मस्तिष्क तरंगें, जो पश्चिमी चिकित्सीय विज्ञान के द्वारा, इतनी स्पष्टरूप से नापी और उकेरी गईं हैं।'' मैं स्वीकार करता हूॅ कि मुझे ये कुछ दिलचस्प लगा क्योंकि, अपने छोटे और नम्र तरीके से, मुझे ये पहले ही घटित हो चुका था कि, विचारों में बल होता है, क्योंकि मुझे याद था कि, चर्मपत्र, मोटे तौर से बेलन को छिद्रयुक्त बना चुका था, जो मैंने लामामठ में, कई बार उपयोग किया, और जिसे मैंने कई बार, केवल विचार शक्ति के द्वारा घुमा दिया था।

''तुम्हारा ध्यान भटक रहा है, लोबसांग!'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''मुझे खेद है, आदरणीय स्वामी,'' मैंने जबाव दिया ''मैं मात्र संदेहहीन प्रकृति की विचार तरंगों और आनंद पर विचार कर रहा था, जो मुझे उस बेलन से मिला, जिसके लिए आपने मुझे कुछ महीनों पहले परिचित कराया था।''

मेरे शिक्षक ने मेरी तरफ देखा और कहा, ''तुम एक अस्तिव हो, एक व्यक्ति, और तुम्हारे अपने खुद के विचार हैं। तुम ये विचार कर सकते हो कि तुम कोई क्रिया करोगे, जैसे कि माला का उठाना। एक क्रिया पर विचार करने में भी, तुम्हारा मस्तिष्क, अपने रसायनिक अवयवों से विद्युत प्रवाहित करता है, और विद्युत से उत्पन्न तरंग, तुम्हारी मांसपेशियों को आसन्न क्रिया के लिए तैयार करती है। यदि तुम्हारे मस्तिष्क में अधिक विद्युत बल उत्पन्न हो जाये, तब तुम्हारा माला को उठाने का मूल आशय विफल हो जायेगा। ये देखना आसान है कि, यदि मैं तुम्हें राजी कर सकता हूॅ कि, तुम माला को नहीं उठा सकते, तब तुम्हारा मस्तिष्क–तुम्हारे त्तकाल नियंत्रण के परे होने के कारण–विरोध करने वाली तरंग को उत्पन्न करेगा और भेजेगा। तब तुम माला को उठाने में और चाही गई क्रिया को पूरा करने में, असमर्थ रहोगे।'' मैंने उनकी तरफ देखा, और मामले पर विचार किया, और यथार्थतः इसका मेरे लिए कोई अर्थ नहीं था, क्योंकि मेरे मस्तिष्क में कितनी बिजली पैदा हो रही थी, इसको वह किस प्रकार प्रभावित कर सकते थे। मैंने इसके संबंध में सोचा, और उनकी तरफ देखा, और आश्चर्य किया कि, क्या मुझे अपने संदेह को स्वर प्रदान करना (कहना) चाहिये। ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी, तथापि, चूंकि उन्होंने ऐसा विचार किया और मेरे मन को शीघ्र ही आराम में व्यवस्थित करने के लिये ऐसा कहा। ''मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूॅ, लोबसांग, कि जो मैं कहता हूॅ वह प्रदर्शनीय (demonstrable) तथ्य है

और किसी पश्चिमी देश में, एक उपकरण के अंतर्गत, जो तीन प्रमुख मस्तिष्क तरंगों को अंकित करेगा, हम इसे सिद्ध करने में सक्षम होंगे, यहॉ तथापि, हमारे पास ऐसी सुविधाऐं नहीं है और हम इस मामले में केवल चर्चा कर सकते हैं। मस्तिष्क विद्युत उत्पन्न करता है, ये तरंगें उत्पन्न करता है, और यदि तुम अपनी भुजा को उठाने का निश्चय करो, तब तुम्हारा मस्तिष्क, तुम्हारे निर्णय के इरादे पर, ये तरंगें पैदा करता है। यदि मैं कर सकता–मानो कि, तकनीकी शब्दों में–एक ऋणात्मक आवेश तुम्हारे दिमाग में भरता, तब तुम्हारा मूल इरादा कुंठित हो जाता। दूसरे शब्दों में, तुम सम्मोहित हो गए होते!''

ये वास्तव में, अर्थपूर्ण होना प्रारंभ हुआ; मैं वह विमशर्ट मशीन देख चुका था, और मैं इसकी सहायता से संचालित किए गए, अनेक प्रदर्शन देख चुका था और देख चुका था कि धारा की ध्रुवता का परिवर्तन करना कैसे संभव था। इसलिए मैं इसे विपरीत दिशा में भी प्रभावित कर सकता था। ''आदरणीय लामा,'' मैं प्रसन्नता से चिल्लाया, ''आपके लिए, धारा को मस्तिष्क में भर देना कैसे संभव है ? आप मेरे सिर के ढक्कन को खोल नहीं सकते और उसमें कुछ विद्युत भर नहीं सकते, तब ये कैसे किया जा सकता है ?'' ''मेरे प्रिय लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''तुम्हारे मन में जाने के लिए यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि न हीं मुझे कोई विद्युत उत्पन्न करनी है और न हीं तुम्हारे अंदर रखनी है, मैं उचित सुझाव दे सकता हूँ, जिनके द्वारा तुम मेरे कथनों या सुझावों की प्रमाणिकता से सहमत होगे, और तब–बिना किसी आत्मनियंत्रण के, अपनी तरफ से–उस ऋणात्मक धारा को तुम स्वयं पैदा करोगे।''

उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, ''चिकित्सीय या शल्यचिकित्सीय आवश्यकता के सिवाय, मैं किसी को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध, सम्मोहित किए जाने के, सर्वाधिक अनिच्छुक हूँ, परंतु मेरा ख्याल है कि, सम्मोहन के मामले में, तुम्हारे सहयोग से एक छोटा–सादा प्रदर्शन, एक अच्छा विचार हो सकता है।'' मैं जल्दी से अतिप्रसन्न होकर बोला, ''ओह हॉ, मैं सम्मोहन का अनुभव करने से प्रेम करना चाहूँगा!'' वे मेरे उतावलेपन पर मुस्कराये और उन्होंने कहा, ''अब, लोबसांग, सामान्यतः तुम क्या करने के लिए अनिच्छुक होंगे ? मैं तुम्हें ये इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि मैं तुम्हें कुछ ऐसा करने के सम्मोहित करना चाहता हूँ, जिसे तुम स्वेच्छा से नहीं करोगे, ताकि तुम व्यक्तिगतरूप से विश्वस्त हो सको कि, इस चीज को करने में तुम अनिच्छुकरूप से प्रभावित होकर क्रिया कर रहे हो।'' मैंने एक क्षण के लिए सोचा, और मैं यथार्थ में मुश्किल से ही जान सका कि, क्या कहना चाहिए, अनेक चीजें थीं, जिन्हें मैं नहीं करना चाहता था! अपने शिक्षक के द्वारा, मैंने इस विषय पर अपने आगामी विचारों को बचा लिया। वे प्रसन्नता से बोले, ''मैं जानता हूँ! जो कांग्युर (Kangyur)[15] के पॉचवे अंक के गद्यांश में जुड़ा है, तुम उसे पढ़ने के प्रति, बिल्कुल भी उत्सुक नहीं हो। मेरा विश्वास है, तुम इस बात से डरे हुए थे कि, प्रयोग किए गए शब्दों में से कुछ, तुमको धोखा देंगे, और इस तथ्य को झुठलायेंगे कि, उस विशेष विषय पर, तुमने उतने परिश्रम के साथ, जैसा कि तुम्हारे शिक्षक तुमसे अपेक्षा करते थे, नहीं पढ़ा है!''

इस मामले में, मैं थोड़ा उदास हुआ, और मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे गाल भी स्तब्धता के साथ लाल हो गए। ये एकदम सही था, पुस्तक में एक गद्यांश, विशेषरूप से कठिन था, जो मुझे सीमांतकरूप से (extremely) परेशान करता था, तथापि, विज्ञान के हित में, इसे पढ़ने के लिए राजी होने में, मैं पूरी तरह तैयार था। वास्तव में, उस विशेष गद्यांश को पढ़ने के विरुद्ध, मुझमें लगभग एक प्रकार का डर

15 अनुवादक की टिप्पिणी : यूनानी तिब्बती बौद्ध धर्म में कांग्युर एक महत्वपूर्ण पवित्र पुस्तक है। कांग्युर का साब्दिक अर्थ होता है अनुवादित शब्द, जिन्हें बुद्ध के शब्द भी कहा जाता है। इसमें लगभग 108 खण्ड या अंक हैं, जो स्वयं बुद्ध के द्वारा कहे गए या समझे जाते हैं। सभी मूलतः संस्कृत में माने जाते है, य़द्यपि, इसके तिब्बती पाठ, चीनी या अन्य दूसरी भाषाओं से भी अनुवादित किये गए हैं। इसका एक दूसरा सहयोगी ग्रंथ भी है, जिसे तेन्ग्युर या अनुवादित सारांश भी कहते हैं, जिसमें अभी धर्म के उपदेश सम्मलित हैं। ये महायान और हीनयान दोनों शाखाओं में प्रचलित हैं। तेन्ग्युर में 224 खण्डों में लगभग 3626 पाठ दिए गए हैं। कांग्युर में विनय, बुद्धि की पूर्णता सूत्र और दूसरे सूत्र तथा तंत्र का वर्णन है। इनमें से 75 प्रतिशत, महायान से और 25 प्रतिशत, हीनयान से संबंधित हैं। इसमें मठों के अनुशासन, अधिभौतिकी, तंत्र आदि से संबंधित पाठ शामिल हैं। कांग्युर शब्द का पहला प्रयोग कब किया गया था, इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है परंतु, यह महान बौद्ध ग्रंथ कांग्युर, त्रिसोन्ग देतसेन, जो तिब्बत का छठवॉ राजा था, जिसने 755 से 797 ईसवी तक राज्य किया, से पहले भी अस्त्तिव में था। वर्तमान में कांग्युर में लगभग बारह टीकायें उपलब्ध हैं। इनमें देरग्ये, ल्हासा, नार्थांग, पोन, पेकिंग, उर्गा, फुद्रक और स्टॉब महल की टीकाऐं भी सम्मलित हैं जिनका नामकरण अपने छपाई के स्थान के अनुसार किया गया है। वर्तमान सभी टीकाओं का मूल स्रोत, प्राचीन नोर्थांग लामामठ के कांग्युर को माना जाता है।

था! मेरे शिक्षक मुस्कराये और उन्होंने कहा, ''किताब वहॉ, खिड़की के ठीक बगल में रखी है, उसे यहॉ लाओ, उस गद्यांश को पलटकर निकालो और उसे जोर से पढ़ो, और यदि तुम इसे न पढ़ने का प्रयत्न करोगे–यदि तुम सभी चीजों का घालमेल करने का प्रयत्न करोगे–तब ये तुम्हारे लिए एक अच्छा परीक्षण होगा।'' मैं अनिच्छापूर्वक वहॉ गया और पुस्तक को लाया, और अनिच्छापूर्वक पन्नों को पलटा। पश्चिमी पुस्तकों की तुलना में हमारे तिब्बती पृष्ठ, काफी बड़े और अधिक भारी होते हैं। मैं गड़बड़ाया और फिर गड़बड़ाया, और चीज को इतना लंबा खिंचा हुआ बना दिया, जितना संभव था। यद्यपि अंत में, मैं उचित गद्यांश पर आया, और मैं स्वीकार करता हूॅ कि, एक शिक्षक के साथ कुछ पूववर्ती घटनाओं के कारण, इस विशेष गद्यांश ने, वास्तव में, भौतिक रूप से, मुझे लगभग बीमार अनुभव करा दिया था।

मैं अपने सामने पुस्तक को रखे हुए, वहॉ खड़ा रहा और जितना प्रयत्न मैं कर सकता था कि मैं, उन शब्दों को न समझ सकूॅ उतना प्रयत्न किया। ये अजीब लग सकता है परंतु ये एक तथ्य है कि, क्योंकि मैं एक नासमझ शिक्षक के द्वारा, इतना बुरा अभ्यस्त था कि मैंने उन पवित्र वाक्यों के प्रति, एक वास्तविक घृणा विकसित कर ली थी। मेरे शिक्षक ने मेरी तरफ देखा–इससे अधिक कुछ नहीं–केवल मेरी ओर देखा, और तब कोई चीज मेरे सिर के अंदर टकराती हुई प्रतीत हुई और अपने पर्याप्त आश्चर्य के साथ मैंने पाया कि मैं उसे पढ़ रहा था, केवल पढ़ ही नहीं रहा था वल्कि संकोच के एक थोड़े से भी चिन्ह के बिना, आसानी से, धाराप्रवाह रूप से, पढ़ रहा था। जैसे ही मैं पेराग्राफ के अंत में पहुॅचा, मुझे सर्वाधिक अवर्णनीय संवेदना हुई। मैंने पुस्तक को नीचे रखा और मैं कमरे के मध्य में गया और अपने सिर के बल खड़ा हो गया! ''मैं सनकी हो गया हूॅ!'' मैंने सोचा, ''इस पूरी तरह मूर्खतापूर्ण ढंग से व्यवहार करने के लिये, मेरे शिक्षक, मेरे बारे में कुछ भी सोचें ?'' तभी मुझमें ऐसा आभास हुआ कि मेरे शिक्षक मुझे–ऐसा व्यवहार करने के लिए–प्रभावित कर रहे थे। शीघ्रता से, मैं अपने पैरों पर कूदा, और पाया कि, वे मेरे प्रति अत्यधिक शुभेच्छा के साथ मुस्कुरा रहे थे। ''किसी व्यक्ति को प्रभावित करना, ये वास्तव में, एक सबसे अधिक सरल मामला है, लोबसांग, जब कोई आधारभूत चीजों में स्वामित्व प्राप्त कर लेता है, इसमें बिल्कुल परेशानी नहीं है। मैंने, मात्र कुछ निश्चित चीजों को सोचा था और तुमने दूरानुभूति से, मेरे विचारों को पकड़ लिया और वह तुम्हारे मस्तिष्क को, इसप्रकार प्रतिक्रिया करने के लिए, जैसी मैंने अपेक्षा की थी, कारण बना। इसप्रकार तुम्हारे सामान्य मस्तिष्क के प्रादर्शो में कुछ निश्चित उतार–चढ़ाव उत्पन्न हुए, जिन्होंने इस अत्यंत दिलचस्प परिणाम को उत्पन्न किया!''

''आदरणीय लामा!'' मैंने कहा, तब क्या इसका ये अर्थ है कि, यदि हम किसी व्यक्ति के दिमाग में एक विद्युत प्रवाह रख सकें, हम उस व्यक्ति से, जो हम चाहें, कुछ भी करा सकते हैं ?'' ''नहीं, इस सबका ये सब अर्थ नहीं है,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''इसके बदले में, इसका ये अर्थ है कि, यदि हम किसी व्यक्ति को, एक निश्चित प्रकार की गतिविधि करने के लिए राजी कर लें, और ये सक्रियता, जिसको हम राजी कराना चाहते हैं, उस व्यक्ति के विश्वासों के विपरीत नहीं है, तब वह, मात्र इसलिए कि, उसकी मस्तिष्क तरंगें बदल दी गई हैं, निःसंदेह इसे करेगा और कोई बात नहीं, उसका मूल आशय क्या था, वह ऐसे प्रतिक्रिया करेगा, जैसे कि सम्मोहनकर्ता ने उसे सुझाव दिया था। अधिकांश मामलों में, एक व्यक्ति, एक सम्मोहनकर्ता से सुझाव प्राप्त करता है, वहॉ सम्मोहनकर्ता के द्वारा, सुझावों के प्रभाव के अतिरिक्त, कोई वास्तविक प्रभाव नहीं डाला जाता है। सम्मोहनकर्ता, कुछ निश्चित छोटी युक्तियों के द्वारा, उसके विपरीत, जो उसने मूलतः सोची थीं, उस संबंधित व्यक्ति की क्रियाओं में प्रेरित करने में सफल हो जाता है।'' उन्होंने गंभीरता से एक क्षण के लिए मेरी तरफ देखा और तब जोड़ा, ''वास्तव में, तुम और मैं, उससे अलग हट कर दूसरी शक्तियॉ रखते हैं। अपने जीवन की विशिष्ट प्रकृति के कारण, महान कठिनाइयों के कारण, अपवादस्वरूप कार्य, जो तुम करने और प्राप्त करने जा रहे हो, उसके कारण, तुम एक व्यक्ति को, उसकी व्यक्ति की इच्छाओं के विरुद्ध भी, त्तकाल सम्मोहित करने के लिए सक्षम होगे, इसप्रकार का उपहार तुम्हारे अंदर दिया जा रहा है।''

वे वापस बैठे और मेरी ओर घूरकर देखा ताकि वे निश्चित कर सकें कि, क्या मैंने इस जानकारी, जो उन्होंने मुझे दी थी, को आत्मसात् कर लिया था। संतुष्ट होते हुए कि, मैंने कर लिया था, उन्होंने कहना जारी रखा, ''अभी नहीं–बाद में–तुम्हें सम्मोहन के बारे में, और अधिक और तेजी के साथ, किसी को कैसे सम्मोहित किया जाता है, पढ़ाया जायेगा। मैं तुम्हें ये बताना चाहता हूँ कि, तुम्हारी दूरानुभूति शक्तियॉ भी बढ़ाई जायेंगी, क्योंकि जब तुम यहॉ से बहुत दूर, दूसरे देशों में, बाहर की यात्रा करोगे, तो तुमको हम लोगों के साथ, हर समय संपक्र बना कर रखना होगा, और इसका त्वरित तथा एकदम सही तरीका है, दूरानुभूति के द्वारा।'' मैं इस सबके ऊपर अत्यंत उदास हुआ। मैंने इस पूरे समय को, कुछ नया ताजा सीखने के लिए अनुभव किया, और जितना ज्यादा मैंने सीखा, उससे काफी कम समय मेरे खुद के लिए था, मुझे ऐसा लगा कि, मेरे ऊपर और अधिक काम डाला जा रहा था और मुझसे कुछ भी हटाया नहीं जा रहा था!

''परंतु, आदरणीय लामा!'' मैंने कहा, ''दूरानुभूति कैसे कार्य करती है ? हमारे बीच में कुछ भी होता नहीं दिखाई देता, फिर भी आप जानते हैं, लगभग हर चीज, विशेषरूप से जो मैं सोचता हूँ, जबकि मैं उसे आपको नहीं करने दे सकता।'' मेरे शिक्षक ने मेरी ओर देखा हॅसे और कहा, ''ये वास्तव में, एक काफी सरल मामला है, दूरानुभूति के लिये, किसी को केवल मस्तिष्क तरंगों को नियंत्रित करना होता है। इसको, इसतरह समझो; तुम सोचते हो, तुम्हारा मस्तिष्क विद्युत प्रभाव उत्पन्न करता है, जो तुम्हारे विचारों में परिवर्तन के अनुसार कंपित होता है। सामान्यतः, तुम्हारे विचार एक मांसपेशी को सक्रिय करते हैं, जिससे कि एक भुजा को उठाया या गिराया जा सके, और अथवा आप, कुछ दूरी पर, एक निश्चित व्यक्ति पर, सोच रहे होते हैं, ये कुछ भी हो, आपकी मानसिक ऊर्जा का प्रसारण होता है–अर्थात् तुम्हारे मस्तिष्क से, बिना किसी भेद विचार के, सभी और प्रत्येक दिशा में ऊर्जा बल विकरित होता है। यदि कोई विधि होती, जिसके द्वारा तुम अपने विचारों को केन्द्रीभूत कर पाते, तो ये उस दिशा में, जिसमें इसका केन्द्रीकरण किया गया था, अत्यधिक बड़ी तीव्रता का होता।'' मैंने उनकी तरफ देखा, और मैंने एक छोटे प्रयोग को याद किया, जो उन्होंने मुझे कुछ समय पहले दिखाया था; हम वैसी ही स्थिति में थे, जैसे कि अब, अर्थात् चोटी में, ऊॅचाई पर (जैसा कि हम तिब्बती लोग, पोटाला को कहते हैं)। लामा, मेरे शिक्षक, रात के अंधेरे में थे, उन्होंने एक छोटी मोमबत्ती जलाई और धुंधला सा प्रकाश आसपास चमक उठा। परंतु तब उन्होंने एक आवर्धक कॉच (magnifying glass) को मोमबत्ती के सामने रखा, और तब ज्वाला से आवर्धक कॉच की दूरी को समायोजित करते हुए, एक दीवार पर, मोमबत्ती की ज्वाला का एक चमकदार प्रतिबिंब, प्रक्षिप्त करने में सक्षम रहे। पाठ (lesson) को बढ़ाने के लिए, उन्होंने मोमबत्ती के पीछे एक चमकदार सतह रखी और उसने, बदले में, प्रकाश का अधिक घनीभूतीकरण (concentration) किया, जिससे दीवार के ऊपर प्रतिबिंब की तीव्रता और अधिक बढ़ गई। मैंने उन्हें बताया, और उन्होंने कहा, ''हॉ! ये एकदम सही है, विभिन्न युक्तियों के द्वारा, विचारों का केन्द्रीकरण करना और उन्हें एक पूर्व निश्चित दिशा में भेजना संभव है। वास्तव में, हर व्यक्ति के पास वह है, जिसे हम व्यक्तिगत तरंगदैर्ध्य कह सकते हैं, अर्थात्, हर व्यक्ति के मस्तिष्क द्वारा आधारभूत तरंग दैर्ध्य पर विकरित की गई ऊर्जा की एक निश्चित मात्रा, सटीक कंपनों के एक क्रम को जारी रखती है, और यदि हम, मस्तिष्क तरंगों के मूल कंपनों की दर को निश्चित कर सकें, और दूसरे व्यक्ति के उन मूल कंपनों के साथ लयबद्ध कर सकें, तो दूरी के निरपेक्ष, हमें अपने तथाकथित दूरानुभूति संदेश को भेजने में, किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी।'' उन्होंने अधिक कठोरता के साथ मुझे घूरा, और जोड़ा, ''तुम्हें ये बात पूरी तरह अपने दिमाग में जमा लेनी चाहिए, जबकि लोबसांग, जहॉ तक दूरानुभूति का संबंध है, दूरी का कोई अर्थ नहीं होता। दूरानुभूति, महासागरों को लांघ सकती है, ये लोकों को भी लांघ सकती है!''

मैं स्वीकार करता हूँ कि, मैं दूरानुभूति के क्षेत्र में, और अधिक करने के लिए उत्सुक था। मैं

अपने आपको, अपने उन मित्रों के साथ बात करते हुए, जो दूसरे लामामठों, जैसे कि सेरा, और काफी दूर के जिलों में भी थे, देख सकता था। यद्यपि, मुझे ऐसा लगा कि मेरे सभी प्रयास, उन चीजों को समप्रित किए जाने थे, जो मुझे भविष्य में सहायता करेंगी, एक भविष्य–जो सभी भविष्यवाणियों के अनुसार, वास्तव में, एक उदास प्रकरण होगा।

मेरे शिक्षक ने फिर से मेरे विचारों को तोड़ दिया, ''हम दूरानुभूति के इस मामले में, बाद में बात करेंगे। हम अतीन्द्रियज्ञान के मामले में भी जायेंगे, क्योंकि तुम्हारे पास अतीन्द्रियज्ञान की असामान्य शक्तियॉ होंगी, और यदि तुम इस प्रक्रम की यांत्रिकी के प्रति सजग हो, ये तुम्हारे लिए चीजों को आसान बना देंगी। ये सब कुछ मस्तिष्क तरंगों के आसपास घूमता है और आकाशीय अभिलेखों में हस्तक्षेप करता है, परंतु अब रात घिर गई है, इस क्षण के लिए, हमें अपना वार्तालाप बंद करना चाहिए और सोने के लिए तैयार होना चाहिए ताकि, रात्रि के घण्टों की अवधि में, पहली सेवा के लिए, हम समय पर तरोताजा हो सकें।''

वे अपने पैरों पर खड़े हुए और मैं अपने पैरों पर। मैंने उनके प्रति, आदर भाव के साथ नमन किया और मैंने अभिलाषा की कि, मैं अपने गहन आदर को, जो मैं इन महान व्यक्ति के प्रति रखता था, जो मेरे साथ इतने अधिक मित्रवत् थे, अधिक अच्छे ढंग से प्रदर्शित कर सकूॅ।

संक्षेप में, एक उड़ती हुई मुस्कान उनके होठों पर से गुजरी, और उन्होंने आगे कदम रखे और उन्होंने मेरे कंधों पर गर्मजोशी के साथ थपकी दी। एक नर्म थपथपाहट, और उन्होंने कहा, ''शुभ रात्रि, लोबसांग अब हमें और अधिक देर नहीं करनी चाहिए, या हम उस समय न जग पाने के कारण, फिर से मूर्खता करेंगे–जब हमारे समप्रण में उपस्थित होने का समय होगा।'' मैं कुछ क्षणों के लिए, अपने खुद के कमरे में, खिड़की पर, रात की ठंडी हवा उसमें से अंदर आने देते हुए, खड़ा हुआ। मैंने बाहर की ओर, ल्हासा की रोशनियों के ऊपर टकटकी लगाई और जो कुछ मुझे बताया गया था, उसको और वह भी, जो मुझे अभी सीखना था, एक बार फिर दुहराया। मुझे ये स्पष्ट था कि, जितना अधिक में सीखता हूॅ–उतना ही अधिक, सीखने के लिए बाकी है और मुझे आश्चर्य हुआ कि, क्या ये कभी समाप्त होगा। शायद, निराशा की एक आह के साथ, मैंने अपने आपको, अपनी पोशाक में अधिक कसकर लपेट लिया और ठंडे फर्श पर सोने के लिए लेट गया।

अध्याय सात

ठंडी–ठंडी हवा, पहाड़ों के परे नीचे की तरफ बह रही थी। धूल और छोटे पत्थर, हवा में हो कर कोड़े मार रहे थे और उनमें से अधिकांश, सीधे ही हमारे सिकुड़ते हुए शरीरों के ऊपर लक्ष्य करते हुए प्रतीत हुए। बूढ़े होशियार जानवर, अपने सिर को हवा के रुख में झुकाते हुए, ताकि उनकी खाल वेतरतीब न हो और उनके शरीर की ऊष्मा का क्षय न हो, खड़े हो गये। हमने कुंडु लिंग (Kundu Ling) के कोने से चक्कर लगाया और मनि लखांग (Mani Lakhang) में घूम गए। दूसरों की तुलना में और अधिक चुभने वाले, हवा के एक अनायास विस्फोट ने, हमारे साथियों में से एक की पोशाक को घसीट दिया, और उसे भय की गर्जना के साथ, हवा में पतंग की तरह उड़ा दिया गया। हमने स्तंभित होते हुए, अपने खुले हुए मुँह के साथ ऊपर देखा। वह शहर की तरफ उड़ता हुआ दिखाई दिया–भुजाऐं फैलाई हुईं, पोशाकें लहरातीं, और उसको दैत्याकार में बनाती हुईं। तब वहाँ एक शांति हुई, और वह एक पत्थर की तरह, कलिंग चू (नदी) में नीचे गिरा। इस दृश्य पर डरते हुए कि वह डूब जायेगा, हम पागलपन के साथ तेजी से दौड़े। ज्यों ही हम किनारे पर पहुँचे, वह–युलग्ये (yulgye)–घुटनों तक पानी में खड़ा हुआ दिखाई दिया। युलग्ये को चारों तरफ घुमाते हुए और उसे वापस हमारी भुजाओं में पीछे की तरफ फेंकते हुए, तूफान, एक नये बल के साथ चीखा। आश्चर्यों का आश्चर्य, वह घुटनों से नीचे के सिवाय, मुश्किल से ही गीला हुआ था। कदाचित् हम भी हवा में उड़ा न दिए जायें, हमने अपनी पोशाकों को कस कर पकड़ते हुए, जाने की जल्दी की।

हम मनि लखांग के साथ–साथ चले। और ये एक आसान पदयात्रा हुई! जबरदस्त तूफान ने हमको अपने साथ उड़ा लिया; हमारा सारा प्रयास, अपनी उर्ध्वाधर स्थिति बनाये रखने के लिए था! श्यो के गॉव में, उच्च पदक्रम (rank) वाली महिलाओं का एक दल, शरणस्थल तलाश रहा था; मैं हमेशा, उस चमड़े के मुखौटे के पीछे, होने वाले व्यक्ति की पहचान के संबंध में, अनुमान लगाना पसंद करता था। जितना ज्यादा नौजवान चेहरा, चमड़े पर चित्रित किया गया होता, वह औरत, जो इसे पहनती थी, उतनी ही बूढ़ी होती थी। तिब्बत, पर्वतों से पत्थरों और बालू की धारा को उड़ाते हुए, चीखती हुईं हवाओं वाला, एक निर्दय और रूखा देश है। पुरुष और महिलायें, तूफानों से बचाव के रूप में, बहुधा चमड़े के बने हुए मुखौटे पहनते थे। ये मुखोटे, ऑखों के लिए झिरियों (slits) के साथ, और दूसरी एक और झिरी, जिसमें होकर कोई सांस ले सकता हो, पहनने वाले की खुद के बारे में राय का प्रतिनिधित्व करते हुए, निरपवादरूप से चित्रित किए जाते थे!

''हम दुकानों की गली में होकर चलें!'' तिमन ने, खुद को तूफान के ऊपर सुने जाने के योग्य, बनाने के प्रयत्न के रूप में, जम्हाई ली। ''समय की बरबादी,'' युलग्ये चीखा, ''जब वहॉ इस तरह का तूफान आता है, वे (दुकानदार) दरवाजे बंद कर लेते हैं। अन्यथा उनका पूरा सामान हवा में उड़ जायेगा।'' हमने, अपनी सामान्य कदमों की दुगनी से भी अधिक चाल के साथ, जल्दी की। हवा का बल इतना अधिक था कि कछुआ पुल को पार करने के बाद, हमको एक–दूसरे को पकड़े रहना पड़ा। पीछे देखते हुए, हमने देखा कि पोटाला ओर लौहपहाड़ी, काले उमड़े हुए बादलों से ढक चुकीं हैं। धूल के कणों और छोटे पत्थरों से बना हुआ एक बादल, जो शाश्वत हिमालय से तोड़ा और खदेड़ा गया। जल्दी करते हुए, जानते हुए कि यदि हम, सुस्त रहे, डोरिंग (Doring) के घर, जो, जो कांग के आसपास अंत :वृत के ठीक बाहर है, से आलस के साथ गुजरे, तो काले बादल हमसे आगे निकल जायेंगे। हमारे असुरक्षित सिरों और चेहरों को तोड़ता हुआ तूफान, दहाड़ के साथ, हम पर टूट पड़ा। तिमन ने, अपनी ऑखों को बचाने के लिए, अंतःप्रेरणा से अपने हाथ ऊँचे किए। ल्हासा के केथेड्रल के ठीक सामने, हवा ने उसकी पोशाक को पकड़ लिया और उसे एकदम नंगा छोड़ते हुए, जैसे कि छिला हुआ केला, उसके सिर के ऊपर तक उठा दिया।

पत्थर और टहनियॉ, हमें टॉगों पर खरोंच पहुँचाते हुए, और कई बार, खून निकालते हुए, गली

में, हमारी तरफ आयीं। आसमान, और अधिक काला, रात जैसा हो गया। हम, तिमन को अपने सामने ढकेलते हुए, फड़फड़ाती हुई पोशाक, जो उसके सिर के चारों तरफ लपेटी हुई थी, के साथ संघर्ष करते हुए, लड़खड़ाते हुए, पवित्र स्थान के अभयारण्य में आये। अंदर शांति थी, घनघोर शांति, आराम देने वाली शांति। यहॉ, कुछ तेरह सौ वर्षों से, श्रृद्धालु पूजा करने के लिए आते थे। इमारत का ताना–बाना भी, पवित्रता को टपका रहा था। पीढ़ी–दर–पीढ़ी, लड़खड़ाते हुए तीर्थयात्रियों के चलते रहने से, पत्थर का फर्श, पसलियों की तरह, और गड्ढेदार हो गया था। हवा जीवंत दिखाई दी। युगों तक, इतनी अधिक सुगंधि यहॉ जलाई गई थी कि ये स्थान, अपने खुद के जागृत जीवन के कारण उपहारित प्रतीत हुआ।

युगों से काले पड़ गए खम्भे और शहतीरें, सर्वकालिक संध्या में, धुंधली दिखने लगी। टिमटिमाते हुए दीपों और मोमबत्तियों की रोशनी को परावर्तित करते हुए, धुंधली हो गई, सोने की चमक ने, इस उदासी को चमकाने में थोड़ा ही कार्य किया। छोटी टिमटिमाती ज्वालाओं ने, पवित्र आकृतियों की छायाओं को, मंदिर की दीवारों पर नृत्य के रूप में, बदल दिया। देवताओं ने देवियों के साथ, शोरमचाते हुए, प्रकाश के कभी न समाप्त होने वाले खेल खेले और छायाऐं, श्रृद्धालु तीर्थयात्रियों के अंतहीन जुलूस के रूप में, दीपकों को गुजारते, हुए चलतीं चलीं।

नगीनों के बड़े ढेरों में से, सभी रंगों के प्रकाश के छिद्र बिन्दु (pin points), गोली की तरह, सभी तरफ को फूटे। हीरे (Diamonds), फिरोजे (Topaz), वेदूर्य (beryl), लाल (rubies), हरिताश्म (jade) अपनी–अपनी प्रकृति के अनुसार, एक सदैव परिवर्तित होने वाले प्रादर्श को बनाते हुए, प्रकाश में चमके; रंगों का एक बहुरूपदर्शी (kaleidoscope)। जिनका लोभ, उनकी ईमानदारी के ऊपर हाबी हो जाता था, खुले–काम वाले लोहे के महान जाल, जिनके जोड़ हाथों को गुजर जाने को देने के लिए अत्यंत छोटे थे, उनसे, जवाहरातों और सोने की रखवाली करते थे। चमकदार संध्या में, लोहे के पर्दे के पीछे, यत्र–तत्र (here and there), लाल ऑखों के जोड़े, इस बात का प्रमाण देते हुए कि मंदिर की बिल्लियॉ सदैव सजग रहती थीं, चमकते थे। इन्हें भ्रष्ट नहीं किया जा सकता था, घूस नहीं दी जा सकती थी, मनुष्य या पशु के डर के बिना, वे अपने मखमली पंजों पर, शांति से, दबे पॉव आती थीं। परंतु यदि उन्हें क्रोधित करा दिया जाए, तो वे नर्म पॉव, उस्तरे की धार वाले जबड़ों की म्यान में बंद कर लेते थे। किसी के इरादों को जानने के लिये, उन्हें केवल, मात कर देने वाली प्रखर बुद्धि के साथ, किसी को देखना होता था। जवाहरातों, जिनकी वे सुरक्षा करतीं थीं, की तरफ कोई संदेहयुक्त हरकत, और वे दैत्य का अवतार बन जाती थीं; जोड़ों में काम करते हुए, एक, सम्भावित चोर की गर्दन के ऊपर झपट्टा मारती, जबकि दूसरी, उसकी दांयी भुजा से चिपक जाती। केवल मौत ही उनकी पकड़ को ढीला कर सकती थी, जबतक कि उपस्थित भिक्षु, शीघ्रता से वहॉ न आ जायें.....! मुझे, या मेरे जैसे दूसरों को, जो उन्हें प्यार करते थे, बिल्लियॉ लुढ़कतीं और उन्हें दुलार करतीं, और हमें उन अमूल्य जवाहरातों के साथ खेलने देतीं। खेलें, परंतु बाहर नहीं ले जा सकते। पूरी काली, जीवंत नीली ऑखों के साथ, जो प्रकाश के परावर्तन के साथ, खूनी लाल चमकती थीं, वे दूसरे देशों में ''सियामी'' बिल्लियॉ (Siamese cats) कही जातीं थीं। यहॉ, ठंडे तिब्बत में, वे सभी काली होती थीं। मुझे बताया गया था कि, भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में, वे पूरी सफेद होती थीं। हम, स्वर्णिम छवियों को अपना सम्मान प्रदान करते हुए, आसपास टहलते रहे। बाहर, तूफान गरजा और सभी चीजों को, जो असुरक्षित थीं, दूर फेंकते हुए तथा हवा से लपेटे गए, असावधान यात्रियों, जो किसी आकस्मिक मजबूरी के कारण सड़कों पर होते थे, के लिए रास्ते को और अधिक अवरोधमय बनाते हुए, धुंऐदार हो गया। यहॉ, यद्यपि, मंदिर में, अनेक कदमों की ''शश–शश'' की हल्की सी आवाज और चूॅकि, तीर्थयात्री अपनी परिक्रमा दे रहे थे, अनवरत ''क्लेक–चेक'' और हमेशा घूमने वाले प्रार्थनाचक्रों की आवाज के सिवाय, सब कुछ शांत था। परंतु हमने उन्हें नहीं सुना। दिन के बाद दिन, रात के बार रात, अपनी ''क्लेक–चेक, क्लेक–चेक, क्लेक –चेक'' के साथ, जबतक कि वे हमारे अस्त्तिव का अंग नहीं बन गए, चक्र घूमते रहे, घूमते रहे; हमने अपने

हृदय की धड़कन या अपनी श्वांस की तुलना में, उन्हें और अधिक नहीं सुना।

परंतु जैसे ही, एक बूढ़े (बिल्ले) टोम (Tom) ने, मुझे ये ध्यान दिलाने के लिए कि, मैं और वह, दोनों ही पुराने मित्र थे, अपना सिर टकराया, वहॉ, एक अप्रिय, कक्रश, पुर्र–पुर्र और धातु की पर्दों की खनक की, एक और ध्वनि हुई; आलस्यपूर्ण ढंग से, मैंने अपनी उॅगलियों को जोड़ों (links) के बीच धकेला और उसके सिर को खरोंचा। उसने अभिवादन में, मेरी उॅगलियों को कोमलता से काटा, और तब अपने चाटने के उत्साह के साथ, अपनी खुरदरी बूढ़ी जबान से, खाल को लगभग उधेड़ दिया! मंदिर में एक संदेहपूर्ण गति, और वह 'अपने' गुण को बचाये रखने के लिये– एक चमक की तरह, दूर गायब हो गया।

''आशा करते हैं हम दुकानों पर मिलेंगे!'' तिमन ने फुसफुसाकर कहा। ''मूर्ख!'' युलग्ये फुसफुसाया, ''तुम जानते हो, वे तूफान की अवधि में बंद हो गई हैं।'' ''बच्चे तुम शांत रहो!'' एक कठोर कुलानुशासक ने, छायाओं से बाहर कदम रखते हुए कहा और एक मुक्के ने, जिसने बेचारे तिमन को पकड़ लिया और असंतुलित करते हुए, उसे फर्श के ऊपर, चारों खाने चित्त पसरा दिया। एक समीपवर्ती भिक्षु ने, उस दृश्य को नापसंदगी के साथ देखा और अपने प्रार्थनाचक्र को गुस्से में घुमाया। लगभग सात फुट लंबा महान कुलानुशासक, हमारे ऊपर एक मानव–पहाड़ की तरह खड़ा हुआ और सीत्कार करने लगा, ''यदि तुम बच्चों ने दुबारा फिर चूं–चपड़ की..... मैं तुम्हें अपने हाथों से फाड़ दूॅगा और टुकड़ों को, बाहर, कुत्तों की तरफ उछाल दूॅगा। अब, शांत हो जाओ!'' एक अंतिम तेबर के साथ वह हमारी दिशा में, मुड़ा और छायाओं में गायब हो गया। सावधानीपूर्वक, अपनी पोशाकों की रगड़ से भी डरा हुआ तिमन, अपने पैरों पर खड़ा हुआ। हमने अपनी चप्पलें पहनी और पंजों के बल चल कर दरवाजे पर पहुॅचे। बाहर, अभी–भी तूफान क्रोध दिखा रहा था; पहाड़ों की सीमाओं से सफेद बर्फ की झगमगाती हुई पताकायें, बाहर वह रहीं थीं। निचली पहुॅच वाले स्थानों से, पोटाला और चाकपोरी से, धूल और पत्थरों के काले गुबार बह रहे थे। पवित्र रास्ते के साथ–साथ, धूल के बड़े–बड़े स्तंभ, शहर में दौड़े। हवा गुर्राई और चीखी, मानो कि दैत्य भी पागल हो गए थे और बिना किसी ज्ञान या कारण के, पागलपन का एक बेसुरा राग, आलाप रहे थे।

परिषद हॉल के पीछे, एक कुंज या गुफा की शरण को चाहते हुए, एक–दूसरे को पकड़े हुए, जो कांग को घेरते हुए, रेंगते हुए हम दक्षिण की ओर चले । बिक्षुब्ध हवाओं की तीव्र धाराओं ने, हमको अपने पैरों से ऊपर उठाने और भिक्षुणियों के मठ (Nunnery), त्सांग कुंग (Tsang Kung) की दीवार के ऊपर पटकने की धमकी दी। हम विचार मात्र से कॉप गए, और शरणस्थल की ओर दब गए। किये गये प्रयासों से गहरी सिसकियों के रूप में अपनी सांस लेते हुए, हम पीछे झुक गए, हमारा उद्देश्य पूरा हुआ। " * * * * * " तिमन ने कहा, ''मैं चाहता था कि मैं उस " * * * * * " कुलानुशासक के ऊपर लगाम लगाता! तुम्हारे आदरणीय शिक्षक इसे कर सकते थे, लोबसांग। शायद तुम उन्हें, उस " * * * * * " को एक सुअर के रूप में परिवर्तित करने में राजी कर सको,'' उसने आशापूर्ण ढंग से जोड़ा। मैंने अपना सिर हिलाया, ''मैं सुनिश्चित हूॅ कि वह नहीं करेंगे,'' मैंने उत्तर दिया, ''क्योंकि लामा मिंग्यार डोंडुप, किसी भी आदमी या जानवर के प्रति कभी बुरा नहीं करते। फिर भी, अच्छा ये होगा कि कुलानुशासक को, किसी दूसरी चीज में बदल दिया जाये। वह दबंग था!''

तूफान कम हो रहा था। संध्या के आसपास, हवाओं का कर्णभेदी कोलाहल, कम उकताने वाला था। तूफान के द्वारा पहले लाये गए पत्थरों के टुकड़े, सड़कों पर पड़े थे और छतों के विरुद्ध आवाज कर रहे थे। अब और अधिक धूल, हमारी पोशाकों में अंदर नहीं घुस रही थी। तिब्बत, एक ऊॅचा और अनावरित (unexposed) देश है। पर्वतीय श्रृखंलाओं के पीछे इकट्ठी हुईं और उबलती हुईं हवाऐं, दर्रों में होकर, यात्रियों को, खंदकों में अपनी मौत मारते हुए, बार–बार जमीन पर पटक देती हैं। लामामठ के गलियारों में तूफानों के हिचकोले, उन्हें झाड़ू लगाते हुए, धूल और कचरे को फूॅक कर उड़ाते हुए, घाटी

में से होकर उभरने वाली चीखों के पहले, खुले विस्तारों पर, और उनके परे गरजते हैं।

चीख–पुकार और कोलाहल समाप्त हुआ। तूफानी बादलों में से अंतिम, स्वर्ग के बड़े खजाने को जामुनी और शुद्ध बनाए रखते हुए, आकाश के आर–पार दौड़ा। तूफान की तिमिर और उदासी के बाद, अपनी चमक के साथ चौंधियाते हुए सूर्य की कठोर चमक, हमारे ऊपर पड़ी। चटकने की घिसती हुई आवाजों के साथ, दरवाजे सावधानीपूर्वक खोले गए; सिर प्रकट हुए और दिन के नुकसान का अनुमान लगाया गया। बेचारी बूढ़ी श्रीमती राक्स (Mrs. Raks), जिनके घर के पास हम खड़े थे, के सामने की खिड़कियॉ, तूफान में अन्दर की ओर, तथा पिछली खिड़कियॉ, बाहर की ओर उड़ गई थीं। तिब्बत में, खिड़कियॉ, मोटे तेलिया (oiled) कागज की होती हैं, तेलिया, ताकि कोई, प्रकाश के कुछ तनाव में (भी), बाहर देख सके। ल्हासा में, वास्तव में, कॉच विरल (rare) है, और बहुतायत में पाये जाने वाले फर (willow) अथवा जल वेंतों (rushes) से बनाया गया कागज सस्ता होता है। हमने, जहॉ कहीं भी हमारी अभिरुचि की चीज ने हमारी निगाहों को आकर्षित किया, रुकते–रुकाते, अपने घर–चाकपोरी–के लिए यात्रा की।

''लोबसांग!'' तिमन ने कहा, ''मानें कि, दुकानें अब खुली रहेंगीं। आओ, अधिक देर नहीं लगेगी! '' ऐसा कहते हुए, वह अधिक तेज कदमों से चलते हुए, दायीं ओर मुड़ा। युलग्ये और मैं, अनिच्छुकता का सर्वाधिक प्रदर्शन करते हुए, उसके पीछे चले। दुकानों की गली में पहुॅचे, हमने उत्सुकतापूर्वक अपनी ओर देखा। क्या–क्या आश्चर्य वहॉ थे! सर्वत्र व्याप्त चाय की सुगंध, भारत और चीन की अनेक प्रकार की सुगंधियॉ। गहने, और बहुत दूर, जर्मनी से लाई गईं चीजें, जो हमारे लिए इतनी अजूबी थीं कि उन्हें रखना, हमारे लिये कोई अर्थ नहीं रखता था। और आगे, हम एक दुकान पर आये, जहॉ मिठाईयॉ, तीलियों पर चिपकने वाली चीजें, सफेद शक्कर से ढकी हुई चकतियॉ या रंगदार बर्फ (चुस्की) बिक रहीं थीं। हमने देखा और उनकी अभिलाषा की; चूॅकि बेचारे चेला होने के नाते, हमारे पास कोई धन नहीं था इसलिए हम कोई चीज खरीद नहीं सके, परंतु देखना मुफ्त था।

युलग्ये ने, मेरे हाथ में, कोहनी से इशारा किया और बुदबुदाया, ''लोबसांग, वह बड़ा आदमी, क्या वही त्सू (Tsu) नहीं है, जो तुम्हारी देखभाल किया करता था ?'' मैं मुड़ा और जिस दिशा में उसने इशारा किया था उधर घूर कर देखा। हॉ! ठीक है, वह त्सू ही था, त्सू, जिसने मुझे इतना पढ़ाया था और मेरे प्रति इतना कठोर था। अंतःप्रेरणा से, मैंने आगे कदम बढ़ाये और उसे देख कर मुस्कुराया ''त्सू! '' मैंने कहा, ''मैं हूॅ.....'' उसने मेरी तरफ त्योरी चढ़ाई और कक्रश स्वर में बोला, ''भाग जाओ बच्चे, तुम ईमानदार नागरिक को, उसके स्वामी के कार्यों के बारे में मत घुड़को। तुम मुझसे कुछ नहीं मांग सकते।'' सहसा ही वह मुड़ा और पैर घसीटता हुआ चला गया।

मैंने अपनी ऑखों को गरम होता हुआ महसूस किया और मुझे डर लगा कि, मैं अपने मित्रों के सामने, अपने आपको अपमानित करने जा रहा था। नहीं, मैं ऑसुओं की बिलासिता को बर्दाश्त नहीं कर सकता था, परंतु त्सू ने मुझे अनदेखा किया, मुझे नहीं जानने का बहाना किया। त्सू, जिसने मुझे जन्म से सिखाया था। मैंने सोचा कि, उसने मुझे अपने पोनी, नक्किम पर, सवार होना सिखाने का प्रयास किया था, उसने मुझे कुश्ती लड़ना, कैसे सिखाया था। अब उसने मेरा परित्याग कर दिया था–मेरे साथ संबंध–बिच्छेद कर लिया था। मैंने अपना सिर लटकाया और निराशापूर्ण ढंग से, धूल को अपने पैरों से खरोंचा। मेरे पड़ोस में, मेरे दो साथी, जैसा मैंने महसूस किया वैसा ही महसूस करते हुए, ये पाते हुए कि वे भी तिरिस्कृत किए गए थे, शांत खड़े थे। एक सहसा हलचल ने, मेरे ध्यान को आकर्षित किया; एक बूढ़ा दाढ़ी वाला भारतीय, पगड़ी पहने हुए, धीमे से, मेरी तरफ चल कर आया। ''नौजवान श्रीमान्!'' उसने अजीब तरह से, तिब्बती भाषा के स्वर में कहा, ''मैंने सब देख लिया, परंतु मुझे उस आदमी का बुरा नहीं लगा। हम में से कुछ, अपने बचपन को भूल जाते हैं। मैं नहीं भूलाः मेरे साथ आओ।'' वह मुझे उस दुकान की तरफ ले गया, जहॉ हमने अभी–अभी घूर कर देखा था। ''इन

नौजवान आदमियों को अपनी–अपनी मनपसंद चीजें लेने दो,'' उसने दुकानदार से कहा। शर्माते हुए, हम में से हर एक ने उन भव्य चिपचिपी चीजों में से एक ली और आभारपूर्वक, भारतीय के प्रति नमन किया। ''नहीं! नहीं!'' वह प्रसन्नता से बोला, ''एक काफी नहीं है, हर एक, दूसरी भी ले लो।'' हमने वैसा ही किया, और उसने मुस्कुराते हुए, दुकानदार को उनका मूल्य अदा किया। ''श्रीमान्!'' मैंने उफनते हुए कहा, ''बुद्ध के आशीर्वाद आपके साथ रहें और आपकी रक्षा करें; आपके आनंद, अनेक हों!'' वह शुभेच्छापूर्वक हमारी तरफ मुस्कराया, थोड़ा नमन किया, और अपने कार्य को जारी रखने के लिए मुड़ गया।

धीमे से, अपनी मिठाईयों को धीमे–धीमे खाते हुए, ताकि वे जितना अधिक लंबा चल सकें, चलें, हमने घर की तरफ को रुख किया। हम लगभग भूल गए थे कि, वे चीजें स्वाद में कैसी थीं। स्वाद में, ये अधिकांश से अच्छी लगीं क्योंकि, वे इतनी अच्छी सद्भावनाओं के साथ दी गई थीं। जब हम आगे चले, मैंने प्रतिबिंबित किया, कि, पहले पोटाला की सीढ़ियों पर, मेरे पिताजी ने मुझे अनदेखा किया था, और अब त्सू ने मुझे अनदेखा किया। युलग्ये ने चुप्पी तोड़ी; ''ये दुनियॉ बकवास है, लोबसांग, अभी हम बच्चे हैं, हमको अनदेखा किया जाता है और झिड़का जाता है। जब हम लामा होंगे, काले सिर वाले हमारी तरफ सहानुभूति के लिए दौड़ते चले आयेंगे!'' तिब्बत में, जनसाधारण को, काले सिर वाले कहा जाता है क्योंकि, उनके सिर पर बाल होते है; वास्तव में, भिक्षु, सिर मुड़ाये रखते है।

उस शाम को, सेवा में, मैं बहुत सावधान था; मैंने कठोर परिश्रम करने का निश्चय किया ताकि, मैं जितना जल्दी संभव हो सके, लामा बन जाऊँ, तब मैं उन काले सिर वालों को भगाऊँगा और जब वे मेरी सेवाऐं चाहेंगे, उन्हें धिक्कारूँगा। मैं वास्तव में, इतना सावधान था कि, मैंने एक कुलानुशासक के ध्यान को आकर्षित किया। उसने ये सोचते हुए कि मुझसे इतना अधिक समप्रण पूरी तरह अस्वाभाविक था!, मुझे बड़े संदेह के साथ देखा। जैसे ही सेवा समाप्त हुई, मैंने अपने क्वार्टर की तरफ जाने की जल्दी की, क्योंकि मैं जानता था कि कल, मेरा दिन, लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ व्यस्त रहेगा। कुछ समय के लिए, मैं सो नहीं सका। मैं उछला और मुड़ा और (मैंने) भूतकाल और कठिनाइयों के बारे में, जिनमें हो कर मैं गुजरा था, सोचा।

प्रातः, मैं उठा और मैंने अपना नाश्ता लिया और तब मैं लामाओं के क्वार्टरों की तरफ जाने के लिए, लगभग, अपने रास्ते पर था। ज्यों ही मैं अपने कमरे को छोड़ रहा था, जीर्णशीर्ण पोशाक में, एक विशालकाय भिक्षु ने मुझे पकड़ लिया ''अरे, तुम!'' उसने कहा, ''तुम आज सुबह–चक्की के पत्थरों को भी साफ करते हुए–किचन में काम करो!'' ''परंतु श्रीमान्!'' मैंने जबाव दिया, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, मुझे बुला रहे हैं।'' मैंने भूतकाल को निचोड़ने का प्रयास किया। ''नहीं, तुम मेरे साथ आओ। कोई फक्र नहीं पड़ता, तुम्हें कौन चाहता है। मैं कहता हूँ, तुम रसोईघर में काम करने जा रहे हो।'' उसने मेरी बॉह पकड़ी और उसे मरोड़ दिया, ताकि, मैं भाग नहीं सकूँ। अनिच्छापूर्वक, मैं उसके साथ गया, मेरे लिए कोई चुनाव नहीं था।

तिब्बत में, निम्नश्रेणी के कामों के लिए, हम सभी अपनी–अपनी बारी को लेते हैं। ''ये नम्रता सिखाता है!'' किसी ने कहा। ''किसी लड़के को, अपने आपसे ऊपर, दिखने से रोकता है!'' दूसरे ने कहा। ''वर्गभेद को दूर भगा देता है!'' तीसरे ने कहा। लड़के–और भिक्षु–अनुशासन के रूप में–उन्हें दिए गए कार्य को, शुद्धरूप से करते हैं। वास्तव में, वहॉ निम्नश्रेणी के भिक्षुओं का एक घरेलू स्टाफ (Domestic staff) था, परंतु सभी श्रेणियों के लड़कों और भिक्षुओं को, निम्नतम और अधिकांशतः असुखद कार्यों के प्रशिक्षण के रूप में, अपनी पारी लेनी पड़ती थी। हम सब इससे ''नियमितों (regulars)'' की भॉति घृणा करते थे–सभी निम्नतम श्रेणी के लोग–अच्छी तरह ये जानते हुए कि, शायद हम शिकायत नहीं करेंगे, हमारे साथ गुलामों की तरह व्यवहार करते थे। शिकायत ? इसका अर्थ कठोर होना था!

हम नीचे, पत्थर के गलियारे में गए। सीढ़ियों के नीचे, लकड़ी के दो लट्ठे खड़े थे, जिनके आरपार एक छड़ लगी थी। बड़े रसोईघर में, जिसमें मैं, टॉग पर इतनी बुरी तरह जल गया था। ''वहॉ! '' उस भिक्षु ने, जो मुझे पकड़े हुए था, कहा ''उठो और उन पीसने वाले, पत्थर के पाटों को साफ करो।'' एक तीखी धातु की तीली को उठाते हुए, मैं जौ पीसने वाले उन बड़े पहियों में से एक पर, चढ़ गया और मेहनत के साथ, मैंने उनके दांतों में फंसे हुए, कुचले हुए मलबे को खोद–खोद कर निकाला। इस पत्थर की उपेक्षा की गई थी, और अब, पीसने के बजाय, ये केवल जौ को खराब करता था। मेरा कार्य उसकी सतह को सजाना था, ताकि वह फिर से तीखा और साफ हो जाये। भिक्षु, अलसाये हुए ढंग से अपने दांतों को कुरेदते हुए, समीप ही खड़ा रहा।

''अरे!'' प्रवेशद्वार से एक आवाज चीखी, ''मंगलवार लोबसांग रंपा। क्या मंगलवार लोबसांग रंपा यहॉ है ? आदरणीय लामा मिंग्यार डोंडुप, उसे त्तकाल वहॉ देखना चाहते हैं।'' अंतरज्ञान से मैं खड़ा हुआ और मैं पत्थर से कूदकर दूर छटक गया। ''मैं यहॉ हूँ!'' मैंने पुकारा। मुझे जमीन पर गिराते हुए, भिक्षु ने अपने गोली जैसे मुक्के को मेरे सिर के ऊपर, जोर से मारा। ''मैं कहता हूँ, तुम यहॉ रुकोगे और अपना काम करोगे,'' वह गुर्राया। ''यदि किसी को तुम्हारी जरूरत है, उनको यहॉ व्यक्तिगत रूप से आने दो।'' मुझे गर्दन से पकड़ते हुए, उसने मुझे उठाया और उछाल कर जमीन पर पटक दिया। मेरा सिर, एक कोने से टकराया और धुंधला पड़ने से पहले, विश्व को काला और रिक्त छोड़ते हुए, स्वर्ग के सारे तारे, मेरी चेतना में चमक उठे।

मुझे अनोखेपन से, उठाये जाने का एक अहसास हुआ–क्षैतिज रूप से उठाया गया–और तब अपने पैरों पर खड़ा हुआ। कहीं एक बड़ा गहरा–घड़ियाल, जीवन में से कुछ सेकण्ड बसूलता हुआ प्रतीत हुआ, वह ''बोंग–बोंग–बोंग'' की तरह चलता गया और मैंने महसूस किया कि अंतिम प्रहार के साथ, मुझे नीले प्रकाश द्वारा टक्कर दी गई है। उस क्षण, विश्व बहुत अधिक चमकीला दिखाई दिया, कुछ पीले से रंग की चमक, एक प्रकाश, जिसमें मैं सामान्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट देख सकता था। ''ऊॅ,'' मैंने खुद से कहा, ''इसप्रकार मैं अपने शरीर से बाहर हूँ! ओह! मैं अजनबी दिखता हूँ।

मुझे सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने का काफी–काफी अनुभव हो चुका था, मैं पृथ्वी की अपनी पुरानी सीमाओं से काफी परे तक यात्रा कर चुका था, और अपने इस विश्व के गोले पर मैंने, अनेक बड़े–बड़े शहरों की यात्राऐं कर लीं थीं। अब, यद्यपि, मुझे 'अपने शरीर से बाहर निकलने का' पहला अनुभव था। मैं चक्की के बड़े पत्थर के बगल से, एकदम जीर्ण–शीर्ण पोशाक में, पत्थर पर लेटी हुई, मैली–कुचैली छोटी आकृति पर, अत्यधिक स्वादहीनता के साथ, नीचे देखता हुआ खड़ा रहा। मैंने नीचे टकटकी लगाई, और ये मात्र, एक गुजरती हुई रुचि का मामला था कि, मेरा सूक्ष्मशरीर, उस सुधरी हुई आकृति के साथ, एक नीले सफेद तंतु से, जो तरंगित हो रहा था और धड़क रहा था, जो जगमगा कर चमक रहा था और मंद पड़ गया, और (फिर) चमका और (फिर) मंद पड़ गया, से किस प्रकार जुड़ा था। तब मैंने, अपने शरीर को, पत्थर की इस पटिया के ऊपर, और अधिक समीप से देखा और व्याकुल हुआ। बांयी कनपटी के एक गहरे घाव के ऊपर, जहॉ से गहरा–लाल खून, खून जो तेजी से पत्थर के दांतों (stone grooves) में रिसा और पेचीदा तरीके से, मलबे के साथ, जो अभीतक खोदकर बाहर नहीं निकाला गया था, मिल गया।

एक पदचाप ने सहसा मेरे ध्यान को आकर्षित किया, और जैसे ही मैं मुड़ा मैंने अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप को, अपने क्रोध से सफेद हुए चेहरे के साथ, रसोईघर में प्रवेश करते हुए देखा। वह आगे बढ़े और रसोईघर के प्रमुख भिक्षु के ठीक सामने आ कर रुके–भिक्षु–जिसने मेरे साथ इतना खराब व्यवहार किया था। कोई शब्द नहीं कहा गया, बिल्कुल कोई शब्द नहीं, वास्तव में, वहॉ निस्तब्ध और मौत की खामोशी थी। मेरे शिक्षक की चुभती हुई ऑखें, रसोईघर के भिक्षु की चमकती हुई (ऑखों) के साथ टकराती हुईं लगीं, वह एक निष्क्रिय पिण्ड के रूप में, एक आह के साथ, फटे हुए गुब्बारे की

तरह, पत्थर के फर्श के ऊपर दुबक गया। उसके ऊपर बिना दूसरी दृष्टि डाले हुए, मेरे शिक्षक, बाहर की तरफ मुड़े, घर–घराहट के साथ सांस लेती हुई, मेरी फैली हुई पार्थिव आकृति को, पत्थर के उस वृत के ऊपर घुमाया।

मैंने अपनी तरफ देखा, मैं वास्तव में, ये सोचकर मोहित हो रहा था कि, अब मैं थोड़ी दूरियों के लिए, अपने शरीर के बाहर आने में सक्षम हो चुका था। सूक्ष्मशरीर से ''दूर यात्राओं के लिए'' जाना कुछ भी नहीं था, मैं उसे करने में हमेशा सक्षम था, परंतु अपने शरीर में से बाहर आने और अपने मिट्टी के पार्थिवशरीर को देखने का यह एक नया षड़यंत्रकारी अनुभव था।

एक क्षण के लिए, अपने साथ होने वाली घटना को अनदेखा करते हुए, मैंने अपने आपको, रसोईघर की छत पर हो कर, ऊपर की तरफ खिसक जाने दिया। ''ओह!'' ज्यों ही मैं, कमरे के ऊपर की तरफ, पत्थर की छत से गुजरा, मैंने अनिच्छुकरूप से कहा। यहॉ लामाओं का एक समूह, गहरे चिंतन में बैठा हुआ था। मैंने कुछ दिलचस्पी के साथ देखा कि, उनके पास, उनके सामने, विश्व का, किसीप्रकार का एक प्रारूप था, ये गोल गेंद जैसी थी, जिसके ऊपर महाद्वीप और देश, समुद्र और महासागर अंकित किए गए थे, और गोल गेंद को, ब्रह्माण्ड में पृथ्वी के स्वयं के झुकाव कोण के संगत, एक कोण पर, जड़ा गया था। मैं वहॉ रुक नहीं सका, ये मुझे बहुत कुछ हद तक, पाठ के कार्य जैसा लगा। मैंने ऊपर की तरफ यात्रा की। दूसरी छत में होकर, एक और दूसरी छत में होकर, और फिर एक और, और तब मैं, समाधियों के कमरे में खड़ा हुआ! मेरे आसपास बड़ी स्वर्णिम दीवारें थीं, जो पिछली शताब्दियों के दलाईलामाओं के अवतारों की कब्रों को टिकाये हुए थीं। मैं यहॉ कुछ क्षणों के लिए, आदरपूर्वक विचारमग्न हुआ और तब स्वयं को ऊपर सरकने के लिए, ऊपर की तरफ जाने दिया, जिससे कम–से–कम अपने नीचे, मैंने, अपने आभापूर्ण पूरे स्वर्ण के साथ, अपने पूर्ण सिंदूरी और ईंटिया लाल और अद्भुत सफेद दीवारों, जो पहाड़ों की, खुद की सजीव चट्टानों के अंदर, पिघलती हुई दिखाई दीं, के साथ, भव्य पोटाला को देखा।

अपनी नजर थोड़ी–सी दांयी ओर घुमाते हुए, मैं श्यो के गॉव को, और उसके परे ल्हासा के शहर को, उसकी पृष्ठभूमि में नीले पहाड़ों के साथ, देख सकता था। ज्यों ही मैं खड़ा हुआ, मैं अपने सुन्दर और सुखद देश के अंतहीन स्थानों को देख सकता था, एक देश, जो पूर्वानुमान न किये जा सकने योग्य मौसम के कारण, कठोर और निर्दय हो सकता था परंतु जो, मेरे लिए घर था!

उल्लेखनीय रूप से, एक गहरे खिंचाव ने, मेरे ध्यान को आकर्षित किया और मैंने अपने आपको, वैसे ही लपेटे जाते हुए पाया, जैसे मैं बहुधा पतंग को, जो हवा में उड़ रही होती थी, लपेटा करता था। मैं फर्शो में होकर, जो छतें बन गए थे, और फिर से फर्शों में होकर, पोटाला में नीचे, नीचे, और नीचे, डूबा, जबतक कि अंत में, मैं अपने ठिकाने पर नहीं पहुॅचा और रसोईघर में, अपने शरीर के बगल से खड़ा नहीं हुआ।

लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरी बांयी कनपटी को–उसमें से कणों को चुनते हुए–कोमलता से नहला रहे थे। ''अच्छी भव्य!'' मैंने अत्यधिक आश्चर्य के साथ अपने आपसे कहा, ''क्या मेरा सिर इतना मोटा है कि, इसने पत्थर को चटका दिया या तोड़ दिया ?'' तब मैंने देखा कि, मेरी एक छोटी सी हड्डी चटक गई, मैंने ये भी देखा कि मेरे सिर में से काफी सामाग्री, जो मलबा–कूड़ा करकट– पत्थर की किरचें और पिसे हुए जौ (barley) के अवशेष थे, खींचे जा रहे थे। मैंने दिलचस्पी ली, और मैं स्वीकार करता हूॅ कि–कुछ मनोरंजन–क्योंकि यहॉ, मेरे शरीर के बगल से, अपने सूक्ष्मशरीर में, मैंने कोई कष्ट, कोई असुविधा अनुभव नहीं की, केवल शांति के साथ देखा।

अंत में, लामा मिंग्यार डोंडुप ने अपनी देखभाल समाप्त की और उन्होंने मेरे शरीर के ऊपर, जड़ी–बूटी की एक पुल्टिश, एक पैबन्द रखा और उसे रेशमी पट्टी के द्वारा सिर के आस–पास बांध दिया।

तब, दो भिक्षुओं, जो पालकी के साथ समीप खड़े थे, को इशारा करते हुए, उन्होंने मुझे, सावधानीपूर्वक उठाने के लिए निर्देश दिए।

आदमियों, मेरी खुद के श्रेणी के भिक्षुओं ने मुझे धीमे से उठाया और मुझे उस पालकी (litter) के ऊपर रखा। लामा मिंग्यार डोंडुप, उसके बगल से चलते रहे। मुझे ले जाया गया।

विचारणीय आश्चर्य के साथ, मैंने अपने आसपास देखा, प्रकाश मंदा पड़ रहा था, क्या मैंने इतनी देर लगा दी कि, दिन समाप्ति पर आ गया? मुझे इसका उत्तर मिले, इससे पहले मैंने पाया कि, मैं खुद भी, अत्यधिक मंद पड़ रहा था, आध्यात्मिक प्रकाश के पीले और नीले (रंग), तीव्रता में घट रहे थे, और मैं पूरी तरह से अभिभूत अनुभव कर रहा था, किसी भी चीज के संबंध में परेशान न होने और आराम करने–पूरी तरह से सोने की इच्छा–मुझ पर हावी होती गई। मैं कुछ समय के लिए, और कुछ नहीं जानता था और तब, मेरे सिर में अतिदुःखदायी कष्ट फूट पड़े। दर्द, जिन्होंने मुझे लाल, नीले, हरे और पीले रंग देखने के लिए मजबूर किया, दर्द, जिन्होंने मुझे ये सोचने के लिए प्रेरित किया कि, तीव्र पीड़ा के कारण मैं एकदम पागल हो जाऊँगा। एक शीतल हाथ, मुझ पर रखा गया और एक नम्रस्वर ने कहा, ''सब ठीक है, लोबसांग। सब ठीक है, आराम करो, आराम करो, सो जाओ!'' दुनियॉ फूले हुए तकिये की तरह से काली होती हुई दिखाई दी, तकिया हंस के परों की तरह नरम था, जिसमें मैं आभारपूर्वक, शांतिपूर्वक डूब गया और तकिया, मुझे अपने घेरे में लपेटता हुआ दिखाई दिया, ताकि मैं कुछ और अधिक नहीं जानू, और फिर मेरी आत्मा आकाश में चली गई, जबकि मेरा सुधरा हुआ शरीर, पृथ्वी पर आराम में रहा।

ये कई घण्टों बाद हुआ होगा, जबकि मैंने पुनः चेतना प्राप्त की, मैं अपने हाथों को, अपने शिक्षक के हाथों में पकड़ा हुआ पाते हुए, अपने बगल में बैठा पाते हुए, सचेत हुआ। जैसे ही मेरी पलकें ऊपर की तरफ फड़फड़ाईं और शाम की रोशनी अंदर प्रवाहित हुई, मैं कमजोरी के साथ मुस्कुराया और वे वापस मुझ पर मुस्कुराये तब, अपने हाथों को अलग करते हुए, उन्होंने अपने बगल से रखी एक छोटी मेज से, किसी मीठी सुगंध वाले पेय का, एक कप उठाया। उसे मेरे होठों से नरमी से लगाते हुए उन्होंने कहा, ''इसे पी जाओ, ये तुम्हारे लिए अच्छा होगा!'' मैंने पिया, और इतना अधिक जीवन, एकबार फिर, मेरे अंदर से उमड़ पड़ा कि, मैंने उठकर बैठने का प्रयास किया। प्रयास अत्यधिक था; मैंने अनुभव किया मानो कि एक महान चिड़िया, एकबार फिर, मेरे सिर पर, नीचे की तरफ, जोर से प्रहार कर रही है, मैंने विभिन्न प्रकार की ज्वलंत रोशनियों, प्रकाशों के राशि समूह को देखा और मैं शीघ्र ही, अपने प्रयासों में थम गया।

शाम की छायाऐं लंबी हो गईं, मेरे नीचे से शंखों की तीव्र आवाजें आईं, और मैं जानता था कि, सेवा शुरू होने वाली है। मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''मुझे आधे घण्टे के लिए जाना है, लोबसांग, क्योंकि अंतरतम, मुझसे मिलना चाहते है, परंतु मेरी अनुपस्थिति में तुम्हारी देखभाल करने के लिए और मौका पड़ने पर मुझे बुलाने के लिए, तुम्हारे मित्र, तिमन और युलग्ये यहॉ हैं।'' उन्होंने मेरे हाथों को कसकर निचोड़ दिया, अपने पैरों पर खड़े हुए, और कमरे के बाहर चले गए।

आधे डरे हुए और पूरी तरह उत्तेजित, दो परिचित चेहरे प्रकट हुए। वे मेरे बगल से पालथी मारकर नीचे बैठ गए, और तिमन ने कहा, ''ओह, लोबसांग! क्या रसोई के स्वामी ने इस सबके बारे में कुछ बताया!'' ''हॉ,'' दूसरे ने कहा, ''और उसे अनावश्यक क्रूरता, सीमा से परे जाने के कारण, लामामठ में से निकाला जा रहा है। अब उसे बाहर छुड़वाया जा रहा है!'' वे उत्तेजना से खदबदा रहे थे और तब तिमन ने फिर कहा, ''मैंने सोचा तुम मर गए हो, लोबसांग, तुम वास्तव में भरवां (stuffed) याक की तरह खून बहा रहे थे!'' मुझे वास्तव में, उनकी ओर देखकर मुस्कुराना पड़ा, उनके स्वर मुझे बता रहे थे कि, वे लामामठ में जीवन की अरुचिकर एकरसता से मुक्त होने की किसी उत्तेजना (excitement) के ऊपर, कितने रोमांचित (thrilled) थे। मुझे, ये जानते हुए कि, मैं भी उत्तेजित हुआ होता, यदि शिकार

मेरे अलावा कोई दूसरा होता, उनकी उत्तेजना के लिए, उनके विरुद्ध कोई शिकायत नहीं थी। मैं उन पर मुस्कुराया और तब मैं कठोर थकान के द्वारा जकड़ लिया गया। मैंने, उन्हें आराम देने के विचार से, एक क्षण के लिए, अपनी ऑखें बंद कीं, और एकबार फिर मुझे कुछ और अधिक पता नहीं चला।

कई, शायद कुल मिला कर सात या आठ दिनों तक, मैंने अपनी पीठ के बल आराम किया और मेरे शिक्षक, ने परिचारिका की भॉति मेरी देखभाल की, परंतु उनके अनुमान से मुझे जिंदा नहीं रहना चाहिए था, क्योंकि लामामठ का जीवन आवश्यकरूप से कोमल या दयालु नहीं होता, वास्तव में, ये सर्वाधिक उपयुक्त का जीवन (survival of the fittest) है। लामा, एक प्रेममय, दयालु, व्यक्ति थे, परंतु यदि वे यहॉ अन्यथा भी होते, तो मुझे जीवित बनाये रखने के, सर्वाधिक कारण रहे होते। जीवन में करने के लिए, जैसा मुझे पहले बता दिया गया था, एक विशेष कार्य था और मैंने सोचा कि मैं एक लड़के के रूप में, कठिनाईयों के दिनों से होकर गुजर रहा था, जो कुछ हद तक, मुझे कठोर बनाने के लिए, मुझे कठिनाईयों और पीड़ाओं में कैद करने के लिए बनी थीं, क्योंकि सभी भविष्यवाणियों, जो मैंने सुनी थीं–और मैंने काफी कम ही सुन पाईं थीं!–ने मेरे जीवन को दुःखमय जीवन, पीड़ाओं का एक जीवन होना बताया था।

परंतु, ये मात्र पीड़ा ही नहीं थी। जैसे ही मेरी हालत सुधरी, मुझे अपने शिक्षक के साथ बात करने के अधिक अवसर मिले। हमने कई चीजों के ऊपर बातें कीं, हमने सामान्य विषयों को पूरा किया और हमने उन विषयों को भी पूरा किया जो असामान्य थे। हमने विभिन्न गूढ़ विषयों को विस्तार के साथ समझा। एक अवसर पर कहते हुए, मुझे याद है, ''आदरणीय लामा का पुस्तकालय अध्यक्ष होना, और इसप्रकार, विश्व के सम्पूर्ण ज्ञान को अपने अधिकार में रखना, एक अद्भुत चीज होनी चाहिए। यदि मेरे भविष्य के बारे में, ये सभी भयानक भविष्यकथन नहीं होते, तो मैं एक पुस्तकालयाध्यक्ष हुआ होता।'' मेरे शिक्षक, मुझे देखकर मुस्कुराये। ''चीनी लोगों में एक कहावत है, 'एक चित्र हजारों शब्दों के मूल्य का होता है (a picture is worth a thousand words),' लोबसांग, परंतु मैं कहता हूँ कि, पढ़ाई या चित्रों को देखने की कोई भी मात्रा, व्यावहारिक अनुभव और ज्ञान को विस्थापित नहीं कर सकती।'' मैंने ये देखने के लिए उनकी ओर देखा कि, क्या वे गंभीर थे और तब मैंने जापानी भिक्षु, केन्जी तेक्विची (Kenji Tekeuchi) के बारे में सोचा, जो लगभग सत्तर वर्षों तक मुद्रित शब्दों को पढता़ रहा और उन्हें अभ्यास में लाने में या जो कुछ भी उसने पढ़ा था, उसको पचाने में असफल रहा।

मेरे शिक्षक ने मेरे विचारों को पढ़ लिया ''हॉ!'' उन्होंने कहा, ''वह बूढ़ा आदमी, मानसिक (Psychic) नहीं है। उसने अपने आपको, हर चीज (every thing), और किसी भी चीज (any thing) को पढ़ने और इनमें से किसी को भी न पचाने के द्वारा, मानसिक अपच दी है। वह मानता है कि, वह अत्यधिक आध्यात्मिकता वाला, एक महान आदमी है। वास्तव में, वह एक बेचारा, गलतियॉ करने वाला बूढ़ा है, जो किसी (अन्य) को, इतना अधिक धोखा नहीं देता, जितना कि स्वयं को।'' लामा ने दुःख के साथ लंबी आह भरी और कहा,'' वह, सब कुछ जानते हुए भी, कुछ नहीं जानता हुआ, आध्यात्मिकरूप से दिवालिया है। संवेदनाहीन, अचेत और गलत सलाह पाया हुआ, जो कुछ भी रास्ते में आये, उस सबको पढ़ने वाला खतरनाक होता है। इस आदमी ने, सभी महान धर्मों को समझा और, उनमें से एक को भी न समझते हुए, फिर भी, अपने आपको, सर्वाधिक महान आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में, स्थापित किया।''

''आदरणीय लामा!'' मैंने कहा, ''यदि पुस्तकों का रखना इतना ही नुकसानदायक है, तो पुस्तकें होती ही क्यों हैं ?'' मेरे शिक्षक ने एक क्षण के लिए, रिक्त्ता के साथ मुझे देखा। (''हॉ!'' मैंने सोचा, ''वे इसके उत्तर को नहीं जानते!'') तब वे फिर मुस्कुराये और उन्होंने कहा, परंतु ''मेरे प्रिय लोबसांग, उत्तर इतना स्पष्ट है! पढ़ो, पढ़ो, और फिर पढ़ो, परंतु किसी भी पुस्तक को अपने विवेक और विचार के ऊपर हावी मत होने दो। पुस्तक पढ़ने, निर्देश देने, या आनंद लेने के लिये बनी है। पुस्तक कोई स्वामी नहीं

है, जिसका बिना किसी कारण के, और अंधे होकर अनुगमन किया जाये। प्रखरता रखने वाला कोई भी व्यक्ति, किसी भी पुस्तक का, कभी भी, गुलाम या दूसरों के शब्दों के ऊपर चलने वाला, नहीं होना चाहिए।'' मैं, पीछे बैठा और अपने सिर को, हॉ में, हिलाया। हॉ, ये मेरी समझ में आता है। परंतु तब, पुस्तकों से परेशान क्यों हों ?

''पुस्तकें, लोबसांग?'' मेरी जानने की इच्छा के उत्तर में, मेरे शिक्षक ने कहा। ''वास्तव में पुस्तकें होनी चाहिए! विश्व की अधिकांश जानकारी विश्व के पुस्तकालयों में है, परंतु किसी मूर्ख को छोड़ कर कोई नहीं कहेगा कि, मानवजाति पुस्तकों की गुलाम है। पुस्तकें, केवल मानवजाति के पथप्रदर्शक के रूप में अस्तित्व में हैं, केवल संदर्भ के लिए, उसके उपयोग के लिए। वास्तव में, यह एक तथ्य है कि, पुस्तकों का दुरुपयोग एक अभिशाप हो सकता है, क्योंकि वे किसी व्यक्ति को ये अहसास करातीं हैं कि, वह जितना है, उससे अधिक बड़ा है और इस प्रकार जीवन के टेढ़े–मेढ़े पथों पर डाल देती हैं, पथ, जिनमें उसे ज्ञान नहीं होता और न ही, अंत तक समझने की कुब्बत।'' ''ठीक है, आदरणीय लामा,'' मैंने फिर पूछा, ''पुस्तकों के उपयोग क्या हैं ?'' मेरे शिक्षक ने मेरी ओर कठोरता से देखा और कहा, ''तुम विश्व के सभी स्थानों तक नहीं जा सकते हो और विश्व के महान स्वामियों के अंर्तगत अध्ययन नहीं कर सकते हो, परंतु मुद्रित शब्द–पुस्तकें–उनकी शिक्षाओं को तुम्हारे पास ला सकती हैं। तुमको, पढ़ी हुई हर चीज पर विश्वास नहीं करना है, न हीं लेखन के महान स्वामियों ने कभी कहा है कि, तुम्हें ऐसा करना चाहिए, तुमको अपना स्वयं का निर्णय लेना चाहिए और उनके बुद्धिमतापूर्ण शब्दों को, एक संकेतक के रूप में उपयोग करना चाहिए, जो तुम्हारी बुद्धिमत्ता के शब्द होंगे। मैं तुम्हें आश्वासन दे सकता हूँ कि, एक व्यक्ति, जो किसी विषय को पढ़ने के लिए तैयार नहीं है, एक पुस्तक को –जैसी वे थी–जकड़कर रखने में, दूसरों के शब्दों को पढ़ते हुए और दूसरों के कामों को देखते हुए, और खुद को, अपने कार्मिक पड़ाव के ऊपर उठाने का प्रयास करने में, स्वयं को असीम नुकसान पहुँचाता है। ये ठीक हो सकता है कि पाठक, एक निम्न प्रगतिशील विकास वाला हो, और उस मामले में, उन चीजों को पढ़ने से, जो वर्तमान में उसके लिए नहीं हैं, वह अपने आध्यात्मिक विकास को विकसित करने के बजाय अवरुद्ध कर सकता है। मैं ऐसे अनेक मामलों को जानता हूँ और हमारा जापानी मित्र, (उनमें से) मात्र एक है।''

मेरे शिक्षक ने, हमारी सभी चर्चाओं में, एक सर्वाधिक आवश्यक सहयोजक (adjunct), चाय, के लिए घण्टी बजाई! जब सेवक भिक्षु के द्वारा चाय लाई जा चुकी थी, हमने फिर अपने वार्तालाप को प्रारंभ किया। मेरे शिक्षक ने कहा, ''लोबसांग! तुम एक सर्वाधिक असामान्य जीवन को पाने वाले हो और उस हद तक, बलपूर्वक तुम्हारा विकास किया जा रहा है, हमारे पास उपलब्ध किसी भी विधि से, तुम्हारी दूरानुभूति की शक्तियॉ बढ़ाई जा रही हैं। अब मैं तुम्हें, ये बताने जा रहा हूँ कि, मात्र कुछ महीनों में, तुम परोक्षदर्शन (clairvoyance) के साथ–साथ, दूरानुभूति के द्वारा, विश्व की कुछ महानतम उत्कृष्ट कृतियों में से कुछ पुस्तकों का–साहित्यक रूप से– अध्ययन करने वाले हो, और जिस भाषा में वे लिखी गईं हैं, उनके ज्ञान के बिना भी, तुम उनका अध्ययन करने जा रहे हो।'' मुझे डर है कि, मैंने उनके ऊपर, वास्तविक आश्चर्य में, मुँह बनाया। मैं किसी पुस्तक को कैसे पढ़ सकता हूँ, जो उस भाषा में लिखी है, जिसे मैं नहीं जानता ? ये एक (ऐसा) मामला था, जिसने मुझे उलझन में डाल दिया, परंतु मुझे शीघ्र ही एक उत्तर मिल गया। ''जब तुम्हारी दूरानुभूति की और परोक्षदर्शन की शक्तियॉ, थोड़ी और अधिक प्रखर हो जाऐंगीं–जैसे कि वे होंगी–उन लोगों के माध्यम से, जिन्होंने पुस्तकों को अभी हाल में ही पढ़ा है या वर्तमान में ऐसे अध्ययन में जुड़े हुए हैं, तुम किसी भी पुस्तक के पूरे विचार पकड़ लेने में समर्थ होओगे। ये दूरानुभूति के कम ज्ञात उपयोगों में से एक है, जो वास्तव में, इन मामलों में परोक्षदर्शन के सहायक हैं। विश्व के दूसरे भागों में, लोग सदैव ही सार्वजनिक पुस्तकालय, या देश के अग्रगण्य पुस्तकालय केन्द्रों में से एक को भी नहीं पा सकते, वे दरवाजे से गुजर सकते हैं, परंतु

जबतक कि वे यह सिद्ध न कर सकें कि, वे वास्तव में, ज्ञान की तलाश में सही विद्यार्थी हैं, तबतक उनको प्रवेश नहीं दिया जाता। तुम्हारे ऊपर ऐसा बंधन नहीं लगाया जायेगा, तुम सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने और अध्ययन करने में सक्षम होओगे और वह तुम्हारे जीवन के सभी दिनों में, और उस समय में भी, जब तुम इस जीवन के परे गुजर जाओगे, तुम्हें सहायक होगा।''

उन्होंने मुझे गूढ़विज्ञान (occultism) के उपयोगों को समझाया। गूढ़ शक्तियों का दुरुपयोग या गूढ़ माध्यमों से किसी व्यक्ति पर वर्चस्व बनाना, वास्तव में, एक भयानक दण्ड का कारण होता है। शाश्वत (esoteric) शक्तियॉं, अधिभौतिकीय (metaphysical) शक्तियॉं, और इन्द्रियों के परे की अनुभूतियॉं (extrasensory perceptions) केवल दूसरों की सेवा में, केवल भले के लिए, कुल मिला कर, केवल विश्व में निहित कुल ज्ञान को बढ़ाने के लिए, उपयोग में लाई जानी हैं,'' परंतु, आदरणीय लामा! ''मैंने अतिआवश्यक रूप से कहा, ''उन लोगों के संबंध में क्या, जो अभिरुचि या उत्तेजना के साथ, शरीर के बाहर जाते हैं, उसके बारे में क्या, जब वे अपने शरीर के बाहर निकल जाते हैं और तब डर के कारण, लगभग मर जाते हैं, क्या उन्हें चेतावनी देने के लिए, कुछ भी नहीं किया जा सकता ?'' इस पर, मेरे शिक्षक दुःख के साथ मुस्कराये, ज्यों ही उन्होंने कहा, ''ये सत्य है, लोबसांग, कि अनेक–अनेक लोग पुस्तकें पढ़ते हैं और बिना किसी उपयुक्त स्वामी के (मार्गदर्शन में), प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। अनेक लोग, या तो शराब के द्वारा या अत्यधिक उत्तेजना के द्वारा या किसी चीज में अत्यधिक गहराई तक घुस जाने के कारण, जो आत्मा के लिए अच्छी नहीं है, स्वयं में से बाहर आते हैं और तब वे भगदड़ मचाते हैं। एक तरीका है, जिसमें तुम मदद कर सकते हो, अपने पूरे जीवन भर, तुम उन लोगों को, जो जानकारी चाहते हैं, चेतावनी दो कि, गूढ़ मामलों में, डर ही एकमात्र डर है। डर अवांछित विचारों को आने देता है, अवांछित अस्तित्व को प्रवेश करने देता है और किसी के ऊपर अधिकार करने के लिए, किसी के ऊपर नियंत्रण भी पा लेने देता है, और तुम, लोबसांग, इसको बार–बार दुहराना कि, स्वयं से डरने के अलावा, कभी भी डरने की आवश्यकता नहीं है। तब तुम मानवता को, डर को बाहर भगाने में शक्तिमान बनाओगे और मानवता को अधिक शुद्ध बनाओगे। ये डर ही है, जो युद्धों को जन्म देता है, डर ही है, जो विश्व में मतभेद कराता है। डर, जो आदमी के हाथ को आदमी के विरुद्ध उठवाता है। डर, और अकेला डर, शत्रु है। और यदि हम सभी लोग, एकबार डर को बाहर फेंक दें–मेरा विश्वास करो–और कुछ भी नहीं है, जिससे डरने की आवश्यकता हो।

डर, ये सारी बात क्या डर के संबंध में थी ? मैंने अपने शिक्षक की ओर देखा और मेरा मानना है कि उन्होंने मेरी ऑंखों में अनकहे प्रश्न को पढ़ लिया। शायद बदले में, उन्होंने मेरे विचारों को दूरानुभूति से पढ़ लिया, ये जो कुछ भी हो, उन्होंने अचानक कहा, ''अच्छा तुम डर के बारे में आश्चर्य कर रहे हो ? ठीक है, तुम नौजवान और भोले हो!'' मैंने अपने ऊपर सोचा, ''ओह! उतना भोला नहीं, जितना वे सोचते हैं!'' लामा मुस्कुराये मानो कि उन्होंने उस मेरे निजी मजाक का आनंद लिया–यद्यपि वास्तव में, मैंने एक शब्द भी नहीं कहा था–और तब उन्होंने कहा, ''डर एक वास्तविक सत्य चीज है, एक खुजली मचाने वाली चीज, तुमने उन लोगों की कहानियॉं सुनी होंगीं, जो शराब के आदी हैं, जो बेहोश हो जाते हैं। ये वे लोग हैं, जो उल्लेखनीय प्राणियों को देखते हैं। इन पियक्कड़ लोगों में से कुछ, गुलाबी धारी वाले हरे हाथियों, तथा और भी अधिक अनोखे–अनोखे प्राणियों को देखने का, दावा करते हैं। मैं तुम्हें कहता हूँ, लोबसांग कि, जीव जो वे देखते हैं, उनके सोचने की–तथाकथित मनगढ़ंत कल्पनाऐं – वास्तव में सत्य जीव हैं।''

मैं अभीतक, डर के प्रकरण के संबंध में स्पष्ट नहीं था। वास्तव में, डर भौतिक अर्थों में क्या था, मैं जानता था। मैंने उस समय के बारे में सोचा, जब मुझे चाकपोरी के लामामठ के बाहर गतिहीनरूप में रुकना पड़ा था ताकि, मुझे प्रवेश की आज्ञा दिये जाने, और नम्र से भी अधिक नम्र, चेले के रूप में स्वीकार किये जाने के पहले, मैं सहन–शक्ति की परीक्षा में से गुजर सकूँ। मैं अपने शिक्षक की ओर

मुड़ा और मैंने कहा, ''आदरणीय लामा, ये डर होता क्या है ? मैंने निम्न सूक्ष्मशरीरधारी प्राणियों के सम्बंध में, चर्चा में, सुना था, फिर भी, मैं स्वयं, अपनी सूक्ष्मशरीरी यात्राओं में, कभी किसी ऐसे प्राणी से नहीं टकराया, जिसने मुझे एक क्षण का भी भय दिया हो। ये सब, भय होता क्या है ?''

मेरे शिक्षक, एक क्षण के लिए स्थिर होकर बैठे, तब मानो सहसा ही, एक निर्णय पर पहुॅचते हुए, वह तेजी से अपने पैरों पर उठे और उन्होंने कहा, ''आओ!'' मैं भी खड़ा हुआ और हम एक पत्थर के गलियारे में, साथ चले और दायीं ओर मुड़े और फिर बांयी ओर, और फिर दांयी ओर। अपनी यात्रा को जारी रखते हुए, अंत में, हम एक कमरे की ओर मुड़े, जहॉ कोई प्रकाश नहीं था। ये अंधकार के एक तलाब में, कदम रखने जैसा था, मेरे शिक्षक पहले उतरे और उन्होंने मक्खन का एक दीपक जलाया, जो दरवाजे के बगल से तैयार रखा हुआ था, तब मुझे लेट जाने का इशारा करते हुए, उन्होंने कहा, ''तुम निम्न स्तर के, सूक्ष्मशरीरी अस्तित्वों को अनुभव करने के लिए, पर्याप्त बड़े हो चुके हो। मैं तुम्हें, इन प्राणियों को देखने में मदद करने के लिए और ये निश्चित करने के लिए कि, तुम्हें उनसे कोई क्षति नहीं हो, तैयार हूॅ, क्योंकि जबतक कि कोई पर्याप्तरूप से तैयार और बचाव सहित न हो, उनसे टकराना नहीं चाहिए। मैं इस प्रकाश को बुझा दूॅगा, और तुम शांति से, आराम करो और अपने आपको अपने शरीर से बाहर निकलने दो–अपने आपको, जहॉ भी तुम चाहो खिसकने दो, बिना किसी लक्ष्य का विचार किए हुए, बिना किसी इरादे के–केवल चलते रहो और हवा की तरह घूमते रहो।'' ऐसा कहते हुए उन्होंने दीपक को बुझा दिया और जब उन्होंने दरवाजे को बंद किया, वहॉ, उस स्थान में, प्रकाश की कोई चमक नहीं थी। मैं उनके श्वसन तक को नहीं पहचान सकता था परंतु, मैं उनकी उष्णता, अपने समीप उनकी आरामदायक उपस्थिति, का एहसास कर सकता था।

मेरे लिए, सूक्ष्मशरीर यात्रा, कोई नया अनुभव नहीं थी, मैं इसप्रकार की यात्रा और हमेशा हर चीज को याद रखने की क्षमता के साथ ही पैदा हुआ था। अब, अपना सिर, अपनी लपेटी हुई पोशाक पर टिकाने के साथ, जमीन पर पसरे हुए, मैंने अपने हाथों को मोड़ा और अपने पैरों को साथ–साथ मिलाया और शरीर को छोड़ने की प्रक्रिया के अंदर प्रवेश किया, प्रक्रिया, जो उन लोगों के लिए, जो इसे जानते हैं, इतनी आसान है। शीघ्र ही, मैंने एक कोमल–सा झटका अनुभव किया, जो सूक्ष्मशरीरी वाहन को भौतिक वाहन से अलग होना इंगित करता है, और उस झटके के साथ, अत्यधिक तेज प्रकाश आया। मैंने स्वयं को, अपने रजत–तंतु के ऊपर, उसके किनारे पर तैरता हुआ महसूस किया। मेरे नीचे एकदम अंधकार था, कमरे, जिसको मैंने अभी छोड़ा था, का अंधकार और जिसमें प्रकाश की कोई चमक नहीं थी। मैंने अपने आसपास देखा, परंतु ये किसी भी प्रकार से सामान्य यात्राओं, जो मैंने पहले की थीं, से अलग नहीं थीं। मैंने अपने आपको, लौह पहाड़ी के ऊपर उठाने का विचार किया, और इस विचार के साथ, मैं कमरे में और अधिक नहीं रहा परंतु, शायद दो या तीन सौ फुट ऊपर उछलते–कूदते हुए, पहाड़ी के ऊपर घूमने–फिरने लगा। अचानक ही, मैं पोटाला के बारे में, अब और अधिक सजग नहीं था, लौह पहाड़ी के बारे में, और अधिक सजग नहीं, तिब्बत, और न ही ल्हासा की घाटी, के बारे में और अधिक सजग। डर के कारण, मैंने बीमार सा महसूस किया। मेरी रजत–तंतु, हिंसकरूप से कॉपने लगी और मुझे कुछ ''रजत–नीली (silver-blue)'' बाड़, जो हमेशा तंतु से प्रकट होती थी और खराब तरीके से पीले–हरे (yellow-green) के रूप में बदल गई, को देखने के लिए विवश किया गया।

बिना चेतावनी के, एक भयानक कोंचने का आभास हुआ, एक भयानक खिंचाव, एक अनुभूति, मानो कि पागल यमदूत, मुझे अपने लपेटे में लेने का प्रयास कर रहे हों। अंतःप्रेरणा से मैंने नीचे देखा और मैंने जो देखा, उसपर लगभग बेहोश हो गया।

मेरे आसपास या कि मेरे नीचे, जैसे कि पियक्कड़ों द्वारा देखे जाते थे, सबसे अधिक अचरज भरे और सर्वाधिक बीभत्स प्राणी थे। सर्वाधिक भयानक चीज, जो मैंने इससे पहले कभी जीवन में नहीं देखी

थी, हिलोरें लेती हुई मेरी तरफ आई, ये एक भद्दे मानवीय चेहरे, परंतु ऐसे रंगों के साथ, जो कभी मानवों के नहीं थे, के द्वारा एक तेज घूंसा मारने की भॉति दिखाई दी। चेहरा लाल था परंतु, नाक और कान हरे थे, और ऑखें अपने गोलकों में घूमती हुई दिखाई पड़ीं। वहॉ दूसरे प्राणी भी थे, जो पहले वालों की तुलना में अधिक उल्टी पैदा करने वाले, और प्रत्येक औरअधिक भयानक दिखाई दिए। मैंने प्राणियों को देखा, जिनका वर्णन कोई शब्द नहीं कर सकते, फिर भी, उन सब में, मानवीय क्रूरता के लक्षण सामान्य दिखाई दिए। वे पहुॅचे, उन्होंने मुझे तोड़ने का प्रयास किया–उन्होंने मुझे मेरी तंतु से अलग फाड़ने का प्रयास किया। दूसरे नीचे पहुॅचे और उन्होंने तंतु को खींचते हुए, उसे अलग करने का प्रयास किया। मैंने देखा, और मैं थरथराया, और तब मैंने सोचा, ''भय! इसप्रकार भय ऐसा होता है! ठीक है, ये चीजें मुझे घायल नहीं कर सकतीं। मैं उनके प्रगटन (manifestation) से अप्रभावित हूॅ, मैं उनके आक्रमण से अप्रभावित हूॅ!'' और ज्यों ही मैंने ऐसा सोचा, अस्त्तिव (entities) गायब हो गए और अधिक नहीं बचे। मुझे अपने भौतिक शरीर से जोड़ने वाली ईथरी तंतु चमकने लगी और अपने सामान्य रंगों की तरफ वापस लौटने लगी; मैंने अपने आपको आनंदित, स्वतंत्र अनुभव किया, और मैं जानता था कि इस परीक्षा से गुजरने और इस पर काबू पा लेने पर, मैं दुबारा किसी भी चीज से, जो कि सूक्ष्मशरीर में हो सकती थी, नहीं डरूॅगा। इसने मुझे निष्कर्षपूर्वक ये सिखाया कि वे चीजें, जिनसे हम डरते हैं, जबतक कि हम, अपने भय के माध्यम से, उन्हें ऐसा करने की आज्ञा न दे दें, हमें हानि नहीं पहुॅचा सकतीं। मेरे रजत–तंतु को सहसा खींचे जाने ने, मेरे ध्यान को दुबारा आकर्षित किया और बिना किसी हल्की सी भी हिचकिचाहट के, बिना किसी भय की छोटी सी भी भावना के, मैंने नीचे की तरफ देखा। मैंने एक छोटे से प्रकाश की झलक को देखा, मैंने देखा कि मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने उस कपकपाते हुए मक्खन के छोटे दीपक को जला दिया था, और मेरा शरीर, मेरे सूक्ष्मशरीर को नीचे की ओर खींच रहा था। मैं कोमलता से, चाकपोरी की छत में होकर नीचे की ओर तैरा ताकि मैं, अपने भौतिक शरीर के ऊपर, क्षैतिज हो गया, तब धीमे से, इतना अधिक धीमे से, मैं नीचे चला और सूक्ष्मशरीर और भौतिकशरीर दोनों एक दूसरे में समा गये। शरीर, जो अब मैं था, धीमे से फड़कने लगा, और मैं उठ बैठा। मेरे शिक्षक ने, अपने चेहरे पर एक स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ, मेरी ओर नीचे की तरफ देखा। ''शाबाश लोबसांग!'' उन्होंने कहा। ''अपने पहले प्रयास में ही, एक अत्यंत–अत्यंत महान गुप्त रहस्य में तुम्हें जाते हुए, तुमने उसकी तुलना में, जो मैंने अपने प्रयास में किया था, अच्छा किया। मुझे तुम्हारे ऊपर गर्व है।

मैं अभी–भी इस भय के व्यापार के संबंध में काफी उलझन में था, इसलिए मैंने कहा, ''आदरणीय लामा, वास्तव में वह क्या है, जिससे डरा जाये ?'' मेरे शिक्षक काफी गंभीर दिखाई दिए–उदास भी–जैसा उन्होंने कहा, ''तुमने एक अच्छा जीवन जिया है, लोबसांग, और तुम्हें डरने के लिए कुछ नहीं है, इसलिए तुम मत डरो। परंतु कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्होंने अपराध किये हैं, जिन्होंने दूसरों के विरुद्ध गलत काम किए हैं, और जब वे एकांत में होते हैं तो उनकी चेतना उन्हें बहुत तीक्ष्णरूप से पीड़ा देती है। निम्न सूक्ष्मशरीरी प्राणी, भय से पोषित होते हैं, वे दुःखभरी चेतना से पोषित होते हैं। लोग बुराइयों की विचार आकृतियॉ (thought forms) बनाते हैं। भविष्य में शायद किसी समय, तुम किसी पुराने–पुराने केथेड्रल या मंदिर में, जो अगणित वर्षों से खड़ा रहा हो, जाने में सक्षम होओगे। उस इमारत की दीवारों से (उदाहरण के लिए हमारा खुद का जो कांग) तुम अच्छाई का अभिज्ञान (sense) पाओगे, जो उस इमारत के अंदर घटित हुई। परंतु यदि तुम सहसा ही, एक पुराने से पुराने बंदीगृह में जाओ, जहॉ अत्यधिक पीड़ा, अत्यधिक प्रताड़ना घटित हुई है, तब तुम, वास्तव में, विपरीत प्रभाव पाओगे। इससे ऐसा समझ में आता है कि, भवनों के अंदर रहने वाले लोग, विचार आकृतियॉ बनाते हैं, जो भवनों की दीवारों के अंदर निवास करती हैं, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि, एक अच्छी इमारत के पास, अच्छी विचार आकृतियॉ होती हैं, जो अच्छे उत्सर्जन प्रेषित करती हैं, और दुष्टों के

स्थानों में, उनके अंदर के दुष्ट विचार होते हैं, जहॉ से फिर ये स्पष्ट होता है कि, बुराई वाली इमारतों से, केवल बुरी विचार आकृतियॉ ही बाहर आ सकती हैं, और उनके द्वारा, जो परोक्षज्ञानी हैं, सूक्ष्मशरीरी अवस्था में, ये विचार तथा विचार आकृतियॉ, देखी और छुई जा सकती हैं।

मेरे शिक्षक ने, एक क्षण के लिए सोचा, और तब कहा, ''कुछ ऐसे मामले हैं, जिनसे तुम परिचित होओगे, जब भिक्षु और दूसरे लोग कल्पना करते है कि, वे अपनी खुद की यथार्थता से बड़े हैं, वे एक विचार आकृति बनाते है और समय में वह विचार आकृति, उनके पूरे चेहरे को रंगीन बना देती है। एक प्रकरण है, जिसे मैं इस समय याद करता हूॅ, जिसमें एक बूढ़े बर्मी भिक्षु (Burmese monk) ने–एक उल्लेखनीय रूप से भोला आदमी भी, मुझे कहना है–वह एक दीन–हीन भिक्षु था, नासमझ भिक्षु, फिर भी हमारी संगत का, और हमारा भाई होने के कारण, हम उसे हर सुविधा और राहत देते थे। यह भिक्षु अकेलेपन का जीवन जीता था, जैसे कि हममें से अनेक करते हैं, परंतु अपना समय, ध्यान और स्वाध्याय में लगाने और दूसरी भली चीजों को करने के बजाय, उसने बदले में कल्पना की कि, वह बर्मा के देश में एक शक्तिशाली आदमी था। उसने कल्पना कि, वह दीन–हीन भिक्षु नहीं था, जिसने कठिनता से ही, अपना कदम ज्ञानप्राप्ति के पथ पर उठाया था। इसके बजाय, अपने प्रकोष्ठ के एकांत में, उसने कल्पना की कि, वह एक बहुत बड़ा राजकुमार था, शक्तिशाली राज्यों और महान संपदा वाले राज्य का राजकुमार। प्रारंभ में यह हानिरहित था, यदि अनुपयोगी विचलन नहीं होता, ये हानिरहित था। निश्चितरूप से ऐसी कुछ निष्क्रिय कल्पनाओं और आंकाक्षाओं के लिए, किसी ने उसकी निंदा नहीं की होती क्योंकि, जैसा मैं कहता हूॅ, उसके पास न तो विवेक ही था और न ही वास्तव में, स्वयं को, हाथ में उपस्थित आध्यात्मिक कार्यों के लिये समप्रित कर देने का ज्ञान। यह व्यक्ति वर्षों तक, जब कभी भी वह अकेला होता, महान–महान राजकुमार बना रहता। उसने अपने चेहरे को रंगीन बना लिया, इससे उसके रंगढंग प्रभावित हुए और समय के गुजरने के साथ–साथ, नम्र भिक्षु गायब होता दिखा और अहंकारी राजकुमार सामने आने लगा। अंत में, वह बेचारा भाग्यहीन व्यक्ति, वास्तव में अधिक दृढ़ता के साथ, यह विश्वास करता रहा कि, वह बर्मा के देश का एक राजकुमार था। एक दिन उसने एक मठाध्य क्ष को कहा, मानो कि मठाध्यक्ष, उस राजकुमार के राज्य में गुलाम था। मठाध्यक्ष, इतना शांतिमय मठाध्यक्ष नहीं था, जैसे कि हममें से कुछ होते हैं, और मुझे कहते हुए दुःख है कि, जो झटका राजकुमार के रूप में बदले हुए, बेचारे भिक्षु को लगा, उसने उसके संतुलन को बिगाड़ दिया, और घटाकर उसे मानसिक अस्थिरता की अवस्था वाली स्थिति में पहुॅचा दिया। परंतु तुमको, ऐसी चीजों के बारे में चिंता करने की कोई आवश्कता नहीं है; तुम स्थाई हो, पूरी तरह संतुलित और निर्भय। चेतावनी के माध्यम से, केवल ये शब्द ध्यान रखो : भय आत्मा का अपक्षय (corrode) करता है। व्यर्थ और अनुपयोगी कल्पनाऐं, किसी को भी गलत रास्ते पर डाल देती हैं, ताकि कल्पनाओं का वर्षों का ये मार्ग, उसके लिए यथार्थ हो जाता है, और वास्तविकताऐं दृष्टि से ओझल हो जाती हैं और अनेक जन्मों तक, दुबारा फिर से प्रकाश में नहीं आतीं। अपना कदम मार्ग पर रखो, किन्हीं जंगली अभिलाषाओं और न हीं कल्पनाओं को, अपने चेहरे को रंगने या विकृत करने दो। ये माया का लोक है, परंतु हममें से उनके लिए, जो इस ज्ञान का सामना कर सकते हैं, यदि हम इस लोक के परे हों तब माया को यथार्थ में बदला जा सकता है।''

मैंने इस पूरे के ऊपर विचार किया, और मुझे ये स्वीकार करना चाहिए कि मैं उस भिक्षु, जो मानसिक रूप से राजकुमार में बदल गया था, के बारे में पहले से ही सुन चुका था, क्योंकि मैंने इस संबंध में, लामाओं के पुस्तकालयों में, किसी पुस्तक में पढ़ा था। ''आदरणीय शिक्षक!'' मैंने कहा, ''तब गूढ़शक्तियों के क्या उपयोग हैं ?'' लामा ने अपने हाथ जोड़े और सीधे मेरी तरफ देखा, ''गूढ़ज्ञान के उपयोग ? ठीक है, ये काफी सरल है, लोबसांग! हम उन लोगों की मदद करने के लिए बनाये गए हैं, जिन्हें मदद की आवश्यकता है। हम उन लोगों की मदद के लिए, पात्र नहीं हैं, जो हमारी मदद नहीं

चाहते, और अभी तक मदद पाने के लिए तैयार भी नहीं हैं। हम गूढ़ शक्तियों या क्षमताओं का न तो खुद के लाभ के लिए, न ही भाड़े या पारितोषिक के लिए उपयोग करते हैं। गूढ़ शक्तियों का संपूर्ण उद्देश्य है : किसी के विकास को उर्ध्वदिशा में तीव्र करना, किसी के उन्नयन को गति देना और कुल–मिलाकर, पूरे विश्व, न केवल मानवीय विश्व, बल्कि प्रकृति के विश्व, पशुओं के–हर चीज के विश्व की, मदद करना।''

हमको, मंदिर के भवन में, हमारे पास प्रारंभ होने वाली सेवा के द्वारा, फिर हस्तक्षेप किया गया, और किसी चर्चा का जारी रखना, जबकि वे पूजे जा रहे हों, देवताओं के प्रति असम्मानजनक हो सकता था। हमने अपनी बातचीत को समाप्त किया और मौन हो कर, लपलपाते हुए मक्खन के दीपों की ज्वाला में, जो अब मंद जल रहे थे, बैठे।

अध्याय आठ

वास्तव में, पार्गो कलिंग के आधार पर, लंबी घास पर, ठंडक में लेटना सुखद था। मेरे ऊपर, मेरे पीछे, प्राचीन चट्टानें, स्वर्ग की ओर उठीं और सपाट जमीन पर मेरे दृष्टिकोण से, ऊपर इतना ऊॅचा बिंदु, बादलों को मिटाता हुआ सा लगा। काफी ठीक तरह से, बिन्दु को बनाने वाली ''कमल की कली'' आत्मा का प्रतीक थी, जबकि ''पत्तियॉ'' जो ''कली'' को सहायता देती थीं, वायु को निरूपित करती थीं। मैं, ''पृथ्वी पर जीवन'' के प्रदर्शन के विरुद्ध, आराम से आधार पर लेटा हुआ था। मेरी पहुॅच के ठीक परे–जब तक कि मैं खड़ा न होऊॅ–''प्राप्ति के चरण (steps of attainment)'' थे। ठीक है, मैं उन्हें अब ''प्राप्त'' करने का प्रयास कर रहा था!

यहॉ लेटना और भारत, चीन और बर्मा से पैदल चल कर आते हुए व्यापारियों केा देखना, सुखद था। जबकि उनमें से कुछ, अनोखे सामानों से लदे हुए, दूर के स्थानों से जानवरों की रेल (काफिले) का नेतृत्व करते हुए, पैदल थे। दूसरे, सबार और आसपास टकटकी लगाते हुए, और अधिक भव्य, या संभवतः, मात्र साधारणरूप से थके हुए, हो सकते थे। मैंने व्यर्थ ही अनुमान लगाया कि उनके टोकरों और थैलों में क्या था, और तब अपने आपको, एक झटके के साथ खींच लिया! यही कारण था कि मैं यहॉ था! मैं यहॉ अनेक विभिन्न लोगों के, जैसा मैं कर सकता था, प्रभामंडल को देखने के लिए था। मैं यहॉ प्रभामंडल और दूरानुभूति से ''अनुमान लगाने के लिए'' था कि ये लोग क्या कर रहे थे, ये क्या सोच रहे थे, और उनके इरादे क्या थे।

सड़क के ठीक सामने की तरफ, थोड़ा हट कर, एक बेचारा अॅधा भिखारी बैठा था। वह धूल से ढका हुआ था। वह गुदड़ी में और अर्थहीन बैठा था और गुजरने वाले यात्रियों से (भीख के लिये) रिरयाता था। (यात्रियों की) एक आश्चर्यजनक संख्या, उसे देखने पर प्रसन्न होते हुए, उसे सिक्के फैंक देती थी। अंधा, गिरने वाले सिक्कों के लिए घसीटते, टटोलते हुए, और अंत में, जब वे जमीन पर गिरते और शायद एक पत्थर के विरुद्ध खनकते, ध्वनि के द्वारा उनका पता लगाता। कभी–कभार, वास्तव में यदा–कदा, वह एक छोटे सिक्के को चूक जाता, और यात्री उसे उठा लेते और फिर से गिरा देते। उसके बारे में सोचते हुए, मैंने अपने आलसी सिर को उसकी दिशा में घुमाया और कौंधते हुए आश्चर्य में सीधा बैठा। उसका प्रभामंडल! जिसके लिए, मैंने इससे पहले प्रेक्षण करने की कभी परेशानी नहीं उठाई थी, अब, सावधानीपूर्वक देखते हुए, मैंने देखा कि वह अंधा नहीं था, मैंने देखा कि वह धनी था, उसके पास दूर भण्डारित किया हुआ पैसा और सामान था और चूॅकि ये उसके जीवनयापन करने का सरलतम तरीका था, जिसे वह जानता था, वह एक बेचारे अंधे भिखारी होने का नाटक कर रहा था। नहीं! ऐसा नहीं हो सकता, मैं गलती पर था, मैं अत्यधिक आत्मविश्वास में या वैसा ही कुछ था। शायद मेरी शक्तियॉ जवाब दे रहीं थीं। ऐसे किसी विचार से पीड़ित होते हुए, मैं अपने अनिच्छुक पैरों पर लड़ खड़ाया और अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, जो सामने कुन्दू लिंग (Kundu Ling) में थे, से ज्ञानप्राप्ति की तलाश में गया।

मैं, कुछ सप्ताह पहले, ताकि मेरे ''तीसरे नेत्र'' को और अधिक विस्तार से खोला जा सके, अपने तीसरे नेत्र को खोलने की एक शल्यक्रिया से गुजरा था। मुझे जन्म से ही, मानवों, पशुओं और वनस्पतियों के शरीर के आस–पास, प्रभामंडल को देखने की क्षमता के साथ, अतीन्द्रियज्ञान की असामान्य शक्तियॉ मिली हुईं थीं। कष्टदायी शल्यक्रिया, मेरी शक्तियों को, लामा मिंग्यार डोंडुप के द्वारा अपेक्षित सीमा से भी अधिक, बढ़ाने में सफल हुई। अब मेरा विकास, तेजी से दौड़ लगा रहा था! सभी गूढ़ प्रकरणों में मेरे प्रशिक्षण ने, मेरे जगने के पूरे घण्टों को पा लिया। मैंने अपने आपको, शक्तिशाली शक्तियों के द्वारा निचोड़ा हुआ महसूस किया, क्योंकि ये लामा या वो लामा, दूरानुभूति और दूसरे अजब–अजब बलों से, जिनकी कार्यपद्धति का, मैं अब इतनी तीव्रता के साथ अध्ययन कर रहा था, ज्ञान को मेरे अंदर उड़ेल रहे थे। कक्षा का काम क्यों करें, जबकि किसी को दूरानुभूति द्वारा पढ़ाया जा

सकता हो ? किसी आदमी के इरादों के ऊपर आश्चर्य क्यों करें, जबकि कोई उन्हें उसके प्रभामंडल से देख सकता हो ? परंतु, मैं उस अंधे आदमी के लिए आश्चर्य कर रहा था!

''ओह! आदरणीय लामा! आप कहॉ हैं ?'' मैं, अपने शिक्षक की तलाश में सड़क के आर–पार दौड़ते हुए, चीखा। छोटे पाक्र में, लगभग अपने खुद के उत्सुक पैरों के ऊपर गिरते हुए, मुझे ठोकर लगी। ''ऐसा!'' एक गिरे हुए ठूंठ के ऊपर, शांति से बैठे हुए मेरे शिक्षक, मुस्कराये '' तुम, इसलिये! उत्तेजित हो, (क्योंकि) तुमने अभी–अभी पता लगा लिया है कि ''अंधा'' आदमी (वैसे ही) देखता है जैसे कि तुम।'' मैं हॉफता हुआ, श्वांस की कमी की वजह से और नाराजगी से हॉफता हुआ खड़ा हुआ। ''हॉ!'' मैं चिल्लाकर बोला, ''आदमी एक लुटेरा, धोखेबाज है, क्योंकि वह भले दिल वाले लोगों से चुराता है। उसे जेल में रखा जाना चाहिए!'' लामा, मेरे लाल क्रोधित चेहरे को देखते हुए, हॅसी से फट पड़े। ''परंतु लोबसांग,'' उन्होंने नरमी से कहा, ''ये सब उठा–पटक क्यों ? वह आदमी, किसी भी, किसी दूसरे आदमी की तरह से, जो प्रार्थनाचक्रों को बेचता है, अपनी सेवाओं को बेच रहा है। लोग जिन्हें उदार समझते हैं, वे उसे महत्वहीन सिक्के देते हैं; क्योकि ये उन्हें अच्छा महसूस कराता है। कुछ समय के लिए, ये उनके आण्विक कंपनों (molecular vibrations) की दर को बढ़ा देता है–उनकी आध्यात्मिकता को बढ़ा देता है–उनको देवों के अधिक समीप रखता है। ये उनके लिए भला होता है। सिक्के, जो वे देते हैं ? कुछ नहीं हैं! वे उन्हें खोते नहीं हैं।'' ''परंतु वह अंधा नहीं है!'' मैं खीझ कर बोला, ''वह लुटेरा है।'' ''लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''वह हानिरहित है, वह सेवा बेच रहा है। बाद में, पश्चिमी विश्व में, तुम पाओगे कि, विज्ञापन करने वाले लोग, ऐसे–ऐसे दावे करते हैं, जिनकी असत्यता किसी के स्वार्थ के लिए घातक होती है, अभी अजन्मे बच्चों को विकृत बना देती है, और जैसे–तैसे काम चलाऊ मस्तिष्क वाले लोगों में, उन्मत्त खफ्ती या पागल के रूप में परिवर्तित कर देती है।''

उन्होंने गिरे हुए पेड़ को थपथपाया और मुझे अपने बगल से बैठने का इशारा किया। मैं बैठा और अपनी ऐड़ियों से, छाल पर ताल बजाने लगा। ''तुमको प्रभामंडल और साथ–साथ दूरानुभूति का उपयोग करने का अभ्यास करना चाहिए।'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''एक का उपयोग करने और दूसरे का उपयोग नहीं करने से–इस मामले की भॉति, तुम्हारे निष्कर्ष विकृत हो सकते हैं। हर और हर समस्या पर, किसी की सभी संभावनाओं का उपयोग करना, किसी की सभी शक्तियों को सहन करना, आवश्यक होता है। अब, इस शाम को मुझे बाहर जाना है, और मेंत्सेकांग (Menzekang) अस्पताल के, महान चिकित्सीय लामा, आदरणीय चिनरोबनोबो (Chinrobnobo), तुमसे बातचीत करेंगे। और तुम उनसे बात करोगे'' ''ओह!'' मैंने, खेदपूर्वक कहा, ''परंतु वह कभी मुझसे बात नहीं करते, कभी मेरी तरफ देखते भी नहीं!'' ''ये सब–किसी न किसी तरीके से–आज शाम को बदल जायेगा,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''किसी न किसी तरीके से!'' मैंने सोचा। ये बहुत मनहूस दिखाई दिया।

मैं अपने शिक्षक के साथ, एक नई यद्यपि पुरानी, फिर भी हमेशा ताजी, चट्टानी रंगीन नक्काशियों को देखने के लिये एक क्षण के लिए रुकते हुए, लौहपहाड़ी पर वापस चला। तब हम तीखे और चट्टानी पथ पर चढ़े। ''जीवन की तरह, यह पथ, लोबसांग,'' लामा ने कहा, ''जीवन, एक कठोर और चट्टानी पथ का अनुगमन करता है, जिसमें अनेक जाल और गड्ढे होते हैं। फिर भी, यदि कोई डटा रहता है, तो वह चोटी को पा लेता है।'' जैसे ही हम पथ की चोटी पर पहुॅचे, जहॉ से मंदिर की सेवा का बुलावा भेजा गया था, हम में से हर एक, अपने स्वयं के रास्ते पर, कोई अपने सहयोगियों के पास, और मैं अपनी श्रेणी के दूसरों के पास, चला। जैसे ही सेवा समाप्त हुई, और मैंने खाने में सहभागिता की, मुझसे भी छोटा, कुछ–कुछ उदास, एक चेला मेरे पास आया। ''मंगलवार लोबसांग,'' उसने संकोचपूर्वक कहा, ''पवित्र चिकित्सीय लामा चिनरोबनोबो, चिकित्सीय स्कूल में, तुमसे तुरंत मिलना चाहते हैं।''

मैंने अपनी पोशाक को सीधा किया, कुछ लंबी गहरी सांसें लीं, जिससे कि मेरी टंकारती हुई नसें शांत हो सकें, और इस आश्वासन के साथ चला कि, मैं चिकित्सकीय पाठशाला के ऊपर महसूस न करूँ। ''आह!'' एक महान आवाज, तीव्रता में बढ़ी, एक स्वर, जिसने मुझे मंदिर के शंख की गहरी आवाज का ध्यान दिलाया। मैं उनके सामने खड़ा हुआ और समय के साथ आदरित, अपने सम्मान को उन्हें भेंट किया। लामा एक बड़े आदमी थे, लंबे भारी, चौड़े कंधे वाले, और एक छोटे बच्चे के लिए, एक पूरी तरह से आश्चर्य प्रेरित करने वाली आकृति। मैंने अहसास किया कि, उनके हाथों से पड़ा हुआ एक मुँह तोड़ तमाचा, मेरे सिर को सीधे ही, मेरे कंधों से उड़ा देगा और उसे लुढ़काता हुआ, पहाड़ी के बगल से गिरा देगा। तथापि, उन्होंने मुझे अपने बगल में बैठने के लिए कहा, न्यौता देते हुए ढंग से, मुझे इस प्रकार कहा कि, मैं लगभग, बैठने की स्थिति में गिर गया!

''अब, बच्चे!'' दूर स्थित पहाड़ों के बीच, लुढ़कती हुई विजली की गड़गड़ाहट की तरह से, गहरी महान आवाज ने कहा। ''मैंने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ सुना है। तुम्हारे सम्मानीय शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, दावा करते हैं कि, तुम स्वयं चमत्कार हो, कि तुम्हारी परासामान्य (paranormal) क्षमताऐं, अत्यधिक हैं। हम देखेंगे!'' मैं बैठा और थरथराया। ''क्या तुम मुझे देखोगे ? तुम क्या देखते हो ?'' उन्होंने पूछा। मैं और अधिक थरथराया, ज्यों ही मैंने, पहली चीज को, जो मेरे मन में घुसी, कहा; ''मैं देखता हूँ, इतना बड़ा आदमी, पवित्र चिकित्सकीय लामा, जिसे, जब मैं यहाँ पहली बार आया, समझता था कि, ये एक पहाड़ था।'' उनकी उपद्रवी हँसी ने, हवा का एक ऐसा तूफान खड़ा किया कि, मैं आधा डर गया कि, ये मेरी पोशाक को उड़ा देगा। ''मेरी तरफ देखो, बच्चे, मेरे प्रभामंडल को देखो और मुझे बताओ कि तुम क्या देखते हो!'' उन्होंने आदेश दिया। तब, ''मुझे बताओ कि तुम प्रभामंडल में क्या देखते हो और ये तुम्हारे लिए क्या अर्थ रखता है।'' मैंने उनको देखा, प्रत्यक्षतः नहीं, घूरते हुए नहीं, क्योंकि यह अक्सर कपड़े पहने हुई आकृति के प्रभामंडल को धुधला कर देता है; मैंने उनकी तरफ देखा परंतु, एकदम उन पर नहीं।

''श्रीमान्!'' मैंने कहा, ''मैं सबसे पहले, आपके शरीर के बाहरी भौतिक खाके (physical outlines) को उससे धुंधला देखता हूँ, जैसा कि ये बिना किसी पोशाक के होता। तब, आपके एकदम समीप, मैं ताजी लकड़ी के धुंऐ के रंग की, एक धुंधली नीली–सी रोशनी को देखता हूँ। ये मुझे बताती है कि, आप कठोर परिश्रम से कार्य करते रहे हैं; कि आपने रात में, बहुत देर तक, निद्रारहित रातें गुजारीं हैं और आपकी ईथरी ऊर्जा (etheric energy) काफी निम्न है।'' उन्होंने, सामान्य की तुलना में कुछ हद तक चौड़ी फैली हुई ऑखों से, मेरी तरफ देखा और संतुष्टि में अपना सिर हिलाया। ''आगे बढ़ो!'' उन्होंने कहा।

''श्रीमान्!'' ''मैंने कहना जारी रखा, ''आपका प्रभामंडल, क्षैतिज और उर्द्धवाधर दोनों पर्तो में, रंगीन पर्तो में है और आपके दोनों तरफ, लगभग, नौ फुट दूर तक विस्तारित होता है। आपके पास, उच्च आध्यात्मिकता का पीला रंग है। इससमय आप आश्चर्य कर रहे हैं कि, मेरी उम्र का कोई एक, इतना अधिक बता सकता है और आप सोच रहे हैं कि मेरे शिक्षक, कुल–मिलाकर, इसके बारे में कुछ जानते हैं। आप सोच रहे हैं कि आपको, मेरी क्षमताओं के बारे में, आपके अभिव्यक्त किए गये संदेहों के ऊपर, उनसे खेद प्रकट करना पड़ेगा।'' हँसी के महान ठहाके के साथ, मुझे हस्तक्षेप किया गया। ''तुम ठीक हो, बच्चे, तुम एकदम ठीक हो!'' उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा, ''आगे बढ़ो!''

''श्रीमान्!'' (ये मेरे लिए बच्चों का खेल था!) ''आपको अभी हाल में ही कुछ गड़बड़ हुई है और आपको अपने यकृत के ऊपर, एक झटका झेलना पड़ा है। जब आप बहुत जोर से हँसते हैं तो, यह आपको घायल करता है, और यदि आप, कुछ धतूरा जड़ी लें और इसके बेहोशी के प्रभाव में, गहरी मालिश करायें, आप आश्चर्यचकित होंगे। आप सोच रहे है कि ये भाग्य है, जिसने तय किया कि, छः हजार से अधिक जड़ीबूटियों में धतूरा कम मात्रा में उपलब्ध होगा।'' अब वह हँस नहीं रहे थे, वह

निष्कपट सम्मान के साथ, मेरी तरफ देख रहे थे। मैंने जोड़ा, ''आपके प्रभामंडल में, ये और इंगित किया जाता है, श्रीमान्, कि थोड़े ही समय में, आप तिब्बत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण, चिकित्सीय मठाध्यक्ष होंगे।''

उन्होंने मुझे कुछ आशंका के साथ घूर कर देखा। ''मेरे बच्चे,'' उन्होंने कहा, ''तुम्हारे पास महान शक्ति है–तुम और आगे जाओगे। कभी–भी, कभी–भी, अपने अंदर की शक्ति का दुरुपयोग मत करना, ये खतरनाक हो सकता है। अब हम समानों की भॉति, प्रभामंडल के ऊपर चर्चा करें। परंतु अभी हम चाय पर चर्चा करें।'' उन्होंने छोटी–सी चांदी की घण्टी को उठाया और इतना जोर से बजाया कि, मैं डर गया कि कहीं, ये उनके हाथ से छूट न जाये। सेकण्डों के अंदर, एक नौजवान भिक्षु ने चाय के साथ आने की फुर्ती दिखाई और–ओह, आनंदों का आनंद!–भारत माता की विलासिताओं में से कुछ! ज्यों ही हम वहॉ बैठे, मैंने चिंतन किया कि सभी उच्च लामाओं के क्वार्टर, सुखदायक थे। अपने नीचे, डोडपाल (Dodpal) और खाती (Khati), मेरी फैलाई हुई भुजाओं के अंदर–जैसे ये दिखाई दिए– मैं ल्हासा के बड़े–बड़े उद्यानों को देख सकता था। हमारे क्षेत्र की मठिया (Chortan) के बॉयी तरफ थोड़ा आगे, केसर लखांग (Kesar lhakhang) एक संतरी की तरह से खड़ा था, जबकि दूर उत्तर में, सड़क के उस पार, मेरा मनपसंद स्थान, पार्गो कलिंग (पश्चिमी द्वार) आकाश में ऊॅचा खड़ा था।

''प्रभामंडल कैसे उत्पन्न होता है, श्रीमान् ?'' मैंने पूछा। ''जैसे तुम्हारे आदरणीय शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने तुम्हें बताया,'' उन्होंने समीक्षा की, ''मस्तिष्क, अधिस्वयं (Overself) से संदेश ग्रहण करता है। मस्तिष्क में चुम्बकीय धाराऐं उत्पन्न होती हैं। संपूर्ण जीवन विद्युतमय है। प्रभामंडल, विद्युत शक्ति का प्रकटीकरण (manifestation) है। किसी के सिर के आसपास, जैसा कि तुम भलीभॉति जानते हो, एक तेजोमंडल (halo) या निम्बस (nimbus) होता है। पुराने चित्रों में, हमेशा ही किसी संत या देवता को, सिर के पीछे भाग के आस–पास, ऐसे एक ''स्वर्णिम कटोरे (Golden Bowl)'' के साथ दिखाया जाता है।'' ''प्रभामंडल और तेजोमंडल को, इतने कम लोग ही क्यों देख पाते हैं, श्रीमान् ?'' मैंने पूछा। ''कुछ लोग प्रभामंडल के अस्तित्व पर अविश्वास करते हैं, क्योंकि, वे इसे नहीं देख सकते। वे भूल जाते हैं कि वे हवा को भी नहीं देख सकते, और बिना हवा के वे ठीक तरह से व्यवस्था भी नहीं कर सकते! कुछ–अत्यंत ही थोड़े से लोग–प्रभामंडलों को देख पाते हैं, दूसरे नहीं। कुछ लोग दूसरों की तुलना में, उच्च अथवा निम्न आवृतियों को सुन सकते हैं। इसे प्रेक्षक की आध्यात्मिकता की कोटि (degree) से कुछ भी लेना–देना नहीं है, कोई भी, जो वैसाखियों पर चलने की योग्यता रखता है, आवश्यकरूप से, किसी व्यक्ति से अधिक आध्यात्मिकता प्रदर्शित कर सकता है।'' वे मुझ पर मुस्कुराये और उन्होंने आगे कहा, ''मैं वैसाखियों पर, लगभग तुम्हारी ही तरह से, चला करता था। अब मेरी आकृति इसके लिए उपयुक्त नहीं है।'' मैं भी ये सोचते हुए मुस्कराया, कि उन्हें वैसाखियों के रूप में, तीन टॉगों वाले जोड़े की आवश्यकता होगी।

''जब हमने, तुम्हारी 'तीसरी ऑख' को खोलने के लिए, तुम्हारी शल्यक्रिया की,'' महान चिकित्सीय लामा ने कहा, ''हम यह देखने में सक्षम थे कि तुम्हारे अग्र–लोब (frontal lobe) के भागों का विकास, औसत व्यक्ति से एकदम अलग था और इसलिए हमने ये मान लिया कि, तुम भौतिकरूप से, अतीन्द्रियज्ञानी और दूरानुभूतिपूर्ण होने के लिए ही पैदा हुए थे। ये उन कारणों में से एक है, कि तुम्हें ऐसे गहन और अग्रणी प्रशिक्षण प्राप्त हुए और आगे भी करोगे।'' उन्होंने अत्यधिक संतुष्टि के साथ, मेरी तरफ देखा और कहना जारी रखा, ''तुम यहॉ, चिकित्सा के स्कूल में, थोड़े–से दिनों के लिए रहने वाले हो। यह देखने के लिए कि, हम तुम्हारी क्षमताओं को औरअधिक कैसे बढ़ा सकते हैं और तुम्हें अधिक–से–अधिक कैसे पढ़ा सकते हैं, हम पूरी तरह से तुम्हारी जॉच करने जा रहे हैं।'' वहॉ, दरवाजे पर रुक–रुक कर खांसी की आवाज हुई, और मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप, चलते हुए मेरे कमरे में आये। मैं अपने पैरों पर उछल कर खड़ा हुआ और उनको नमन किया–जैसे कि महान चिनरोबनोबो ने किया था। मेरे शिक्षक मुस्करा रहे थे। ''मुझे तुम्हारा दूरानुभूति संदेश मिल गया था,'' उन्होंने महान

चिकित्सीय लामा से कहा, ''इसलिए उतनी तेजी के साथ, जितनी मेरे लिए संभव थी, मैं तुम्हारे पास आया कि, मेरे नौजवान मित्र के मामले में, तुम शायद, मुझे, अपने निष्कर्षों की पुष्टि, सुनने का आनंद प्रदान करोगे।'' वे रुके, और मुझ पर मुस्कुराये और बैठ गए।

महान लामा चिनरोबनोबो भी मुस्कुराये और उन्होंने कहा, ''आदरणीय सहकर्मी! मैं इस नौजवान आदमी को गवेषणा के लिए स्वीकार करने के, आपके उत्कृष्ठ ज्ञान को, प्रसन्नतापूर्वक नमन करता हूँ। आदरणीय सहकर्मी, आपकी खुद की प्रखरताऐं असंख्य हैं, आप आश्चर्यजनकरूप से सर्वगुण संपन्न हैं, परंतु आपको कभी–भी, इस जैसा बच्चा नहीं मिला।'' तब वे दोनों, सभी चीजों में, हॅसे और उनके पीछे लामा चिनरोबनोबो नीचे कहीं पहुँचे और उन्होंने अखरोट के अचार के तीन जार उठाये! मैं मूर्ख दिखा होऊँगा क्योंकि, वे दोनों मेरी तरफ मुड़े और उन्होंने मेरे ऊपर हॅसना प्रारंभ कर दिया। ''लोबसांग, तुम अपनी दूरानुभूति क्षमता का उपयोग नहीं कर रहे हो। यदि तुम कर रहे होते, तो तुम आदरणीय लामा के प्रति सचेत होते, और आदरणीय लामा और मैं, क्या इतने दोषी होते, कि एक दॉव लगाते। हम लोगों के बीच में ये तय हुआ था कि, यदि तुम मेरे कथनों के अनुसार सिद्ध होते हो, तब सम्मानीय चिकित्सकीय लामा, तुम्हें अचार के अखरोट के तीन जार देंगे, जबकि यदि, तुम मेरे द्वारा दावा किए गये मानकों के ऊपर खरे नहीं उतरे, तो मैं एक लंबी यात्रा पर जाऊँगा और अपने चिकित्सीय मित्र के लिए, निश्चित चिकित्सकीय कार्य करूँगा।''

मेरे शिक्षक मुझ पर मुस्कुराये फिर और उन्होंने कहा, ''वास्तव में, मैं हर हालत में उनके लिए यात्रा पर जाने वाला हूँ, और तुम मेरे साथ जाओगे, परंतु हमें मामलों को सीधा रखना चाहिए और अब, आदरणीय संतुष्ट हैं।'' उन्होंने तीन जारों की ओर इशारा किया और कहा, ''इन्हें तुम अपने पास रखो, लोबसांग, जब तुम यहॉ से जाओगे–जब तुम इस कमरे को छोड़ो–इन्हें अपने साथ ले जाना क्योंकि वे विजेता के विजय उपहार हैं, और इस मामले में तुम विजेता हो।'' मैंने वास्तव में, उल्लेखनीयरूप से मूर्ख महसूस किया, स्पष्टरूप से, मैं उन दोनों उच्च लामाओं के ऊपर, दूरानुभूति शक्तियों का उपयोग नहीं कर सका था। ऐसी चीज के विचार ने, मेरी रीढ़ की हड्डी में हो कर, मुझे कंपकंपी भरी ठंडक दी। मैं अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप को प्यार करता था, और मैं महान लामा चिनरोबनोबो की बुद्धि और ज्ञान का महान सम्मान करता था। छिप कर बातें सुनना, भले ही दूरानुभूति के द्वारा, वास्तव में, ये उनके प्रति असम्मान होता, ये बुरी बात होती। लामा चिनरोबनोबो, मेरी तरफ मुड़े और उन्होंने कहा, ''हॉ मेरे बच्चे, तुम्हारी भावनाऐं, तुमको श्रेय प्रदान करती हैं। मैं तुम्हारा अभिवादन करते हुए और तुम्हें हम लोगों के बीच यहॉ पाते हुए, वास्तव में, प्रसन्न हूँ। हम तुम्हारे विकास में तुम्हारी मदद करेंगे।''

मेरे शिक्षक ने कहा, ''अब लोबसांग, तुम इस विशेष इमारत में, शायद एक सप्ताह के लिए रुकने जा रहे हो, क्योंकि तुम्हें प्रभामंडल के बारे में बहुत ज्यादा पढ़ाया जाना है। ओह हॉ,!'' मेरी नजर को शब्दों में व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा, ''मुझे मालूम है कि, तुम प्रभामंडल के संबंध में जानते हो, तुम सबकुछ जानते हो। तुम प्रभामंडल को देख सकते हो, और तुम प्रभामंडल को पढ़ सकते हो, परंतु अब तुम्हें इसके 'क्यों और कारण (whys and wherefores)', सीखने हैं और तुमको सीखना है कि, दूसरा व्यक्ति कितना नहीं देख पाता। अब मैं तुम्हें छोड़ रहा हूँ, परंतु मैं तुम्हें कल फिर मिलूँगा।'' वे अपने पैरों पर खड़े हुए और, वास्तव में, हम भी वैसे ही खड़े हुए। मेरे शिक्षक ने उन्हें बिदाई दी और तब वे बड़े आरामदायक प्रकोष्ठ में से बाहर निकले। लामा चिनरोबनोबो मेरी ओर मुड़े और उन्होने कहा, ''इतने अधिक उदास मत हो, लोबसांग, तुम्हें कुछ नहीं होने जा रहा है–हम केवल तुम्हारी मदद करने और तुम्हारे विकास को त्वरित करने का प्रयास कर रहे हैं। सबसे पहले, हमें मानवीय प्रभामंडल के सम्बंध में थोड़ी चर्चा करनी है। वास्तव में, तुम जीवंत प्रभामंडल देखते हो और तुम प्रभामंडल के संबंध में समझ सकते हो, परंतु कल्पना करो कि, यदि तुम्हें ये उपहार न मिला होता–इतने उपहार प्राप्त नहीं

होते, अपने आपको 99.9 प्रतिशत या इससे भी अधिक, विश्व की आबादी के लोगों की स्थिति में रखो।'' उन्होंने बहुत तेजी से, चांदी की अपनी छोटी घण्टी को फिर बजाया और सेवक एक बार फिर, चाय और वास्तव में, ''आवश्यक दूसरी चीजें के साथ, जो मुझे, जब मैं चाय ले रहा होता, अत्यधिक प्रसन्न करती थीं, कोलाहल करता हुआ आया। यहॉ ये कहना दिलचस्प हो सकता था कि तिब्बत में, कई बार हम, एक दिन में साठ से अधिक चाय पी जाते हैं। वास्तव में, तिब्बत एक ठंडा देश है और गर्म चाय, हमको गर्म रखती है। हम इसे छोड़ने और पेय खरीदने में, जैसेकि पश्चिमी विश्व के लोग खरीदते हैं, समर्थ नहीं थे और जबतक कि कोई वास्तविक दयालु व्यक्ति, भारत जैसे देश से, इन चीजों को, जो तिब्बत में उपलब्ध नहीं थीं, नहीं लाये, हम चाय और त्सम्पा तक सीमित थे।

हम व्यवस्थित हो गए और लामा चिनरोबनोबो ने कहा, ''हम पहले ही प्रभामंडल की उत्पत्ति के सम्बंध में चर्चा कर चुके हैं। ये मानव शरीर का जीवनबल है। मैं एक क्षण के लिए ये मान लेने जा रहा हूँ, लोबसांग, कि तुम प्रभामंडल को नहीं देख सकते और तुम प्रभामंडल के सम्बंध में कुछ नहीं जानते, क्योंकि केवल ऐसा मान लेने पर ही, मैं तुम्हें वह बता सकता हूँ, जो सामान्य औसत व्यक्ति देखता है और नहीं भी देखता।'' मैंने, ये प्रदर्शित करने के लिए कि मैं समझ गया, अपने सिर को हांमी में हिलाया। वास्तव में, मैं प्रभामंडल और उस जैसी चीजों को देखने की जन्मजात क्षमता रखता था, और ये क्षमताऐं 'तीसरी ऑख' की शल्यक्रिया के द्वारा और अधिक बढ़ा दी गईं थीं, और पिछले कई अवसरों पर, मुझे नीचे गिराते हुए कि दूसरे मेरे समान, वह सब नहीं देखते, मुझे लगभग ये कहने पर, जाल में फंसा लिया गया था कि, मैं बिना इसके क्या देखता था। कुछ समय पहले का एक अवसर मुझे याद आया, जब मुझे कहा गया था कि, एक व्यक्ति अभी भी जिंदा है–एक व्यक्ति, जिसे बूढ़े त्सू और मैंने, सड़क के किनारे लेटा और पड़ा हुआ देखा था–और त्सू ने कहा था कि, मैं एकदम गलत था, आदमी मर चुका था। मैंने कहा था, ''परंतु त्सू, आदमी की बत्तियॉ अभी भी जल रहीं हैं!'' सौभाग्यवश, जैसा कि मैंने बाद में महसूस किया, हवा के तूफान, जो हमारे पीछे गुजर रहा था, ने मेरे शब्दों को विकृत कर दिया, जिससे त्सू उसके अर्थ को नहीं समझ पाया। कुछ नाड़ियों पर, तथापि, उसने सड़क के बगल से लेटे हुए आदमी की परीक्षा की थी और पाया था कि वह जिंदा था! परंतु यह एक विषयांतर है।

''औसत व्यक्ति और महिलायें, लोबसांग, मानव प्रभामंडल को नहीं देख सकते, कुछ, वास्तव में, ये विश्वास रखते हैं कि मानवीय प्रभामंडल जैसी कोई चीज नहीं है। वे इसीप्रकार, ये भी कह सकते है कि हवा जैसी कोई चीज नहीं है, क्योंकि वे उसे नहीं देख सकते!'' चिकित्सकीय लामा ने, ये देखने के लिए कि, क्या मैं उन्हें समझ रहा था, या मेरे विचार अखरोट की तरह से घुमंतू हो रहे थे, मेरी ओर देखा। ध्यान के मेरे प्रदर्शन से संतुष्ट होने के साथ–साथ, उन्होंने साधुता से सिर हिलाया और कहना जारी रखा, ''जबतक किसी शरीर में जीवन है, तबतक वहॉ एक प्रभामंडल होगा, जो उन लोगों के द्वारा देखा जा सकता है, जिनमें ये शक्ति या उपहार या क्षमता है–तुम इसे जो भी कहना चाहो कहो। मैं तुम्हें स्पष्ट करना चाहूँगा, लोबसांग, कि प्रभामंडल को स्पष्टतः देखने के लिए व्यक्ति, जिसे देखा जा रहा है, एकदम नंगा होना चाहिए। हम क्यों पर बाद में चर्चा करेगें। मात्र सामान्य प्रेक्षणों के लिए, किसी व्यक्ति को देखने के लिए, उसका कुछ कपड़े पहने रहना पर्याप्त है, परंतु यदि तुम किसी चीज को, जो चिकित्सकीय कारणों से जुड़ी हुई है, देखने जा रहे हो, तब वह व्यक्ति एकदम और पूरी तरह से नंगा होना चाहिए। ठीक है, पूरी तरह से शरीर पर आवरण डाले हुए और शरीर से एक इंच के आठवें भाग की दूरी तक से लगाकर तीन या चार इंचों तक विस्तारित होते हुए, ये ईथरीय आवरण होता है। ये नीला–भूरा, धुंध होता है, कोई इसे मुश्किल से ही धुंध कह सकता है, क्योंकि यद्यपि, ये धुंध दिखाई पड़ता है परंतु, कोई इसमें होकर स्पष्ट देख सकता है। यह ईथरीय आवरण, पूरी तरह से पाश्विक उत्सर्जन (animal emanations) होते हैं, ये विशेषरूप से शरीर की पाश्विक जीवंतता के कारण

निष्कासित होते हैं ताकि, एक बहुत स्वस्थ व्यक्ति, एक बड़ा चौड़ा ईथरिक आवरण रखता है, ये शरीर से तीन या चार इंच दूर भी हो सकता है। केवल सर्वाधिक उपहार प्राप्त ही, लोबसांग, इससे अगली पर्त को देख पाते हैं, क्योंकि ईथरी पर्त और प्रभामंडल के ठीक बीच में, एक और पट्टी होती है, शायद तीन इंच दूर, और उस पट्टी के बीच रंगों को देखने के लिए, किसी को भी, वास्तव में, उपहार प्राप्त या प्रखरतापूर्ण होना होता है। परंतु, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं वहाँ, केवल रिक्त आकाश के सिवाय, कुछ नहीं देख सकता।''

चूँकि मैं उस स्थान में सभी लोगों को देख सकता था और ऐसा कहने की जल्दी करता था, मैंने इस संबंध में, वास्तव में, खुश और जिंदादिल अनुभव किया। ''हाँ, हाँ, लोबसांग, मैं जानता हूँ कि, तुम उसे आकाश में देख सकते हो, क्योंकि तुम इस दिशा में सर्वाधिक प्रखरता प्राप्त, एक व्यक्ति हो, परंतु मैं बहाना कर रहा था कि, तुम प्रभामंडल को बिल्कुल नहीं देख सकते क्योंकि, ये सब मुझे तुम्हें समझाना था।'' मेरी टोका–टोकी करने की प्रवृति के कारण, चिकित्सीय लामा ने, अपने विचारों को दुबारा सिद्ध करते हुए– निसंदेहरूप से दुबारा सिद्ध करते हुए, मेरी ओर देखा। जब उन्होंने सोचा कि, मैं आगे काफी हद तक, टोका–टोकी से वंचित कर दिया गया हूँ उन्होंने कहना जारी रखा, ''तब सबसे पहले, ईथरी पर्त होती है। ईथरी पर्त के बाद, वहाँ एक क्षेत्र होता है, जिसे सिवाय एक रिक्त आकाश के, हम में से बहुत ही कम लोग, विभेदित (distinguish) कर सकते हैं। उसके बाहर, स्वयं प्रभामंडल होता है। प्रभामंडल, पाश्विक जीवंतता (vitality) पर इतना अधिक निर्भर नहीं करता, जितना कि वह आध्यात्मिक जीवंतता पर निर्भर करता है। प्रभामंडल, घुमड़ती हुई पट्टियों से बना होता है और दृश्यवर्णक्रम (vissible spectrum) के सभी रंगों की सीमाऐं, वहाँ होती हैं और इसका अर्थ ये है कि, अपने भौतिक नेत्रों के द्वारा तुम जितने रंग देख सकते हो, उससे अधिक रंग उसमें होते हैं क्योंकि, प्रभामंडल भौतिक दृष्टि की अपेक्षा, दूसरी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा देखा जाता है। मानव शरीर का प्रत्येक अंग, अपनी खुद की प्रकाश किरणों को भेजता है, जैसे–जैसे व्यक्ति के विचार परिवर्तित होते हैं, (वह) अपने प्रकाश की किरणों को बदलता है और जगमगाता है। इन संकेतों में से अनेक, उल्लेखनीय कोटि तक, ईथरी और उसके परे के आकाश में, उपस्थित होते हैं और जब नंगा शरीर देखा जाता है, प्रभामंडल, स्वास्थ्य या बीमारियों के संकेतों को बढ़ाता हुआ दिखाई देता है, जिससे ये स्पष्ट है कि, हममें से वे, जो पर्याप्तरूप से अतीन्द्रियज्ञानी हैं, किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य अथवा अन्यथा के संबंध में, बता सकते हैं।''

इस संबंध में, मैं सब कुछ जानता था। मेरे लिए ये सब, बच्चों का खेल था, और मैं ''तीसरी ऑख' की शल्यक्रिया के बाद से ही, इस तरह की चीजों का लगातार अभ्यास करता रहा था। मैं चिकित्सीय लामाओं के समूहों को जानता था, जो पीड़ित लोगों के बगल से बैठते थे और ये देखने के लिए उन्हें कैसे मदद की जा सकती है, नंगे शरीर की परीक्षा करते थे। मैंने सोचा कि, मुझे शायद, ऐसे ही कार्य के लिए, प्रशिक्षण दिया जाने वाला था।

''अब!'' चिकित्सीय लामा ने कहा, ''तुम विशेषरूप से, उच्चरूप से प्रशिक्षित किए गए हो, और ये आशा की जाती है और सोचा जाता है कि, जब तुम हमारी सीमाओं के परे, उस महान पश्चिमी विश्व में जाओगे, तुम एक उपकरण को बनाने में सफल होओगे, जिसके द्वारा वे लोग भी, जिनके पास गूढ़शक्ति बिल्कुल नहीं है, मानवीय प्रभामंडल को देखने में सफल होंगे। डॉक्टर, मानवीय प्रभामंडल को देख कर और ये देख कर कि वास्तव में, उस व्यक्ति के साथ, क्या गलत था, उस व्यक्ति की बीमारी का इलाज करने में सफल होंगे। कैसे, इस पर हम बाद में चर्चा करेंगे। मैं जानता हूँ कि ये पूरी चीज काफी थका देने वाली है, इसमें से काफी कुछ, जो मैं तुम्हें बता चुका हूँ, वास्तव में, तुम्हें भलीभांति ज्ञात है परंतु, इस दृष्टि से ये थका देने वाला हो सकता है; तुम एक स्वाभाविक अतीन्द्रियज्ञानी हो, तुमने शायद कभी–भी, अपने उपहार के संचालन की कार्य प्रणाली पर विचार नहीं किया होगा, और

ये एक ऐसा मामला है, जिसका इलाज किया जाना चाहिए क्योंकि, एक व्यक्ति, जो किसी विषय को केवल आधा जानता है, आधा प्रशिक्षित और आधा उपयोगी है। तुम, मेरे मित्र, वास्तव में, अत्यधिक उपयोगी होने जा रहे हो! परंतु, इस सत्र को हम यहीं समाप्त करें, लोबसांग, हम अपने खुद के घरों की मरम्मत करेंगे–क्योंकि कोई एक तुम्हारे लिये अलग से रखा गया है–और तब हम आराम कर सकते हैं और उन मामलों पर सोच सकते हैं, जिसको हमने अभी इतना संक्षिप्त में स्पर्श किया है। इस हफ्ते के लिए तुम्हें किसी सेवा में उपस्थित रहने की आवश्यकता नहीं है, ये स्वयं अंतरतम के आदेशों के अनुसार है, तुम्हारी सारी ऊर्जाऐं, तुम्हारा संपूर्ण समप्रण, उन विषयों का स्वामित्व प्राप्त करने में, जिन्हें मैं और मेरे सहयोगी तुम्हारे सामने रखने जा रहे हैं, पूरी तरह से निर्देशित किया गया है।''

वह अपने पैरों पर खड़े हुए और मैं अपने पैरों पर। चांदी की वह घंटी, एक बार फिर, कठोर हाथों में पकड़ ली गई और इतनी तेजी से हिलाई गई कि मैंने वास्तव में, महसूस किया कि वह बेचारी चीज, गिरकर टूट जायेगी। सेवकभिक्षु दौड़ता हुआ अन्दर आया और चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो ने कहा, ''तुम मंगलवार लोबसांग रम्पा को देखोगे, क्योंकि जैसा तुम जानते हो, वह यहॉ एक सम्मानित अतिथि हैं। उनके साथ ऐसा व्यवहार करना, जैसे कि, किसी उच्चश्रेणी के आगन्तुक भिक्षु के साथ करते।'' वह मेरी ओर मुड़े और झुके और वास्तव में, मैंने जल्दी से वापस नमन किया, और तब सेवक ने मुझे अपने पीछे आने का संकेत किया। ''रुको!'' लामा चिनरोबनोबो चीखे। ''तुम अपने अखरोटों को भूल गये हो!'' मैं पीछे दौड़ा और कुछ–कुछ स्तब्धता में मुस्कुराते हुए, जैसा मैं करता था, जल्दी से उन बहुमूल्य जारों (jars) को उठा लिया, तब मैंने उस प्रतीक्षारत सहायक तक जाने की जल्दी की।

हम एक छोटे गलियारे की तरफ गये और सेवक मुझे एक बहुत सुन्दर कमरे में ले गया जिसमें, प्रसन्नता की नदी के आरपार नौकाओं को दिखाती हुई एक खिड़की थी। ''मुझे आपकी देखभाल करनी है, स्वामी,'' सेवक ने कहा। ''आपकी सुविधा के लिए, वहॉ घंटी रखी है, अपनी इच्छा पर आप इसका उपयोग करें।'' वह मुड़ा और बाहर चला गया। मैं मुड़कर उस खिड़की की ओर आया। पवित्र घाटी के आरपार के दृश्य ने, मुझे सम्मोहन की स्थिति में डाल दिया, क्योंकि फुलाये गए याक के चमड़े से ढ़की हुई एक नाव, किनारे से ठीक बाहर निकल गई थी और नाविक, उस तेज चलनेवाली नदी के आरपार, उससे खेल रहा था। दूसरी तरफ, मैंने देखा, वहॉ तीन या चार आदमी थे जो, उनके पहनावे से, कुछ महत्व के रहे होंगे– एक प्रभाव, जिसकी पुष्टि, नाविक के चापलूसी ढंग से हुई। मैंने कुछ मिनटों के लिए ध्यान से देखा, और तब, सहसा, मैंने स्वयं को अपेक्षाकृत अधिक थका हुआ महसूस किया, जिसकी मैं संभवतः कल्पना कर सकता था। मैं, एक बैठने की गद्दी के सम्बन्ध में, बिना इस बात की भी चिन्ता किये हुए, जमीन पर नीचे बैठा और इससे पहले कि इसके सम्बन्ध में, मैं कोई चीज जानूँ, मैं पीछे की तरफ लुढ़क गया और नींद में चला गया।

प्रार्थना चक्रों की चटचट की आवाज के साथ, घंटे गुजरते गए। सहसा मैं, एकदम सीधा, भय से कॉपता हुआ, उठ बैठा। सेवा ! मैं सेवा के लिए विलंबित हो चुका था। अपना सिर एक ओर रखते हुए, मैंने सावधानी से सुना। कहीं एक ध्वनि, प्रार्थना की रीति से, जपी जा रही थी। वह काफी थी– मैं अपने पैरों पर उछल कर खड़ा हुआ और परिचित दरवाजे की तरफ दौड़ा। वह वहॉ नहीं थी ! हड्डियों को खड़खड़ाते हुए धमाका, मैं पत्थर की दीवार से टकराया और टकराते हुए अपनी पीठ के बल गिरा। एक क्षण के लिए, जैसे ही उस पत्थर से भी टकराया, एक नीली सफेद चमक, मेरे सिर के अन्दर पैदा हुई, तब मुझमें कुछ सुधार हुआ और एकबार फिर, मैं अपने पैरों पर उछला। अपनी देरी के ऊपर भगदड़ करते हुए, मैं कमरे के चारों तरफ दौड़ा और वहॉ कोई दरवाजा नहीं दिखाई देता था। सबसे खराब – वहॉ कोई खिड़कियॉ तक भी नहीं थीं!''

''लोबसांग!'' एक आवाज ने अंधेरे में से कहा, ''क्या तुम बीमार हो ?'' सेवक की आवाज ने, ठण्डे बर्फीले पानी को छिड़के जाने की तरह से, मुझे वापस अपने होश–हबाश में ला दिया । ओह!''

मैंने संकोचपूर्वक कहा, ''मैं भूल गया था, मैंने सोचा मुझे सेवा के लिए देरी हो गई थी। मैं भूल गया था कि, मुझे इससे माफ कर दिया गया था !'' वहॉ एक दबी हुई मंद मुस्कान हुई और एक स्वर ने कहा, ''मैं दीपक को जला दूँगा, क्योंकि आज रात को यहॉ बहुत अंधकार है।'' दरवाजे के रास्ते से एक हल्की सी चमक उभरी– ये सर्वाधिक अनअपेक्षित स्थान में थी !– और सेवक, मेरी तरफ को आगे बढ़ा। ''सर्वाधिक आश्चर्य करनेवाला अवकाश,'' उसने कहा, ''पहले मैंने सोचा कि, याकों के एक समूह को खुला छोड़ दिया गया है और वह यहॉ अन्दर था।'' उनकी मुस्कान ने अपराध के सारे शब्द लूट लिये। मैं फिर से व्यवस्थित हुआ, और सेवक से उसकी रोशनी वापस ले ली गई। अपेक्षाकृत कम अंधकार के परे, प्रखररूप से चमकते हुए तारों की ज्वाला को, गोली की तरह मारती हुई, एक खिड़की थी, और न गिने जा सकने योग्य, आकाश के मीलों के आरपार, उसकी यात्रा अब समाप्ति पर थी। मैं लुढ़क गया और सो गया।

नाश्ता वही पुराना घिसा पिटा और नीरस त्सम्पा और चाय थी। पोषण करनेवाली, बचाकर रखनेवाली, परंतु प्रेरणाहीन। तब सेवक आया और उसने कहा, ''यदि आप तैयार हों, मुझे आपको कहीं दूसरी जगह ले जाना है।'' मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ और उसके साथ कमरे के बाहर चला। इसबार मैं एक भिन्न रास्ते से, चाकपोरी के एक भाग में, जिसे मैं नहीं जानता था कि वह भी था, चला। नीचे की तरफ, काफी दूरी तक नीचे की तरफ, जबतक कि मैंने नहीं सोचा कि, हम खुद लोहे के पहाड़ के कटोरों में, अंदर तक उतर रहे थे। अब वहॉ सिवाय उन दीपकों के, जिन्हें हम ले जा रहे थे, प्रकाश की कोई चमक नहीं थी। अंत में सेवक रुक गया, और उसने आगे की ओर इशारा किया। ''चलते जाऐं– सीधे आगे, और बॉयी ओर के कमरे में मुड़ जाऐं।'' हामी के साथ, वह मुड़ा और अपने कदमों पर वापस चला।

मैं, पैर घसीटता हुआ चला, आश्चर्य करते हुए ''अब क्या ?'' बॉयी ओर का कमरा मेरे सामने था, मैं इसमें अंदर मुड़ा और आनन्द के साथ ठिठका। मेरे ध्यान को आकर्षित करने वाली पहली चीज थी, कमरे के मध्य में स्थापित किया हुआ एक प्रार्थनाचक्र। मेरे पास, केवल इसे हल्की सी झलक से देखने के लिए, समय था, परंतु फिर भी यह मुझे वास्तव में, एक अनौखा प्रार्थनाचक्र दिखाई दिया, तब मेरा नाम पुकारा गया, ''ठीक है, लोबसांग ! हम प्रसन्न हैं कि तुम यहॉ हो।'' मैंने देखा और मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप वहॉ थे, उनके बगल से महान चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो बैठे हुए थे, और मेरे शिक्षक के दूसरी तरफ, एक अत्यधिक विशिष्टतापूर्ण दिखता हुआ, मारफाता नाम का एक भारतीय लामा था। उसने कभी एकबार, पश्चिमी दवाइयों को पढ़ा था, और उसने वास्तव में, किसी जर्मन विश्वविद्यालय में अध्ययन किया था, जो मेरा ख्याल है, हाइडेलबर्ग (Heidelberg) कहलाता था। अब वह एक बौद्ध भिक्षु था, वास्तव में एक लामा, परंतु ''भिक्षु'' एक सामान्य पद है।

भारतीय ने, अत्यधिक तलाश करते हुए, इतना चुभाते हुए मेरी ओर देखा कि, मैंने सोचा कि वह मेरी पोशाक की पीठ को बनाने वाले सामान को, देख रहा होगा–वह ठीक मेरे अन्दर देखता हुआ प्रतीत हुआ। तथापि, इस विशिष्ट अवसर पर, मेरी चेतना में, कोई बुरी बात नहीं थी और मैंने उनके घूरने का जवाब दिया। कुल मिलाकर, मुझे उस पर क्यों नहीं घूरना चाहिए ? मैं उतना ही अच्छा था जैसा कि वह, क्योंकि मुझे लामा मिंग्यार डोंडुप और महान चिकित्सीय लामा चिनरोबनोबो के द्वारा प्रशिक्षित किया गया था। उसके कठोर ओठों के आरपार एक मुस्कान बलपूर्वक उभरी, मानो कि, उसके कार्यपालन (execution) ने उसको अत्यधिक तीव्र कष्ट पैदा दिया। उसने हामी भरी, और मेरे शिक्षक की ओर मुड़ा, ''हॉ, मैं संतुष्ट हूँ कि, लड़का वैसा ही है, जैसा कि, आप कहते हैं। ''मेरे शिक्षक मुस्कराये–परन्तु उनकी यह मुस्कराहट, जबरदस्ती की नहीं थी, यह स्वाभाविक, स्वच्छन्द, और वास्तव में, दिल को गर्मी पहुँचाने वाली थी।

महान चिकित्सकीय लामा ने कहा, ''लोबसांग, हम तुम्हें यहॉ नीचे इस गुप्त कक्ष में लाये हैं

क्योंकि, हम तुम्हें चीजें दिखाना चाहते हैं और उन पर तुम्हारे साथ चर्चा करना चाहते हैं। तुम्हारे शिक्षक और मैंने तुम्हारी परीक्षा की है और हम तुम्हारी शक्तियों से, शक्तियॉ जो तीव्रता में बढ़ाई जा रही हैं, संतुष्ट हैं। हमारे भारतीय सहयोगी मारफाता, का यह विचार नहीं है कि, ऐसे चमत्कार तिब्बत में अस्तित्व में थे। हमारी आशा थी कि, तुम हमारे सभी कथनों को सिद्ध कर दोगे। मैंने उस भारतीय के ऊपर देखा और सोचा, ''ठीक है, यह वह आदमी है, जो स्वयं के बारे में प्रशंसा करता है।'' मैं लामा चिनरोबनोबो की तरफ मुड़ा और मैंने (उनसे) कहा, ''आदरणीय श्रीमान्, अंतरतम, जो अनेक अवसरों पर मुझे सुनने के लिए, मेरे साथ काफी भले रहे हैं, ने स्पष्टतापूर्वक मुझे किसी भी प्रमाण को देने के विरुद्ध, यह कहते हुए सावधान किया है कि, आलसी मन के लिए, प्रमाण, मात्र एक दर्द निवारक होता है। जो लोग प्रमाण चाहते हैं, वे प्रमाण की सत्यता को स्वीकार करने के लिए समर्थ नहीं होते, चाहे उसे कितनी भी अच्छी तरह से सिद्ध क्यों न किया जाए।'' चिकित्सकीय लामा, चिनरोबनोबो हॅसा जिससे कि मैं सर्वाधिकरूप से डर गया, मानो मैं हवा के तूफान के द्वारा उड़ा दिया जाऊॅगा, मेरे शिक्षक भी हॅसे, और उन दोनों ने भारतीय मारफाता को देखा, जो पास से बैठे हुए मुझे देख रहे थे। ''बच्चे!'' भारतीय ने कहा, ''तुम अच्छी तरह बात करते हो परंतु, यह बातचीत कुछ सिद्ध नहीं करती, जैसा तुम अपने आप कहते हो। अब, मुझे बताओ, बच्चे, तुम मेरे अंदर क्या देखते हो ?'' मैंने इस सम्बन्ध में भयभीत महसूस किया, क्योंकि अधिकांश, जो मैंने देखा, मैं उसे पसंद नहीं करता था। ''प्रख्यात श्रीमान् !'' मैंने कहा, मुझे डर है कि, यदि मैं वह कहूॅ, जो मैं देख रहा हूॅ तब आप वास्तव में, इसे गलत ले सकते हैं और मान सकते हैं कि, मैं आपके प्रश्न का उत्तर देने के बजाय, मात्र भूल कर रहा हूॅ।'' मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने सहमति में हामी भरी, और महान चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो लामा की एक बड़ी प्रकाशमय मुस्कान, पूर्ण चन्द्रमा की तरह उठते हुए, विस्तृत हो गई। ''जो चाहते हो वह कहो, बच्चे, क्योंकि यहॉ, हमारे पास बनावटी, सुन्दर बातों के लिए समय नहीं है'' भारतीय ने कहा। ''कुछ क्षणों के लिए, मैं महान भारतीय लामा को देखते हुए रुका, उन्हें देखते हुए तबतक खड़ा रहा, जबतक कि मेरी टकटकी की तीव्रता के कारण, वह खलबला नहीं गया, तब मैंने कहा, ''प्रख्यात श्रीमान् ! आपने मुझे, जो कुछ मैं देखता हूॅ, कहने का आदेश दिया है और मैं समझता हूॅ कि, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप और महान चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो भी मुझ से स्पष्टतः बुलवाना चाहते हैं। अब, यह वह है, जो मैं देखता हूॅ, मैंने आपको, इससे पहले कभी नहीं देखा परंतु, आपके प्रभामण्डल और आपके विचारों से, मैं इसे इसप्रकार पहचानता हूॅ : आप एक ऐसे आदमी हैं, जिसने विस्तार से यात्राऐं की हैं, और आपने विश्व के महान महासागरों के पार भी यात्राऐं की हैं। आप उस छोटे द्वीप की ओर गये हैं, जिसका नाम मैं नहीं जानता, परंतु यहॉ के सारे लोग श्वेत हैं और जहॉ, एक दूसरा छोटा द्वीप, समीप में स्थित है मानो कि, महान देश ने, ये एक बछेड़ा पैदा किया हो। आप इन लोगों के घोर विरोधी थे और वे वास्तव में, किसी ..... चीज के संबंध में '' आपके विरुद्ध, कुछ कार्यवाही करने में आशंकित थे क्योंकि – मैं यहॉ हिचकिचाया, क्योंकि चित्र विशेषरूप से अस्पष्ट और गुप्त था, ये उन चीजों की ओर सन्दर्भ कर रहा था, जिनके बारे में मुझे जरा सा भी ज्ञान नहीं था। तथापि, मैं आगे बढ़ा–''वहॉ एक भारतीय शहर, जो मैं आपके मन के अनुसार, कल्पना करता हूॅ, कि कलकत्ता था, के साथ जुड़ी हुई कुछ चीज थी और वहॉ, जहॉ उस द्वीप के लोग बहुत भारी असुविधा या स्तब्धता में थे, एक श्याम छिद्र (black hole) से संबंधित कुछ चीज थी। एक प्रकार से उन्होंने सोचा कि आप, परेशानी पैदा करने के बजाय, उन्हें उस परेशानी से बचा सकते थे।'' महान लामा चिनरोबनोबो फिर से हॅसे, और ये सुनकर मेरे कानों को अच्छा लगा क्योंकि वह हॅसी, ये इंगित करती थी कि, मैं सही रास्ते पर था। मेरे शिक्षक ने मुझे कोई संकेत नहीं दिया, जो कुछ भी हो परंतु, भारतीय खर्राटे भरने लगा।

मैंने कहना जारी रखा, ''आप दूसरे देश में गये और मैं आपके मन में, हाइडलबर्ग

(Heidelberg) का नाम स्पष्टरूप से देख सकता हूँ। आपने उस देश में, अनेक बर्बर रीतियों के अनुसार, चिकित्सा का अध्ययन किया, जिसमें आपने काफी काट–छॉट और बोआई (cutting, chopping and sawing) की, और आपने उन विधियों का उपयोग नहीं किया जिनका, हम यहॉ तिब्बत में, उपयोग करते हैं। अंत में, आपको किसी प्रकार का एक बड़ा कागज दिया गया, जिस पर बहुत सारी मोहरें (seals) लगीं थीं। मैं आपके प्रभामण्डल से यह भी देखता हूँ कि, आप एक बीमार व्यक्ति हैं।'' मैं यहॉ एक गहरी सॉस लेता हूँ क्योंकि, मैं नहीं जानता कि मेरे अगले शब्द किस प्रकार आपके द्वारा प्राप्त किये जायेंगे। ''आप जिस बीमारी से पीड़ित हैं, वह एक वह है, जिसका कोई इलाज नहीं है, यह वह है, जिसमें शरीर की कोशिकाऐं, बेहिसाब दौड़ती हैं और जंगली घास–पतवार की तरह से, किसी नमूने के अनुसार, नियत किये गये तरीके के अनुसार नहीं उगती हैं, परंतु फैलतीं हैं और रोक देती हैं और महत्वपूर्ण अंगों को जकड़ लेती हैं। श्रीमान् ! आप स्वयं, इस पृथ्वी पर अपने जीवन के परास (span) को, अपने विचारों के प्रकृति के अनुसार समाप्त कर रहे हैं, जो दूसरों के मनों (minds) में, किसी प्रकार की भलाई के नहीं हैं।'' अनेक क्षणों के लिए– जो मेरे लिए अनेक वर्ष हो सकते थे!– वहॉ कोई ध्वनि नहीं हुई, और तब महान चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो ने कहा, ''ये एकदम ठीक है, लोबसांग, यह पूरी तरह ठीक है!'' तब भारतीय ने कहा, ''लड़के को, इस संबंध में, शायद पहले से, अग्रिमरूप से, तैयार कर दिया गया था।''

मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा, ''किसी ने भी आपके संबंध में चर्चा नहीं की है, इसके विपरीत उसने जो कुछ कहा, उसमें से अधिकांश, हमारे लिए नया है, क्योंकि न तो हमने आपका प्रभामण्डल, और न हीं आपका मन, जॉचा है क्योंकि, आपने ऐसा करने के लिए हमें आमंत्रित नहीं किया। परंतु इस मुद्दे पर मुख्य बिन्दु यह है कि, लड़के, मंगलबार लोबसांग रम्पा, के पास ये शक्तियॉ हैं, और ये शक्तियॉ और भी आगे तक विकसित की जा रही हैं। हमारे पास झगड़ने के लिए समय नहीं है, झगड़े के लिए कोई स्थान नहीं है, बदले में हमारे पास करने के लिए गम्भीर कार्य हैं। आओ ! वे अपने पैरों पर उठे और मुझे बड़े प्रार्थनाचक्र की ओर ले चले।

मैंने उस अनजान चीज को देखा और मैंने देखा कि, कुल मिलाकर, ये एक प्रार्थनाचक्र नहीं था, परंतु ये, लगभग चार फुट ऊॅची, जमीन के तल से चार फुट ऊपर लटकती हुई, एक युक्ति थी और ये लगभग पॉच फुट आरपार थी। उसमें एक तरफ, दो खिड़कियॉ थीं और इन खिड़कियों में लगाया हुआ, जो कॉच जैसा दिख रहा था, मैं उसे देख सका। मशीन के दूसरी तरफ, और केन्द्र से थोड़ा हट कर जड़ी गईं, दो काफी बड़ी–बड़ी खिड़कियॉ थीं। सामने की दीवार के बगल से, एक लम्बा हत्था निकला हुआ था, परंतु पूरी चीज मेरे लिए एक रहस्य थी, मुझे इस बात का हल्का सा भी ख्याल नहीं था कि, ये चीज क्या हो सकती थी। महान चिकित्सकीय लामा ने कहा, ''ये एक युक्ति है, लोबसांग, जिसके साथ, जो लोग अतीन्द्रियज्ञानी नहीं हैं, वे भी मानवीय प्रभामण्डल को देख सकते हैं। महान भारतीय लामा, हमारे साथ परामर्श करने के लिए यहॉ आया और उसने अपनी शिकायत की प्रकृति, हमको, यह कहते हुए नहीं बताई कि, यदि हम शाश्वत मशीन के बारे में इतना अधिक जानते हैं, तब हम उनकी शिकायतों को भी बिना कहे जानते होंगे। हम उसे यहॉ लाए ताकि, इस मशीन के द्वारा, उसकी परीक्षा की जा सके। उनकी आज्ञा से, वह अपनी पोशाक को हटाने जा रहे हैं, और पहले तुम, उनको देखने और हमें ये बतानेवाले हो कि, उन्हें ठीक–ठीक, क्या परेशानी है। तब हम इस मशीन का उपयोग, ये देखने के लिए करेंगे कि, तुम्हारे निष्कर्ष, इस मशीन के निष्कर्षों के साथ कहॉ तक मेल खाते हैं।''

मेरे शिक्षक ने, एक अंधेरी दीवार के विरुद्ध, एक धब्बे की तरफ इशारा किया और भारतीय चल कर वहॉ गया और उसने अपनी पोशाक को और दूसरे परिधानों को उतारा ताकि, वह एकदम नंगा (brown and bare) उस दीवार के विरुद्ध खड़ा हो। ''लोबसांग ! उसकी तरफ बहुत अच्छी तरह से

देखो और हमें बताओ कि, तुम क्या देखते हो,'' मेरे शिक्षक ने कहा। मैंने भारतीय की तरफ नहीं देखा, परंतु मैंने अपने नेत्रों को, किसी प्रकार से, एक सिरे से दूसरे सिरे तक, केन्द्रित होने से बाहर रखा क्योंकि, यह प्रभामण्डल को देखने का सबसे आसान तरीका है। अर्थात्, मैंने सामान्य द्विनेत्रीय दृष्टि (binocular vision) का उपयोग नहीं किया, परंतु बदले में हर ऑख से अलग–अलग देखा। यह, समझाने के लिए, वास्तव में, बहुत मुश्किल चीज है, परंतु ये एक ऑख से दॉयी ओर, और दूसरी ऑख से बांयी ओर, देखकर बनती है और यह, मात्र एक अभ्यास है, एक चाल– जो सामान्यतः लगभग सभी के द्वारा, सीखी जा सकती है।

मैंने भारतीय को देखा, उसका प्रभामण्डल जगमगाया और लहराया। मैंने देखा कि, वास्तव में, वह एक महान और उच्च बौद्धिकशक्ति का आदमी था, परंतु दुर्भाग्यवश, उस रहस्यमय बीमारी के द्वारा, उसके अन्दर, उसका सम्पूर्ण व्यक्तिव गड़बड़ा गया था। मैंने उसको देखा और अपने विचारों को कहा। वैसे ही बताया, जैसे वे मेरे मन में आये थे। मैं इस बात के प्रति पूरी तरह सजग नहीं था कि, मेरे शिक्षक और महान चिकित्सकीय लामा, मेरे शब्दों को कितने आशय के साथ सुन रहे थे। ''ये स्पष्ट है कि बीमारी, अनेक तनावों के द्वारा, शरीर के अन्दर लाई गई है। महान भारतीय लामा असंतुष्ट और अवसादग्रस्त रहे हैं, और इसने उनके स्वास्थ्य के खिलाफ, उनके शरीर की कोशिकाओं को बहशीपन से दौड़ने के लिए, अधिस्वयं की दिशा से भागने के लिए, कार्य किया है। इसलिए उन्हें यहॉ (मैंने उनके यकृत की तरफ इशारा किया), ये शिकायत है'' ''और वह जल्दी से गुस्सा होने वाले (sharp tempered) आदमी हैं, जब भी वे गुस्सा होते हैं, उनकी शिकायत हर बार बढ़ती जाती है। उनके प्रभामण्डल से स्पष्ट है कि, यदि वे मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप की तरह से, अधिक शांत, अधिक शमनयुक्त, हो जाऐं, तो वह इस पृथ्वी पर लम्बे समय तक टिक सकते हैं और इसप्रकार, दुबारा यहॉ आने की आवश्यकता के बिना, अपने कार्य को अधिक सीमा तक पूरा कर सकते हैं।''

एक बार फिर वहॉ शान्ति थी, और मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि, भारतीय लामा ने, मेरे रोग निदान के ऊपर, मानोकि पूरी तरह से, सहमति में हामी भरी। चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो, उस अनजान मशीन की तरफ मुड़े और (उसकी) छोटी खिड़की में होकर देखा। मेरे शिक्षक, हत्थे की तरफ चले और जबतक कि, चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो के एक शब्द ने, उसके घुमाने की गति को स्थिर बनाये रखने के लिए नहीं कहा, उसे बढ़ते हुए बल के साथ घुमाया। थोड़े समय के लिए, लामा चिनरोबनोबो ने, उस युक्ति में से हो कर घूर कर देखा, तब वे सीधे खड़े हुए और बिना एक भी शब्द कहे हुए, लामा मिंग्यार डोंडुप ने उनका स्थान ले लिया, जबकि चिकित्सिकीय लामा चिनरोबनोबो ने हत्थे को घुमाया, जैसा मेरे शिक्षक ने पहले किया था। अंत में, उन्होंने अपनी परीक्षा समाप्त की, और स्पष्टतः, दूरानुभूति के द्वारा आपस में बातें करते हुए, एक साथ खड़े हुए। मैंने उनके विचारों में दखलंदाजी करने का, किसी भी प्रकार का कोई प्रयास नहीं किया क्योंकि, ऐसा करना एक बड़ी चूक होती और जिसने ''मुझे मेरे पड़ाव के ऊपर'' रख दिया होता। अंत में, वे भारतीय की ओर मुड़े और उन्होंने कहा, ''मंगलवार लोबसांग रम्पा ने जो कुछ भी कहा है, आपके लिये वह सही है। हमने आपके प्रभामण्डल की, सर्वाधिक गहराई से जॉच की है, और हमारा विश्वास है कि, आपको यकृत का कैंसर है। हमारा यह भी विश्वास है कि, ये निश्चित ही, आपके शीघ्र क्रोधीपन के स्वभाव के कारण पैदा हुआ है। हमारा विश्वास है कि, यदि आप एक शान्त जीवन जियें, तो अभी भी, वर्षों की काफी संख्या में, जीवन आपके लिए बचा हुआ है, वर्ष, जिनमें आप अपने कार्य को पूरा कर सकते हैं। हम अभ्यावेदन पत्रों (representations) को तैयार कर सकते हैं, ताकि यदि आप हमारी योजना से सहमत हों, तो आपको यहॉ चाकपोरी में रहने की आज्ञा दी जा सकती है।

भारतीय ने कुछ समय के लिए मामलों पर चर्चा की, और तब चिनरोबनोबो को इशारा किया, और उन्होंने साथ–साथ कमरा छोड़ दिया। मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप ने, मेरे कंधे थपथपाकर, मुझे

शाबाशी दी और मुझे कहा, ''शाबाश, लोबसांग, शाबाश ! अब मैं तुम्हें ये मशीन दिखाना चाहता हूँ।''

हम उस अजनबी युक्ति के पीछे, आरपार गए और ऊपरी सिरे की तरफ से एक बगल (side) को उठाया। पूरी चीज हिली, और मैंने उसके अन्दर, एक केन्द्रीय धुरी से निकलती हुई, भुजाओं की एक श्रृंखला देखी। भुजाओं के एकदम दूसरे सिरे से, वहॉ लाल, नीले, पीले और सफेद रंगों के कॉचों की प्रिज्में थीं। ज्यों ही हत्था घुमाया गया, इसकी धुरी (shaft) से जुड़े हुए पट्टों (belts) ने, भुजाओं को घुमाना प्रारंभ किया और मैंने देखा कि, बदले में, हर प्रिज्म को एक रेखा में लाया गया, जिसको, दो अभिनेत्रिकाओं (eye pieces) में से हो कर, देखा गया। मेरे शिक्षक ने मुझे दिखाया कि, ये चीजें कैसे काम करती हैं और तब कहा, ''वास्तव में, ये एक बहुत अनगढ़ (crude) और फूहड़ (clumsy) तरीका था। हम यहॉ इसका उपयोग, किसी दिन, इसका एक छोटा संस्करण बना देने की आशा में, प्रयोग करने के लिए करते हैं। तुम्हें इसे प्रयोग करने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, लोबसांग, परंतु बहुत लोग ऐसे नहीं हैं, जिनके पास तुम्हारी तरह से, प्रभामण्डल को एकदम साफ देखने की शक्ति हो। किसी समय, मैं इसके काम करने के तरीके को अधिक विस्तार से समझाऊँगा, परंतु संक्षेप में, यह एक हाइड्रोडाईन (hydrodyne) सिद्धान्त पर काम करती है, जिसमें तेजी से घूमते हुए रंगीन प्रिज्म, दृष्टि की रेखा में रोकटोक (interrupt) करते हैं और इसप्रकार मानव शरीर की सामान्य छवि को नष्ट करते हैं और प्रभामण्डल की क्षीण किरणों को तीव्र बनाते हैं।'' उन्होंने ढक्कन को हटाया और दूर के कोने में, एक मेज पर रखी हुई, दूसरी युक्ति की ओर चले। जब वह उस मेज की तरफ ले जा रहे थे, चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो, कमरे में दुबारा आए और हमारे साथ सम्मिलित हुए। ''आह!'' उन्होंने हमारी तरफ आते हुए कहा, ''इसप्रकार आप उसकी विचारशक्ति को परखने जा रहे थे ? ठीक है ! मुझे इस पर, अन्दर होना चाहिए !'' मेरे शिक्षक ने एक अनोखे बेलन की ओर इशारा किया, जो एक मोटे कागज की तरह दिखाई दिया। ''यह, लोबसांग, मोटा है, मोटा कागज, तुम देखोगे कि इस पर बनाये हुए, इसमें असंख्य छेद हैं, एक अत्यन्त भौंथरे उपकरण द्वारा बनाये गये छेद, जिससे यह कागज फट गया है और रोशनी को बाहर निकालता है। तब हमने कागज को मोड़ा जिससे कि रोशनी को निकालने वाले सभी प्रक्षेप (projections) बाहर की तरफ आ गए और वह चादर (sheet), सपाट होने के बजाय, एक बेलन बन गई। हमने बेलने के शिखर के आरपार, एक मजबूत डण्डी जोड़ी और एक छोटे पैरदान के ऊपर, एक तीखी सुई लगाई। इस प्रकार हमने बेलन को, एक घर्षणहीन बियरिंग (bearing) के ऊपर, लगभग टिका दिया। अब मेरी ओर देखो !'' वह नीचे बैठ गये, और उन्होंने अपने हाथ, बेलन को स्पर्श न करते हुए, परंतु हाथों और प्रक्षेपों के बीच में, लगभग एक या डेढ़ इंच स्थान, छोड़ते हुए, बेलन के किसी भी तरफ रखे। जैसे ही बेलन ने घूमना शुरू किया, और ज्यों ही उस चीज ने चाल पकड़ी मैं घबराया, और शीघ्र ही उसे एक अत्यधिक आनन्ददायक चाल से घुमाने लगा। मेरे शिक्षक ने, इसे एक स्पर्श के द्वारा रोक दिया, और अपने हाथ, इसके विपरीत दिशा में रखे ताकि, उॅगलियॉ– उनके शरीर से बाहर की तरफ इशारा करने के बजाय, जैसा कि मामला था– अब उनके शरीर की ओर इशारा कर रही थीं। बेलन ने घूमना शुरू किया परंतु विपरीत दिशा में !'' आप इसको झटका दे रहे हैं !'' मैंने कहा। ''हर कोई ऐसा कहता है !'' चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो ने कहा, ''परंतु वे पूरी तरह से गलत हैं।''

महान चिकित्सकीय लामा, एक दूर की दीवार पर एक खाली स्थान, दरार में गये, और कॉच की एक चादर पहने हुए लौटे, ये काफी मोटी चादर थी, और वे उसे सावधानीपूर्वक, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप की तरफ लाये, जबतक चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो ने, कॉच की उस चादर को, मेरे शिक्षक और कागज के बेलन के बीच में रखा, मेरे शिक्षक ने बेलन को घूमने से रोक दिया और शान्ति से बैठे।'' घूर्णन के बारे में सोचो,'' चिकित्सकीय लामा ने कहा, स्पष्टरूप से, मेरे शिक्षक ने ऐसा किया, क्योंकि बेलन ने फिर से घूमना शुरू कर दिया था। मेरे शिक्षक या किसी भी दूसरे के लिए, कॉच के

कारण, ऐसा करना, बेलन पर फूँक मारना और उसे घुमाना, एकदम असंभव था। उन्होंने फिर से बेलन को रोका और तब मेरी ओर मुड़े और कहा, ''तुम कोशिश करके देखो, लोबसांग!'' वे अपनी सीट से उठे और मैंने उनका स्थान ले लिया। मैं बैठा और मैंने अपने हाथ वैसे ही रखे, जैसे कि, मेरे शिक्षक ने रखे थे। चिकित्सकीय लामा चिनरोबनोबो ने कॉच की चादर को मेरे सामने पकड़ा ताकि मेरी सांस, बेलन के घूमने को प्रभावित न कर सके। मैं एक मूर्ख की तरह, अनुभव करता हुआ, वहॉ बैठा रहा। स्पष्टरूप से, बेलन ने सोचा कि मैं भी एक था क्योंकि, कुछ भी नहीं हुआ। ''इसे घुमाने के बारे में सोचो, लोबसांग !''मेरे शिक्षक ने कहा। मैंने ऐसा किया, और तुरंत उस चीज ने घूमना शुरू कर दिया। क्षणभर के लिए, मैंने हर चीज को गिरते और भागते हुए अनुभव किया–मैंने सोचा कि, चीज के ऊपर जादू किया गया था, और तब (एक प्रकार का !) कारण मेरे अन्दर आया और मैं स्थिर होकर बैठ गया।

''वह युक्ति, लोबसांग'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''मानवीय प्रभामंडल के बल से चलती है। तुम इसे घुमाने की सोचो और तुम्हारा प्रभामंडल, उस चीज पर एक घुमाव डालता है, जो इसे घुमाने का कारण बनती है। तुम ये जानने में दिलचस्पी रख सकते हो कि, विश्व के सभी बड़े देशों में, इसकी तरह की एक युक्ति का प्रयोग किया जा चुका है। इस चीज के कार्य करने के ढंग को समझाने का, सभी महान वैज्ञानिकों ने प्रयास किया है परंतु पश्चिमी लोग, वास्तव में, ईथरी बल में विश्वास नहीं कर सकते, इसलिए वे ऐसे स्पष्टीकरण खोजते हैं, जो कि वास्तविक ईथरी बल से भी अधिक अजीब है!''

महान चिकित्सीय लामा ने कहा, ''मुझे बहुत जोर की भूख लग रही है, मिग्यार डोंडुप, मुझे अहसास हो रहा है कि, ये समय है जबकि, हम अपने आपको आराम देने के लिए, उसके जीवन आधार के लिए, अपने कमरों में जाऐं। हमें नौजवान आदमी की क्षमताओं और उसकी सहनशक्ति पर भार नहीं डालना चाहिए क्योंकि उसे ये सब, भविष्य में, काफी मिलेगा।'' हम मुड़े, और उस कमरे की रोशनियॉ बुझा दी गईं और हमने अपना रास्ता, चाकपोरी के मुख्य भवन में, पत्थर के गलियारे की तरफ लिया। शीघ्र ही, मैं अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ, एक कमरे में था। शीघ्र ही मैं–प्रसन्नता के विचार–खाने का उपभोग कर रहा था और इसके लिए अच्छी भावनाऐं रखता था। ''अच्छी तरह खाना खाओ, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा ''क्योंकि दिन में, बाद में हम तुम्हें फिर मिलेंगे और दूसरे विषयों के ऊपर चर्चा करेंगे।''

एक घण्टे, या कुछ ऐसे ही समय के लिए, खिड़की में से बाहर देखते हुए, मैंने अपने कमरे में विश्राम किया, क्योंकि मुझमें थोड़ी दुर्बलता थी; मैं हमेशा ऊॅचे स्थानों से, नीचे की दुनियॉ को चलते–फिरते देखना पसंद करता था। मुझे व्यापारियों का, ऊॅचे पहाड़ी दर्रो में होकर, एक लंबी और दुष्कर यात्रा के अंत की ओर पहुॅचते हुए, उनके हर कदम को उनकी प्रसन्नता को इंगित करते हुए, धीमे–धीमे, पश्चिमी द्वार में होकर, गुजरते हुए देखना, अत्यंत प्रिय था। भूतकाल में, व्यापारियों ने मुझे, पहाड़ियों की ढलानों के बगल से, ऊॅचे दर्रे में एक निश्चित स्थान से, एक आश्चर्यजनक दृश्य के बारे में बताया था, जहॉ से, जैसे ही कोई भारतीय सीमा से आता, वह पहाड़ियों की दरारों के बीच में से, नीचे की ओर दिखते हुए, पवित्र नगर को अपने शिखर की छतों पर सोने के साथ चमकते हुए, टकटकी लगा कर देख सकता था और पर्वतों के बगल से कुछ हट कर, वास्तव में, बहुत अधिक प्रचुरता के कारण पसरे हुए चावलों के ढेर की तरह, ''चावलों के ढेर'' की सफेद दीवारों को देख सकता था। स्वतंत्रता की नदी को पार करते हुए, नाविकों को देखना मुझे प्रिय था, और मैं हमेशा उनके फुलाये हुए चमड़े की नावों में छेद हो जाने के दृश्य की, आशा करता था, मैं उसे, धीमे–धीमे दृष्टि से ओझल होते हुए देखने की, इच्छा रखता था जबतक कि केवल उसका सिर, पानी के ऊपर निकला न रह जाए। परंतु मैं हमेशा उतना सौभाग्यशाली नहीं होता था, नाविक अपने भारों को लिये हुए, हमेशा दूसरी तरफ पहुॅच जाते थे और फिर वापस लौटते थे।

शीघ्र ही, एक बार फिर, मैं अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप और महान चिकित्सकीय लामा

चिनरोबनोबो के साथ, उस गहरे कमरे में था। ''लोबसांग!'' महान चिकित्सकीय लामा ने कहा, ''तुम्हें ये सुनिश्चित होना चाहिए कि यदि तुम किसी मरीज की परीक्षा करने जा रहे हो ताकि, तुम उसकी (पुरुष या महिला) सहायता कर सको, उसके कपड़े पूरी तरह से हटा दिऐ जाने चाहिए।'' ''आदरणीय चिकित्सकीय लामा!'' मैंने कुछ भ्रम में कहा, ''मैं कोई कारण नहीं देखता कि, मैं ठंडे मौसम में, किसी व्यक्ति को, उसके कपड़ों से क्यों वंचित करूँ, क्योंकि मैं उनके प्रभामंडल को, उनके किसी एक अकेले परिधान को भी हटाये जाने की किसी आवश्यकता के बिना, पूर्णता के साथ देख सकता हूँ, और ओह! आदरणीय चिकित्सीय लामा! मैं किसी भी महिला को शायद, अपने कपड़े हटाने के लिए किस तरह कह सकता हूँ ?'' मेरी ऑखें, केवल विचार के कारण, भय में, ऊपर की तरफ घूम गईं। मुझे एक हास्यास्पद आकृति प्रदर्शित करनी चाहिए थी, क्योंकि मेरे शिक्षक और चिकित्सकीय लामा, दोनों ही हॅसते हुए फट पड़े, वे बैठ गए और अपने आप में, वास्तव में, अपनी हॅसी के साथ खूब मजा लिया। मैं उनके सामने उल्लेखनीयरूप से, मूर्ख अनुभव करता हुआ खड़ा हुआ। परंतु वास्तव में, मैं इन चीजों के संबंध में, एकदम उलझन में था। मैं प्रभामंडल को–बिना किसी कठिनाई के–पूर्णता के साथ देख सकता था और मुझे कोई कारण नहीं दिखता था, कि जो मेरे लिए स्वयं का सामान्य अभ्यास था, मैं उससे विचलित क्यों होऊँ।

''लोबसांग! चिकित्सकीय लामा ने कहा, ''तुम एक बहुत बड़े उपहार प्राप्त अतीन्द्रियज्ञानी हो, परंतु यहॉ कुछ ऐसी भी चीजें हैं, जिन्हें तुम अभी भी नहीं देखते। हमने, तुम्हारी मानवीय प्रभामंडल को देखने की क्षमताओं के संबंध में, तुम्हारा एक उल्लेखनीय प्रदर्शन देखा था परंतु, तुम भारतीय लामा मारफाता की यकृत (liver) की शिकायत को नहीं देख पाते, यदि उसने अपने कपड़े नहीं उतारे होते।'' मैंने इसके ऊपर प्रतिक्रिया व्यक्त की, और जब मैंने इसके ऊपर विचार किया, मुझे ये स्वीकार करना पड़ा कि ये ठीक था; मैंने भारतीय लामा को, जब वह पोशाक पहने था, देखा था और जबकि मैं, उसके चरित्र के बारे में, और उसके मूल लक्षणों के बारे में, काफी कुछ देख चुका था, फिर भी मैंने यकृत की शिकायत को नहीं देखा था। ''आप एकदम ठीक हैं, आदरणीय चिकित्सकीय लामा,'' मैंने कहा, ''परंतु मुझे, इस संबंध में थोड़ा और आगे का प्रशिक्षण, आपसे मिलना चाहिए।''

मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने मुझे देखा और कहा, ''जब तुम किसी व्यक्ति के प्रभामंडल को देखना चाहते हो, तुम उस व्यक्ति के प्रभामंडल को देखते हो, तब तुम भेड़ों के ऊपर विचार से, कोई संबंध नहीं रखते। ऊन, जो पोशाक बनाता है, कहॉ से आता है। हर प्रभामंडल, जो भी उसकी प्रत्यक्ष किरणों से हस्तक्षेप करता है, उससे प्रभावित होता है। यहॉ हमारे पास कॉच की एक चादर है, और यदि मैं कॉच के ऊपर सॉस छोडूँ तो यह, जो तुम इसमें होकर देखते हो, उसी तरह से, उसको प्रभावित करेगी। यद्यपि ये कॉच पारदर्शी है, ये वास्तव में, प्रकाश को या प्रकाश के रंग को, जो तुम देखते हो, जब इसमें होकर देख रहे होते हो, बदल देता है। उसी प्रकार से, यदि तुम किसी रंगीन कॉच के टुकड़े में होकर देखो, रंगीन कॉच की क्रिया के द्वारा सभी कंपन, जो तुम प्राप्त करते हो किसी गुण, तीव्रता, में बदल जाते हैं। इसप्रकार, ये ऐसा है कि एक व्यक्ति, जिसके शरीर पर कपड़े हैं, या किसी प्रकार के गहने हैं, कपड़े या गहनों में निहित ईथरी विषय के अनुसार, उसके प्रभामंडल को बदल देते हैं।'' मैंने इसके संबंध में सोचा, और मुझे सहमत होना पड़ा कि, जो कुछ उन्होंने कहा था, उसमें काफी दम था। ''एक अगला बिन्दु ये है कि, शरीर का प्रत्येक अंग,–अपनी खुद की स्वास्थ्य या बीमारी की अवस्था को–ईथरिक पर, अपने स्वयं के चित्र को प्रक्षेपित करता है और जब (शरीर) बिना ढका होता है और कपड़ों के प्रभाव से मुक्त हो जाता है, तो प्रभामंडल, उन प्रभावों को और तीव्र कर देता है, बढ़ा देता है, जिनको कोई प्राप्त करता है। इस प्रकार ये एकदम निश्चित है कि, यदि आप किसी व्यक्ति को, स्वास्थ्य में या बीमारी में, सहायता करने जा रहे हैं, तो आपको उसकी परीक्षा, बिना उसके कपड़ों के करनी होगी।'' वह मेरी ओर देखकर मुस्कुराये और उन्होंने कहा, ''और यदि मौसम ठंडा हो,

तब क्यों, लोबसांग उसे गर्म स्थान पर ले जाना पड़ेगा!''

''आदरणीय लामा, ''मैंने कहा'' कुछ समय पहले आपने मुझे बताया था कि, आप एक युक्ति के ऊपर कुछ कार्य कर रहे हैं, जो प्रभामंडल के माध्यम से, किसी को, उसकी बीमारी का इलाज करने में सफल बनाएगी।'' ''ये एकदम सही है, लोबसांग'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''बीमारी, शरीर के कंपनों की असंगति (dissonance) मात्र है। प्रत्येक अंग की अपनी स्वयं की 'आण्विक कंपन की दर' होती है और इसप्रकार विचलित होती हुई ये, एक बीमार अंग की दर समझी जा सकती है। यदि हम, वास्तव में, देख सकते कि अंग का कितना कंपन सामान्य से विचलित हुआ है, तब, कंपनों की दर को, जो होने चाहिए थे, वहॉ तक पुनः स्थापित करते हुए, हमने एक इलाज को प्रभावी बनाया है। मानसिक बीमारियों के मामले में, सामान्यतः मस्तिष्क अधिस्वयं से संदेश प्राप्त करता है, जिनका वह सही से मतलब नहीं निकाल सकता, और इसलिए परिणामस्वरूप होने वाली क्रियाऐं, उनसे विचलित हो जाती हैं, जो मानव के लिए सामान्य क्रियाओं के लिए स्वीकारी जाती हैं। इसप्रकार, यदि मानव कारण देने के लिए, या सामान्य तरीके से क्रिया करने में सक्षम नहीं है, उसे कुछ मानसिक बीमारी का होना कहा जाता है। इस विसंगति को–कम उत्तेजना को– नापते हुए, सामान्य संतुलन पुनः प्राप्त करने में, हम एक व्यक्ति की सहायता कर सकते हैं। कम उत्तेजना के मामलों से परिणामित होते हुए, कंपन, सामान्य से निम्नतर हो सकते हैं, या सामान्य से उच्चतर हो सकते हैं, जो मस्तिष्क के ज्वर के समान, वैसा प्रभाव देंगे। प्रभामंडल में हस्तक्षेप करने के माध्यम से बीमारी का इलाज, पूरी तरह निश्चय के साथ किया जा सकता है।''

महान चिकित्सीय लामा ने यहॉ हस्तक्षेप किया, और कहा, ''वैसे ही, आदरणीय सहयोगी, लामा मारफाता मेरे साथ इस विषय पर चर्चा कर रहे थे, और उन्होंने कहा कि, भारत में कुछ स्थानों पर–कुछ एकांत लामामठों में–वे एक उच्च विभववाली युक्ति के साथ प्रयोग कर रहे थे जिसे ..... के रूप में जाना जाता है'' उन्होंने कुछ संकोच किया और कहा, ''ये वान डे ग्राफ उत्पादक (Van de Graaf generator) है।'' वह कुछ हद तक इस पद (term) के बारे में अनिश्चित थे, परंतु वास्तव में, वह हमें एकदम सही सूचना देने का एक साहसिक प्रयास कर रहे थे। ''ये उत्पादक, स्पष्टरूप से, एक निम्नधारा के ऊपर, असाधारण उच्च विभवता (high voltage) उत्पादित करता है, एक निश्चित तरीके से शरीर पर लगाये जाने पर, इसने प्रभामंडल की तीव्रता को कई–कई गुना बढ़ा दिया ताकि, अतीन्द्रियज्ञान न रखने वाला व्यक्ति भी इसे स्पष्टरूप से देख सके। मुझे ये भी बताया गया है कि, इन अवस्थाओं में, मानवीय प्रभामंडल के फोटोग्राफ लिए गए हैं।'' मेरे शिक्षक ने स्वीकृति में सिर हिलाया, और कहा ''हॉ, मानवीय प्रभामंडल को एक विशेष रंजक (special dye), एक द्रव, जो कॉच की दो प्लेटों के बीच में डाला जाता है, के द्वारा देखना भी संबंध है। उचित प्रकाश और पृष्ठभूमि की व्यवस्था के द्वारा, नग्न मानव शरीर को इस पर्दे के माध्यम से देखते हुए, अनेक लोग, वास्तव में, प्रभामंडल को देख सकते हैं।''

मैं फूट पड़ा और मैंने कहा, ''परंतु, आदरणीय श्रीमान्! लोगों को ये चालबाजियॉ क्यों उपयोग में लानी पड़तीं हैं ? मैं प्रभामंडल को देख सकता हूॅ–वे क्यों नहीं देख सकते हैं ?'' मेरे दोनों शिक्षक (mentors) फिर से हॅसे, इसबार उन्होंने उस प्रशिक्षण जो कि, मुझे करना पड़ा था और गली के औसत आदमी या औरत के सामान्य प्रशिक्षण के बीच, के अंतर की व्याख्या करना, आवश्यक नहीं समझा।

चिकित्सकीय लामा ने कहा, ''अभी हम अंधेरे में जॉच करते हैं, हम अनायास के नियमों (rule of thumbs) से, जड़ीबूटियों, गोलियों और अवलेहों के द्वारा, मरीजों का इलाज करने का प्रयत्न करते हैं। हम अंधे आदमी की तरह हैं, जो जमीन पर गिरी हुई पिन को ढूंढ़ने का प्रयास करता है। मैं एक छोटी युक्ति को देखना चाहूॅगा ताकि, कोई भी अतीन्द्रियज्ञानी मनुष्य, इसमें होकर देख सके और मानवीय प्रभामंडल को देखे, मानवीय प्रभामंडल के सभी दोषों को देखे, और, अंतर या कमी, जो वास्तव

में, बीमारी का कारण थी, को देखने पर, वह इलाज करने में सफल होगा।''

शेष सप्ताह के लिए, मुझे सम्मोहन और दूरानुभूति के द्वारा चीजें दिखाई गईं और मेरी शक्तियॉ बढ़ाई गईं और तीव्र की गईं, और हमने प्रभामंडल देखने, और एक मशीन जो प्रभामंडल भी देखेगी, का विकास करने के सबसे अच्छे तरीकों पर, बातों के बाद बातें करीं और तब, उस सप्ताह की अंतिम रात को, मैं अपने चाकपोरी लामा मठ के छोटे से कमरे में गया और ये सोचते हुए खिड़की के बाहर देखा कि, कल मैं फिर उस बड़ी शायिका (dormitory) में लौटूँगा, जहॉ मैं, अनेक दूसरों के साथ, सोता था।

घाटी में रोशनियॉ जगमगा रही थीं। हमारी घाटी के चट्टानी किनारे से झॉकती हुईं, समाप्त होती अंतिम किरणें, स्वर्णिम छतों को जगमगाते हुए, मानो कि स्वर्णिम प्रकाश के झरनों को भेजतीं हुईं, और ऐसा करने में, प्रकाश को इंद्रधनुषी रंगों में, जो स्वयं स्वर्ण के वर्णक्रम थे, तोड़तीं हुईं, स्फुलिंग देती हुई उंगलियॉ नीचे चमकीं। जैसे ही प्रकाश मंद हुआ, नीले और पीले और लाल, और कुछ हरे (रंगों ने) भी धीमे से उगते हुए और धीमे पड़ते हुए, ऑखों को आकर्षित करने के लिये संघर्ष किया। शीघ्र ही, घाटी स्वयं, गहरे मखमली (dark velvet), एक गहरे नीले–बैंगनी (dark blue-voilet) या जामुनी मखमली (purole velvet), जो लगभग अनुभव किया जा सकता है, अंधेरे के मखमल में घिर गई। अपनी खुली हुई खिड़की से, मैं फर (willows) की गंध को और बगीचे के पौधों की सुगंध को, जो अब तक मेरे नीचे थे, सूंघ सकता था। एक आवारा हवा ने, प्रबल सुगंधों को, परागकण (pollen) और खिलते हुए फूलों को, मेरे नकुओं में घुसा दिया।

सूर्य की अंतिम मरती हुई किरणें, पूरी तरह से दृष्टि के बाहर डूब गईं, प्रकाश की जॉच करती हुईं ये उंगलियॉ, चट्टानों से घिरी हुई हमारी घाटी के किनारे से, अब औरअधिक ऊपर नहीं आईं, बदले में वे, अंधेरे होते हुए आकाश में छिटक गईं, और नीचे स्तर वाले बादलों में होकर, लाल और नीले को प्रदर्शित करते हुए परावर्तित हुईं। ज्यों ही सूर्य हमारे विश्व के परे, आगे, और आगे डूबा, धीमे–धीमे रात और गहरी होती गई। शीघ्र ही वहॉ अंधेरे जामुनी आकाश में, शनि के प्रकाश, शुक्र, मंगल के प्रकाश के चमकते हुए धब्बे थे। और तब आकाश में फुसियों के सभी चिन्हों को सादा और स्पष्ट दिखाते हुए, लटकते हुए कूबड़ की तरह उभरती हुई, चंद्रमा की रोशनी आई, और चंद्रमा के चेहरे के आर–पार ऊन की तरह हल्का तैरता हुआ एक बादल हिला। इसने मुझे, अपने प्रभामंडल के परीक्षण के बाद, एक परिधान अपने ऊपर खींचती हुई, एक औरत का ध्यान दिला दिया। अपने अस्त्तिव के हर तन्तु में ये संकल्प करते हुए कि मैं, मानवीय प्रभामंडल की जानकारी को बढ़ाने के लिए और उनकी मदद करने के लिए, जो महान विश्व में बाहर जाते है और सहायता लाते हैं और लाखों को पीड़ा से आराम दिलाते है, जो मैं कर सकता था, सब कुछ करूॅगा, मैं मुड़ गया। मैं पत्थर के फर्श के ऊपर लेट गया और लगभग जितनी जल्दी, मेरा सिर मेरी लपेटी हुई पोशाक से छुआ, मैं नींद में गिर गया और (मैं) औरअधिक नहीं जानता था।

अध्याय नौ

खामोशी बहुत अधिक थी। हवा की सांद्रता तीव्र हुई। लंबे–लंबे अंतरालों पर, लगभग सुनाई न देने वाली रगड़ की आवाज आई, जो शीघ्र ही, फिर मृत्यु जैसी खामोशी में दब गई। फर्श पर सीधे बैठे हुए दिखते हुए, गतिहीन पोशाकधारी आकृतियों की लंबी पंक्तियों को, मैंने अपने आसपास देखा। ये आदमी, बाहरी विश्व की करनी पर केन्द्रीभूत होते हुए आशययुक्त आदमी थे। कुछ, वास्तव में, इस बाहरी विश्व के करनी के साथ अधिक संबंधित थे! मेरी ऑखें, पहले एक और तब दूसरी पर भव्य आकृति के ऊपर टिकते हुए, आसपास घूमी। यहॉ, बहुत दूर जिले से, एक बेचारे और नम्र परिधान में, वह एक महान मठाध्यक्ष था। एक वह आदमी, जो पहाड़ों से नीचे आया था। बिना विचार किए हुए, मैं लंबी, नीची मेज की ओर चला ताकि, मुझे अधिक जगह मिल सके। खामोशी कठोर थी, एक सजीव शांति, एक शांति जो यहॉ इतने आदमियों के होते हुए, नहीं होनी चाहिए थी।

टकराव! खामोशी, रूखेपन के साथ और तेजी से बंद हो गई। मैं जमीन के परे, बैठी हुई स्थिति में, एक पैर पर कूदा, और पूरी लंबाई में लेटा हुआ, अभी भी उनींदा–सा, उसी समय, कैसे भी घूम गया। लकड़ी की जिल्द चढ़ाई हुई किताबों को, अभी–भी चटाक–चटाक करता हुआ, पुस्तकालय का एक संदेशवाहक, अपने आसपास था। भारी भरकम लद कर अंदर आते हुए, उसने मेज, जो मैंने हटा दी थी, को नहीं देखा था। जमीन से केवल अठारह इंच ऊॅची होने के कारण, उसने उसे प्रभावीरूप से गिरा दिया। अब यह उसके सिर पर थी।

व्यग्र हाथों ने, धीमे से पुस्तकों को उठाया और उन पर से धूल झाड़ी। तिब्बत में पुस्तकें सम्मानित होतीं हैं। पुस्तकों में ज्ञान निहित होता है और कभी उनका दुरुपयोग या असम्मान नहीं करना चाहिए। अब ख्याल पुस्तकों के बारे में था, आदमी का नहीं। मैंने मेज को पकड़ा और रास्ते से हटा कर बाहर कर दिया। आश्चर्यों का आश्चर्य, किसी ने नहीं सोचा कि, मैं दोषारोपण के रास्ते में था! संदेशवाहक, अपने सिर को रगड़ते हुए, ये समझने का प्रयास कर रहा था कि, क्या हुआ। मैं पास नहीं था; स्पष्टरूप से मैंने उसे नहीं गिराया होगा। आश्चर्य में अपने सिर को हिलाते हुए, वह मुड़ा और बाहर चला गया। शीघ्र ही वहॉ पुनः शांति स्थापित हो गई, और लामा लोग पढ़ने के लिए, वापस पुस्तकालय में चले गए।

रसोईघर में काम करने के दौरान, ऊपर और तले पर (शब्दशः!) खराब हो जाने पर, मैं स्थाईरूप से वहॉ से गायब हो गया था। अब, निम्नश्रेणी के कामों के लिए, मुझे बड़े पुस्तकालय में जाना पड़ता था और पुस्तकों के आवरण पर, नक्कासी को धूल झाड़कर साफ करना होता था और सामान्यतः स्थान को साफ रखना होता था। तिब्बती पुस्तकें बड़ी और भारी होती हैं। लकड़ी के आवरण शीर्षक और बहुधा उसके साथ–साथ एक चित्र देते हुए, विस्तार से गढ़े जाते हैं। पुस्तकों को उनके खानों में से उठाना, उन्हें शांतिपूर्वक अपनी मेज तक लाना, धूल झड़ाना और तब हर पुस्तक को वापस उसके नियत स्थान में रखना; ये भारी कार्य था। पुस्तकालयाध्यक्ष, हर पुस्तक को सावधानीपूर्वक परीक्षा करते हुए, ये देखते हुए कि वह वास्तव में, साफ हो गई थी, इस पर विशेषरूप से ध्यान देते थे। उनमें लकड़ी के आवरण होते थे, जिनमें हमारी सीमाओं से बाहर के देशों से लाये गए पत्रिकाऐं और समाचारपत्र रहते थे। मैं इनको देखना, विशेषरूप से पसंद कर रहा था, यद्यपि मैं एक शब्द भी पढ़ नहीं सकता था। महीनों पुराने, इन विदेशी समाचारपत्रों में से अनेक में, चित्र होते थे, और जब भी संभव होता, मैं उन पर ऑखें गड़ाकर देखता था। जितना अधिक पुस्तकपाल मुझे रोकने की कोशिश करते, उतना ही अधिक, मैं इन वर्जित पुस्तकों में गहन शोध करता, जब कभी भी उनका ध्यान मेरे ऊपर नहीं होता।

पहियेदार वाहनों के चित्र मुझे मोहित करते थे। वहॉ वास्तव में, पूरे तिब्बत में, पहिये वाले कोई भी वाहन नहीं थे, और हमारे भविष्यकथन, एकदम स्पष्ट कहते थे कि, तिब्बत में पहियों के आगमन के

साथ ही, ''अंत का प्रारंभ'' हो जायेगा। तिब्बत, बाद में दुष्ट शक्तियों के द्वारा, जो पूरे विश्व में एक कैंसर की भांति फैलते हुए उसे हानि पहुॅचा रही थी, अतिक्रमणित किया जायेगा। हम आशा करते थे कि, भविष्यकथन के बावजूद, बड़े–अधिक शक्तिशाली राष्ट्र–हमारे छोटे से देश में, जिसके युद्ध जैसे कोई इरादे नहीं है, दिलचस्पी नहीं लेंगे, दूसरों के रहने के स्थान पर कोई षणयंत्र नहीं।

मैंने चित्रों को देखा, और मैं, एक पत्रिका पर मोहित हुआ (वास्तव में मैं नहीं जानता ये क्या कहलाती थी)। मैंने कुछ चित्र देखे–उनकी पूरी श्रृंखला–जो पत्रिका को छपते हुए दिखाती थी। बड़े रोलरों और बहुत बड़े दांतेदार पहियों के साथ, बड़ी–बड़ी मशीनें थीं। चित्र में आदमी, पागलों की तरह काम कर रहे थे, और मैंने सोचा, यहॉ तिब्बत में, ये सब कितना अलग है। यहॉ कोई, दस्तकारी के गर्व के साथ, एक कार्य को ठीक से करने के गर्व के साथ, काम करता था। तिब्बत के दस्तकारों के मन में, किसी प्रकार का व्यापारिक विचार पैदा नहीं होता था। मैं मुड़ा और मैंने उन पृष्ठों पर दुबारा देखा, और तब मैंने सोचा कि, हम चीजों को किसप्रकार कर रहे हैं।

श्यो के गॉव के नीचे, पुस्तकें छापी जाती थीं। गढ़ने वाले कुशल भिक्षु, तिब्बती अक्षरों को, धीमेपन के साथ गढ़ते हुए, उन्हें लकड़ी में खोद–खोदकर गढ़ते थे, जो परम निष्ठा एवं सूक्ष्मतम विस्तार के साथ, उनके परम शुद्ध होने को सुनिश्चित करता था। जब गढ़ने वाले, छापने के बोर्ड का, अपना काम समाप्त कर लेते, तब उसको ले जाते और उसको चमकाते ताकि, उसमें कोई गलती या लकड़ी में खुरदरापन न बचा रहे, तब बोर्ड को, दूसरों के द्वारा पाठ की शुद्धि की जॉच के लिए, निरीक्षण के लिए, बाहर भेजा जाता, क्योंकि तिब्बती पुस्तक में, किसी भी प्रकार की त्रुटि को नहीं जाने दिया जाता था। समय का कोई महत्व नहीं था, केवल सही होना महत्वपूर्ण था।

सभी बोर्डो के गढ़ लिए जाने के बाद, सभी को सावधानीपूर्वक, पॉलिश करने और त्रुटियों और खामियों के लिए निरीक्षण कर लिए जाने के बाद, ये मुद्रक–भिक्षुओं को दिया जाता। वे इसे इसका चेहरा ऊपर रखते हुए, एक बैंच के ऊपर रखते और तब स्याही का रॉलर उन उभरे हुए, गढ़े हुए शब्दों के ऊपर, फिराया जाता। वास्तव में, सभी शब्द उल्टे गढ़े जाते थे, ताकि छापे जाने पर, वे ठीक, सीधे दिखाई दें। बोर्ड पर स्याही लगाने के साथ और ये सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी हिस्सा बिना स्याही के बचा न रहे, एक–बार फिर सावधानीपूर्वक निरीक्षण किए जाने के बाद, मिस्र के भोजपत्र के सजातीय, पेपीरस (papyrus) का, कड़े कागज का एक पन्ना, उस स्याही लगी हुई सतह पर जल्दी से फैलाया जाता। एक समान लुढ़कता हुआ दबाव (uniform rolling pressure), कागज के पन्ने के पीछे की तरफ लगाया जाता, और तब इसे छपने वाली सतह से, तेज गति के साथ हटा लिया जाता। निरीक्षक–भिक्षु, इस पेज को तुरंत ही लेते और किसी भी दोष या त्रुटि के लिए, अतिसूक्ष्म सावधानी के साथ, इसकी परीक्षा करते–और यदि इसमें कोई दोष नहीं होता, तो कागज को न तो फाड़ा जाता और न ही जलाया जाता, परंतु इसको बंडलों में बांध दिया जाता।

छपे हुए शब्द, तिब्बत में, पवित्रता के समीप माने जाते हैं, ये माना जाता है कि, किसी कागज, जिसपर शिक्षा के शब्द या धार्मिक अथवा पढ़ाई के शब्द लिखें हों, किसी कागज को नष्ट करना, या फाड़ना, पढ़ाई का अपमान है, इसप्रकार समय के अंतराल में, तिब्बत में, थोड़े से भी अपूर्ण पन्नों की, बंडल–दर–बंडल, गांठ के बाद गांठ, इकट्ठी होती जाती। यदि कागज का पन्ना, संतोषजनक ढंग से छपा हुआ समझा जाता, छापने वालों को चलते रहने का आदेश दिया जाता और वे विभिन्न पन्नों को, जिनमें से प्रत्येक, पहले वाले की भॉति, दोषों के लिए, सावधानीपूर्वक जॉचा जाता था। मैं बहुधा, इन छापने वालों को, काम पर, ध्यान से देखा करता था और अपने अध्ययन काल में, मुझे उनके काम को खुद करना पड़ा। मैंने छपे हुए शब्दों को उल्टा करके गढ़ा, मैंने गढ़ने की क्रिया को चिकना किया और अतिकुशल सावधान निरीक्षकों के अंर्तगत, बाद में, मैंने छपी हुई पुस्तकों में स्याही भी लगाई।

तिब्बती पुस्तकें, पश्चिमी पुस्तकों की भॉति, जिल्दबंधी हुई नहीं होतीं। तिब्बती पुस्तक एक लंबा

मामला है, और शायद ये कहना अच्छा होगा कि चौड़ा मामला था और बहुत छोटा, क्योंकि तिब्बत की मुद्रित पंक्ति, अनेक फुट दूर तक विस्तारित होती थी, परंतु पेज केवल एक फुट ऊँचे होते थे। आवश्यक पेजों को रखने वाले सभी पन्ने, समय के पूरा होने पर–कोई जल्दी नहीं थी–सावधानी से हटाये जाते और वे सूखते। जब उन्हें, सूखने के लिए, समय के बाद समय, समय दे दिया जाता, पुस्तकों को इकट्ठा किया जाता। पहले एक आधार का बोर्ड होता, जिससे दो फीते संलग्न होते, तब उस आधार के बोर्ड के ऊपर, पुस्तक के पृष्ठों को उनके सही क्रम में जमाया जाता, और जब हर पुस्तक इस तरह जम जाती, छपे हुए पृष्ठों के ढेर, भारी बोर्ड, जोकि उनका आवरण होता, के अंदर रखे जाते। इस भारी बोर्ड पर, शायद पुस्तक में से कुछ दृश्य दिखाने वाले, और वास्तव में, शीर्षक देते हुए, एक–एक गढ़ी हुई चीजें होतीं। नीचे के बोर्ड से लाये गए दो फीते, ऊपर के बोर्ड के आरपार बांध दिए जाते, कुछ समुचित दबाव उन पर लगाया जाता ताकि, सभी पन्ने एक दबे हुए पिण्ड के रूप में, बलपूर्वक नीचे दबा दिए जायें। विशेषरूप से बहुमूल्य पुस्तकें, तब सावधानीपूर्वक, रेशमी कपड़े में लपेटी जातीं और लपेटने वाले कपड़े को सील बंदकर दिया जाता ताकि, केवल वे लोग ही, जिनके पास उचित अधिकार है, उस लपेटन को खोल सकें और इतनी सावधानी के साथ छपी हुई पुस्तक की शांति को भंग कर सकें!

मुझे ऐसा लगा कि इन पश्चिमी चित्रों में से अनेक, उल्लेखनीयरूप से अनावरित (undressed) अवस्था में औरतों के थे; मुझे ऐसा लगा कि ये देश, बहुत गर्म देश होने चाहिए, क्योंकि, अन्यथा, औरतें इतनी न्यूनतम अवस्था में कैसे हो सकती थीं ? इन चित्रों में से कुछ पर, स्पष्टरूप से, मरे हुए लोग लेटे हुए थे, जबकि उन पर, एक हाथ में एक धातु की नली के टुकड़े के साथ, जिसमें से धुऑ निकलता था, शायद, अधिक कमीन दिखता हुआ, एक आदमी खड़ा हुआ था। मैं कभी इसका उद्देश्य नहीं समझ पाया, क्योंकि–अपनी खुद की धारणाओं (impressions) से निर्णय करने के लिए–पश्चिमी विश्व के लोगों ने चारों तरफ जाना और एक–दूसरे को मारना, इसे अपना मुख्य शौक बना लिया था, तब बड़े लोग, अनोखी पोशाकों के साथ आते और धातु की चीजों को उस व्यक्ति, जो नली में से धुऑ निकाल रहा होता, के हाथों या कलाईयों पर रखते।

कम कपड़े पहने हुई महिलाओं ने मुझे बिल्कुल भी परेशान नहीं किया, और न हीं किसी प्रकार की विशेष दिलचस्पी मेरे अंदर उत्तेजित की, क्योंकि बौद्ध और हिन्दुओं के लिए, और, वास्तव में, पूर्व के सभी लोग जानते थे कि मानव जीवन में यौन आवश्यक हैः ये ज्ञात था कि यौन का अनुभव, शायद, परमानंद का उच्चतम रूप था, जिसको आदमी, जब वह हाड़–मांस के शरीर में होता, अनुभव कर सकता था। उस बजह से हमारे धार्मिक चित्रों में से अनेक, एक आदमी और एक औरत को–सामान्यत : एक देव और देवी के रूप में संदर्भित करते हुए–सर्वाधिक प्रगाढ़ आलिंगन में प्रदर्शित करते। क्योंकि जीवन और जन्म के तथ्य, इतने सुविख्यात थे कि वहॉ इनको, जो तथ्य थे, छिपाने की विशेष आवश्कता नहीं थी और इसप्रकार कई बार ये विस्तार, लगभग फोटोग्राफी जैसे हो जाते। हमारे लिए, ये किसी भी तरह से अभद्रता नहीं होती, किसी भी प्रकार से भद्दा लगने वाला नहीं होता, बल्कि ये इंगित करने की, कि नर और मादा के संयोग से, निश्चित विशिष्ट अनुभव उत्पन्न होते हैं, मात्र सर्वाधिक सुविधाजनक विधि थी और ये समझाया गया था कि, आत्माओं के मिलन से, अधिक आनंद अनुभव किया जा सकता था, परंतु वह, वास्तव में, इस विश्व में नहीं होता।

ल्हासा के शहर में, श्यो के गॉव में, व्यापारियों से हुई बातचीत से, और उनसे, जो पश्चिमीद्वार पर, रास्ते के बगल से आराम कर रहे थे, मैंने आश्चर्यजनक सूचनाऐं इकट्ठी कीं कि, किसी के शरीर को, दूसरे के घूरने के लिए अनावरित करना–पश्चिमी विश्व में इसे अभद्र माना जाता था। मैं नहीं समझ सकता था कि ऐसा क्यों होना चाहिए था, क्योंकि जीवन का सर्वाधिक मूल तथ्य ये था कि, दो योनियॉ (नर एवं मादा) होती हैं। मुझे, एक बूढ़े व्यापारी के साथ, जो अक्सर जल्दी–जल्दी, भारत के कलिंगपोंग

और ल्हासा के बीच यात्राऐं करता था, एक वार्तालाप याद आया। मैंने, पूरे विचारणीय समय के लिए, उससे पश्चिमी द्वार पर मिलना और उसे हमारे देश के लिए, एक और सफल यात्रा की बधाई देना–इसे अपना कार्य बना लिया था। अक्सर हम खड़े रहते और जब–तब बातचीत करते रहते, मैं उसे ल्हासा से संबंधित खबरें सुनाता और वह मुझे महान बाहरी विश्व के संबंध में खबरें देता। अक्सर वह मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के लिए, पुस्तकें और पत्रिकायें भी लाता और तब मैं उन्हें, उन तक पहुॅचाने का आनंददायक कार्य करता। इस विशेष व्यापारी ने एक बार मुझसे कहा, ''मैंने तुम्हें पश्चिमी लोगों के विषय में इतना बताया है, परंतु अभी–भी, मैं उन्हें समझता नहीं हूॅ, उनकी कहावतों में से एक विशेष, मेरे गले नहीं उतरती। वह ये है; वे कहते है कि, मनुष्य को भगवान की छवि में बनाया गया है, और फिर भी, वे अपने शरीर को दिखाने से डरते हैं, जिसका वे दावा करते हैं कि, वह भगवान की छवि में बना है। तब, क्या इसका ये अर्थ है कि वे भगवान की आकृति से शर्मिंदा हैं ?'' वह प्रश्न भरी दृष्टि से मेरी ओर देखता, और मैं वास्तव में, पूरी तरह से खो जाता, मैं उसके इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता था। आदमी को, भगवान की छवि के रूप में बनाया है। इसलिए, यदि अंतिमरूप से भगवान पूर्णता में है– जैसा होना ही चाहिए–तो भगवान की उस छवि को अनावरित करने में, (किसी को) कोई शर्म नहीं होनी चाहिए। हम तथाकथित मूर्तिपूजक, अपने शरीरों के ऊपर शर्मिंदा नहीं होते थे, हम जानते थे कि, यौन के बिना प्रजाति को आगे बढ़ाने का कार्य नहीं होगा। हम जानते थे कि यौन, उचित अवसरों पर, और वास्तव में, उचित वातावरण में, किसी आदमी और औरत की आध्यात्मिकता को बढ़ाता है।

जब मुझे कहा जाता कि कुछ आदमी और औरतों ने, जिनकी शादी सालों पहले हुई थी शायद, एक दूसरे के शरीर को कभी अनावरित नहीं देखा, मैं और भी विस्मित होता था। जब मुझे ये बताया गया कि वे केवल पर्दों के पीछे और बत्तियॉ बुझाकर, ''प्रेम करते हैं'' मुझे याद है, मैंने सोचा, मुझे सूचना देने वाला व्यक्ति, मुझे एक गॅवार देश के लिए ले जा रहा था, जो वास्तव में, इतना अधिक अत्यधिक मूर्ख था, कि जो विश्व में चल रहा है, उसे भी नहीं जानता था और ऐसे एक सत्र के बाद, मैंने निश्चय किया कि, पहले ही अवसर पर, मैं अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप से, पश्चिमी विश्व में यौन के संबंध में पूछूॅगा। मैं पश्चिमीद्वार से वापस हुआ, और संकीर्ण खतरनाक रास्ते के ऊपर, जिसे हम चाकपोरी के लड़के, नियमित पथ की तुलना में, प्राथमिकता से उपयोग करते थे, सड़क के आर–पार दौड़ा। ये रास्ता किसी पर्वतारोही को भी डरा सकता था; हमको भी ये उसी तरह, बारबार डराता था, परंतु, जबतक कि अनुमानतः हम, अपने से अच्छे, अपने वरिष्ठों के साथ में नहीं हों, दूसरे पथों का उपयोग न करना, (हमारे लिये) एक सम्मान का विषय होता था। ऊपर बढ़ने का तरीका, जोखिम भरे तरीके से लटकते हुए, किसी निश्चित अनावरित मार्ग पर, हाथ की पकड़ से दांतेदार पहाड़ियों पर चढ़ने, और सभी मौकों पर उन कामों को करने, जिन्हें शायद ही कोई समझदार व्यक्ति करता, यदि उसे सौभाग्य प्रदान किया जाये, को अपरिहार्य बना देता था। अंत में, मैं चोटी पर पहुॅचा, और एक रास्ते से, जो भी हमें पता था, और जो कुलानुशासकों को भी दौरों (fits) में डाल सकता था, यदि उन्हें पता होता, चाकपोरी में दाखिल हुआ। इसलिए – अंत में, मैं परंपरागत रास्ते से आने की तुलना में अत्यधिक थका हुआ होने पर भी, भीतरी ऑगन के अंदर खड़ा हुआ, परंतु सम्मान, कम से कम संतुष्ट हुआ। मैंने ऊपर की ओर की यात्रा को, कुछ हदतक, कुछ लड़के, जो नीचे की तरफ जाते थे, उनकी अपेक्षा तेजी के साथ (पूरा) किया।

मैंने पोशाक में से धूल और छोटे कंकड़ों को झड़ाया और अपने कटोरे को, जिसमें अनेक छोटे पौधे जमा हो गए थे, खाली किया और तब उसे पूरी तरह, प्रस्तुतीकरण के लिए अनुभव करते हुए, मैंने अपना रास्ता, अपने शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप की तलाश में चला। जैसे ही मैं, एक कोने से मुड़ा, मैंने उन्हें खुद से दूर जाते हुए देखा। इसलिए मैंने पुकारा, ''ओह! आदरणीय लामा!'' वे रुक गए, और मुड़े और मेरी तरफ चले। ऐसा कार्य, जिसे शायद, चाकपोरी में कोई दूसरा आदमी नहीं करता, क्योंकि

वह हर आदमी को और लड़के को समान व्यवहार देते थे, जैसा वह कहा करते थे, ये बाहरी आकृति, ये शरीर, जिसे कोई वर्तमान में पहने हुए है, नहीं, वल्कि, जो अंदर है–जो शरीर को नियंत्रित कर रहा है–वह महत्वपूर्ण है। मेरे शिक्षक, स्वयं एक महान अवतार थे, जो अपने शरीर में लौटने पर आसानी से पहचान लिए गए थे। ये मेरे लिए हमेशा ही, स्मरणीय पाठ था, क्योंकि ये महान व्यक्ति, नम्र था और हमेशा ही, उन लोगों की भावनाओं को समझता था, जो मात्र ''इतने महान नहीं थे'', परंतु कुछ जो – इसे बिना किसी बनावट के – सर्वथा नीचे रखने के लिए थे।

''ठीक है अब लोबसांग!'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''मैंने तुम्हें उस वर्जित पथ से ऊपर आते देखा और यदि मैं कुलानुशासक होता तो, तुम अब अनेक स्थानों पर हाजिर जवाब रहे होते; तब तुम कई घण्टों खड़े रहने पर प्रसन्न होते।'' वे हॅसे, और उन्होंने कहा, ''तथापि, मैं खुद भी, बहुत कुछ हद तक, ये चीज करता रहता था, और मैं अभी भी यही करता हूॅ, दूसरों को करते हुए देखने में, जो शायद, एक वर्जित रोमॉच है, जो मैं अब और अधिक नहीं कर सकता। ठीक है, ये कैसी भी भागदौड़, किसलिए ?'' मैंने उनकी तरफ देखा और कहा, ''आदरणीय लामा, मैं पश्चिमी विश्व के लोगों के बारे में भयानक चीजों को सुन रहा हूॅ और मेरा मन, वास्तव में, लगातार खलबली में है, क्योंकि, यदि मेरे ऊपर हॅसा जाये–यदि मैं एक सबसे खराब सामान्य की तुलना में मूर्ख भी बनता हुआ देखा जाऊॅ–या वे आश्चर्य, जिनका मेरे सामने वर्णन किया गया है, वास्तव में तथ्य हों, मैं ये कहने में समर्थ नहीं हूॅ।'' ''मेरे साथ आओ, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''मै अभी अपने कमरे में जा रहा हूॅ, मैं ध्यान लगाने वाला था परंतु बदले में, हम इन चीजों पर चर्चा करें। ध्यान प्रतीक्षा कर सकता है।'' हम मुड़े और साथ–साथ टहलते हुए लामा मिंग्यार डोंडुप के कमरे में गए–एक वह जो नगीना उद्यान की अनदेखी करता था। मैं उनके कदमों के साथ कमरे में प्रविष्ट हुआ, और तुरंत ही नींचे बैठ जाने के बजाय, उन्होंने सेवक को चाय लाने को बुलाने के लिए घण्टी बजाई। तब, मुझे अपने बगल में रखते हुए, वे खिड़की के पास गए और (अपने) प्रिय देश के विस्तार के ऊपर, उसके आर–पार देखा। देश, जो शायद संपूर्ण विश्व में, सर्वाधिक सुन्दर स्थानों में से एक था। हमारे नीचे, हमारे थोड़ा–सा बांयी तरफ, नोरबू लिंगा (Norbu Linga) या 'नगीना उद्यान' के नाम से जाना जाने वाला, एक उपजाऊ जंगली उद्यान था। सुन्दर स्वच्छ पानी, पेड़ों के बीच उछल रहा था, और अंतरतम का, एक द्वीप के ऊपर व्यवस्थित किया हुआ छोटा मंदिर, सूर्य की रोशनी में झगमगा रहा था। कोई चट्टानी रपट (cause way)– बीच में रिक्त स्थान छोड़ते हुए ताकि, उसमें से पानी मुक्तरूप से बह सके और मछलियॉ किसी बंधन न रहें, पानी के ऊपर सपाट पत्थरों के बने हुए एक पथ–को पार कर रहा था। मैंने सावधानी से देखा और सोचा (काश!) मैं सरकार के उच्च सदस्यों में से एक को, विशिष्टता प्रदान कर सकता। ''हॉ, लोबसांग, वह अंतरतम से मिलने जा रहा है'' मेरे शिक्षक ने मेरे अनकहे विचार के उत्तर में कहा। कुछ समय के लिए, हमने साथ–साथ देखा क्योंकि, यहॉ इस उद्यान और उसके परे, मानो कि, सुन्दर दिन के आनंद के साथ, उछलती–कूदती और नाचती, प्रसन्नता की नदी को देखना आनंददायक लग रहा था। हम नीचे की तरफ, नावों के समीप–अपने पसंदीदा स्थानों में से एक–को भी देख सकते थे, नाविकों को अपनी फुलाई हुई नावों पर सवार होते हुए और दूसरी तरफ को जाने के लिए प्रसन्नतापूर्वक पैडल चलाते हुए देखना, मेरे लिए, ये आश्चर्य और कभी समाप्त न होने वाले आनंद का स्रोत था।

हमारे नीचे, हमारे और नोरबू लिंगा के बीच में, तीर्थयात्री अपनी धीमी चाल से, लिंगखोर रोड पर चले जा रहे थे। वे हमारे खुद के चाकपोरी पर, मुश्किल से एक नजर डालते परंतु, इस पर लगातार निगाह रखते, यदि वे संभवतः, नगीना उद्यान से कुछ मनोरंजक चीज देख सकें, क्योंकि जागरूक तीर्थयात्रियों के लिए, सदैव ये सामान्यज्ञान रहा होता कि अंतरतम, नोरबू लिंगा पर हो सकते होंगे, सीधे निकलते थे। मैं, काश्या लिंगा (Kashya Linga), अच्छी तरह से पेड़ों से भरा हुआ एक छोटा सा बगीचा, जो नावों की सड़क के बगल से था, को भी देख सका। वहॉ लिंगखोर रोड से प्रारंभ

होकर, नीचे क्यी चू (Kyi Chu) तक जाने वाली, एक छोटी सड़क थी और यह मुख्यतः, उन यात्रियों द्वारा उपयोग में लाई जाती थी, जो नावों का उपयोग करना चाहते थे। कुछ, तथापि, इसका उपयोग, लामाओं के बाग तक पहुँचने के लिए करते थे, जो नाव वाली सड़क के दूसरी तरफ था।

''आदरणीय लामा!'' मैंने कुछ उत्तेजना में कहा, ''पश्चिमी द्वार पर, यहॉ से गुजरते हुए एक व्यापारी, जिसके साथ, मैं कुछ क्षणों के लिये, मामले पर विचार विमर्श कर रहा था, ने पश्चिम के लोगों के बारे में, मुझे कुछ उल्लेखनीय जानकारियॉ दीं। उसने मुझे बताया कि वे हमारे धार्मिक चित्राकृतियों को अभद्र मानते हैं। उसने मुझे उनकी यौन आदतों के बारे में, कुछ अविश्वसनीय बातें बताईं और मैं अभी भी निश्चित नहीं हूँ कि, वह मुझे बेवकूफ नहीं बना रहा था।'' मेरे शिक्षक ने मेरी तरफ देखा और एक या दो क्षणों के लिए सोचा, तब उन्होंने कहा, ''इस मामले में जाने के लिए लोबसांग, एक से अधिक सत्र लगेगा। हमें अपनी सेवा के लिए जाना है और उसका समय निकट ही है। हम मात्र, पहले के एक पक्ष ही विचार–विमर्श कर लें ?'' मैंने, बड़ी उत्सुकता के साथ सिर हिलाया, क्योंकि मैं इस सबके बारे में, वास्तव में, बहुत बड़ी उलझन में था। तब मेरे शिक्षक ने कहा, ''ये सब कुछ, धर्म से निकला है। पश्चिम का धर्म, पूर्व के धर्म से अलग है। हमें इसको देखना चाहिए और समझना चाहिये कि इसका इस विषय पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने अपनी पोशाक को, अपने आसपास, अधिक सुखद तरीके से व्यवस्थित किया, और मेज पर से चीजों को हटा कर साफ करने के लिए, सेवक (को बुलाने) के लिए घण्टी बजाई । जब ये कर लिया गया, वे मेरी तरफ मुड़े और विचार–विमर्श करना शुरू किया जो मुझे चित्ताकर्षक रूप से दिलचस्प लगा।

''लोबसांग'', उन्होंने कहा, हमको पश्चिम के धर्मों में से किसी एक और अपने खुद के बौद्ध धर्म के बीच समानता देखनी चाहिए। हमारे पाठों से, तुम ये महसूस करोगे कि, हमारे स्वामी गौतम की शिक्षाऐं, समय के अंतराल में, कुछ हद तक बदल दी गईं हैं। पूरे वर्षों और शताब्दियों तक, जो गौतम के इस पृथ्वी पर से चले जाने और उनके बुद्ध अवस्था में उन्नयन के बाद से गुजर गईं, शिक्षाऐं, जो उन्होंने व्यक्तिगत रूप से सिखाईं थीं, बदल चुकीं हैं। हम में से कुछ सोचते है कि ये परिवर्तन, बुरे के लिए हुआ है, दूसरे सोचते हैं कि, ये शिक्षाऐं आधुनिक विचारों के समकक्ष लाई गईं हैं।'' उन्होंने, ये देखने के लिए कि मैं उन्हें पर्याप्त ध्यान से समझ रहा था, ये देखने के लिए कि मैं उसे समझ रहा था, जिसके संबंध में वह बात कर रहे थे, मेरी तरफ देखा। मैं समझा और पूरी तरह से उनका अनुगमन किया। उन्होंने संक्षिप्त रूप से सिर हिलाया और तब कहना जारी रखा।

''हमारे पास हमारे महान प्राणी थे, जिन्हें हम गौतम कहते हैं, जिन्हें कुछ लोग बुद्ध कहते हैं। ईसाईयों के पास भी, उनके महान प्राणी थे। उनके महान प्राणी ने उन्हें कुछ निश्चित शिक्षाऐं दीं। लोकोक्ति और, वास्तव में, वास्तविक लेखे, इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि, उनके खुद के पवित्र ग्रंथों के अनुसार, उनका महान प्राणी, वास्तव में, एक धर्म की तलाश में, सूचनाओं की तलाश में, ज्ञान की तलाश में, जो पश्चिमी मानसिकता और आध्यात्मिकताओं के लिए उपयुक्त हो, भारत और तिब्बत में, घुम्मकड़पन में घूमता रहा। ये महान प्राणी, ल्हासा में और वास्तव में, हमारे 'जो कांग' बिहार (Cathedral) में आया। महान प्राणी, तब पश्चिम को लौटा और उसने एक धर्म की रचना की, जो पश्चिमी लोगों के लिए, हर तरह से प्रशंसनीय और उपयुक्त था। उस महान व्यक्ति के इस पृथ्वी पर से गुजर जाने के बाद–जैसे हमारा खुद का गौतम गुजरा–ईसाई गिरजाघरों में कुछ अंतःकलह उभरी। उसके गुजर जाने के साठ वर्ष बाद, इस्ताम्बूल (Constantinopole) नामक एक स्थान पर एक समागम या बैठक, बुलाई गई। ईसाई सिद्धांतों में कुछ निश्चित परिवर्तन किए गए–ईसाई विश्वासों में कुछ परिवर्तन किए गए। शायद, उस समय के कुछ पादरी महसूस करते थे कि, उनके समागम को भलीभॉति तपाये रखने के क्रम में रखते हुए, उन्हें थोड़ी यंत्रणा जोड़नी चाहिए।'' फिर उन्होंने, ये देखने के लिए कि मैं समझ रहा था, मेरी तरफ देखा। फिर मैंने प्रदर्शित किया कि, मैं न केवल उनको समझ

रहा था, बल्कि मैं इसमें गहराई से दिलचस्पी रखता था।

''लोग, जो सन् साठ में उस इस्ताम्बूल के समागम मैं उपस्थित हुए, ठीक हमारे कुछ भिक्षुओं की भॉति, जो दूसरों के विचार मात्र के ऊपर, बेहोश अनुभव करते हैं, वे आदमी थे जो, औरतों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण नहीं थे। उनमें से बहुसंख्य लोगों ने, यौन, जो परम आवश्यकता की स्थिति में, प्रजाति को बढ़ाने के लिए ही, प्रयोग की जा सकती है, को कुछ गंदी चीज माना। ये वे आदमी थे, जिनकी अपने आप में, कोई यौन इच्छा नहीं थी, निस्संदेह, उनकी दूसरी इच्छाऐं थी, शायद उनमें से कुछ इच्छाऐं आध्यात्मिक थीं–मैं नहीं जानता–मैं केवल ये जानता हूॅ कि सन् साठ के वर्ष में, उन्होंने निश्चय किया कि यौन गंदा था, यौन शैतानी कार्य था। उन्होंने तय किया कि बच्चे, इस संसार में, गंदे लाये जाते हैं और जबतक कि उन्हें, सबसे पहले, किसी भी प्रकार से, शुद्ध न कर लिया जाये, वे पारितोषिक के लिए उपयुक्त नहीं होते। वे एक क्षण के लिए रुके और ज्यों ही उन्होंने कहा, ''मैं उन लाखों बच्चों के बारे में नहीं जानता, जो इस्ताम्बूल की इस सभा से पहले पैदा हुए, क्या होने की आशा की जाती है, तब मुस्कराये!''

''तुम समझोगे, लोबसांग, कि मैं तुम्हें ईसाइयत के बारे में वैसी जानकारी दे रहा हूॅ, जैसा मैं इसे समझता हूॅ। संभवतः, जब तुम उन लोगों के बीच रहने के लिए जाओगे, तुम्हें कुछ भिन्न प्रभाव या भिन्न जानकारी मिल सकती है, जो किसी तरह से मेरे खुद के विचारों और शिक्षाओं को प्रभावित कर सकती है।'' जैसे ही उन्होंने अपने कथन को समाप्त किया, शंख बज उठे, और मंदिर की तुरहियॉ गूंज उठीं। वहॉ हमारे आसपास, सेवा के लिए तैयार होते हुए व्यवस्थित, अनुशासित लोगों की एक हड़बड़ी थी। हम भी खड़े हुए और सेवा के लिए नीचे मंदिर की ओर अपना रास्ता पकड़ने से पहले, अपनी पोशाकों को झाड़ा। मुझे प्रवेशद्वार पर छोड़ने से पहले, मेरे शिक्षक ने कहा, ''लोबसांग, बाद में, मेरे कमरे में आना, और हम अपना वार्तालाप जारी रखेंगे।'' इसलिए मैं मंदिर में प्रविष्ट हुआ और (मैंने) अपने साथियों के साथ अपना स्थान ग्रहण किया, और अपनी प्रार्थनाओं को कहा और मैंने अपने खुद के विशिष्ट भगवान को धन्यवाद दिया कि, मैं अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप की तरह, एक तिब्बती था। पुराने मंदिर में, उपासना की हवा, धीमे–धीमे चलते हुए सुगंध के बादल, जो हमें अस्त्तिव के दूसरे धरातल पर स्थित लोगों के साथ संपर्क में रखते थे, सुन्दर थी। सुगंधि, मात्र एक सुखद गंध नहीं है, ऐसा भी कुछ नहीं, जो मंदिर को ''कीटाणुरहित'' बनाती है–यह एक सजीव बल है, एक बल, जो इस तरह व्यवस्थित किया गया है कि, किसी विशेष प्रकार की सुगंधि को चुनने पर, हम वास्तव में, कंपनों की दर को नियंत्रित करते हैं। आज रात में, मंदिर में, सुगंधियॉ तैर रहीं थीं और उस स्थान के पुराने लौकिक वातावरण को तनावमुक्त कर रहीं थीं। मैंने अपने स्थान से, अपने समूह के बच्चों के बीच–धुंधले कोहरे के बीच–मंदिर की इमारतों के बाहर देखा। वहॉ–चांदी की घण्टियों के साथ–साथ–समयों पर, बूढ़े लामाओं के, गहन जाप हो रहे थे। आज रात, हमारे साथ एक जापानी भिक्षु था, वह भारत में कुछ समय रुकने के बाद, हमारे पूरे देश को पार करता हुआ आया था। वह अपने देश में एक महान व्यक्ति था, और वह अपने साथ, अपने लकड़ी के ढोलों (drums) को, ढोल, जो जापानी भिक्षुओं के धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, लाया था। मैंने, उल्लेखनीय संगीत, जो उन्होंने अपने ड्रमों से उत्पन्न किया, के लिए जापानी भिक्षु की सर्वज्ञता (versatility) पर आश्चर्य व्यक्त किया। मुझे वास्तव में, ये आश्चर्यजनक दिखाई देता है कि, एक लकड़ी के (एक विशेष) प्रकार के डिब्बे को पीटने पर, अत्यंत संगीतमय ध्वनि निकल सकती है; उसके पास लकड़ी का ढोल था और उसके पास लोलक (pendulum) जैसा कुछ था, जिनमें से प्रत्येक के साथ, छोटी घण्टियॉ जुड़ीं थी, और हमारे खुद के लामा भी, चांदी की घण्टियों के साथ, उसके साथ थे। महान मंदिर के शंख, उचित समय पर गूंज उठे। मुझे ऐसा लगा कि पूरा मंदिर कंपन करने लगा, दीवारें स्वयं में नाचती हुईं और कांपती हुईं प्रतीत हुईं और काफी दूरी पर, बहुत दूर के अंतराल में, कोहरा, चेहरों के रूप में, बहुत

पहले मृत लामाओं के चेहरों के रूप में बदलता हुआ दिखाई दिया। परंतु एकबार फिर, अत्यंत जल्दी में सेवा समाप्त हुई, और मैंने अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के पास पहुॅचने की व्यवस्था करते हुए, जल्दी की।

''तुमने बहुत अधिक समय नहीं गंवाया, लोबसांग!'' मेरे शिक्षक ने प्रसन्नतापूर्वक कहा। ''मैंने सोचा, शायद तुम, इन असंख्य अल्पखाद्य पदार्थो (snacks) में से एक के लिए रुक रहे होगे!'' ''नहीं, आदरणीय लामा'' मैंने कहा, ''मैं कुछ ज्ञान पाने के लिए आतुर हूॅ, क्योंकि मैं स्वीकार करता हूॅ कि पश्चिमी विश्व में यौन का विषय एक ऐसा विषय है, जिसने इसके संबंध में व्यापारियों और दूसरे लोगों से इतना बहुत सुन लेने के बाद, मेरे अंदर बहुत आश्चर्य पैदा कर दिया है।'' वे मुझ पर हॅसे और उन्होंने कहा, ''यौन, हर जगह बहुत–सी रुचि पैदा करता है! कुल–मिलाकर, ये यौन ही है, जो लोगों को इस पृथ्वी पर बनाकर रखता है। जब तुम्हें इसकी आवश्यकता होगी, हम इस पर बातचीत करेंगे।''

''आदरणीय लामा,'' मैंने कहा, ''पहले आपने कहा था कि यौन, विश्व में दूसरा महानतम बल है। इस से आपका क्या मतलब था ? यदि यौन, विश्व की जनसंख्या बनाये रखने के लिए, इतना ही आवश्यक है तो फिर ये सबसे अधिक महत्वपूर्ण शक्ति क्यों नहीं है ?'' ''विश्व में सर्वाधिक शक्ति, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''यौन नहीं है, सब में से सर्वाधिक शक्ति कल्पना है, क्योंकि बिना कल्पना के, यौन आवेग भी नहीं होंगे। यदि किसी नर की कल्पनाऐं न हों, तो वह मादा में अभिरुचि नहीं रख सकेगा। बिना कल्पना के कोई लेखक नहीं होंगे, कोई कलाकार नहीं, किसी प्रकार का कुछ भी नहीं, जो कि रचनात्मक या भला हो!'' ''परंतु, आदरणीय लामा,'' मैंने कहा, ''क्या आप ये कह रहे हैं कि, कल्पना यौन के लिए आवश्यक है ? और यदि आप (ऐसा) कहते हैं, (तो) कल्पना पशुओं पर कैसे लागू होती है ?'' ''ठीक वैसे ही जैसे कि यह मनुष्यों द्वारा धारित की जाती है, लोबसांग, कल्पना पशुओं में भी होती है। अनेक लोग सोचते हैं कि बुद्धि की किसी भी शक्ल के बिना, कारण की किसी भी शक्ल के बिना, पशु मनरहित प्राणी हैं, फिर भी मैं, जो आश्चर्यजनकरूप से, वर्षों की एक लंबी संख्या में जीवित रहा हूॅ, अलग तरीके से तुमको बताता हूॅ।'' मेरे शिक्षक ने मेरी तरफ देखा, और तब मेरी तरफ एक उंगली हिलाते हुए, उन्होंने कहा, ''तुम मंदिर की बिल्लियों के शौकीन होने का दावा करते हो, क्या तुम मुझे ये बताने वाले हो कि, उनकी कोई कल्पना नहीं होती ? तुम हमेशा, मंदिर की बिल्लियों के साथ बातचीत करते हो, तुम उनको प्यार करने के लिए रुक जाते हो, उनके साथ एक बार प्रेमपूर्ण होने के बाद, तुम दूसरी बार और तीसरी बार और इस प्रकार आगे भी के लिए प्रतीक्षा करते हो। यदि ये, मात्र असंवेदनशील प्रतिक्रियाऐं है, यदि ये मात्र मस्तिष्क के प्रादर्श है, तब बिल्ली दूसरी या तीसरी बार के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा नहीं करेगी, बल्कि तबतक प्रतीक्षा करेगी, जबतक कि ये उसकी आदत न बन जाये। नहीं, लोबसांग, कोई भी पशु, कल्पनाशील होता है। उसके साथ, साथी बनने पर, कोई भी पशु, आनंद की कल्पना करता है, और तभी अपरिहार्य चीजें घटती हैं।''

जब मैं इसको सोचने के लिए, इस विषय पर विचार करने के लिए हुआ, मुझे ये पूरी तरह से स्पष्ट था कि, मेरे शिक्षक एकदम सही थे। मैंने छोटी चिड़ियों को, छोटी मुर्गियों को अपने पंखों को उसी ढंग से फड़फड़ाते हुए, जैसे कि जबान औरतें अपनी पलकों को फड़फड़ाती हैं, देखा था! मैंने छोटी चिड़ियों को, जैसे ही उन्होंने, खाने के लिए, कभी न समाप्त होने वाली तलाश से लौटते हुए, अपने साथियों के लौटने की प्रतीक्षा को, ध्यान से और एकदम वास्तविक उत्सुकता के साथ देखा था। मैंने वह आनंद देखा था, जिसके साथ एक प्यारी छोटी चिड़िया ने, अपने साथी का, उसके लौटने पर, अभिनंदन किया था। अब ये मेरे लिए स्पष्ट था, कि मैं इसके बारे में सोचूॅ, कि, वास्तव में, पशुओं में, कल्पना होती है, और इस प्रकार अपने शिक्षक की टिप्पणियों की संवेदना देख सकूॅ कि इस पृथ्वी पर कल्पना, सबसे बड़ी शक्ति थी।

''व्यापारियों में से एक ने, मुझे बताया कि कोई व्यक्ति, जितना अधिक गूढ़ विज्ञानी (occult)

होता है, वह यौन के प्रति उतना ही अधिक विरोधी होता है, आदरणीय लामा,'' मैंने कहा। ''क्या ये सत्य है, या मुझे परेशान किया गया है ? मैंने इतनी अधिक अजनबी चीजों के बारे में सुना है कि मैं, वास्तव में, नहीं जानता कि, मैं इस मामले में कहॉ खड़ा हूँ।'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने दुःखी होकर अपना सिर हिलाया, जैसे ही उन्होंने जबाव दिया, ''ये पूरी तरह सत्य है, लोबसांग, कि अनेक लोग, जो अत्यधिक तीव्रता के साथ गूढ़रहस्यों के मामलों में दिलचस्पी रखते हैं, यौन के प्रति उतने ही तीव्र विरोधी होते है, और एक विशिष्ट कारण के लिए; तुमको पहले ये बताया गया है कि, महान गूढ़विज्ञानी सामान्य नहीं होते, अर्थात्, उनके साथ शारीरिकरूप से कुछ गलत अवश्य होता है। किसी व्यक्ति को गंभीर बीमारी हो सकती है, जैसे कि टी. बी. (ट्यूबर क्लोसिस, ट्यूबरकल बेसिलस (tubercle bacillus) का संक्षिप्त), या कैंसर, या उसी तरह की कोई दूसरी चीज। किसी व्यक्ति को नाड़ियों (nerves) संबंधी कोई शिकायत हो सकती है–ये कुछ भी हो, ये एक बीमारी है और ये बीमारी पराभौतिकीय दृष्टियों (metaphysical perceptions) को बढ़ा देती है।'' जैसे ही उन्होंने कहना जारी किया–उन्होंने हल्के से त्योरी चढ़ाई–''अनेक लोग पाते हैं कि, यौन आवेग एक महान प्रेरक है। कुछ लोग एक या दूसरे कारण के लिए, उस यौन प्रेरणा को उड़ा देने की विधियों का उपयोग करते हैं, और वे आध्यात्मिक चीजों की ओर मुड़ जाते है। एक बार, एक आदमी या एक औरत, यदि वह किसी चीज से मुँह मोड़ चुका है, तो वह उस चीज का एकदम दुश्मन हो जाता है। शराब पीने की बुराई के विरुद्ध अभियान करने वाला– कोई सुधारक–और न ही कोई अन्य, पियक्कड़ों की तुलना में, महान नहीं होता! उसी तरीके से, एक आदमी या एक औरत, जिसने यौन को त्याग दिया है (संभवतः क्योंकि वे संतुष्ट नहीं कर सके और न ही वे संतुष्ट हो सके!'') गूढ़ विज्ञान के मामलों की तरफ मुड़ जायेंगे, और वह सभी प्रेरणा, जो पहले (सफलतापूर्वक या असफलतापूर्वक) यौन के साहसी मामलों में जाती, अब, गूढ़ विज्ञान के साहसी मामलों में समर्पित हो जाती है। अब, दुर्भाग्यवश ऐसे व्यक्ति, बहुधा इस संबंध में असंतुलित हो जाते हैं; वे शिकायत करने लगते हैं कि, केवल यौन को त्यागने से ही उन्नति संभव है। इससे अधिक कल्पनातीत कुछ भी नहीं हो सकता, और न ही कुछ अधिक विकृत हो सकता है। महानतम लोगों में से कुछ, सामान्य जीवन का आनंद लेने और पराभौतिकी के मामलों में विस्तृत प्रगति करने में में सक्षम होते हैं।

ठीक उसी क्षण, महान चिकित्सकीय लामा, चिनरोबनोबो अंदर आये, हमने उनका अभिवादन किया और वह हमारे साथ बैठ गये। ''मैं अभी लोबसांग को यौन और गूढ़विज्ञान के सम्बंध में, कुछ मामलों को बता रहा हूँ'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''आह हॉ!'' लामा चिनरोबनोबो ने कहा, ''यह वह समय था, जब उसे इस मामले में कुछ जानकारी दी गई थी; मैंने काफी लंबे समय तक इस पर सोचा है।'' मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा, ''ये स्पष्ट है कि वे, जो यौन का सामान्यतः उपयोग करते है–यह जिस प्रकार उपयोग करने के लिए बना है–उनकी खुद की आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ा देता है। यौन, बुरा कहने का मामला नहीं है, परंतु दूसरी तरफ न ही ये छोड़ देने का मामला है। एक व्यक्ति पर, कंपनों को लाये जाने के द्वारा, उस व्यक्ति की आध्यात्मिकता बढ़ती है। तथापि, मैं तुम्हें ये संकेत कर देना चाहता हूँ,'' उन्होंने मेरी ओर कठोरता से देखते हुए कहा, ''कि यौनक्रिया में, केवल उन को, जो प्रेम में हैं, उनको, जो आध्यात्मिक जुड़ाव के द्वारा आपस में जुड़े हैं, शामिल होना चाहिए। वह जो अस्पष्ट है, अवैध है, शरीर की वेश्यावृति मात्र है और किसी को इतना अधिक नुकसान पहुँचाती है, जितना कि कोई दूसरे की मदद कर सकता है। उसी प्रकार, सभी प्रकार के लालचों से परहेज करते हुए, जो किसी का सत्य और न्यायोचित मार्ग पर नेतृत्व करते हैं, एक आदमी या एक औरत का, केवल एक भागीदार (partner) होना चाहिए ।''

लामा चिनरोबनोबो ने कहा, ''परंतु वहॉ एक दूसरा मामला है, जिस पर आपको विचार करना चाहिए, आदरणीय सहकर्मी, और वह है, जन्म नियंत्रण को संदर्भित करने वाला मामला। इसके साथ

व्यवहार करना, मैं आपके ऊपर छोड़ता हूँ।'' वह अपने पैरों पर खड़ा हुए, गंभीरता से हमें नमन किया और कमरे के बाहर चले गये।

मेरे शिक्षक ने, एक क्षण के लिए प्रतीक्षा की, और तब कहा, ''क्या अभी भी, तुम इससे थक गये हो, लोबसांग ?'' ''नहीं, श्रीमान्!'' मैंने जबाव दिया, ''मैं वह सब कुछ सीखने के लिए उत्सुक हूँ, जो मैं कर सकता हूँ क्योंकि, ये सब मेरे लिए अनजान है।'' ''तब तुम्हें जानना चाहिए कि, पृथ्वी पर जीवन के प्रारंभिक दिनों में, लोग परिवारों में विभाजित थे। विश्व के सभी क्षेत्रों में छोटे–छोटे परिवार थे, जो समय के गुजरने के साथ, बड़े परिवार बन गए। मानवों के बीच, झगड़ा और अनबन घटित होना, यह अपरिहार्य दिखाई देता है। परिवार–परिवार के विरुद्ध लड़ते हैं, विजेताओं ने आदमियों को मार दिया, जिनको उन्होंने जीता था और उनकी औरतों को अपने खुद के परिवार में मिला लिया। शीघ्र ही ये स्पष्ट हो गया कि परिवार, जो अब जाति के रूप में जाना जाता था, जितना बड़ा होगा, वह उतना ही अधिक शक्तिशाली और दूसरों के आक्रमण के कार्यों से अधिक सुरक्षित होगा।'' उन्होंने उदासी के ख्याल से मेरी तरफ देखा और तब कहना जारी रखा ''जैसे–जैसे वर्ष और शताब्दियॉ गुजरती गईं, जातियॉ आकार में बढ़ रहीं थीं। कुछ लोग, पुजारियों के रूप में स्थापित हुए, परंतु थोड़ी–सी राजनैतिक शक्ति के साथ, भविष्य पर एक नजर रखते हुए पुजारी! पुजारियों ने तय किया कि, उन्हें एक पवित्र आदेश (edict) निकालना पड़ेगा–जिसे वे ईश्वर का आदेश कह सकें–जो पूरी जाति को मदद करेगा। उन्होंने सोचा कि, किसी को लाभदायी और बहुगणित (multiplied) होना ही पड़ेगा। उन दिनों में, ये एक बहुत यथार्थ आवश्यकता थी, क्योंकि जबतक कि लोग, ''बहुगुणित'' न हों, उनकी जाति कमजोर हो जाती और शायद पूरी तरह से मिटा दी जाती। इसलिए पुजारी लोग, जिन्होंने आदेश दिया था कि, लोगों को उपयोगी और बहुगणित होना चाहिए, अपनी खुद की जातियों के भविष्य की भी सुरक्षा कर रहे थे। शताब्दियों पर शताब्दियॉ गुजरने के साथ, तथापि, ये काफी स्पष्ट है कि विश्व की जनसंख्या, ऐसी चाल से दौड़ रही है कि, विश्व अत्यधिक घनी आबादी वाला हो रहा है, खाद्य के स्रोत, जितना उचित ठहराते हैं, उससे कहीं ज्यादा लोग हैं। इस संबंध में कुछ करना ही होगा।''

मैं इस पूरे को समझ पाया, यह मेरे संज्ञान में आ गया, और मैं यह देखकर प्रसन्न था कि मेरे मित्र पार्गो कलिंग के–व्यापारी, जिन्होंने इतनी लंबी और इतने लंबे समय तक, यात्राऐं कीं थीं–ने मुझे सत्य ही बताया था।

मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा, ''कुछ धर्म, अभी–भी सोचते हैं कि इन पैदा होने वाले बच्चों की संख्या को किसी प्रकार से सीमित करना, वास्तव में, गलत होगा। परंतु यदि कोई विश्व इतिहास को देखे, तो वह पाता है कि अधिकांश युद्ध, आक्रामक की तरफ से, जीवन के लिए स्थान की कमी के कारण से पैदा होते हैं। किसी देश की आबादी तेजी से बढ़ती है, और वह जानता है कि यदि यह इसी दर से बढ़ती रही तो, न तो पर्याप्त खाना होगा, और न हीं उनके खुद के लोगों के लिए पर्याप्त अवसर। इसप्रकार वे, ये कहते हुए युद्ध छेड़ते हैं कि, उन्हें जिंदा रहने के लिए अधिक स्थान चाहिए!'' ''तब, आदरणीय लामा'' मैंने कहा, ''तब आप इस समस्या से कैसे व्यवहार करेंगे ?'' ''लोबसांग!'' उन्होंने जबाव दिया, मामला आसान है, यदि अच्छी इच्छाशक्ति वाले आदमी और औरतें, इस चीज पर विचार करने के लिए साथ आयें। जब पृथ्वी जवान थी, जब लोग काफी कम थे, धर्मों के पुराने तरीके–पुरानी धार्मिक शिक्षाऐं, हर तरह से उपयुक्त थीं परंतु, अब यह अपरिहार्य है–और ये समयानुसार होगा! –कि ताजा तरीके निकाले जायें–आपने पूछा, मैं इस सम्बंध में क्या करूँगा! ठीक है, मैं इसे करना चाहूँगा; मैं जन्मनियंत्रण को वैधानिक बना दूँगा। मैं सभी लोगों को जन्मनियंत्रण के बारे में सिखाऊँगा; इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, यह क्या था, और इस संबंध में इसके संबंध में क्या खोजा जा सकता था। मैं देखूँगा कि वे लोग, जो बच्चे चाहते हैं, शायद, एक या दो, पा सकें, जबकि दूसरे वे, जो बच्चा नहीं चाहते, उनके पास वह ज्ञान हो, जिसके द्वारा बच्चे पैदा नहीं होंगे। हमारे धर्म

के अनुसार, लोबसांग, ऐसा करने में कोई अपराध नहीं होगा। इससे पहले कि गोले के पश्चिमी भाग में जीवन प्रकट हुआ, मैंने युगों–युगों पुरानी प्राचीन पुस्तकों में पढ़ा है, क्योंकि, जैसा तुम जानते हो, जीवन सबसे पहले चीन और तिब्बत के आसपास के क्षेत्रों में प्रकट हुआ और पश्चिम की तरफ जाने से पहले भारत में फैला। तथापि, हम इसकी बात नहीं कर रहे हैं।''

मैंने, तब और वहीं (then and there), तय किया कि जितना जल्दी हो सकेगा, मैं अपने शिक्षक के पास जाकर, इस पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के संबंध में और अधिक बात करूँगा, परंतु मुझे याद आया कि अभी मैं यौन के मामले में, जो कुछ पढ़ सकता था, वह सब पढ़ रहा था। मेरे शिक्षक मेरी निगरानी कर रहे थे, और ज्यों ही उन्होंने देखा कि मैं दुबारा ध्यान दे रहा हूँ, उन्होंने कहना जारी रखा, ''जैसा मैं कह रहा था, बड़ी संख्या में लड़ाइयाँ, जनसंख्या आधिक्य के कारण पैदा हुई है। यह एक तथ्य है कि, युद्ध होंगे–जबतक कि बढ़ी हुई और बढ़ती हुई आबादी है–हमेशा युद्ध होंगे। और ये आवश्यक है, जब पृथ्वी लोगों से पूरी तरह गले तक भर जायेगी, तब उसी तरीके से, जैसे कि एक मरे हुए चूहे को, चींटियों के झुण्ड द्वारा पूरी तरह से खदेड़ा जाता है, अन्यथा होना चाहिए। जब तुम तिब्बत से दूर चलते हो, जहाँ आबादी काफी कम है, और तुम विश्व के कुछ महान नगरों को जाओगे, बड़ी–बड़ी संख्याओं के ऊपर, लोगों की बड़ी भीड़ के ऊपर, तुम्हें आश्चर्य और भय भी होगा। तुम देखोगे कि मेरे शब्द सही है; जनसंख्या को कम बनाये रखने के लिए, युद्ध एकदम आवश्यक हैं। लोग चीजों को सीखने के लिए पृथ्वी पर आते हैं और जब तक कि युद्ध और बीमारियाँ न हों, तो जनसंख्या को नियंत्रण में रखने का और उन्हें खिलाने का, वहाँ कोई और तरीका नहीं होगा। वे टिड्डियों के झुण्ड की तरह से, नजर में आने वाली हर चीज को खाते हुए, हर चीज को दूषित करते हुए, होंगे और अंत में, वे अपने आपको, पूरी तरह से समाप्त कर लेंगे।

''आदरणीय लामा!'' मैंने कहा, ''व्यापारियों में से कुछ, जिन्होंने जनसंख्या नियंत्रण के इस मामले में मुझसे बात की थी, कहते हैं कि, अनेक लोग कहते हैं, अनेक लोग सोचते हैं कि, यह एक बुराई है। अब वे ऐसा क्यों सोचते हैं ?'' मेरे शिक्षक ने, शायद आश्चर्य करते हुए, एक क्षण के लिए सोचा, कि वह मुझे कितना बतायें क्योंकि, मैं अभी भी जवान था, और तब उन्होंने कहा, ''कुछ लोगों को जन्म नियंत्रण, अजन्मे बच्चों का कत्ल दिखाई देता है, परंतु हमारी आस्थाओं के अनुसार, लोबसांग, अजन्मे बच्चे में आत्मा प्रवेश नहीं करती। हमारी आस्थाओं के अनुसार, तब शायद कोई हत्या नहीं होती, और किसी प्रकार भी ये कहना कि, गर्भाधान को रोकने के लिये सावधानी रखने में, किसी प्रकार की हत्या होती है, यह, वास्तव में, स्पष्टरूप से बकवास है। कहने भर के लिए ये कहना ठीक है कि, जब हम उनके बीजों को जमने से रोकते हैं, हम पूरे पौधों के समूह को समाप्त कर देते हैं! मनुष्य भी अक्सर कल्पना करते हैं कि, वे अत्यंत आश्चर्यजनक चीज हैं, जो कभी इस महान ब्रह्माण्ड में हुई। वास्तव में, यथार्थ में, मानव केवल एक प्रकार का जीवन है, और सर्वोच्च प्रकार का जीवन नहीं। तिस पर, तथापि वर्तमान में, ऐसे मामले में जाने का समय नहीं है।''

मैंने दूसरी चीज का सोचा, जो मैंने सुनी थी और वह ऐसी सदमा देने वाली लगी–ऐसी भयानक चीज–कि मैं मुश्किल से ही, इसको कहने के लिए अपने आपको तैयार कर सका। तथापि, मैंने किया! ''आदरणीय लामा! मैंने सुना है कि कुछ पशुओं, उदाहरण के लिए गाय में, अप्राकृतिक तरीके से गर्भाधान करवाया जाता है, क्या ये ठीक है ?'' मेरे शिक्षक, एक क्षण के लिए, एकदम सदमे में दिखाई दिए, और तब उन्होंने कहा, ''हाँ, लोबसांग, ये एकदम सही है, पश्चिमी विश्व में कुछ लोग हैं, जो जानवरों को, उस तरीके से, जिसे वे कृत्रिम गर्भाधान (artifitial insemination) कहते हैं, पैदा करने का प्रयास करते हैं, अर्थात् गायों को, किसी बैल के द्वारा आवश्यक कार्य करने के बजाय, एक आदमी के द्वारा, एक बड़ी सुई से गर्भाधान कराया जाता है। ये लोग, ये अनुभव करते हुए नहीं लगते कि, एक बच्चे को बनाने में, चाहे ये एक मानव बच्चा हो, भालू, या गाय का बच्चा, यांत्रिक सहवास के अतिरिक्त, कुछ और अधिक भी होता है। यदि किसी को अच्छे प्राणी चाहिए, तो सहवास की प्रक्रिया में उनमें कोई

लगाव या प्रेम होना चाहिए । यदि कृत्रिम तरीके से मानव गर्भाधान कराये जाते हैं, तब ऐसा होगा कि वे बिना प्रेम के पैदा होंगे–वे मानवों से कुछ कम होंगे! मैं तुम्हें दुहरा दूँ लोबसांग, अच्छे प्रकार के मानव या पशुओं के लिए, ये आवश्यक है कि माता–पिता, एक दूसरे के शौकीन हों, कि वे दोनों आध्यात्मिक और भौतिक कंपनों में बढ़े हुए हों। प्रेमरहित अवस्था में, ठंड में कराया गया कृत्रिम गर्भाधान, वास्तव में, बड़े खराब प्राणियों के रूप में परिणामित होता है। मेरा विश्वास है कि कृत्रिम गर्भाधान, इस पृथ्वी के महान अपराधों में से एक है।''

मैं, लामा मिंग्यार डोंडुप को, बढ़ती हुए सांझ में नहाते हुए, कमरे के आरपार चुराती हुईं, शाम की छायाओं के साथ वहॉ बैठा और जैसे ही सांझ बढ़ी, मैंने उनके प्रभामंडल को, आध्यात्मिकता के महान स्वर्ण के साथ प्रज्वलित होते देखा। मेरे लिए, अतीन्द्रियज्ञान की दृष्टि से, प्रकाश वास्तव में, चटकदार था और स्वयं में, सांझ में परस्पर गुथा हुआ था। मेरी अतीन्द्रिय दृष्टियों ने मुझे बताया– मानो कि मैं पहले से नहीं जानता था– कि मैं वहॉ तिब्बत के एक महानतम व्यक्ति की उपस्थिति में था। मैंने अपने अंदर ऊष्णता अनुभव की, मैंने अपने पूरे अस्तित्व को, इसके लिए प्रेम के साथ कॉपता हुआ अनुभव किया, मेरे शिक्षक और पथप्रदर्शक। हमारे नीचे मंदिर के शंख दुबारा नाद कर उठे, परंतु इस बार वे हमें नहीं, परंतु दूसरों को बुला रहे थे। हम दोनों, साथ–साथ खिड़की तक चले और बाहर देखा। मेरे शिक्षक ने अपने हाथ मेरे कंधे पर रखे। जैसे ही हमने अपने नीचे, घाटी पर देखा–घाटी अब आंशिक रूप से जामुनी अंधकार में घिरी थी। ''अपनी चेतना को अपना पथ प्रदर्शक होने दो, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''यदि कोई चीज सही है या यदि चीज गलत है, तुम हमेशा जान जाओगे। तुम दूर जा रहे हो–तुम जितनी कल्पना कर सकते हो, उससे भी अधिक दूर–और तुम्हें अनेक लालच, अपने सामने रखे गए मिलेंगे। अपनी चेतना को अपना मार्गदर्शक बनने दो। हम तिब्बत के शांतिप्रिय लोग हैं, हम कम जनसंख्या वाले लोग हैं, हम वे लोग हैं, जो शांति में रहते हैं, जो पवित्रता में विश्वास रखते हैं, जो आत्मा की पवित्रता में विश्वास रखते हैं। तुम जहॉ कहीं भी जाओगे, जो कुछ भी तुम झेलोगे, अपनी चेतना को अपना पथ प्रदर्शन करने दो। हम अपनी चेतना के साथ, तुम्हें मदद करने का प्रयास कर रहे हैं। हम तुम्हें सीमांतक अतीन्द्रिय शक्तियॉ और दूरानुभूति देने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि तुम हमेशा, भविष्य में जबतक तुम जीवित रहो, हमारे साथ, महान लामाओं के साथ, दूरानुभूतिपूर्ण तरीके से, यहॉ उच्च हिमालय में, संपर्क में रह सको, महानलामा, जो बाद में, अपना पूरा समय तुम्हारे संदेशों को पाने के लिए, प्रतीक्षा में समर्पित करेंगे।''

मेरे संदेशों की प्रतीक्षा में ? मैं डरा हुआ हूँ, मेरे जबड़े आश्चर्य से डूब गए; मेरे संदेश ? वहॉ मेरे संबंध में, विशेषरूप से क्या था ? महान लामा, पूरे समय, मेरे संदेशों के लिए प्रतीक्षा क्यों करेंगे ? मेरे शिक्षक हॅसे और उन्होंने मेरे कंधे को थपथपाया। तुम्हारे अस्तित्व का कारण, लोबसांग, ये है कि, तुम्हें एक बहुत–बहुत विशिष्ट कार्य करना है। सभी कठिनाईयों के बावजूद, सभी पीड़ाओं के झेलने के बावजूद, तुम अपने कार्य में सफल होगे। परंतु प्रकटरूप से ये अनुचित होगा कि, तुमको इस अपरिचित विश्व में अकेला छोड़ दिया जाये, ये विश्व, जो तुम्हारा उपहास करेगा और तुमको झूठा, धोखेबाज, जालसाज कहेगा। कभी दुःखी मत हो, कभी हाथ–पैर मत डालो, क्योंकि सत्य स्थिर रहेगा। तुम–लोबसांग–बने रहोगे!'' शाम की परछाइयॉ रात के अंधेरे में बदल गई, हमारे नीचे शहर की रोशनियॉ, टिमटिमाने लगी। हमारे सिर के ऊपर, (शुक्ल प्रतिपदा का) एक नया चंद्रमा (new moon) हमारे ऊपर, पहाड़ों के किनारों के ऊपर, झांक रहा था। उनमें से लाखों बड़े–बड़े ग्रह, जामुनी आकाश में झलके। मैंने ऊपर देखा, मेरे संबंध में भविष्यकथनों के विचार–मेरे संबंध की सभी भविष्यवाणियॉ–और मैंने उस विश्वास और भरोसे पर भी सोचा, जो मेरे मित्र, मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप द्वारा प्रदर्शित किया गया। और मैं संतुष्ट था।

अध्याय दस

शिक्षक खराब मनोदशा में था; शायद उसकी चाय अत्यधिक ठंडी रही थी, शायद उसका त्सम्पा उसकी पसंद के अनुसार, ठीक तरह से भूना या मिलाया नहीं गया था। शिक्षक खराब मनोदशा में था; हम बच्चे, डर के मारे कांपते हुए कक्षा में बैठे थे। वह पहले से ही, अप्रत्याशित रूप से, हम बच्चों पर, मेरी दांयी तरफ के और मेरी बांयी तरफ के लड़कों पर झपट चुका था। मेरी स्मृति अच्छी थी, मैं पाठों को पूर्णता से जानता था–मैं कान–ग्युर के एक सौ आठ अंकों में से, किसी भी अध्याय अथवा पद्य को दुहरा सकता था।

''मुक्का! मुक्का!'' मैं आश्चर्य के साथ, लगभग एक फुट ऊॅचा, हवा में उछल पड़ा, और लगभग तीन लड़के मेरी बांयी तरफ और तीन लड़के दांयी तरफ भी, आश्चर्य के साथ, हवा में एक फुट ऊॅचे उछले। हमको, मुश्किल से ही एक क्षण के लिए, ये पता था कि हम में से कौन–सा, ताड़ना पाने वाला था। तब, जैसे ही शिक्षक ने, थोड़ी कड़ाई रखी, मुझे पता लगा कि वह अभागा मैं ही था! उन्होंने, हर समय बड़बड़ाते हुए पिटाई जारी रखी, ''लामा से शह (favour) पाने वाला! सिर चढ़ा मूर्ख! किसी चीज को याद करना, मैं तुम्हें सिखाऊॅगा!'' मेरी पोशाक में से, रुके हुए बादलों के रूप में, धूल उठी और किसी कारणवश मुझे छींकें आना प्रारंभ हो गया, जिसने शिक्षक का गुस्सा और बढ़ा दिया, और उन्होंने, वास्तव में, मार–मारकर, मुझमें से औरअधिक धूल झड़ाने का वास्तविक कार्य किया। सौभाग्यवश–उनकी जानकारी के बिना–मैंने उनकी खराब मनोदशा का अनुमान लगा लिया था और मैंने सामान्य से एक अधिक कपड़ा पहन लिया था, इसलिए–यद्यपि वह इसे जानकर खुश नहीं होते–उनके प्रहारों ने मुझे अनुचितरूप से परेशान नहीं किया। मैं किसी भी मामले में, कठोर हो गया था।

ये शिक्षक अत्याचारी थे। यह स्वयं पूर्ण हुए बिना, पूर्णतावादी थे। हमारे पाठों में, 'पूर्णता' नाम का शब्द नहीं था, परंतु यदि उच्चारण, विभक्ति, एकदम उनके इच्छानुसार नहीं होते तो वह अपनी छड़ी उठाते, पीठ के आसपास कोड़े मारते और तब हमारी पीठ पर कोड़े बरसाते। अब वह, वही अभ्यास कर रहे थे, और धूल से लगभग मेरा गला रुंध रहा था। तिब्बत में, छोटे बच्चे, जब वे लड़ते हैं या खेलते हैं, हर कहीं के दूसरे छोटे बच्चों की भॉति, धूल में लोटते हैं और सभी जनाने (feminine) प्रभावों से कटे हुए छोटे बच्चे, हमेशा पूरी तरह से, ये निश्चय नहीं कर पाते कि, धूल उनके कपड़ों में से है; मेरे (कपड़े) पूरी तरह से धूल से भरे थे और ये वास्तव में, उतने ही अच्छे थे, जैसे कि झरने में साफ किए हुए। शिक्षक पीटते चले गए, ''मैं तुम्हें किसी शब्द को गलत उच्चारित करना सिखाऊॅगा! पवित्र ज्ञान को असम्मान प्रदर्शित करना! सिर चढ़ा मूर्ख, हमेशा कक्षाओं को छोड़ने वाला और तब दूसरों से अधिक जान कर वापस आने वाला, जो मैंने पढ़ाया था–बेकार, बिगड़ैल–मैं तुम्हें पढ़ाऊॅगा, एक तरीके से नहीं तो दूसरे तरीके से, तुम मुझसे पढ़ोगे!''

तिब्बत में हम, फर्श पर पालथी मारकर बैठते हैं, अधिकांश समयों में हम गद्दियों पर बैठते हैं, जो लगभग चार इंच मोटी होती हैं, और हमारे सामने मेजें होती हैं, जो विद्यार्थी के आकार पर निर्भर करते हुए, जमीन से बारह से लेकर अठारह इंच तक ऊॅची होती हैं। इस शिक्षक ने, अचानक ही मेरे सिर के पीछे की तरफ, जोर से अपना हाथ रखा और मेरे सिर को, मेरी मेज पर, नीचे दबा दिया, जहॉ मेरे पास एक स्लेट और कुछ पुस्तकें थीं। मुझे सुविधाजनक स्थिति में रहते हुए, उन्होंने एक गहरी सांस ली और वास्तव में, व्यस्त हो गए। मै मात्र आदतन, कुलबुलाने लगा, इसलिए नहीं कि मुझे पीटा गया था, बल्कि इस कारण कि, पूरी ईमानदारी (earnest) से किये गये, उनके अधिकांश प्रयासों के बावजूद, हम बच्चे कठोर हो गए थे, हम लगभग शब्दशः ''चमड़े के रूप में पक गए थे'' और इस तरह की चीजें, मात्र रोजमर्रा की घटनाऐं थीं। दांयी तरफ, मुझसे छः या सात बच्चे दूर, कुछ बच्चों ने मुॅह दबा कर हॅसते हुए, एक नरम मुस्कुराहट की। शिक्षक ने मुझे पटक दिया, मानो कि मैं, अचानक ही लालतप्त हो कर चमक उठा होऊॅ और वह एक चीते की भॉति, दूसरे बच्चे पर झपटे। जब मैंने पंक्ति में और आगे बच्चों

से धूल के बादलों को उठते हुए देखा, मैं अपने खुद के आश्चर्य के प्रदर्शन का दिखावा करने के लिए सावधान था; वहॉ मेरी दांयी तरफ से, विभिन्न प्रकार की, दर्द, डर, और आतंक की चीखें (आ रहीं) थीं क्योंकि, शिक्षक बिना इस बात से निश्चित हुए कि वह कौन सा बच्चा था, बिना किसी भेदभाव के (सबको) पीट रहे थे। अंत में, सांस तोड़ कर, और निसंदेह काफी अच्छा अनुभव करते हुए, शिक्षक ने अपने तनाव को समाप्त किया। ''आह!'' उन्होंने गहरी सांस ली, ''ये आतंक तुमको उस पर ध्यान देने के लिए, जो मैं कह रहा हूॅ, कुछ सिखायेगा। अब, लोबसांग रंपा, दुबारा प्रारंभ करो और ये सुनिश्चित करो कि, तुम एकदम सही उच्चारण करते हो।'' मैंने पूरी तरह से दुबारा प्रारंभ किया, और जब मैंने एक चीज के संबधं में सोचा, मैं वास्तव में, इसे काफी अच्छी तरह से कर सका। इस बार मैंने सोचा–और तब मैंने फिर सोचा–इसलिए वहॉ शिक्षक की तरफ से, मेरे प्रति किसी प्रकार की कठोर भावना और कठोर मुक्के और अधिक नहीं हुए।

''वास्तव में, उस पूरे सत्र के लिए, हम सब पर एक तीखी नजर रखते हुए, कुल मिला कर पॉच घण्टे, शिक्षक आगे–पीछे परेड करते रहे और उन्हें कोड़ा बरसाने के लिए और किसी अभागे लड़के को पकड़ने के लिए, हमारे द्वारा कोई उत्तेजनापूर्ण कारण नहीं दिया गया। ठीक तब, जब उन्होंने सोचा कि वह बिना निरीक्षण किया हुआ था। तिब्बत में, हमारा दिन, आधी रात से शुरू होता है, तब ये एक सेवा के साथ शुरू होता है, और वास्तव में, वहॉ नियमित अंतरालों पर नियमित सेवाऐं होती हैं। तब हमें, निम्न वर्ग के कुछ कार्य करने होते हैं ताकि, हमको नम्र बनाकर रखा जा सके, ताकि हम '' घरेलू कामकाजियों'' को नीची नजर से न देखें। हमें आराम के लिए भी समय मिलता है और उसके बाद हम अपनी कक्षाओं में जाते हैं। ये कक्षाऐं लगातार, पॉच घण्टे चलती हैं और उस अवधि में, शिक्षक हमें पूरे समय, अध्योपांत पढ़ने के लिए, पढ़ाते हैं। हमारी कक्षाऐं, वास्तव में, एक दिन में पॉच घण्टे से अधिक चलती हैं, परंतु यह विशेष सत्र, शाम का सत्र, पॉच घण्टे चला।

घण्टे खिसकते गए, ऐसा लगा कि हम कई दिनों तक कक्षा में रहे हों। छायाऐं मुश्किल से ही चलती हुई दिखाई दीं और सिर के ऊपर सूरज ऐसा दिखा मानो कि, एक स्थान पर जम गया। हमने झुझलाहट में और उचाट के साथ, आह भरी। हमने महसूस किया कि, देवताओं में से एक को, नीचे आना चाहिए और इस विशिष्ट शिक्षक को, हमारे बीच से हटा देना चाहिए, क्योंकि वह सबसे खराब था, प्रकटरूप से ये भूलता हुआ कि कभी, ओह, काफी लंबे समय पहले! वह भी नौजवान रह चुका था। परंतु अंत में, शंख गूंजे, और हमारे काफी ऊपर एक छत पर, घाटी में गूंज पैदा करती हुई, पोटाला से एक प्रतिध्वनि वापस भेजती हुई, एक तुरही बजी। एक कराह के साथ शिक्षक ने कहा, ''ठीक है, मुझे डर है कि मुझे तुम बच्चों को अब जाने देना होगा, परंतु मेरा विश्वास करो जब मैं तुम्हें फिर मिलूॅगा, मैं ये सुनिश्चित करूॅगा कि तुमने कुछ सीखा है!'' उसने संकेत प्रदर्शित किया और दरवाजे की तरफ इशारा किया। पंक्ति में सबसे ज्यादा समीप के बच्चे, अपने पैरों पर उछले और वास्तव में, इसके लिए चौंकते हुए फुर्र हो गए। ठीक तभी, जब मैं जाने ही वाला था, उन्होंने वापस बुला लिया, ''तुम, मंगलवार लोबसांग रंपा,'' उन्होंने कहा, ''तुम अपने शिक्षक के पास जाओ और चीजों को सीखो, परंतु बच्चों को ये दिखाते हुए कि मैंने पढ़ाया है। यहॉ वापस मत लौटना। तुमको ये सब सम्मोहन के द्वारा और दूसरे तरीकों से पढ़ाया जा रहा है, मैं ये देखने जाने वाला हूॅ कि, क्या मैं तुम्हें धक्के देकर नहीं निकाल सकता।'' उन्होंने मुझे सिर के एक बगल से एक तमाचा जड़ा, और कहना जारी रखा, ''अब मेरी नजरों से दूर हो जाओ, मुझे, तुम्हें यहॉ देखने पर घृणा होती है, दूसरे लोग शिकायत कर रहे हैं कि तुम उनसे ज्यादा सीखते हो। तुम उन बच्चों से ज्यादा सीखते हो, जिनको मैं पढ़ाता हूॅ।'' जैसे ही उन्होंने मेरे कॉलर को छोड़ा, मैं भागा और अपने पीछे के दरवाजे को बंद करने की भी चिंता नहीं की। उन्होंने जोर से चिल्लाकर कुछ बात कही परंतु मैं इतना अधिक तेज दौड़ रहा था कि पीछे नहीं जा सकता था।

बाहर, वास्तव में, शिक्षक की श्रवण सीमा से काफी दूर, दूसरे बच्चों में से कुछ, प्रतीक्षा कर रहे

थे। ''हमें उसके बारे में, कुछ करना चाहिए'' एक लड़के ने कहा। ''हॉ!'' दूसरे ने कहा, ''यदि वह इसी प्रकार से अवाधित रूप से चलते रहे तो कोई, वास्तव में, परेशान होने जा रहा है।'' ''तुम, लोबसांग,'' एक तीसरे लड़के ने कहा, ''तुम हमेशा अपने शिक्षक और पथप्रदर्शक के बारे में शेखी बघारते रहते हो, जिस ढंग से हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, तुम इस संबंध में उनसे कुछ क्यों नहीं कहते ?'' मैंने इसके बारे में सोचा, और मुझे ये एक अच्छा विचार लगा। क्योंकि हमें सीखना था, परंतु कोई कारण नहीं था कि, हमें इतनी क्रूरता के साथ क्यों पढ़ाया जाये। मैंने जितना अधिक इस संबंध में सोचा, वह मुझे उतना ही सुखद प्रतीत हुआ; मैं अपने शिक्षक के पास जाऊॅगा और उन्हें बताऊॅगा कि हमारे साथ कैसा व्यवहार होता है, और वह नीचे जायेंगे और उनको, इन शिक्षक को, कुछ झिड़की देंगे और उसे मेंढ़क के बच्चे जैसा या कुछ वैसा ही बना देंगे। ''हॉ!'' मैं आनंद से चीखा, ''अब मैं जाऊॅगा।'' इसके साथ मैं मुड़ा और भाग गया।

मैंने परिचित गलियारों में होकर ऊपर चढ़ते हुए जल्दी की, ताकि मैं छत के समीप पहुचूॅ। अंत में, मैं लामाओं के गलियारे में घूम गया और मैंने पाया कि, मेरे शिक्षक, कमरे का दरवाजा खुला रखे हुए, पहले से ही कमरे में थे। उन्होंने मुझे प्रवेश करने की आज्ञा दी और कहा, ''क्यों, लोबसांग! तुम उत्तेजना की अवस्था में हो। क्या तुम्हें मठाध्यक्ष या वैसा ही कुछ, बना दिया गया है ?'' मैंने खेदपूर्वक उनको देखा और कहा, ''आदरणीय लामा, हम बच्चों के साथ, कक्षा में इस प्रकार बुरा व्यवहार क्यों किया जाता है। मेरे शिक्षक ने बड़ी गंभीरता के साथ मुझे देखा और कहा, ''परंतु तुम्हें कैसे बुरी तरह से व्यवहार किया गया है, लोबसांग ? बैठो और बताओ, वह क्या है, जो तुम्हें इतना अधिक परेशान कर रहा है।''

मैं नीचे बैठा, और अपने दुःख भरे आख्यान को गाना शुरू किया। इस बीच में, जब मैं अपने शिक्षक को बता रहा था, मेरे शिक्षक ने कोई टिप्पणी नहीं की, किसी प्रकार से कोई टोका–टोकी भी नहीं। उन्होंने मुझे जो कहना था, कहने दिया और अंत में मेरी संताप भरी कहानी के सिरे पर और लगभग मेरी सांस के आखिर में पहुॅचे। ''लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''क्या तुमको ऐसा लगता है कि, जीवन स्वयं में, मात्र एक पाठशाला है ?'' ''पाठशाला ?'' मैंने उनकी तरफ देखा मानो कि, उन्होंने अपने अभिज्ञानों (senses) से अचानक ही छुट्टी ले ली हो। यदि वे मुझे कहते कि सूर्य, सेवानिवृत हो गया है और चंद्रमा ने उसका स्थान ले लिया है, मुझे अधिक आश्चर्य नहीं हुआ होता! ''आदरणीय लामा,'' मैंने आश्चर्य के साथ कहा, ''क्या आप ये कहते हैं कि, जीवन एक पाठशाला था ?'' ''मैं सर्वाधिक निश्चिंतता के साथ कहता हूॅ, लोबसांग, थोड़े समय के लिए आराम करो, और हम चाय पियें और तब हम बात करेंगे।''

सेवक, जो बुलाया गया था, जल्दी ही हमारे लिए चाय और खाने के लिए मजेदार चीजें लाया। जैसे ही उन्होंने एक बार ये कहा कि, उन जैसे चार लोगों के बनाये रखने के लिए! मैं काफी खाता हूॅ, मेरे शिक्षक ने, वास्तव में, बहुत किफायत के साथ खाना ग्रहण किया, लेकिन उन्होंने ऑखें झपकते हुए मुस्कान से ये कहा कि, इसमें कोई अपराध निहित नहीं है या किया गया नहीं है। वे अक्सर मुझे ताना मारते थे और मैं जानता था कि वे किसी भी प्रकार के विचार से ऐसा कुछ नहीं कहेंगे, जो किसी दूसरे को चोट पहुॅचाये। मैंने वास्तव में, इसका न्यूनतम भी बुरा नहीं माना, जो उन्होंने जानते हुए मुझे कहा, कि इसका, उनके लिए कितना अच्छा मतलब था। वे बैठे और हमने चाय पी, और तब मेरे शिक्षक ने एक छोटी टिप्पिणी लिखी और उसे दूसरे लामा को देने के लिए सेवक को दे दिया। ''लोबसांग, मैं कह चुका हूॅ कि तुम और मैं, आज शाम को मंदिर की सेवा में नहीं होंगे, क्योंकि हमें बहुत कुछ चर्चा करने को है, और यद्यपि मंदिर की सेवाऐं अतिआवश्यक चीजें हैं, इसलिए–तुम्हारी विशेष परिस्थितियों को देखते हुए–तुमको सामान्य से अधिक शिक्षा देना आवश्यक है।''

वे अपने पैरों पर खड़े हुए और खिड़की के पार गए। उन्होंने मेरे पैरों के साथ भी धक्का–मुक्की

की और मैं उनके साथ रहने के लिए खिड़की के पार गया; क्योंकि बाहर देखना और उसे देखना जो हो रहा था, ये मेरी खुशियों में से एक था, क्योंकि मेरे शिक्षक के पास चाकपोरी के ऊँचे कमरों में से एक कमरा था, एक कमरा, जिसमें से कोई दूर–दूर तक और काफी लंबे समय तक, देख सकता था। इसके अतिरिक्त, सभी चीजों में सबसे अधिक मजेदार, एक दूरदर्शी उनके पास था। उस उपकरण के साथ मैंने घण्टों खर्च किए! मैंने ल्हासा के पठार के आरपार देखने के लिए घण्टों खर्च किए, खुद शहर के व्यापारियों को देखने में और ल्हासा की महिलाओं को जाते हुए देखने में, अपने कामकाज, खरीदारी, मिलने जाना, और ठीक (जैसा मैं समझता हूँ) एकदम समय को बरबाद करना। हम वहाँ, बाहर की तरफ देखते हुए, दस या पंद्रह मिनट के लिए खड़े रहे, तब मेरे शिक्षक ने कहा, ''हम फिर से बैठें, लोबसांग, और स्कूल के संबंध में, इस विषय में चर्चा करें, क्या हम करेंगे ?''

''मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे सुनो, लोबसांग, क्योंकि ये वह मामला है, जो तुम्हें प्रारंभ से स्पष्ट होना चाहिए। यदि जो कुछ मैं कहता हूँ, तुम उसे ठीक से नहीं समझे, तब मुझे त्तकाल ही रोक देना, क्योंकि ये आवश्यक है कि तुम इस सबको समझ लो ?'' मैं हांमी में सिर हिलाया, और तब विनम्रता को ध्यान में रखते हुए मैंने कहा, ''हॉ, आदरणीय लामा, मैं आपको सुन रहा हूँ और समझ रहा हूँ यदि मैं नहीं समझूँगा तो मैं आपको बताऊँगा।'' उन्होंने सिर हिलाया और कहा, ''जीवन एक स्कूल के समान है। जब हम जीवन के परे, सूक्ष्मशरीरी विश्व में, होते हैं, इससे पहले कि हम एक औरत के शरीर में आयें, हम दूसरों के साथ चर्चा करते हैं कि, हम क्या सीखने जा रहे है। कुछ समय पहले, मैंने तुम्हें, एक चीनी आदमी, बूढ़े सेंग के संबंध में, एक कहानी सुनाई थी। मैंने तुम्हें कहा था कि, हम एक चीनी नाम का उपयोग करेंगे क्योंकि तुम, तुम होने के कारण, उसके साथ, अपने परिचय के किसी भी तिब्बती जैसा, कोई भी तिब्बती नाम, उससे जोड़ने का प्रयास करोगे। हम समझें कि उस बूढ़े सेंग, जो मर गया और जिसने अपना पूरा भूतकाल देखा, ने ये निर्णय किया कि, उसे कुछ निश्चित पाठ सीखने हैं। तब, वे लोग, जो उसे सहायता कर रहे थे, इस संबंध में देखेंगे और माता–पिता, अथवा, संभावित माता–पिताओं का, जो ऐसी परिस्थितियों और अवस्थाओं में रह रहे हों, जो आत्मा, जो बूढ़े सेंग की आत्मा थी, को बांछित पाठों को सीखने के योग्य बना सकें, का पता लगाऐंगे।'' मेरे शिक्षक ने मुझे देखा और कहा, ''ये बहुत कुछ वैसा ही है, जैसे कि एक लड़का, जो भिक्षु होने जा रहा है, यदि वह एक चिकित्सकीय भिक्षु बनना चाहता है तो, वह चाकपोरी को आता है। यदि वह शायद घरेलू कामकाज करना चाहता है, तो निसंदेह वह पोटाला में जा सकता है, क्योंकि वहॉ हमेशा घरेलू भिक्षुओं की कमी पड़ती दिखती है! हम अपनी पाठशालाओं का चुनाव, हम क्या सीखना चाहते हैं, के अनुसार करते हैं।'' मैंने सिर हिलाया, क्योंकि वह मुझे काफी स्पष्ट था। मेरे खुद के माता–पिता, मेरे लिए, मुझे चाकपोरी में लाने के लिए, वशर्ते मैं, आवश्यक रुक सकने की शक्ति और प्रारंभिक सहन–शक्ति, की जॉच को उत्तीर्ण कर सकूँ, व्यवस्था कर चुके थे।

मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहना जारी रखा, एक व्यक्ति, जो जन्म लेने जा रहा है, हर चीज, पहले से ही व्यवस्थित पाता है; एक व्यक्ति, जो नीचे जा रहा है और एक निश्चित महिला से जन्म लेता है, जो एक निश्चित दायरे में रहती है, और जो एक निश्चित प्रकार के वर्ग के पुरुष के साथ विवाहित है। ये सोचा जाता है कि, वह होने वाले बच्चे को, ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने के लिए पूर्व से नियोजित, ऐसी परिस्थितियॉ देगी। अंत में, समय पूरा होने पर, बच्चा जन्म लेता है। बच्चे को, पहले स्तनपान सीखना है, उसे ये सीखना है कि, उसके अपने भौतिक शरीर के कुछ निश्चित भागों को, किस प्रकार नियंत्रित किया जाये–उसे सीखना है, कैसे बोला और कैसे सुना जाये। तुम जानते हो, पहले पहल, बच्चा अपनी ऑखों को स्थिर नहीं कर सकता। उसे, कैसे देखा जाये, यह सीखना पड़ता है। वह पाठशाला में है।'' उन्होंने मेरी तरफ देखा और जैसे ही उन्होंने कहा, उनके चेहरे पर एक मुस्कान आई'' हम में से कोई भी स्कूल पसंद नहीं करता, हम में से कुछ को आना पड़ता है, परंतु हम में से दूसरे

कुछों को, नहीं आना पड़ता। हम आने की योजना बनाते हैं–कर्म के लिए नहीं–परंतु दूसरी चीजों को सीखने के लिए। बच्चा बढ़ता जाता है और लड़का बन जाता है, तब वह कक्षा में जाता है, जहॉ उसे शिक्षक के द्वारा बुरा व्यवहार किया जाता है, परंतु उसमें कुछ भी गलत नहीं है, लोबसांग। अनुशासन से, कभी भी, किसी को, कोई नुकसान नहीं पहुॅचा है। अनुशासित सैना और भीड़ के बीच में अंतर है। जबतक कि आदमी को अनुशासित न किया गया हो, तुमको सुसंस्कृत आदमी नहीं मिल सकते। कई बार, अब तुम सोचोगे कि, तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया गया, कि शिक्षक कठोर और निर्दयी है, परंतु–अब तुम कुछ भी सोचो–तुम इन परिस्थितियों में रहने के लिए, विशेषरूप से व्यवस्था करके, इस पृथ्वी पर आये थे।'' ''ठीक है, आदरणीय लामा,'' मैं उत्तेजना के साथ चीखा, ''यदि मैंने यहॉ आने की व्यवस्था की थी, तो मैं सोचता हूॅ कि, मेरे मस्तिष्क की जॉच कराई जानी थी और यदि मैंने यहॉ आने की व्यवस्था की, तो मैं इसके बारे में विल्कुल क्यों नहीं जानता ?''

मेरे शिक्षक ने मुझे देखा और हॅसे–खुल कर हॅसे। ''मैं जानता हूॅ आज, तुम ठीक कैसा अनुभव करते हो, लोबसांग,'' उन्होंने जबाव दिया, ''परंतु वास्तव में, ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसके सम्बंध में तुम्हें चिंता करनी चाहिए। कुछ चीजें सीखने के लिए, पहले तुम इस पृथ्वी पर आये। तब, उन चीजों को सीख लेने के बाद, दूसरी चीजों को सीखने के लिए, हमारी सीमाओं के परे, तुम बृहत्तर विश्व में जा रहे हो। मार्ग सरल नहीं होगा; परंतु अंत में तुम सफल होगे, और मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहता। हर व्यक्ति, जीवन में उसका पड़ाव कोई बात नहीं, सूक्ष्मलोक से नीचे जमीन पर आया है ताकि, वह सीख सके और, सीखने में तरक्की करे। तुम मेरे साथ सहमत होगे, लोबसांग, कि यदि तुम लामामठ में प्रगति करना चाहते हो, पढ़ना और परीक्षाऐं उत्तीर्ण करना चाहते हो। तो तुम, एक बच्चे से अधिक, जो अचानक ही तुम्हारे ऊपर रख दिया गया और पक्षपातपूर्ण तरीके से अकेला ही लामा या मठाध्यक्ष बन गया, नहीं सोचोगे। जहॉ तक उचित परीक्षाऐं हैं, तब तुम जानते हो कि, किसी अच्छे व्यक्ति की सनक या भावनाओं या पक्षपात के कारण, तुमको उत्तीर्ण नहीं किया जायेगा।'' मैं ये भी देख सकता था, हॉ, जब ये समझाया गया, ये एक सरल मामला था।

''हम चीजों को सीखने के लिए पृथ्वी पर आते हैं, कोई बात नहीं, ये कितना भी कठिन या कितना भी कड़वा पाठ क्यों न हो। जो हम इस पृथ्वी पर सीखते हैं, वे पाठ हैं, जिनके लिए, हमने यहॉ आने से पहले अपना पंजीकरण कराया था। जब हम इस पृथ्वी को छोड़ते हैं, यह दूसरे लोक में, थोड़े समय के लिए अवकाश होता है, और यदि हम उन्नति करना चाहते हैं, हम चले जाते हैं। हम इस पृथ्वी पर, बदली हुई स्थितियों में फिर वापस लौटते हैं, या हम पूरी तरह से अस्तित्व के दूसरे चरण में जा सकते हैं। बहुधा, जब हम स्कूल में होते हैं, हम सोचते है कि दिन कभी समाप्त होने वाला ही नहीं है, हम सोचते हैं कि शिक्षक के इस रूखेपन का कोई अंत होने वाला ही नहीं है। पृथ्वी पर जीवन वैसा ही है, यदि हर चीज हमारे लिए आसान होती चली जाए, यदि हमें हर चीज, जो हम चाहें मिल जाये, तो हम पाठ नहीं पढ़ रहे होंगे, तो हम केवल जीवन की धारा से अलग हट रहे होंगे। ये एक दुःखमय तथ्य है कि, हम केवल कष्ट और उसके झेलने में ही सीखते हैं।'' ''तब ठीक है, आदरणीय लामा,'' मैंने कहा, ''तब ऐसा क्यों है कि कुछ लड़के, और कुछ लामा भी एक सरल समय पा जाते हैं ? मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि, मैं परेशानियॉ ही पाता हूॅ, बुरी भविष्यवाणियॉ और चिड़चिड़े शिक्षक के द्वारा पिटाई, जबकि मैंने वास्तव में, अपना सर्वोत्तम किया होता है।'' ''परंतु, लोबसांग, इन लोगों में से कुछ, जो स्वयं में आत्मतुष्ट दिखाई देते हैं–क्या तुम्हें विश्वास है कि वे उतने आत्मसंतुष्ट हैं ? क्या तुम्हें विश्वास है कि, कुल–मिलाकर, उनके लिए परिस्थितियॉ इतनी आसान हैं ? जबतक कि तुम नहीं जानते कि, पृथ्वी पर आने से पहले उन्होंने क्या करने की योजना बनाई थी, तुम निर्णय करने की स्थिति में नहीं हो। इस पृथ्वी पर आने वाले सभी आदमी, एक तैयार शुदा कार्यक्रम, योजना कि वे क्या सीखना चाहते हैं, वे क्या करना चाहते हैं, जब वे अपने स्कूल में डेरा डालने के बाद, इस पृथ्वी को छोड़ेगे, वे क्या होने की

अभिलाषा रखते हैं, के साथ आते हैं। और तुम कहते हो कि, तुमने आज कक्षा में, वास्तव में, कठिन प्रयास किया। क्या तुम अस्वस्थ हो ? क्या तुम ये सोचते हुए कि तुम पाठ के संबंध में सब कुछ जानते हो, जो कुछ भी जानना था, आत्मसंतुष्ट नहीं थे ? क्या तुमने, अपने उत्कृष्ठ रवैये के द्वारा, शिक्षक को बुरा अनुभव नहीं कराया ?'' उन्होंने मुझे कुछ–कुछ दोषारोपण करते हुए देखा और मैंने अपने गाल, कुछ–कुछ लाल होते हुए, अनुभव किए। हॉ, वह कुछ जानते थे! मेरे शिक्षक ने, अपने हाथ को एक स्थान, जो कोमल था, पर रखने की, असुखद चालाकी की। हॉ, मैं संतुष्ट था, मैंने सोचा था कि, इसबार शिक्षक मुझमें छोटा–सा भी दोष निकालने में सफल नहीं होगा। मेरा खुद का अच्छा होने का ये रवैया, वास्तव में, किसी भी छोटे पैमाने से, शिक्षक की खीझ में योगदान नहीं कर सकता। मैंने सहमति में सिर हिलाया, ''हॉ आदरणीय लामा, मैं भी उसी प्रकार दोषारोपित किया जा सकता हूँ, जैसे कि कोई और।'' मेरे शिक्षक ने मेरी तरफ देखा, मुस्कुराये, और अनुमोदन में अपना सिर हिलाया।

''बाद में, लोबसांग, जैसा तुम जानते हो, तुम चीन में चुंगकिंग जाओगे,'' लामा मिंग्यार डोंडुप ने कहा। मैंने उस समय के ऊपर, जब मुझे छोड़ना पड़ेगा, विचार करने की इच्छा न रखते हुए भी, मौन रहते हुए, सिर हिलाया। उन्होंने कहना जारी रखा, ''तुम्हारे तिब्बत छोड़ने से पहले, हम विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को उनके निर्देशों के संबंध में, जानकारी भेजेंगे। हम सभी चीजों को प्राप्त करेंगे और तब हम तय करेंगे कि कौन सा महाविद्यालय या विश्वविद्यालय, तुमको ठीक–ठीक उस प्रकार का प्रशिक्षण देगा, जिसकी तुम्हें इस जीवन में आवश्यकता होगी। इसीप्रकार से, जब कोई आदमी सूक्ष्मलोक से पृथ्वीलोक पर वापस आता है, वह उन सब हालातों का जायजा लेता है, जिसे वह करना चाहता है, उन पर सोचता है, वह क्या सीखना चाहता है और वह अंतिम रूप से, क्या प्राप्त करना चाहता है। तब, जैसा मैंने तुम्हें पहले ही बताया, उचित माता–पिता खोजकर निकाले जाते है। ये वैसा ही है, जैसे कि एक उचित स्कूल की तलाश।''

जितना ज्यादा मैंने इस स्कूल के विचार के ऊपर सोचा, उतना ही ज्यादा, मैंने इसे नापसंद किया। ''आदरणीय लामा!'' मैंने कहा, क्यों कुछ लोग, इतनी बीमारियॉ और इतने दुर्भाग्य प्राप्त करते हैं, ये सब उन्हें क्या पढ़ाता है ?'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''परंतु तुमको याद रखना चाहिए कि एक व्यक्ति, जो इस दुनियॉ में आता है, उसे बहुत कुछ सीखना होता है। यह नक्काशी करने की तरह से, सीखने जैसा मामला नहीं है, और न ही किसी भाषा को सीखना और न ही पवित्र पुस्तकों में से गायन करना है। व्यक्ति को उन चीजों को सीखना होता है, जो उसके इस पृथ्वी को छोड़ने के बाद, सूक्ष्मलोक में काम आने वाली हैं। जैसा मैंने तुम्हें बताया, ये माया का लोक है, और ये हमारे लिये, कठिनाइयॉ और कठिनाइयों को झेलना सिखाने के लिए, अत्यधिक ठीक ढंग से, उपयोगी होता है। हमको दूसरों की समस्याओं और मुश्किलों को समझना सीखना चाहिए।'' मैंने इस सबके संबंध में सोचा, और ऐसा लगा कि, हम बहुत बड़े विषय में घुस गए हैं। मेरे शिक्षक ने, प्रकटरूप से, मेरे विचारों को पकड़ लिया, क्योंकि उन्होंने कहा, ''हॉ, हमारे ऊपर रात घिर रही है, अब, आज रात को, ये हमारी चर्चा को समाप्त करने का समय है क्योंकि, हमें अभी काफी कुछ करना है। मुझे चोटी (जैसे हम पोटाला को कहते हैं) के पार जाना है और मैं तुम्हें अपने साथ ले जाना चाहता हूँ। तुम पूरी रात और पूरे कल वहॉ रहोगे। कल हम फिर, इस विषय पर चर्चा करेंगे, परंतु तुम अभी जाओ और एक साफ पोशाक पहनो और एक फालतू (पोशाक) अपने साथ लाओ।'' वे अपने पैरों पर खड़े हुए और कमरे से बाहर निकल गए। मैं हिचकिचाया, परंतु एक क्षण के लिए–और क्योंकि मैं उनींदा सा था!–और तब मैंने, अपने सबसे अच्छे तरीके से व्यवस्थित होने की–और अपनी सर्वोत्तम से दूसरी, फालतू पोशाक रखने की जल्दी की।

हम साथ–साथ, पहाड़ी सड़क पर नीचे की तरफ और मनी लखांग में उतरे, जैसे ही हमने पार्गो कलिंग, या पश्चिमी द्वार को पार किया, वहॉ मेरे पीछे, अचानक एक तेज आंधी आई, जिसने मुझे मेरी काठी पर से लगभग उछाल दिया। ''ओह! पवित्र चिकित्सकीय लामा!'' सड़क के ठीक बगल से, एक

जनानी आवाज ने शोर मचाया। मेरे शिक्षक ने उसकी तरफ देखा और घोड़े पर से उतरे। पोनी के विषय में, मेरी खुद की अनिश्चितताओं को जानते हुए, उन्होंने मुझे वहीं बने रहने का इशारा किया; एक रियायत, जिसने मुझे कृतज्ञ कर दिया। ''हॉ, श्रीमती जी, ये क्या है ?'' मेरे शिक्षक ने कृपापूर्ण स्वर में पूछा। वहॉ सहसा थोड़ी हलचल हुई और एक महिला ने अपने आपको लगभग जमीन पर उड़ाते हुए, उनके पैरों पर गिरा दिया। ''ओह! पवित्र चिकित्सकीय लामा!'' उसने श्वांसरहित होकर कहा, ''मेरा पति एक सामान्य बच्चा पैदा नहीं कर सका, उससे एक बकरी का बच्चा पैदा हुआ है!'' अपने खुद के दुःसाहस के ऊपर स्तब्ध होकर, अवाक् होते हुए–उसने एक छोटे बंडल को बाहर निकाल कर पकड़ा। मेरे शिक्षक, अपनी लंबी ऊँचाई से झुककर, खड़े हुए और देखा। ''परंतु, श्रीमती जी!'' उन्होंने टिप्पणी की, ''अपने बीमार बच्चे के लिए, आप अपने पति को क्यों दोष देती हैं ''क्योंकि वह बुरी तरह से पक्षहीन (ill-favoured) मनुष्य, हमेशा दुश्चरित्र महिलाओं के पीछे दौड़ता फिर रहा था, वह हमेशा विपरीत लिंग के संबंध में ही सोचता रहता था, और तब, जब हमने शादी की, वह एक सामान्य बच्चे का पिता भी नहीं बन सकता था।'' मेरी बैचेनी के लिए, उसने रोना प्रारंभ किया और उसके ऑसू, ठीक ओलों की तरह, हल्की छपाक की ध्वनि करने हुए, जमीन पर गिरे। मैंने, पहाड़ों से नीचे आते हुए, सोचा। मेरे शिक्षक ने, बढ़ते हुए अंधेरे में, कुछ हद तक झांकते हुए, उसकी तरफ देखा। एक आकृति ने, अपने आपको पार्गो कलिंग के बगल से, अंधकारमय छायाओं से अलग किया और निश्चितरूप से, फटे हुए कपड़ों को, कुत्ते की लटकती हुई गर्दन की अभिव्यक्ति के साथ पहने हुए, एक आदमी आगे बढ़ा। मेरे शिक्षक ने उसे इशारा किया और वह आगे आया, और उसने लामा मिंग्यार डोंडुप के चरणों में, जमीन पर घुटने टेके। मेरे शिक्षक ने उन दोनों को देखा और कहा, ''जन्म की इस गड़बड़ी के लिए तुम दोनों एक दूसरे को दोष दे कर ठीक नहीं कर रहे हो, क्योंकि ये वह मामला नहीं है, जो तुम दोनों के बीच हुआ, परंतु ये कर्म का मामला है।'' बच्चा जिसमें लपेटा हुआ था, उस लपेटन को एक ओर खींचते हुए, उन्होंने फिर से बच्चे की तरफ देखा। उन्होंने कठोरता से देखा, और मैं जानता था कि, वे शिशु के प्रभामंडल को देख रहे थे। तब वे ये कहते हुए खड़े हुए, ''श्रीमती जी! तुम्हारे बच्चे का इलाज हो सकता है, इसका इलाज पूरी तरह से हमारी क्षमताओं में है। तुम इसे पहले ही हमारे पास क्यों नहीं लाये ?'' बेचारी औरत, फिर से अपने घुटनों पर गिर गई और जल्दी से बच्चे को अपने पति को दे दिया, उसने उसे ऐसे दिया मानो, वह किसी भी क्षण फट जायेगा। औरत ने अपने हाथ जोड़े, और मेरे शिक्षक की ओर देखते हुए कहा, ''पवित्र चिकित्सकीय लामा, हमारे ऊपर ध्यान कौन देगा, क्योंकि हम राग्याव जाति से हैं और हमें दूसरे लामाओं में से कुछ, समर्थित नहीं करते। पवित्र लामा, किसी भी मामले में हमारी आवश्यकता, कितनी भी आवश्यक क्यों न हो, हम नहीं आ सकते थे।

मैंने सोचा, ये सब हास्यास्पद था, राग्याव या मुर्दों को ठिकाने लगाने वाले, जो ल्हासा के दक्षिणपूर्व कोने में रहते हैं, उतने ही आवश्यक थे, जितना कि हमारे समाज में कोई दूसरा। मैं जानता था कि, मेरे शिक्षक हमेशा जोर देते थे कि, कोई बात नहीं किसी व्यक्ति ने क्या किया, कि व्यक्ति अभी भी समाज का एक उपयोगी सदस्य है। मुझे याद आया, एक बार जब उन्होंने हृदय से हॅसते हुए कहा था, '' लोबसांग, चोर भी उपयोगी व्यक्ति है, क्योंकि चोरों के बिना, पुलिस की कोई आवश्यकता नहीं होगी, इसलिए चोर पुलिस को रोजगार दिलाते हैं!'' परंतु ये राग्याव, अनेक लोग, ये सोचते हुए कि वे गंदे होते हैं, क्योंकि वे लाशों को काटते हुए, मुर्दो के साथ काम करते हैं, ताकि गिद्ध और चिड़ियॉ उन बिखरे हुए टुकड़ों को खा जाऐं–इन्हें नीची नजर से देखते हैं। मैं जानता था और मैंने अपने शिक्षक की भॉति महसूस किया कि वे अच्छा काम करते थे, क्योंकि ल्हासा का अधिकांश भाग चट्टानी था, इतना चट्टानी, कि कब्र नहीं खोदी जा सकती थी, और यद्यपि वे ऐसा करते। सामान्यतः, तिब्बत इतना ठंडा था कि लाशें, मात्र जम जातीं और नष्ट नहीं होतीं थीं और जमीन में अवशोषित भी नहीं होतीं थीं।

''श्रीमती जी!'' मेरे शिक्षक ने आदेश दिया, ''आप इस बच्चे को आज से तीन दिन बाद,

व्यक्तिगत रूप से मेरे पास लायेंगे! और हम ये देखने के लिए कि इसका इलाज किया जाये, इसका भरसक प्रयत्न करेंगे, क्योंकि इस छोटी–सी जॉच से ऐसा लगता है कि, इसका इलाज किया जा सकता है,'' उन्होंने अपने काठी के झोले में कुछ टटोला और चमड़े का एक टुकड़ा निकाला। शीघ्रता से, उन्होंने इसके ऊपर एक संदेश लिखा, और उस औरत को दे दिया। ''चाकपोरी में इसको मेरे पास लाना और सेवक ये देखेंगे कि आपको दाखिला दे दिया जाए। मैं द्वारपाल को सूचित कर दूँगा कि आप आने वाले हैं और आपको किसी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होगी। विश्वास रखें कि अपने भगवान की दृष्टि में हम सभी मानव हैं, तुम्हें, हमसे डरने की आवश्यकता नहीं है।'' वे मुड़े और पति की ओर देखा; ''तुमको अपनी पत्नी के प्रति बफादार होना चाहिए।'' उन्होंने पत्नी की तरफ देखा और जोड़ा, ''तुमको अपनी पति को इतना अधिक कोसना नहीं चाहिए, शायद, यदि तुम उनके प्रति दयापूर्ण होतीं, वह तसल्ली के लिए, कहीं दूसरी जगह नहीं जाता! अब, अपने घर जाओ और अब से तीन दिन बाद, चाकपोरी में लौटकर आओ, मैं तुम्हें देखूँगा और तुम्हारी मदद करूँगा। ये मेरा वायदा है।'' वे फिर अपने पोनी के ऊपर सवार हुए और हम सवारी करते हुए चले। दूरी पर, समाप्त होती हुई, राग्याव आदमी और उसकी पत्नी की तरफ से प्रशंसा और धन्यवादों की ध्वनियॉ (आ रहीं) थीं। ''कम से कम आज रात के लिए, मैं सोचता हूँ, लोबसांग, वे दोनों राजीखुशी में रहेंगे, वे एक दूसरे के प्रति दयापूर्ण व्यवहार करेंगे!'' उन्होंने एक छोटी हॅसी निकाली और ठीक उससे पहले जब हम श्यो के गॉव में पहुँचें, सड़क के बांयी ओर अपना रास्ता लिया।

मैं वास्तव में, इस पर अचंभित था, जो कि मेरी पति–पत्नी के ऊपर पहली नजर थी। ''पवित्र लामा,'' मैं चिल्लाया, ''मैं नहीं समझता, यदि वे एक दूसरे को पसंद नहीं करते थे, ये लोग क्यों साथ आये, ऐसा क्यों होना चाहिए ?'' मेरे शिक्षक मेरे ऊपर मुस्कराये और उन्होंने जबाव दिया, ''तुम मुझे अब पवित्र लामा''! कह रहे हो, क्या तुम सोचते हो कि तुम एक किसान हो ? जहॉ तक तुम्हारा प्रश्न है, ठीक है, हम उस पर, कल चर्चा करने वाले हैं। आज रात को हम अत्यधिक व्यस्त हैं। कल हम इन चीजों के ऊपर चर्चा करेंगे और मैं तुम्हारे मन को विश्राम देने का प्रयास करूँगा, क्योंकि ये (तुम्हारा मन) गहरे रूप से भ्रमित है!'' हमने साथ–साथ, पहाड़ी के ऊपर की तरफ चढ़ाई की। मैं हमेशा पीछे देखना पसंद करता था, नीचे, श्यो गॉव पर, और मैं आश्चर्य करता था, क्या होगा यदि, मैं अच्छे आकार के एक या दो पत्थर उछाल कर छत में दे मारूँ; क्या वह सीधा निकल जायेगा ? या ये टकराव, किसी को ये सोचने को विवश करेगा कि, दैत्य उन पर कुछ चीजें गिरा रहे हैं ? मैंने कभी, वास्तव में, नीचे एक भी पत्थर गिराने का दुस्साहस नहीं किया क्योंकि, मैं नहीं चाहता था कि ये छत में होकर और किसी के अंदर होकर जाये। तथापि, मैं हमेशा ही, गंभीर रूप से, ऐसा करने के लिए ललचाया हुआ रहता था।

पोटाला में, हम अंतहीन सीढ़ियों पर चढ़े, जीने नहीं सीढ़ियॉ, जो अच्छी तरह घिसी–पिटी और तीखी थीं और अंत में हम, सामान्य भिक्षुओं से काफी ऊपर, भण्डारों के ऊपर, अपने घरों में पहुँचे। लामा मिंग्यार डोंडुप, अपने कमरे में गए और मैं अपने में, जो बगल में था। मेरे शिक्षक की स्थिति और उनके महत्व के कारण और उनका चेला होने के नाते, मुझे ये कमरा दिया गया था। अब मैं खिड़की पर गया और जैसी मेरी आदत थी, मैंने बाहर देखा। हमारे नीचे, वहॉ एक रात की चिड़िया थी, जो फर के कोटर (grove) में, अपने साथी को पुकार रही थी। चंद्रमा अब चमक रहा था, और मैं इस चिड़िया को देख सकता था–जैसे ही उसकी लंबी टांगें, पानी और दलदल को हिलातीं, पानी पर उठने वाली तरंगों को देख सकता था। कहीं से, एकदम पास से, चिड़िया का उत्तर देती हुई, एक पुकार आई। ''कम से कम ये पति–पत्नी, सामंजस्य में होते हुए दिखाई देते हैं!'' मैंने स्वयं में सोचा। शीघ्र ही, ये सोने के लिए जाने का समय था क्योंकि, मुझे अर्धरात्रि की सेवा में शामिल होना था और पहले से ही मैं इतना थका हुआ था कि, मैंने सोचा कि, सुबह तक, अधिक सो सकूँगा।

अगले दिन की शाम को, जबकि मैं एक पुरानी पुस्तक को पढ़ रहा था, लामा मिंग्यार डोंडुप मेरे कमरे में आये। ''लोबसांग, मेरे साथ अंदर आओ,'' उन्होंने कहा, ''मैं अंतरतम से बात करने के बाद, अभी वापस लौटा हूँ और अब हमें, उन समस्याओं पर, जो तुम्हें उलझन में डाल रही हैं, चर्चा करनी है।'' वे मुड़े और उन्होंने अपने कमरे की तरफ का रुख किया। उनके सामने बैठे रहते हुए, मैंने उन सभी चीजों को सोचा, जो मेरे मन में थीं। ''श्रीमान्!'' मैंने कहा, लोग, एक दूसरे के साथ इतना अमैत्रीपूर्ण होते हुए, शादी क्यों करते हैं ? मैंने पिछली रात, उन दो राग्यावों के प्रभामंडल को देखा था, और मुझे ऐसा लगा कि, वे वास्तव में, एक दूसरे को घृणा करते थे! यदि वे एक दूसरे से घृणा करते थे, तो उन्होंने शादी क्यों की ?'' लामा कुछ क्षणों के लिए, वास्तव में दुःखी दिखाई दिए, और तब उन्होंने कहा, ''लोग भूल जाते है, लोबसांग कि वे इस पृथ्वी पर पाठ सीखने के लिए आये थे। उससे पहले कि एक व्यक्ति पैदा होता है, जबकि वह व्यक्ति, अभी भी, जीवन के दूसरी तरफ है, व्यवस्थाऐं ये तय करने के लिए आगे चल रही हैं, कि किसप्रकार का, किस ढंग का वैवाहिक साथी चुना जायेगा। तुमको समझना चाहिए कि अनेक लोग, जिसे शब्दों में लोग, 'करुणा की गर्मी (heat of passion)', कहते हैं, में शादी करते हैं। जब करुणा समाप्त हो जाती है, जब दयालुता, अजनबीपन, समाप्त हो जाता है, तब अतिपरिचय निंदा को जन्म देता है!''

''अति परिचय[16] अनादर को जन्म देता है।'' मैंने इस संबंध में सोचा और फिर सोचा। क्यों, तब लोग शादी क्यों करते हैं ? स्पष्टरूप से लोग शादी करते हैं ताकि, प्रजाति का आगे बढ़ना जारी रहे। परंतु लोग आपस में वैसे क्यों नहीं करते, जैसे जानवर करते हैं ? मैंने अपना सिर उठाया और अपने शिक्षक से यही प्रश्न पूछा। उन्होंने मुझे कहा, ''लोबसांग! तुम मुझे अचम्भे में क्यों डालते हो, तुमको जानना चाहिए कि तथाकथित पशु, दूसरों की तरह से, बहुधा जीवन भर के लिये, संयोग करते हैं। अनेक पशु[17] जीवन भर के लिए संयोग करते हैं, अनेक चिड़ियॉ जीवन के लिए संयोग करती हैं, निश्चितरूप से ये हमसे ज्यादा उन्नत हैं। जैसा तुम कहते हो, यदि लोग, मात्र अपनी प्रजाति को बढ़ाने के लिए आपस में मिल जायें, तब परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले बच्चे, लगभग आत्मा विहीन बच्चे होंगे, वास्तव में वैसे ही, जैसे वे प्राणी, जो कि तथाकथित कृत्रिम गर्भाधान के द्वारा पैदा हुए हैं। समागम में प्रेम होना चाहिए, यदि सर्वोत्तम प्रकार का बच्चा पैदा किया जाना है तो, माता–पिता के बीच में प्रेम होना आवश्यक है, अन्यथा ये ठीक वैसा ही होगा, जैसे कि कारखानों में बनी हुई चीजें!''

पति और पत्नी के इस क्रियाकलाप ने, मुझे वास्तव में, उलझन में डाल दिया। मैंने अपने खुद के माता–पिता के बारे में सोचा, मेरी मॉ एक दबंग महिला रही थी, और मेरे पिता जी, हमारे प्रति, अपने बच्चों के प्रति वास्तव में, रूखे व्यवहार वाले रहे थे। जब मैं अपने मॉ या पिता के संबंध में सोचता हूँ, मैं अत्यधिक संतान प्रेम याद नहीं कर सकता। मैंने अपने शिक्षक से कहा, ''परंतु लोग भावना की गर्मी में शादी क्यों करते हैं ? वे व्यापारिक प्रस्तावों की तरह से शादी क्यों नहीं करते ?'' ''लोबसांग!'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''ये बहुधा, चीनी लोगों का और जापानियों का भी तरीका है। उनकी शादियॉ अक्सर व्यवस्थित (arranged) होती है, और मुझे स्वीकार करना चाहिए कि, पश्चिमी विश्व की शादियों की तुलना में, चीनी और जापानी शादियॉ अत्यधिक सफल होती हैं। चीनी अपने आपको एक जानवर की तरह समझते हैं। वे भावनाओं में शादी नहीं करते। वे ऐसा कहते हैं कि ये एक केतली को उबालना या

16 अनुवादक की टिप्पिणी : कहा भी है, अति परिचय ते होत है बहुत अनादर भाइ, मलयागिरि की भिल्लिनी चन्दन देत जराय।

17 अनुवादक की टिप्पिणी : पक्षियों, जैसे तोता, हंस आदि, पशुओं में सिंह, बानर, हाथी आादि, सर्पों में नाग अदि में जीवन साथी के प्रति, गजब का समप्रण और बफादारी देखी जाती है। जिन पशु एवं पक्षियों को आदमी ने पालतू बना लिया है, उनमें इस प्रकार के अवसर लगभग शून्य होते हैं क्योंकि, कोई आदमी गाय को केवल दूध के लिये और बैल को केवल जोतने, बोझा ढोने के लिये पालता है। गाय–सॉड़ का जोड़ा पालते हुए, मैंने आज तक किसी को नहीं देखा। इनमें से बैलों को तो बधिया बना दिया जाता है, ताकि उसकी प्रजनन क्षमता ही सदैव के लिये समाप्त हो जाती है और गाय को केवल गर्मी में आने पर ही, किसी भी सॉड़ से, इनका गर्भाधान करा दिया जाता है। आजकल मनुष्य ने कृत्रिम गर्भाधान के कारण, पशुओं को उनके इस नैसर्गिक अधिकार से भी वंचित कर दिया है। पालतू कुत्ते, बिल्लियों, घोड़े, गधों आदि को तो आजकल शुरू से ही नसबंदी कराने के बाद ही पाला जाता है, ताकि इनकी आबादी सीमित बनी रहे।

ठंडा करने जैसा है। वे ठंडे तरीके से, सोच विचार करके शादी करते हैं और तब लोक अनुभव जैसी केतली को उबलने देते हैं, और तब इस तरीके से वह अधिक लंबे समय तक गर्म बनी रहती है!'' उन्होंने, ये देखने के लिए कि क्या मैं समझ रहा हूँ–ये देखने के लिए कि सारी बात मुझे स्पष्ट हो चुकी है, मेरी तरफ देखा। ''परंतु मैं नहीं देख सकता, श्रीमान्, कि लोग साथ रहने पर इतने दुःखी क्यों होते हैं ?'' ''लोबसांग, लोग इस पृथ्वी पर कक्षा की तरह आते हैं, वे चीजों को सीखने के लिए आते हैं, और यदि औसत पति और पत्नी आपस में आदरस्वरूप में सुखी हों तो वे सीखेंगे नहीं, क्योंकि तब कुछ भी सीखने के लिए नहीं होगा। वे यहॉ पृथ्वी पर साथ रहने के लिए आते हैं और साथ रहते जाते हैं–कि ये पाठ का एक भाग है–और उन्हें कुछ लेना–देना सीखना होता है। लोगों के किनारे खुरदरे होते हैं, किनारे या अनोखापन, जो संघर्ष करता है और दूसरे भागीदार को घिसता है। घिसने वाले भागीदारों को, उनको दबाना और शायद, किसी विशेषता को समाप्त करना सीखना चाहिए, जबकि भागीदार, जो उदासीन है, उसको सहनशीलता और क्षमा सीखनी चाहिए। लगभग हर जोड़ा सफलतापूर्वक रह सकता है वशर्ते वे इस लेने–देन के मामले को सीख लें।''

''श्रीमान्!'' मैंने कहा, ''पति और पत्नी को एक साथ रहने की सलाह, एक साथ कैसे दी जा सकती है'', ''पति और पत्नी को, लोबसांग, एक उचित क्षण की प्रतीक्षा करनी चाहिए, और तब कृपापूर्वक, सौहादृतापूर्वक, और शांतिपूर्वक कहना चाहिए कि उन्हें क्या चीज परेशान कर रही है। यदि पति और पत्नी, मामलों पर एक साथ चर्चा करें तो वे अपने विवाह से अधिक प्रसन्न होंगे।'' मैंने इसके बारे में सोचा, और मैंने आश्चर्य किया, मेरे माता और पिता क्या करेंगे, यदि उन्होंने किसी चीज पर साथ बैठ कर चर्चा करने का प्रयास किया! मुझे वे आग और पानी दिखाई देते थे, उनमें से हर–एक दूसरे के प्रति संवेदनाहीन। मेरे शिक्षक, स्पष्टरूप से जानते थे कि मैं क्या सोच रहा था, क्योंकि उन्होंने कहना जारी रखा, ''कुछ लेना और देना होना चाहिए, क्योंकि यदि ये लोग कुल मिला कर, कुछ सीखने वाले हैं, तो उन्हें पर्याप्तरूप से ये जानने के लिए जागरूक रहना चाहिए कि, उनके साथ कुछ गड़बड़ है।'' ''परंतु ऐसा कैसे है,'' मैंने पूछा, ''कि एक व्यक्ति दूसरे के प्रेम में गिरता है, या दूसरे की तरफ आकर्षित अनुभव करता है ? यदि वे किसी चरण में, एक दूसरे के प्रति आकर्षित हैं, तो वे शीघ्र ही एकदम ठण्डे क्यों पड़ जाते हैं ?'' ''लोबसांग, तुम ठीक से जान लोगे कि, यदि कोई प्रभामंडल को देख सकता है, तो वह दूसरे व्यक्ति के बारे में बता सकता है। औसत व्यक्ति, प्रभामंडल नहीं देख सकता, परंतु इसके बजाय अनेक लोगों में एक भावना होती है, वे कह सकते हैं कि, वे इस व्यक्ति को पसंद करते हैं या वे उस व्यक्ति को नापसंद करते हैं। अधिकांश समयों में हम ये नहीं कह सकते कि, वे क्यों पसंद या नापसंद करते हैं, परंतु वे सहमत होंगे कि, एक व्यक्ति उनको अच्छा लगता है और दूसरा व्यक्ति उनको अच्छा नहीं लगता है।'' ''ठीक है, श्रीमान्,'' मैंने विस्मय किया, ''वे अचानक ही कैसे एक व्यक्ति को पसंद कर सकते हैं और तब अचानक ही दूसरे व्यक्ति को नापसंद ?'' ''जब लोग एक निश्चित चरण में होते है, जब वे अनुभव करते है कि वे प्रेम में है, उनके कंपन बढ़ जाते हैं, और ये ठीक ही होगा कि जब ये दो लोग, किसी आदमी और किसी औरत ने, अपने कंपनों को बढ़ा लिया है, वे अनुकूल होंगे। दुर्भाग्यवश, वे इसे हमेशा ऊँचाईयों पर ही नहीं बने रहने दे सकते। पत्नी नीरस हो जायेगी, शायद वह पति को मना कर देगी, जो न मना करने योग्य सीमा तक, उसका अधिकार है। पति तब इसे पाने के लिए किसी दूसरी औरत की तरफ जायेगा, और धीमे–धीमे वे अलग होते जायेंगे। धीमे–धीमे, उनके ईथरी कंपन बदल जायेंगे ताकि वे अब अधिक अनुकूल न रहें, ताकि वे पूरी तरह से विपरीत संवेदनाओं के हो जायें।'' हॉ मैं देख सकता था कि, और इसने वास्तव में, मूझे काफी कुछ समझा दिया, परंतु अब मैं आक्रमण करने के लिए वापस लौटा!

''श्रीमान्! मैं ये जानकर अत्यधिक उलझन में हूँ कि, कोई शिशु शायद एक महीने के लिए जिये और तब मर जाये, तब इस बच्चे को सीखने, या अपने कर्मों को वापस भुगतान करने का कौन–सा

अवसर मिलता है ? जहॉ तक कि मैं देख सकता हूँ, प्रत्येक को ऐसा दिखता है कि ये व्यर्थ है!'' लामा मिंग्यार डोंडुप, मेरे जोश के ऊपर थोड़े से मुस्कुराये। नहीं, लोबसांग, कुछ बेकार नहीं जाता! तुम अपने विचारों में भ्रमित हो गए हो। तुम ये मान रहे हो कि, व्यक्ति केवल एक जीवन जीता है। हम एक उदाहरण लें।'' उन्होंने मुझे देखा और तब एक क्षण के लिए, खिड़की के बाहर देखा। मैं देख सकता था कि, वे राग्याव लोगों के बारे में–शायद उनके बच्चे के बारे में सोच रहे थे।

''मैं तुम्हें ये कल्पना कराना चाहता हूँ कि, तुम एक व्यक्ति के साथ हो, जो जीवनों की श्रृंखला में होकर गुजर रहा है,'' मेरे शिक्षक ने कहा। ''व्यक्ति ने एक जीवन में काफी खराब किया है, और तब बाद के वर्षों में वह व्यक्ति तय करता है कि, अब वह किसी प्रकार से और आगे नहीं जा सकता, वह निर्णय लेता है कि, परिस्थितियॉ उसके लिए एकदम खराब हैं, इसलिए वह अपने जीवन का अंत कर देता है; वह आत्महत्या करता है। इसलिए व्यक्ति जब उसे मरना चाहिए, उस समय से पहले ही मर जाता है। हर व्यक्ति कुछ निश्चित संख्या में वर्षों, दिनों, और घण्टों के लिए जीवित रहने के लिए भेजा जाता है। ये सब व्यवस्था, उनके पृथ्वी पर आने से पहले कर ली जाती है। यदि एक व्यक्ति, जब उसे सामान्यतः मरना चाहिए था, शायद उससे बारह महीने पहले, अपने खुद के जीवन को समाप्त करता है, तब उसे वापस आना होगा और उसे अतिरिक्त बारह महीनों के लिए यहॉ रहना होगा।'' मैंने उनकी तरफ देखा और कुछ उल्लेखनीय संभावनाओं, जो वहॉ से उठ सकती थीं, की कल्पना की। मेरे शिक्षक ने कहना जारी रखा, ''एक व्यक्ति अपने जीवन को समाप्त करता है, जबतक कि एक अवसर, पुनः घटित न हो, जिसके द्वारा वह पृथ्वी पर आने के लिए, दुबारा उचित अवस्थाओं में आ सके और उस समय तक जीकर समय को निकाल सके, जो उसे पृथ्वी पर भोगना है, वह सूक्ष्मलोक में रहता है। ये व्यक्ति बारह महीनों के साथ, ठीक है, वह एक बीमार बच्चे के रूप में वापस आ सकता है, और वह मरेगा जबकि, वह अभी भी बच्चा ही है। उस बच्चे को खोने में, मॉ–बाप को भी कुछ प्राप्त होगा; उन्होंने एक बच्चे को खो दिया होगा परंतु, उन्हें एक अनुभव मिलेगा, वे उसमें से, जो उन्हें वापस भुगतान करना था, थोड़ा–सा भुगतान करेंगे। हम सहमत होंगे कि, जबतक लोग पृथ्वी पर हैं, उनके दृष्टिकोण, उनके विचार, उनके मूल्य–हर चीज–विकृत हो जाती है। मैं दुहराता हूँ, यह माया का लोक, झूठे मूल्यों वाली दुनियॉ है, और जब लोग बृहत्तर लोक की ओर, अधिस्वयं (overself) की ओर लौटते हैं तब वे देख सकते है कि कठिन, भावनाहीन पाठ और इस पृथ्वी पर पड़ाव के दौरान अनुभव, कुल मिला कर उतने अर्थहीन नहीं थे।''

मैंने अपने ऊपर देखा और मेरे अपने भविष्य की सभी भविष्यवाणियों पर विचार किया; कठिनाईयों की भविष्यवाणियॉ, प्रताड़नाओं की भविष्यवाणियॉ, दूर और अजनबी देशों में पड़ावों की भविष्यवाणियॉ। मैंने टिप्पणी की, ''तब कोई व्यक्ति, जो भविष्यवाणी करता है, सूचना के स्रोत मात्र के साथ संपर्क में आता है! यदि हर चीज, जब कोई पृथ्वी पर आता है, उससे पहले ही व्यवस्थित की जाती है, तब कुछ निश्चित अवस्थाओं में, उस ज्ञान को प्राप्त कर लेना संभव है ?'' ''हॉ, वह पूरी तरह से सही है,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''परंतु मैं नहीं सोचता कि, हर चीज अपरिहार्यरूप से लादी गई है। आधारभूत दिशायें वहॉ है। हमें कुछ निश्चित समस्याऐं बताई गई हैं, कुछ निश्चित दिशाऐं चलनी हैं, और तब हमको, जो कुछ हम कर सकते हैं, उनमें से सबसे अच्छा करने के लिए, छोड़ दिया जाता है। एक आदमी अच्छा कर सकता है और दूसरा असफल हो सकता है। इस पर इस ढंग से देखो; ये मान लो कि, दो लोगों को बताया गया है कि, उन्हें यहॉ से, भारत में कलिमपोंग जाना है। उन्हें एक समान रास्ते पर चलने की आवश्यकता नहीं है, परंतु यदि वे कर सकें, उन्हें समान गंतव्य पर पहुँचना है। इस प्रकार एक आदमी एक रास्ता लेगा और दूसरा आदमी दूसरा रास्ता लेगा। वे पथ के ऊपर निर्भर करते हुए, अनुभव और साहस प्राप्त करेंगे। ये जीवन की तरह है, हमारा गंतव्य ज्ञात है, परंतु हम उस गंतव्य पर कैसे पहुँचें, यह हमारे हाथ में रहता है।''

जब हम बात कर रहे थे, एक संदेशवाहक प्रकट हुआ, और मेरे शिक्षक, मुझे स्पष्टीकरण के छोटे शब्द के साथ, गलियारे में नीचे की तरफ, संदेशवाहक के पीछे गए। मैं फिर उस खिड़की की तरफ टहला और (मैंने) अपने चेहरे को अपने हाथों से टिकाते हुए, अपनी कोहनी उसके किनारे पर टिकाई। मैंने इस सबके ऊपर सोचा, जो मुझे बता दिया गया था, सभी अनुभवों का विचार जो मुझे मिले और उस महान पुरुष, मेरे शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप, के द्वारा प्रेम के साथ सुधारा गया मेरा संपूर्ण अस्तित्व, जिन्होंने हमेशा मेरे मॉ–बाप की तुलना में, जो उन्होंने यदि कभी दिया हो, मुझसे अत्यधिक प्रेम प्रदर्शित किया था। मैंने तय किया कि, भविष्य जो कुछ भी लाये, कोई बात नहीं, मैं हमेशा कर्म करूॅगा और (ऐसे) व्यवहार करूॅगा मानो कि मेरे शिक्षक, मेरे बगल में रह कर, मेरी गतिविधियों का निरीक्षण कर रहे हों। संगीतज्ञ भिक्षुक, वहॉ अपने विभिन्न उपकरणों से शोर करते हुए और ''ब्रम्प–ब्रम्प–ब्रम्प'' और भिनभिनाते हुए, नीचे के मैदान में अपने संगीत का अभ्यास कर रहे थे; आलसपूर्वक मैंने उनको देखा, मेरे लिए संगीत का कोई अर्थ नहीं था क्योकि, मैं संगीत के प्रति बहरा था परंतु, जब मैंने देखा कि, वे अच्छे संगीत को उत्पन्न करने के लिए मेहनत के साथ प्रयास करते हुए, बहुत ही ईमानदार व्यक्ति थे। मैं ये सोचते हुए पीछे मुड़ा कि, मैं एकबार फिर, एक पुस्तक के साथ, स्वयं को व्यस्त कर लूॅगा।

शीघ्र ही, मैं पढ़ने से थक गया; मैं अव्यवस्थित हो गया। अनुभव अब बहुत तेजी से और तेजी से मेरे ऊपर लादे जा रहे थे। अधिक, और अधिक आलस के साथ, मैंने पृष्ठों को पलटा, तब सहसा एक संकल्प के साथ, मैंने वे सभी छपे हुए पृष्ठ, नक्काशीयुक्त लकड़ी के आवरणों के बीच वापस रख दिए और फीतों को बांध दिया। ये एक पुस्तक थी, जिसे रेशम में लपेटा जाना था। स्वाभावगत सावधानी के साथ, मैंने अपने कार्य को पूरा किया और पुस्तक को एक बगल से रख दिया।

अपने पैरों पर खड़े होते हुए मैं खिड़की पर गया और बाहर देखा। रात कुछ हद तक ताजगी रहित, शांत, हवा की किसी भी श्वांस से रहित थी। मैं मुड़ा, और (मैंने) कमरे को छोड़ दिया। बड़ी इमारत, जो लगभग जिंदा थी, की शांत खामोशी के साथ, सब कुछ शांत था। यहॉ पोटाला में, लोग पवित्र कामों को कुछ शताब्दियों से कर रहे थे और खुद इमारत में, अपने खुद का जीवन विकसित हो गया था। मैंने गलियारे के अंत तक जाने की जल्दी की और वहॉ एक सीढ़ी पर चढ़ा। शीघ्र ही मैं, पवित्र समाधियों के बगल से, ऊॅची छत पर प्रकट हुआ।

मैं खामोशी के साथ, दबे पॉव, अपने सुपरिचित स्थान तक गया, एक स्थान, जो हवाओं से, जो सामान्यतः पहाड़ों से नीचे की तरफ दौड़ लगाती थीं, भलीभॉति सुरक्षित था। एक पवित्र छवि के पीछे लेटे हुए, अपने हाथों को अपने सिर के पीछे कसे हुए, मैंने घाटी के आर–पार, टकटकी लगा कर देखा। कुछ समय बाद, उससे थकते हुए, मैं फिर वापस पड़ा रहा और (मैंने) सितारों को देखा। जैसे ही मैंने देखा, मुझे एक अनजान प्रभाव प्रतीत हुआ कि, ऊपर के ये सभी लोक, पोटाला के चारों तरफ घूम रहे थे। कुछ समय के लिए इसने मुझे काफी संभ्रमित (dizzy) अनुभव कराया, मानो कि मैं गिर रहा था। जैसे ही मैंने ध्यान से देखा, वहॉ प्रकाश की एक पतली सजावट थी। अधिक चमकदार होते हुए, ये अचानक ही चटकदार रोशनी में बिस्फोटित हुई। जैसे ही इसने स्वयं को, धुंधली लाल चिनगारियों की फुहारों के रूप में जला दिया और मर गया मैंने सोचा, ''एक और पुच्छल तारा समाप्त हुआ!''

मैं कहीं निकट ही लगभग न सुनाई देने योग्य ''शश् शश्'' के प्रति सावधान हुआ। ये आश्चर्य करते हुए कि यह क्या हो सकता था, सावधानी से मैंने अपना सिर उठाया। तारों की धुंधली रोशनी के द्वारा, मैंने आगे की ओर पवित्र समाधियों के सामने वाली तरफ और पीछे की तरफ कदम बढ़ाती हुई, टोपी पहिने हुए एक आकृति देखी। मैंने ध्यान से देखा। आकृति, ल्हासा के शहर की सामने वाली दीवार की तरफ चली। जब उसने दूरी पर देखा, तो मैंने उसके पार्श्वचित्र (profile) को देखा। मैंने सोचा तिब्बत का सबसे अधिक अकेला आदमी। देश के किसी भी दूसरे व्यक्ति की तुलना में अधिक सावधानियों और उत्तरदायित्वों वाला, आदमी। मैंने एक गहरी आह सुनी और आश्चर्य किया। शायद,

उसे भी मेरी तरह से इतनी ही कठोर, कठोर, कठोर भविष्यवाणियॉ मिली थीं। मैं सावधानीपूर्वक लुढ़क गया और शांति से, दूर की तरफ रेंग गया; मुझे –खुलेपन में भी–किसी दूसरे के निजी विचारों में घुसपैंठ करने की कोई इच्छा नहीं थी। शीघ्र ही मैंने प्रवेशद्वार को पुनः प्राप्त किया, और मैंने अभयारण्य की ओर, नीचे की ओर, अपने कमरे का, अपना शांत रास्ता पकड़ा।

कुछ तीन दिन बाद, चूँकि मेरे शिक्षक, लामा मिंग्यार डोंडुप ने राग्याव जोड़े के बच्चे की जॉच की, मैं उपस्थित था। उन्होंने उसकी पट्टियॉ हटाईं और सावधानी से प्रभामंडल को देखा। कुछ समय के लिए, उन्होंने मस्तिष्क के आधार के ऊपर, ध्यान से देखा। मेरे शिक्षक चाहे कुछ भी क्यों न करें, ये बच्चा रो नहीं सकता था या रिरिया (whimper) नहीं सकता था। जैसा मैं जानता था, ये कितना छोटा था, मैं ये समझा कि लामा मिंग्यार डोंडुप, इसे ठीक करने का प्रयास कर रहे थे। अंत में, मेरे शिक्षक खड़े हुए और उन्होंने कहा, ''ठीक है, लोबसांग! हम उसका इलाज करने जा रहे हैं। ये स्पष्ट है कि उसे जन्म की परेशानियों के द्वारा उत्पन्न की गई, पीड़ा है।''

माता–पिता, प्रवेशद्वार के पास एक कमरे में प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने शिक्षक के इतना समीप, जैसे कि उनकी छाया, मैं इन लोगों को देखने के लिए, उनके साथ गया। जैसे ही हमने प्रवेश किया, उन्होंने स्वयं ही लामा के चरणों में दण्डवत की। उन्होंने धीमे से उनसे कहा; ''आपके पुत्र को ठीक किया जा सकता है और वह ठीक हो जायेगा। हमारी जॉच से ये स्पष्ट है कि, जन्म के समय वह गिर था या उसने ठोकर खाई थी। इसका इलाज किया जा सकता है; आपको डरने की आवश्यकता नहीं है।'' जैसे ही उसने उत्तर दिया, मॉ थरथरा उठी, ''पवित्र चिकित्सीय लामा, ये वैसा ही है जैसा आप कहते हैं। वह अनअपेक्षितरूप से आया था, अचानक ही, और वह जमीन पर लुढ़क गया। मैं उस समय अकेली थी।'' मेरे शिक्षक ने सहानुभूति और समझदारी में सिर हिलाया; ''कल इसी समय लौटकर वापस आओ और मुझे विश्वास है कि, तुम इलाज किये हुए अपने बच्चे को, अपने साथ लेकर जाओगे।'' जब हमने कमरे को छोड़ा, वे अभी भी नमन और दण्डवत कर रहे थे।

मेरे शिक्षक ने मुझे, सावधानीपूर्वक शिशु की परीक्षा करने दी। ''देखो, लोबसांग, यहॉ दबाव है,'' उन्होंने निर्देश दिए। ''ये हड्डी तंतु को दबा रही है–तुम ध्यान से देखो कि प्रभामंडलीय प्रकाश, गोल होने के बजाय, कैसे पंखे के रूप का हो रहा है।'' उन्होंने मेरे हाथ, अपने हाथों में पकड़े और मुझे प्रभावित क्षेत्र के आसपास अनुभव कराया। ''मैं, रोकने वाली हड्डी को दबाकर बाहर करने, घटाने जा रहा हूँ। ध्यान से देखो!'' जितनी तेजी से मैं देख सकता था, उससे भी अधिक तेजी से, उन्होंने अपने अंगूठों को अंदर बाहर दबाया। शिशु ने कोई चीख पुकार नहीं की; उसके लिए ये इतनी अधिक तेजी से हुआ था कि, वह दर्द महसूस नहीं कर सका। अब यद्यपि, पहले की तरह, सिर बगल से नहीं लटक रहा था परंतु, सिर सीधा था, जैसा कि होना चाहिए। कुछ समय के लिए, मेरे शिक्षक ने बच्चे की गर्दन की, सावधानीपूर्वक, सिर से नीचे की तरफ, दिल की तरफ, परन्तु विपरीत दिशा में कभी नहीं, मालिश की।

मॉ–बाप, अगले दिन, पूर्व निश्चित किए हुए समय पर वापस लौटे और इस चमत्कार लगने वाली घटना को देखते हुए, आनंद की पूर्ण उत्तेजना के साथ लगभग पगला गये (delirous with joy) थे। ''तुम्हें इसके लिए भुगतान करना पड़ेगा,'' लामा मिंग्यार डोंडुप मुस्कुराये; ''तुम्हारे साथ भलाई हुई है। इसलिए तुमको एक दूसरे को भलाई देनी चाहिए। झगड़ा मत करो और न कभी एक–दूसरे के साथ मन–मुटाव करो, क्योंकि बच्चा अपने माता–पिता के रुखों को अवशोषित करता है। दयाहीन माता–पिता का बच्चा, दयाहीन हो जाता है। अप्रसन्न, प्रेम रहित माता–पिता का बच्चा, बदले में अप्रसन्न और प्रेमहीन हो जाता है। दयालुता और प्रेम के साथ, एक दूसरे को भुगतान करो। हम एक हफ्ते के समय में, तुम्हारे बच्चे को देखने के लिए, तुम्हारे यहॉ आयेंगे।'' वे मुस्कराये और बच्चे के गाल के ऊपर थपथपाया और तब मुड़े और बाहर गए, मैं उनकी बगल से साथ में (चला)।

''अत्यंत गरीब लोगों में से कुछ, घमंडी होते हैं, लोबसांग, यदि उनके पास भुगतान करने के लिए धन नहीं हो, वे अव्यवस्थित हो जाते हैं।'' जब मेरे शिक्षक ने टिप्पणी की, मेरे शिक्षक मुस्कराये, ''मैंने उन्हें कह दिया है कि उनको भुगतान करना पड़ेगा। इससे उन्हें प्रसन्नता हुई, क्योंकि उन्होंने सोचा कि, अपनी सबसे अच्छी पोशाक में, उन्होंने मुझे इतना प्रभावित किया कि, मैंने सोचा कि वे धनवान लोग थे। जैसा कि मैंने कहा, मात्र एक तरीका है, जिसमें वे एक दूसरे के प्रति दयालुता के द्व ारा भुगतान कर सकते हैं। आदमी और औरत को, अपने गर्व को, अपने आत्मसम्मान को, बनाये रहने दो लोबसांग, और वे कुछ भी, जो आप कहेंगे, करेंगे!''

अपने कमरे में वापस आ कर, मैंने अपना दूरदर्शी, जिसके साथ मैं खेल रहा था, उठाया। चमकती हुई पीतल के नलियों का विस्तार करते हुए, मैंने ल्हासा की दिशा में ताका। एक बच्चे को ले जाते हुए, दो आकृतियॉ, शीघ्रतापूर्वक, केन्द्र में आई, ज्यों ही मैंने ध्यान से देखा, आदमी ने अपनी बॉह अपनी पत्नी के कंधे पर रखी और उसे चुम्बन किया। धीमे से, मैंने दूरदर्शी को उठाकर रख दिया और अपने अध्ययन में व्यस्त हो गया।

अध्याय ग्यारह

हम मजे कर रहे थे, हम में से अनेक, एक–दूसरे को गिराने के प्रयास में, अपनी बैशाखियों के ऊपर इठलाकर आसपास चलते हुए, बाहर ऑगन में थे। कोई, जो दूसरों के आघातों से, वैशाखियों पर अप्रभावित रहता, वह विजेता होता। जब किसी ने अपनी वैशाखियों को जमीन में बने छेद में डाल दिया था और वह हमें गिराते हुए हमसे टकराया, हम में से तीन, हॅसी की ऊॅचाईयों के नीचे दब गये। ''बूढ़े शिक्षक, राक्स (Raks) आज पूरी तरह से उदास भावना (blue mood) में थे!'' मेरे समूह के साथियों में से एक ने प्रसन्नतापूर्वक कहा। ''हॉ!'' झुण्ड में से कोई दूसरा जोर से चिल्लाया, ''दूसरों में से किसी एक को ईर्ष्या के साथ इतना हरा होना चाहिए कि, वह ऐसी मनोदशा में आ सके और हमें श्वांस बाहर किए बिना, बाहर ले जा सके।'' हम सभी ने एक–दूसरे की तरफ देखा और हॅसना प्रारंभ किया; एक नीली मनोदशा (blue mood) ? ईर्ष्या के साथ हरी (green with envy) ? हमने दूसरों को, अपनी वैशाखियों पर से उतर जाने और अपने साथ जमीन पर बैठ जाने के लिए कहा, और तब हमने एक नया खेल प्रारंभ किया। चीजों का वर्णन करने में हम कितने रंगों का प्रयोग करते हैं ? ''चेहरे का नीला रंग (Blue in the face)!'' एक प्रसन्नतापूर्वक बोला। ''नहीं,'' मैंने उत्तर दिया, नीला पहले से ही हमारे पास है, हमारे पास, पहले से ही, एक नीली मनोदशा है।'' इसप्रकार हम, नीली मनोदशा से लेकर, कार्य करते हुए, एक मठाध्यक्ष तक, जो अपने भूरे अध्ययन (brown study) में था, और एक शिक्षक, जो ईर्ष्या के कारण हरा था, चलते गए। किसी दूसरे ने, एक सिंदूरी महिला (scarlet woman) का संदर्भ दिया, जिसने उसे ल्हासा के बाजार में देखा था! एक क्षण के लिए हम नहीं जानते थे कि क्या वह लागू होगा क्योंकि, हम में से कोई भी निश्चित नहीं था कि, सिंदूरी औरत का क्या अर्थ होता था। ''मैं जानता हूॅ!'' मेरे दायीं ओर के लड़के ने कड़ा उत्तर दिया, ''हम एक आदमी को पा सकते हैं, जो पीला (yellow) है, जो कायरपन के कारण पीला है। कुल मिला कर, बहुधा, पीले का उपयोग कायरता को इंगित करने के लिए किया जाता है।'' मैंने इस सबके ऊपर सोचा, और मुझे ऐसा लगा कि यदि, किसी भी भाषा में, इसप्रकार की लोकोक्तियॉ सामान्य हैं, तब वहॉ इसके पीछे, कुछ अच्छे अंतर्निहित कारण भी होंगे; इसने मुझे, अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप की तलाश में चलता कर दिया।

''आदरणीय लामा!'' मैं उनके अध्ययनकक्ष में, कुछ उत्तेजना के साथ फट पड़ा। उन्होंने, मेरे अचानक प्रवेश पर विक्षुब्ध हुए बिना, मेरी तरफ देखा। ''आदरणीय लामा, हम मनोदशाओं का वर्णन करने के लिए रंगों का उपयोग क्यों करते हैं ?'' उन्होंने उस पुस्तक, जिसे वे पढ़ रहे थे, को उठा कर रख दिया और मुझे बैठ जाने का इशारा किया। ''मेरा ख्याल है, तुम्हारा आशय, एक नीली मनोदशा, या एक व्यक्ति के ईर्ष्या के साथ हरा होने, जैसे सामान्य पदों के उपयोगों के बारे में है ?'' उन्होंने पूछा,'' ''हॉ,'' मैंने और भी अधिक उत्तेजना के साथ उत्तर दिया, उत्तेजना ताकि वे अच्छी यथार्थता के साथ जान जायें कि, मेरा संदर्भ क्या था। ''मैं यथार्थ में जानना चाहूॅगा कि, ये सभी रंग इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं। इसके पीछे कुछ तो होना ही चाहिए!'' उन्होंने मुझे देखा और मुॅह मरोड़ते हुए दुबारा हॅसे, ''ठीक है, लोबसांग, तुमने स्वयं को, एक दूसरे अच्छे लंबे व्याख्यान में जाने दिया है। परंतु मैं देखता हूॅ कि, तुम कुछ कठोर प्रयास कर रहे हो और मैं सोचता हूॅ कि, तुमको और मुझे, कुछ चाय लेनी चाहिए–वैसे भी, मैं अपनी (चाय) का इंतजार कर रहा था–इससे पहले कि हम इस विषय में जायें।'' चाय आने में अधिक लंबा समय नहीं लगा। इसबार ये मात्र चाय और त्सम्पा था, वैसा ही, जैसे कि किसी भी दूसरे भिक्षु या लामा या पूरे लामामठ में लड़कों के लिए रहा होगा। हमने खामोशी से खाया, मैं रंगों के संबंध में सोचता और आश्चर्य करता रहा कि, रंगों के क्या आशय निकलेंगे। शीघ्र ही, हमने अपने, मानो कि संक्षिप्त भोजन को, समाप्त किया, और मैंने आशापूर्वक, अपने शिक्षक की ओर देखा।

''तुम संगीत के उपकरणों के विषय में थोड़ा–बहुत जानते हो लोबसांग,'' उन्होंने प्रारंभ किया,

''उदाहरण के लिए, तुम जानते हो कि पश्चिम में काफी उपयोग किया जाने वाला, संगीत का एक ऐसा उपकरण प्यानो (piano) है। तुम्हें याद होगा कि, इसके चित्र को, हमने साथ–साथ देखा था। इसमें एक कुजीं–पटल (key-board) होता है, जिसमें अनेक सुर होते हैं, कुछ काले और कुछ सफेद, ठीक है, हम (सफेद) कालों को भूल जायें, हम इसके बजाय ये याद रखें कि शायद, लगभग दो मील लंबा–और भी अधिक लंबा, यदि तुम्हें पसंद हो–इसमें प्रत्येक कंपन, जो अस्तिव के किसी भी स्तर पर प्राप्त किया जा सकता है, उपलब्ध है।'' उन्होंने, ये देखने के लिए कि, क्या मैं समझ रहा था, ये मेरी तरफ देखा, क्योंकि जहॉ तक मेरा संबंध है, प्यानो हमारे लिए अनजान युक्ति थी। मैंने–जैसा मेरे शिक्षक ने कहा–ऐसी चीज केवल चित्रों में देखी थी। ये समझते हुए कि, मैं इसमें अंतर्निहित विचार को समझ चुका था, उन्होंने कहना जारी रखा, ''यदि तुम्हारे पास एक की–बोर्ड हो, जिसमें हर कंपन निहित हो, तब मानवीय कंपनों की पूरी श्रृंखला, शायद मध्य की तीन कुंजियों में आ जायेगी। तुम समझोगे –कम–से–कम मैं आशा करता हूँ तुम समझोगे!–कि, हर चीज कंपनों से बनी होती है। हम, मनुष्य को ज्ञात कंपनों में से सबसे नीचे को लें। सबसे नीचा कंपन, किसी कठोर पदार्थ का होता है। तुम उसे छुओ और वह तुम्हारे उंगली के रास्ते को रोकता है, यद्यपि उसी समय, इसके सभी अणु कंपन कर रहे होते हैं ! तुम, इस काल्पनिक की–बोर्ड पर और ऊॅचे जा सकते हो, और तुम एक कंपन, जिसे ध्वनि के रूप में जाना जाता है। तुम और ऊॅचे जा सकते हो और तुम्हारी ऑखें उन कंपनों को प्राप्त करती हैं, जिसे दृष्टि के रूप में जाना जाता है।

मैं इस पर झटका खा कर सीधे ऊपर उछल पड़ा; दृष्टि, एक कंपन कैसे हो सकती है ? यदि मैं एक चीज देखता हूँ–ठीक है, मैंने कैसे देखा ? ''तुम देखो, लोबसांग, क्योंकि चीज, जिसको देखा जा रहा है, कंपन करती है और एक हलचल, जो ऑखों के द्वारा समझी जाती है, कंपन पैदा करती है। दूसरे शब्दों में, कोई चीज, जिसे तुम देख सकते हो, एक तरंग उत्पन्न करती है, जो तुम्हारी ऑखों में, रोडों और कोनों (rods and cones)[18] के द्वारा प्राप्त की जाती है, जो बदले में इसको, मस्तिष्क

18 अनुवादक की टिप्पिणी : मनुष्य की ऑख के रेटिना में दो प्रकार के प्रकाश अभिग्राहक (photo receptors) पाये जाते हैं, जिन्हें रोड (rods) और कोन (cones) कहते हैं (इनका शाब्दिक अर्थ छड़ और शंकु न लें, ये विशिष्ट संरचना वाली जैविक कोशिकायें (biocells) होतीं हैं)। रेटिना में, रोड अत्यधिक संख्या में, लगभग एक अरब बीस करोड़ होते हैं। कोनों की तुलना में रोड, प्रकाश की तीव्रता के प्रति अधिक सुग्राहक एवं संवेदनशील होते हैं और मंद तीव्रता के प्रकाश में भी सक्रिय रहते हैं परंतु, वे प्रकाश के घटक रंगों के प्रति संवेदनशील नहीं होते। तीव्र प्रकाश के घटक रंगों के प्रति सुग्राहक कोनों में से, मात्र साठ से सत्तर लाख कोन ही, ऑख को रंगों का संज्ञान कराते हैं, जिनमें से अधिकांश, मध्य पीत बिन्दु (central yellow spot), जिसे मेक्युला (meculla) कहा जाता है, में केन्द्रित होते हैं। इस क्षेत्र के केन्द्र में फोविया सेन्ट्रालिस (fovea centralis) नाम का, लगभग 0.3 मिलीमीटर व्यास का, रोड–मुक्त क्षेत्र होता है, जिसमें अत्यंत पतले, ठूंस–ठूंसकर जमाए हुए छिद्र (pores) होते हैं। प्रायोगिक प्रमाण बताते है कि, कोनों में, तीन प्रकार के, विभिन्न रंगों, पीले, हरे और लाल, के अभिग्राहक (receptors) होते हैं। चूँकि रंगों का देखा जाना, इन तीन प्रकार की नर्म कोशिकाओं (cells) के उत्तेजित होने पर निर्भर करता है, इससे पता चलता है कि दृश्य रंग, मात्र तीन मूल रंगों (basic colours) में बॉटे जा सकते हैं, जिसे त्रिउत्तेजक मूल्य (tristimulus values) कहा जाता है। रंगों का समझा जाना, इन त्रिउत्तेजक मूल्यों के आधार पर समझा जा सकता है। रंगों के सभी धाप (tints and shades) तीन मूल रंगो को विविध अनूपातों के मिलाने से बनते हैं।

रोड, बहुत बड़ी संख्या में (लगभग बारह करोड़) पाये जाने वाले, प्रकाश के अभिग्राहक होते हैं। प्रकाश की तीव्रता के लिये ये, कोनों की तुलना में अधिक संवेदनशील होते है तथापि वे रंगों के प्रति संवेदनहीन होते है ये हमारे द्वारा अंधेरे में अनुशीलित (adopt) किए गए या इसकोटोपिक व्याख्या के लिए उत्तरदायी होते हैं। लगभग 30 मिनट तक गहन अंधकार में रहने के बाद, अंधकार से अनुशीलित की हुई दृष्टि प्राप्त होती है। ये कोनों की तुलना में एक हजार गुने अधिक संवेदनशील होते हैं और इनको पृथक–पृथक फोटोंनों द्वारा दागा जाने वाला समझा जाता है।

रोड में, रोडोप्सिन (rhodopsin) नाम का प्रकाश रंजक काम में लाया जाता है। छोटी तरंगदैर्ध्यों के लिए इनकी संवेदनशीलता बढ़ जाती है, अर्थात् रोड की संवेदनशीलता, लाल की तुलना में, नीले प्रकाश के लिये अधिक होती है। रोड, लाल रंग को नहीं देख सकते और नीले रंग के प्रति सर्वाधिक तीक्ष्ण होते हैं। तेज प्रकाश में रंग अभिग्राही कोन, वर्चस्व में होते हैं, जबकि रोड लगभग निष्क्रिय रहते हैं। दिन के समय हम हरी पत्तियों के बीच छिपे हुए लाल गुलाब को अच्छी तरह पहचान सकते हैं, जबकि सांझ के अंधियारे में हरी पत्तियों के बीच छिपे हुए गुलाब के फूल को, उतना आसानी से नहीं पहचान सकते, क्योंकि गुलाब की लाल पंखुड़ियों की तुलना में, हरी पत्तियॉ, रोड को सर्वाधिक रूप से प्रभावित करती हैं। इसलिये दिन के प्रकाश में, हमें लाल गुलाब अधिक चमकदार और स्पष्ट दिखाई देता है, जबकि पत्तियों का हरा रंग दबा रहता है। सॉझ के अंधेरे में कम संवेदनशील कोन, अपना काम बंद करना प्रारम्भ कर देते हैं, अतः अधिकांश दृष्टि, रोडों से मिलती हैं, जो लाल पंखुड़ियों की तुलना में, हरी पत्तियों से अधिक प्रकाश प्राप्त करते हैं, फलस्वरूप हरी पत्तियों के बीच लाल गुलाब छिप जाता है।

यद्यपि कोनों के साथ, अधिक विभेदन की और अधिक शुद्धता की दृष्टि प्राप्त होती है, जबकि रोड गतिशील चीजों को अच्छी तरह पहचानते हैं। चूँकि रोड, दृष्टि के बाहरी क्षेत्र में प्रभावी होते हैं, इसलिए दृष्टि का प्रभावी क्षेत्र, प्रकाश के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। यदि

के एक भाग द्वारा, आवेगों के रूप में रूपांतरित कर देती हैं, जो प्राप्त आवेगों को मूल वस्तु के चित्र के रूप में बदल देता है। ये सब अत्यंत जटिल है, और हम इसमें अत्यधिक गहराई तक नहीं जाना चाहते। मैं केवल ये तुम्हें बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि, हर चीज कंपन है। यदि हम इस पैमाने पर और ऊँचे चलें तो हमारे पास रेडियो तरंगें, दूरानुभूति तरंगें और उन लोगों की तरंगें हैं, जो दूसरे तलों पर रहते हैं। परंतु, वास्तव में, मैंने कहा कि हम स्वयं को, कुजीं–पटल में, विशेषरूप से, तीन पौराणिक (mythical) स्वरों के ऊपर सीमित करने वाले हैं, जो मनुष्यों के द्वारा, ध्वनि या दृष्टि के माध्यम से, ठोस चीज के रूप में समझे जाते हैं।'' मुझे इस सबके ऊपर सोचना पड़ा, ये एक ऐसा मामला था, जिसने वास्तव में, मेरे दिमाग को चकमका दिया। तथापि, मैं अपने शिक्षक की उदार पद्धतियों के द्वारा, सीखने को कभी बुरा नहीं मानता था। एकमात्र समय, जब मैं सीखने से पीछे हटा था, तब था, जब कोई अत्याचारी शिक्षक, एकदम असुखद छड़ी के द्वारा, मेरी बेचारी पोशाक पर, जोर–जोर से चोट कर रहा था।

''तुमने रंगों के बारे में पूछा, लोबसांग। ठीक है, किसी के प्रभामंडल में कुछ निश्चित कंपन, रंगों के रूप में प्रभाव डालते हैं। इसप्रकार, उदाहरण के माध्यम से, यदि एक व्यक्ति अभागा अनुभव कर रहा है–यदि वह पूरी तरह से दुःखी अनुभव कर रहा है–तब उसके संज्ञान का एक भाग, एक कंपन या आवृति उत्सर्जित करेगा, जो लगभग, उस रंग के करीब है, जिसे हम नीला कहते हैं, ताकि वे लोग भी, जो अतीन्द्रियज्ञानी नहीं हैं, लगभग नीलेपन को समझ जायें और इसलिए ये रंग, पूरे विश्व में, अधिकांश भाषाओं में, नीली मनोदशा को असुखद, अप्रसन्न, मनोदशा इंगित करने वाले के रूप में, प्रचलित हो गया।'' अब मैं इस पर विचार करना शुरू कर ही रहा था परंतु, इसने मुझे अभी–भी उलझन में डाल दिया कि, कोई व्यक्ति ईर्ष्या के साथ हरा कैसे हो सकता है, और मैंने (अपने शिक्षक से) ऐसा कहा। ''लोबसांग, व्युत्पत्ति (deduction) करते हुए, तुम इस कारण को अपने आप प्राप्त करने में सफल होगे कि, जब कोई व्यक्ति, ईर्ष्या के नाम से जाने जाने वाली किसी बुरी आदत से पीड़ित है, उसके कंपन कुछ हद तक बदल जाते हैं ताकि वह दूसरों के ऊपर, हरे होने का प्रभाव डालता है। जैसा तुम अच्छी तरह जानते हो, मेरे कहने का तात्पर्य ये नहीं है कि, उसके चेहरे के गुण हरे हो जाते हैं, परंतु वह हरे होने का प्रभाव प्रदान करता है। मुझे, तुम्हें ये भी स्पष्ट कर देना चाहिए कि जब कोई व्यक्ति, सितारों के कुछ निश्चित प्रभावों में जन्म लेता है, तब वह अत्यधिक प्रभावशालीरूप से इन रंगों से प्रभावित होता है।'' ''हॉ !'' मैं फूट पड़ा, ''मैं जानता हूँ कि, मेष राशि में पैदा हुआ एक व्यक्ति, लाल रंग को पसंद करता है!'' मेरे शिक्षक मेरी उत्सुकता पर हँसे और उन्होंने कहा, ''हॉ, ये अनुनाद के नियमों के अंतर्गत आता है। कुछ निश्चित लोग, कुछ निश्चित रंगों के साथ, अधिक तेजी के साथ प्रतिक्रिया देते हैं क्योंकि, उन रंगों के कंपन, उनके खुद के मूल कंपनों के साथ अत्यंत निकट की संवेदना रखते हैं। यही कारण है कि, मेष राशि वाला व्यक्ति (उदाहरण के लिए) लाल, रंग को प्राथमिकता देता है क्योंकि मेष राशि वाला व्यक्ति, अपने श्रृंगार में लाल रंग को महत्व देता है और वह पाता है कि लाल रंग, उसमें बने रहने के लिए, स्वयं में सुखद है।''

मैं एक प्रश्न पूछने के लिए फूटा पड़ रहा था; मैं इन हरे और नीलों के विषयों में जानता था, मैं ये भी समझ सकता था कि कोई व्यक्ति, भूरे अध्ययन (brown study) में क्यों होना चाहिए–क्योंकि जब कोई व्यक्ति अध्ययन के किसी विशेषरूप पर केन्द्रीकृत (coccentrate) कर रहा होता, उसका प्रभामंडल शायद भूरे धब्बों से सिंचित होता परंतु, मैं नहीं समझ सका कि, कोई औरत सिंदूरी (scarlet) क्यों होनी चाहिए! ''आदरणीय लामा!'' अपनी उत्सुक्ता को और अधिक लंबे समय तक बनाये रखने में अक्षम होने के कारण, मैं फूट पड़ा, ''किसी औरत को सिंदूरी औरत (scarlet women) क्यों कहा जाना

आप एक धुधंले तारे को अपनी तिरछी नजर से देखें, तो उसे अच्छी तरह देख सकते हैं, परंतु जैसे ही उसे सीधा देखेंगे, वह गायब हो सकता है, क्योंकि, तब आप केन्द्र के कोन प्रधान क्षेत्र को उपयोग कर रहे होंगे, जो कि प्रकाश के प्रति कम संवेदनशील होता है। आप गतिशील चीजों को, सीधी नजर के बजाय, तिरछी नजर से अच्छी तरह पहचान सकते हैं।

चाहिए ?'' मेरे शिक्षक ने मेरी ओर देखा मानो कि, वह भड़कने वाले हों और मैंने एक क्षण के लिए आश्चर्य किया कि, मैंने ऐसा क्या कह दिया, जिसने उनको लगभग दबाये हुए आनंद के साथ, दौरे की अवस्था में फैंक दिया, तब उन्होंने मुझे, कृपापूर्वक और कुछ विस्तार से बताया ताकि भविष्य में, मैं किसी भी विषय में इतना अस्पष्ट न होऊँ!

''मैं तुम्हें ये भी बताना चाहता हूँ लोबसांग, कि हर व्यक्ति के कंपनों की एक मूल आवृति होती है, अर्थात्, प्रत्येक व्यक्ति के अणु, एक निश्चित दर से कंपन करते हैं और व्यक्ति के मस्तिष्क से उत्पन्न की जाने वाली तरंग धैर्य (wavelength), किसी विशेष समूह में हो सकती है। कोई भी दो व्यक्ति, एक ही तरंग धारण करने वाले नहीं होते और न ही समान तरंगधैर्य, हर मामले में एक दूसरे के अनुरूप होती हैं, परंतु जब दो व्यक्ति लगभग समान तरंगदैर्ध्य वाले होते हैं, या जब उनकी तरंगदैर्ध्य, दूसरे के सप्तक की कुछ निश्चित तरंगदैर्ध्यों का अनुगमन करती हैं, तब उन्हें अनुकूल (compatible) कहा जाता है और वे सामान्यतः बहुत अच्छे तरीके से साथ–साथ चलते हैं।'' मैंने उनकी तरफ देखा और अत्यधिक तुनक मिजाज (temperamental) कलाकारों में से कुछ के ऊपर, आश्चर्य किया। ''आदरणीय लामा, क्या ये सत्य है कि, कलाकारों में से कुछ, दूसरों की तुलना में उच्चतर दर पर कंपन करते हैं ?'' मैंने जानकारी की। ''सर्वाधिक निश्चय के साथ ऐसा ही है, लोबसांग,'' मेरे शिक्षक ने कहा, ''यदि किसी आदमी को, जिसे अंतःप्रेरणा कहते हैं, लेनी है, यदि वह एक अच्छा कलाकार होना चाहता है, तो उसकी कंपनों की आवृति, सामान्य से कई गुना उच्च होनी चाहिए। कई बार–उसके साथ संपर्क बनाये रखना–उसे क्रोधित कर देता है। हममें से अधिकांश की तुलना में उच्चतर दर पर कंपन वाला होने के कारण, वह हमें नीची दृष्टि से, निम्न श्रेणी के मृत्य की तरह, देखने लगता है। तथापि, अक्सर, जो कार्य वह करता है, इतना अच्छा होता है कि, हम उसकी हल्की–सी सनक को, पसंद को और परेशानियों को, दर किनार कर देते हैं!''

मैंने इस बड़े कुंजी पटल की, मीलों दूर तक फैले हुए कल्पना की और मुझे ये अजनबी चीज लगी यदि, अनेक मीलों तक विस्तारित होते हुए किसी कुंजी पटल पर, मानवीय अनुभवों की परास (range), लगभग तीन स्वरों तक ही सीमित होगी। और मैंने ऐसा कहा भी। ''मानव प्राणी, तुम जानते हो लोबसांग, ये सोचना पसंद करता है कि, सृष्टि में वही एकमात्र चीज है, जो महत्वपूर्ण है। वास्तव में, वहाँ मानवों के अलावा, जीवन के दूसरे अनेक–अनेक रूप भी हैं। दूसरे ग्रहों पर जीवन के रूप हैं, जो मनुष्यों को पूरी तरह अनजाने लगते हैं, और औसत मनुष्य, जीवन के ऐसे किसी रूप के बारे में सोच भी नहीं सकता। इस विशिष्ट ब्रह्माण्ड में, दूर–दूर पर हटाये गए किसी एक गृह के निवासी, हमारे इस मिथिकीय कुंजीपटल पर, मानवों की तुलना में, कुंजीपटल के ठीक दूसरे सिरे पर होंगे। फिर, अस्तित्व के सूक्ष्मलोकों के लोग, कुंजीपटल पर और ऊँचे होंगे, क्योंकि एक प्रेत, जो दीवार में होकर गुजर सकता है, ऐसी पतली प्रकृति का होता है कि, उसके खुद के कंपनों की दर, वास्तव में, ऊँची होगी यद्यपि उसकी आण्विक संरचना नीची होगी।'' उन्होंने मेरी तरफ देखा और मेरी उलझी हुई अभिव्यक्ति पर हँसे, और तब स्पष्ट किया, ''ठीक है, तुम देखते हो कि एक प्रेत एक पत्थर की दीवार में होकर गुजर सकता है क्योंकि पत्थर की दीवार, कंपन करते हुए अणुओं से बनी हुई है। उसमें हर अणु के बीच में रिक्त स्थान है, और यदि तुम एक प्राणी को पा सको, जिसके अणु इतने छोटे है कि वे पत्थर की दीवार के रिक्त स्थानों के बीच में ठीक बैठते हैं, तब वह विशेष प्राणी, उस पत्थर की दीवार में से, भले ही वह कैसी भी क्यों न हो, बिना किसी रुकावट के गुजर सकता है। वास्तव में, सूक्ष्मलोक के प्राणी, कंपनों की अत्यधिक उच्चदर वाले होते हैं, और वे क्षुद्र (tenuous) प्रकृति के होते हैं अर्थात्, वे ठोस नहीं होते, बदले में इसका अर्थ ये है कि, उनके केवल कुछ अणु होते हैं। अधिकांश लोग कल्पना करते हैं कि, हमारी पृथ्वी के परे का आकाश, हमारे ऊपर वायु की सीमा से परे–खाली है। ऐसा नहीं है, आकाश में हर जगह अणु हैं। वे अधिकांशतः हाइड्रोजन के अणु हैं, जो अत्यधिक दूर–दूर बिखरे हैं,

परंतु अणु वहॉ हैं और उनकी नाप ठीक वैसे ही की जा सकती है जैसे कि, किसी तथाकथित प्रेत की उपस्थिति नापी जा सकती है।'' हमें फिर से अपनी सेवाओं के लिए बुलाते हुए, मंदिर के शंख, नाद कर उठे। ''हम इस संबंध में कल फिर बात करेंगे, लोबसांग, क्योंकि मैं तुम्हें इस विषय में पूरी तरह स्पष्ट देखना चाहता हूँ,'' जैसे ही हम मंदिर के प्रवेशद्वार के लिए चले, मेरे शिक्षक ने कहा।

मंदिर की सेवा का अंत, एक दौड़–खाने के लिए दौड़ का प्रारंभ था। हम सभी भूखे थे क्योंकि हमारी खुद की खाद्य आपूर्तियॉ समाप्त हो गई थीं। ये वो दिन था, जब ताजा भुने गए जौ की नई आपूर्ति उपलब्ध थी। तिब्बत में, सभी भिक्षु, जौ के लिये चमड़े का एक छोटा थैला अपने साथ ले जाते हैं, जो भुने और पिसे हुए होते हैं और जो, मक्खन वाली चाय के साथ मिला दिए जाने पर, त्सम्पा बन जाते हैं। इसलिए हम दौड़े और शीघ्र ही, अपने बटुओं को भरने के लिए प्रतीक्षारत, भीड़ में शामिल हो गए, तब हम बड़े कमरे की तरफ गए, जहॉ चाय उपलब्ध थी ताकि, हमें अपना शाम का खाना मिल सके।

खाना भयानक था। मैंने अपने त्सम्पा को चबाया और आश्चर्य किया, क्या मेरा पेट खराब था। उसमें भयानक, जले हुए तेल का स्वाद आया, और मैं वास्तव में नहीं जानता कि मैं इसे कैसे नीचे उतार पा रहा था। ''उफ ! मेरे अगले लड़के ने बड़बड़ाया, ''ये माल जला हुआ पीसा गया है, हम में से कोई भी, इसे नीचे नहीं ठूंस पायेगा!'' ''मुझे ऐसा लगा कि खाने के इस थोक (lot) में, हर चीज पूरी तरह खराब हो गई है!'' मैंने कहा। मैंने, तीव्रता के साथ आतंकित अपने चेहरे को, पेच की तरह घुमाते हुए–आश्चर्य करते हुए, कि मैं इसे कैसे नीचे उतार रहा हूँ, थोड़ा और अधिक प्रयास किया। तिब्बत में ऐसे खाने को (भी) बर्बाद करना, एक बड़ा अपराध है। मैंने अपनी तरफ देखा, और देखा कि दूसरे सब अपनी–अपनी तरफ देख रहे थे! त्सम्पा खराब था, इसके संबंध में कोई संदेह नहीं था, हर जगह कटोरे नीचे रख दिए गए थे, जबकि हरएक हमेशा भूख के कगार पर रहता था और ये हमारे समाज में बहुत ही बिरली घटना थी। मैंने त्सम्पा को जल्दी से अपने मुँह में निगला और उसके बारे में एक बहुत अनजान चीज, कुछ–कुछ अनअपेक्षित बल के साथ, मेरे पेट में टकराई। जल्दी से अपने पैरों पर लड़खड़ाते हुए, और अपने मुँह को अपने हाथ से डरते हुए पकड़े हुए, मैं दरवाजे की तरफ दौड़ा ..... !

''ठीक है नौजवान,'' हिंसकरूप से विक्षिप्त करने वाले खाने से फूट पड़ते हुए, जैसे ही मैं दरवाजे की तरफ पीछे मुड़ा, एक अनजान जोरदार आवाज ने कहा। मैं मुड़ा और मैंने देखा कि जापानी भिक्षु, केन्जी तेक्युची (Kenji Tekeuchi), जो हर जगह रह चुका था, हर चीज देख चुका था और हर चीज कर चुका था और अब इसके लिए, मानसिक अस्थिरता की प्रतियोगिता के माध्यम से, बारी–बारी से भुगतान कर रहा था। उसने मेरी तरफ सहानुभूति से देखा, क्या ये घिनौना पदार्थ नहीं था ? उसने सहानुभूतिपूर्ण टिप्पणी कि, ''मुझे भी तुम्हारी तरह से परेशानी हुई और मैं भी उसी कारण से (उल्टी करने के लिये) यहॉ बाहर आया। हमको देखना पड़ेगा कि क्या होता है। मैं कुछ क्षणों के लिए, ये आशा करते हुए, कि ताजी हवा सड़ांध को, जो इस खराब खाने ने पैदा की है, कुछ हद तक हटा ले जायेगी, बाहर खड़ा हूँ।'' ''श्रीमान्,'' मैंने संकोचपूर्वक कहा, ''आप हर जगह रहे हैं, और क्या आप मुझे बतायेंगे कि हमारे साथ, यहॉ तिब्बत में, क्यों ऐसे भयानक उदासीपूर्ण मामले होते हैं ? मैं त्सम्पा और चाय से मृत्यु की सीमा तक परेशान हूँ, और चाय और त्सम्पा, और त्सम्पा और चाय। कई बार मैं मुश्किल से ही मलबे (muck) को ठूंस–ठूंसकर नीचे उतार पाता हूँ।''

जापानी ने, अधिक समझदारी के साथ और अधिक सहानुभूति के साथ भी, मेरी तरफ देखा। ''आह! तुम मुझे इसलिए पूछ रहे हो क्योंकि, मैंने विभिन्न प्रकार के खानों का स्वाद लिया है ? हॉ, और मैंने लिया है। मैं अपने पूरे जीवन भर विस्तृतरूप से घूमता फिरा हूँ। मैंने इंग्लैण्ड, जर्मनी, रूस में–लगभग हर जगह, जिसका उल्लेख तुम कर सकते हो, खाना खाया है। मेरी पुजारियों जैसी प्रतिज्ञाओं के बावजूद, मैं ठीक से रहा हूँ, या कम से कम मैंने उस समय ऐसा सोचा, परंतु अब अपनी

प्रतिज्ञाओं से मेरी उपेक्षा, मेरे लिए दुःख ला रही है।'' उसने मेरी तरफ देखा और फिर से जीवन में झटका खाता प्रतीत हुआ। ''ओह! हॉ! तुमने पूछा था कि तुम्हारे साथ ऐसे एकरसता वाले (monotonous) मामले क्यों होते हैं। मैं तुम्हें बताऊॅगा। पश्चिम के लोग अत्यधिक खाते हैं, और उनके पास खाने की बहुत सारी किस्में हैं, पाचनतंत्र अनिच्छा (involuntary) के आधार पर काम करता है, अर्थात्, वे मस्तिष्क के इच्छुक भाग से नियंत्रित नहीं होते। जैसा हम पढ़ाते हैं, यदि मस्तिष्क को ऑखों के माध्यम से खाने, जो उपभोग किया जाना है, के प्रकार का अनुमान करने का अवसर मिले, तब पेट, खाने के साथ व्यवहार करने के लिए, पाचन रसों को, आवश्यक मात्रा और सॉद्रता में निकालता है। यदि दूसरी तरफ, हर चीज बिना विचारे ठूॅसी जा रही है, और उपभोगकर्ता हर समय फालतू बातों में उलझा है, तब पाचनरस तैयार नहीं होते हैं और पाचन क्रिया पूरी नहीं हो सकती, और बेचारा कम्बख्त अपच से और बाद में शायद, ऑतो के छालों (peptic ulcers) से पीड़ित होता है। तुम जानना चाहते हो कि तुम्हारा खाना सादा क्यों है ? ठीक है! कोई आदमी, अन्य कारणों के अंतर्गत, अधिक सादा, और अधिक एकांकी (monotonous) खाने का उपभोग करता है, तो यह शरीर के मानसिक भागों के विकास की दृष्टि से, उतना ही अधिक अच्छा होता है। मैं गूढ़विज्ञान का एक महान विद्यार्थी था, मुझे अतीन्द्रियज्ञान की महान शक्तियॉ प्राप्त थीं और तब मैंने, अपने आपको सभी प्रकार के अविश्वसनीय मनगढंत खानों से और अविश्वसनीय पेयों से भरा। मेरी सभी पराभौतिकी (metaphysical) शक्तियॉ समाप्त हो गईं, अब मैं यहॉ चाकपोरी में आया हूॅ ताकि, मेरी देखभाल की जा सके, ताकि मैं वह स्थान प्राप्त कर सकूॅ, जहॉ मैं इस संसार को छोड़ने से पहले, अपने कमजोर शरीर को विश्रान्ति दे सकूॅ और जब मैं अब से मात्र कुछ थोड़े महीनों के अंदर, इस संसार को छोड़ दूॅगा, लाश को ठिकाने लगाने वाले लोग, अपना काम करेंगे–काम को पूरा करेंगे–जिसे बिना विचारे खाने और पीने के पदार्थों ने प्रारंभ किया था।'' उसने मेरी तरफ देखा और फिर से अनोखी कुदॉग लगाई, और कहा, ''ओह हॉ, मेरे बच्चे! तुम मेरी सलाह लो, अपने पूरे जीवन भर, सभी दिनों में, सादा खाने पर टिके रहो और तुम कभी अपनी शक्तियों को नहीं खोओगे। मेरी सलाह के विरुद्ध जाओगे और अपनी भूखी भोजन नली में हर चीज को ठूंसोगे तब तुम, अपने फायदे और हर चीज को खो दोगे ? ठीक है, मेरे बच्चे, तुम्हें अपच प्राप्त हो जायेगा; तुमको एक खराब स्वभाव के साथ, आंत्रशोथ (gastric ulcer) प्राप्त होंगे। ओहो! मैं हटता जा रहा हूॅ, मैंने दूसरे हमले को अंदर से आते हुए महसूस किया।'' जापानी भिक्षु, केन्जी तेक्युची कॉपता हुआ अपने पैंरों पर उठा और लामाओं के क्वार्टरों की तरफ दूर भाग गया। मैंने उसको देखा और दुःख से अपना सिर हिलाया। मुझे उसके साथ, लंबे समय तक बात करने के लिए, सक्षम होना पसंद होना चाहिए था। वे किस प्रकार के खाने थे ? क्या वे स्वाद में अच्छे थे ? तब मैंने अपने आपको झटके के साथ खींचा; अपने आपको मैं क्यूॅ तरसाऊॅ, जबकि सब कुछ मेरे सामने था, बासी बदबूदार मक्खन की चाय और त्सम्पा, जो वास्तव में इतना जल गया था कि, ये कोयला जैसा था और एक प्रकार से कुछ अनजान तैलीय योगिक, इसके अंदर घुस आये थे। मैंने अपना सिर हिलाया और फिर से हॉल के अंदर प्रविष्ट हुआ।

बाद में, शाम में, मैं अपने शिक्षक लामा मिंग्यार डोंडुप के साथ बात कर रहा था। ''आदरणीय लामा, लोग सड़क छाप लोगों से जन्मपत्रियॉ क्यों खरीदते हैं ?'' मेरे शिक्षक दुःख के साथ मुस्कुराये और जबाव दिया, ''वास्तव में, जैसा तुम जानते हो, कोई भी जन्मपत्री (तबतक) मूल्यवान नहीं हो सकती, जबतक कि इसे उस व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत रूप से न तैयार किया गया हो, जिसको ये संदर्भित करती है। कोई भी जन्मपत्री बड़े पैमाने पर, तैयार नहीं की जा सकती। सड़क छाप लोगों के द्वारा नीचे सड़क पर बेची जाने वाली जन्मपत्रियॉ, मात्र ऐसी हैं कि वे कान के कच्चे लोगों से धन प्राप्त करतीं हैं।'' उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, ''वास्तव में, लोबसांग, वैसे ही सड़क छाप तीर्थयात्री, जो ऐसी जन्मपत्रियॉ लेते हैं, जब घर वापस जाते है वे संतुष्ट होते हैं कि पोटाला की

एक यादगार उनके पास है और इसलिए उनके संबंध में क्यों परेशान हुआ जाये ? हर आदमी संतुष्ट है।'' ''क्या तुम सोचते हो कि लोगों को अपने लिए जन्मपत्री तैयार करानी चाहिए ?'' मैंने पूछा, ''वास्तव में नहीं, लोबसांग, वास्तव में नहीं। मात्र कुछ निश्चित मामलों में, जैसे कि तुम्हारे खुद के, जन्मपत्रियॉं, अक्सर अपने खुद के उत्तरदायित्वों पर, किसी व्यक्ति को कार्य का पथ स्वीकार करने के प्रयास में, उपयोग में लाई जाती हैं। जबतक कि इसके लिए कोई निश्चित विशिष्ट कारण न हो, मैं ज्योतिष या जन्मपत्रियों का उपयोग करने के अत्यधिक विरोध में हूँ। जैसा तुम जानते हो, औसत आदमी ल्हासा के शहर में हो कर, अपने रास्ते पर चलते हुए तीर्थयात्री की तरह है। पेड़ों और मकानों के कारण वह सामने की सड़क को नहीं देख सकता और वह सड़क के घुमावों में मुड़ जाता है। उसे, जो भी सामने आ रहा है, उसके लिए तैयार होना चाहिए। हम यहॉं (ऊपर) से नीचे सड़क पर और किन्हीं अवरोधों को देख सकते हैं क्योंकि, हम उच्चतर उन्नयन (higher elevation) में है। बिना जन्मपत्री का तीर्थयात्री, तब, एक व्यक्ति की तरह है। हम हवा में ऊँचे होने के कारण, तीर्थयात्री की तुलना में, एक जन्मपत्री वाले आदमी की तरह से हैं, क्योंकि हम सड़क को आगे तक देख सकते हैं, हम अवरोधों और कठिनाईयों को देख सकते है, और इसप्रकार एक ऐसी स्थिति में होने चाहिए, जो कि वास्तव में, कठिनाई आने से पहले, उन पर पार पा सके।''

''यहॉं एक और चीज है, जो मुझे अत्यधिक परेशान कर रही है, आदरणीय लामा। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि ऐसा क्यों है कि, हम चीजों को, जिन्हें हम पिछले जीवन में जानते थे, इस जीवन में भी जानते हैं ?'' मैंने अत्यधिक व्याकुलता से उनकी ओर देखा क्योंकि मैं इस प्रकार के प्रश्नों को पूछने में हमेशा डरता था क्योंकि मुझे, वास्तव में, ऐसे मामलों में अधिक गहराई तक जाने का कोई अधिकार नहीं था, परंतु उन्होंने उसका कोई बुरा नहीं माना, बदले में उन्होंने उत्तर दिया, ''इस पृथ्वी पर आने से पहले, लोबसांग, हमने ये जॉंचा परखा कि, हमारा क्या करने का इरादा है। ज्ञान, हमारे अवचेतन में भण्डारित हुआ और यदि हम अपने अवचेतन के संपर्क में आ सकें– जैसा हम में से कुछ लोग कर सकते हैं !–तब हमको हर चीज को, जो हमने योजित की थी, जानना चाहिए। वास्तव में, यदि हम हर चीज, जो हमने योजित की थी, को जानना चाहें तो अपने लिए अच्छे करने की तड़प में, इसका कुछ लाभ नहीं होगा क्योंकि हम जान सकेंगे कि हम, एक पूर्व नियोजित योजना के अनुसार कार्य कर रहे थे। कई बार, एक व्यक्ति सोता है और कुछ कारणों से जब वह चेतन हो, शरीर के बाहर निकल जाता है और वह अपने अधिस्वयं के संपर्क में आता है। कई बार अधिस्वयं, उसके अवचेतन में से ज्ञान को बाहर लाने में और वापस उसे पृथ्वी पर शरीर में हस्तांतरित करने में सफल होता है, ताकि जब सूक्ष्मशरीर, मांस के शरीर में वापस लौटे, कुछ चीजों का, जो पूर्व जीवन में घटी थीं, ज्ञान मन में बना रहे। ये गलती, जो हम एक के बाद दूसरे जीवन में करते जा रहे हैं, को न करने की एक विशेष चेतावनी होगी। मात्र एक उदाहरण के रूप में–कई बार, एक व्यक्ति में आत्महत्या करने की बड़ी तीव्र इच्छा होती है और यदि कोई व्यक्ति, जीवन दर जीवन, उसे करने के लिए दंडित किया जाता रहा है, तब जल्दी ही, स्वयं को नाश करने के संबंध में इस आशा में कि ऐसी एक स्मृति उस शरीर को स्वयं नाश करने से रोकेगी, उन्हें किसी चीज की स्मृति आ जायेगी।''

''मैंने इस सबके ऊपर आश्चर्य किया और तब खिड़की की ओर चला और बाहर की ओर देखा। ठीक नीचे वहॉं दलदली क्षेत्र में ताजी हरियाली थी और फर के पेड़ों की सुन्दर हरी–पत्तियॉं। मेरे शिक्षक ने मेरे दिवास्वप्न को तोड़ा। ''तुम इस खिड़की में से बाहर देखते हुए दिख रहे हो लोबसांग, क्या तुम्हें ये घटित होता है कि, तुम इतनी जल्दी–जल्दी बाहर देखते हो क्योंकि, तुम हरे रंग को अपनी ऑंखों को शांति देने वाला पाते हो ?'' जैसे ही मैंने इसके बारे में सोचा, मैंने अनुभव किया कि अपनी पुस्तकों के साथ कार्य करने के बाद, मुझे हरियाली देखने का सहज बोध था। ''हरा, लोबसांग, ऑंखों के लिए अत्यधिक आरामदायक रंग है। ये थकी हुई ऑंखों को आराम देता है। जब तुम पश्चिमी विश्व

में जाओगे, तुम वहॉ देखोगे कि उनके कुछ रंगमंचों में एक स्थान होता है, जिसे वे हरित कक्ष (green room) कहते हैं, जहॉ कलाकार और महिला कलाकार, धुंऐ और चमकीली, भड़कीली, फुट लाइटों (foot lights) और फ्लड लाईटों (flood lights) से भरी स्टेज पर काम करने के बाद, अपनी ऑखों को आराम देने के लिए जाते हैं।'' इस पर आश्चर्य से मैंने अपनी ऑखें खोलीं और मैंने निश्चय किया कि जब कभी भी मौका स्वयं सामने आये, मैं रंगों के इस मामले को बाद में पढ़ता रहूॅगा। मेरे शिक्षक ने कहा, ''अब मुझे तुम्हें छोड़ना है लोबसांग, परंतु कल फिर मेरे पास आना क्योंकि, मैं तुम्हें कुछ दूसरी चीजें सिखाने वाला हूॅ।'' वह अपने पैरों पर खड़े हुए, मुझे कंधों पर थपथपाया, और बाहर चले गए। कुछ समय के लिए वे खिड़की के बाहर देखते हुए, दलदली घास की हरियाली और पेड़ों को देखते हुए खड़े रहे, जो ऑखों के लिए बड़े शांतिदायी थे।

अध्याय बारह

मैं पर्वतों को बगल से देखते हुए, पथ पर से थोड़ा नीचे की तरफ खड़ा हुआ। मेरे अंदर, मेरा हृदय बीमार था और मेरी ऑखें ऑसुओं से गर्म थीं, जिन्हें मैं बहाने का दुस्साहस नहीं कर सकता था। बूढ़े आदमी को पहाड़ों से नीचे ले जाया जा रहा था। जापानी भिक्षु, केन्जी तेक्युची, अपने पूर्वजों की तरफ लौट चुका था।'' अब उसकी लाश को ठिकाने लगाने वाले, उस बेचारी कुम्हलाई हुई बूढ़ी लाश को, हमसे दूर ले जा रहे थे। क्या उसकी आत्मा, अभी भी एक रास्ते पर, चेरी ब्लोसमों (cherry blossoms) के रास्ते पर पंक्ति में घूम रही थी ? या क्या वह अपनी जीवन भर की गलतियों को देख रहा था और अपनी वापसी की योजना बना रहा था ? जब लोग पथ पर, मोड़ पर मुड़े, मैंने फिर से नीचे देखा। उस दर्दनाक गट्ठर, जो कभी आदमी रहा था, के ऊपर देखा। सूर्य के ऊपर एक छाया आई, और कुछ समय के लिए मैंने कल्पना की कि, मैंने बादलों में एक चेहरा देखा था।

क्या ये सत्य था, मैंने आश्चर्य किया, कि वहॉ विश्व के संरक्षक थे ? महान आत्मा के संरक्षक, जिन्होंने देखा कि आदमी, पृथ्वी पर जिंदा रहने के लिये कष्ट झेल रहा था। तब, वे पाठशाला के अध्यापकों की भॉति रहे होंगे, मैंने सोचा! शायद केन्जी तेक्युची उन्हें मिलेगा। शायद उसे कहा जायेगा कि, उसने अच्छी तरह सीखा है। मैं ऐसी आशा करता था, क्योंकि वह एक भटका हुआ, बूढ़ा आदमी था, जिसने काफी कुछ देखा था और काफी पीड़ा झेली थी। या क्या उसे फिर से पुर्नजन्म लेने के बाद, इस पृथ्वी पर आना पड़ेगा–ताकि वह और अधिक सीख सके ? वह कब आयेगा ? कुछ छः सौ वर्षो में या अभी ?

मैंने इसके ऊपर सोचा; मैंने उस सेवा के ऊपर सोचा, जो मैंने अभी छोड़ी थी। मरे हुए लोगों को पथ प्रदर्शन देने की सेवा। जीवन की मंद ज्वाला की तरह से टिमटिमाते हुए, टिमटिमाते हुए मक्खन के दीपक। मैंने मधुर सुगंधित सुगंधियों के बादलों के संबंध में भी सोचा, जो जीवित प्राणियों को बनाते हुए लगे। एक क्षण के लिए, मैंने केन्जी तेक्युची के ऊपर भी सोचा कि, वह हमारे सामने फिर से, एक सूखी हुई लाश के बजाय, एक जीवित प्राणी के रूप में सहारा पाते हुए, हम लोगों के बीच आ गया है। अब शायद वह, जो कुछ कभी भी हुआ है, उसके अमिट अभिलेखों, आकाशीय अभिलेखों को देख रहा होगा। हो सकता है कि, वह देखने में और जब वह दुबारा आता है, उसे याद रखने में समर्थ हो कि, उसने कहॉ गलती की थी।

बूढ़े आदमी ने मुझे काफी कुछ सिखाया था। अनजान तरीके से, मेरे साथ समानता के आधार पर बात करता हुआ, वह मेरा प्रशंसक रहा था। अब वह पृथ्वी पर जीवित नहीं था। लापरवाही से मैंने, एक पत्थर को और अपनी टूटी हुई सेंडिल को जमीन में रगड़ते हुए, ठोकर मारी। क्या उसकी एक मॉ थी ? कैसे भी, मैं जवान के रूप में और एक परिवार धारण करते हुए, उसकी कल्पना नहीं कर सका। वह हम अनजान लोगों के बीच, अपने खुद के देश से काफी दूर, गर्म हवाओं और अपने पवित्र पहाड़ों से इतना दूर, अकेला रहा होगा। अक्सर वह मुझे जापान के संबंध में बताता था, और तब उसकी आवाज भर्रा जाती थी और उसकी ऑखें अजनबी जैसी हो जाती थीं।

एक दिन उसने मुझे ये कहते हुए सदमा पहुॅचाया कि लोगों ने, जब वे खुशहाल रहे होंगे, एक गुरू से आग्रह करने के प्रयास करने के बजाय, जबतक कि वे प्रतीक्षा के द्वारा, तैयार न हों, गूढ़ मामलों में जॉच की। ''जब विद्यार्थी तैयार होता है, गुरू हमेशा आता है, बच्चे!'' उसने मुझे कहा, ''और जब तुम्हारा एक गुरू होता है – जो कुछ भी वह कहता है, तुमको करना चाहिए क्योंकि, केवल तभी तुम तैयार हो।'' दिन धुंधलाता जा रहा था। सिर के ऊपर बादल बन रहे थे और हवा फिर से छोटे पत्थरों का कोड़ा मारना शुरू कर रही थी। पहाड़ के आधार में से, मेरे नीचे मैदान में, आदमियों का एक छोटा समूह प्रकट हुआ। धीमे से, उन्होंने अपने दर्द भरे गट्ठर को, एक पोनी की पीठ पर लाद दिया, खुद भी लद गए, और धीमे से सवार होकर चल दिए। मैंने सपाट मैदान पर आरपार घूर कर देखा, जबतक कि अंत में, एक छोटा जुलूस, मेरी नजरों से ओझल नहीं हो गया। धीमे से मैं मुड़ा और पहाड़ पर ऊपर की ओर फिर घसीटकर चला।

प्रकाशकों के विभाग की दयालुता

जब से ''तीसरी ऑख'' सबसे पहले प्रकाशित हुई है, वर्षो तक मुझे भारी मात्रा में डाक मिली है, और वर्तमान समय तक मैंने उसका हमेशा उत्तर दिया है। अब मुझे कहना है कि, मैं यहॉ से आगे किसी भी डाक का जबाव देने में सक्षम नहीं हो सकूॅगा, जबतक कि उसके साथ, पूरा–पूरा वापिसी डाक खर्चा नहीं भेजा गया हो। इसलिये कृपया मुझे अग्रेषित करने के लिये, मेरे प्रकाशक को, पत्र न भेंजें क्योंकि, मैंने अपने प्रकाशक को, मुझे कोई पत्र अग्रेषित नहीं करने को कहा है।

लोग ये भूल जाते हैं कि, उन्होंने किताब के लिये पैसा दिया है, किसी जीवनपर्यंत्, मुफ्त डाक सलाहकार सेवा, के लिये नहीं। प्रकाशक, आखिर प्रकाशक ही है – कोई पत्रों को अग्रेषण करनी वाली सेवा नहीं।

मुझे पूरे संसार से, पर्दे के पीछे से भी, पत्र मिले, परन्तु हजारों लोगों में से एक ने भी, वापिसी का खर्चा नहीं भेजा, और लागत इतनी ज्यादा है कि, मैं उत्तरों का खर्चा, अब और नहीं झेल सकता। लोग ऐसी बेतुकी चीजों को भी पूछते हैं। उनमें से कुछ यहॉ हैं :

जब मैं आयरलेण्ड में था, ऑस्ट्रेलिया से एक अत्यन्त निराशाजनक पत्र था, जो मुझ तक पहुॅचा। मामला वास्तव में, अत्यावश्यक था, इसलिये मैंने अपने खर्चे पर ऑस्ट्रेलिया को समुद्री तार (cable) भेजा, और मुझे धन्यवाद ज्ञापन तक नहीं मिला।

संयुक्तराज्य अमेरिका में, ये मांग करते हुए कि, मुझे उनके लिये एक थीसिस लिखनी चाहिये और उन्हें वापिसी हवाई जहाज से भेजनी चाहिये, किसी महानुभाव ने मुझे पत्र लिखा। वह इसे पूर्वी दर्शनशास्त्र (oriental pholosophy) में डॉक्टेरेट की डिग्री प्राप्त करने के लिये उपयोग करना चाहते थे। वास्तव में उन्होंने कोई डाक खर्च नहीं भेजा। ये मात्र, एक धमकी भरी मांग थी।

एक अंग्रेज आदमी ने, बहुत ही अंहकारी भाव से, मेरे प्रमाणपत्रों की मांग करते हुए, अन्य पुरुष (third person) में पत्र लिखा और केवल यदि, वे उनके हिसाब से पूरी तरह संतोषजनक हुए तो, वह स्वयं को मेरे अन्तर्गत शिष्य के रूप में प्रस्तुत करेंगे, बशर्ते इसके लिये, मैं उससे कोई शुल्क न लूॅ। दूसरे शब्दों में, ये समझा गया था कि, मुझे सम्मानित किया जा रहा है। ''मैं नहीं समझता कि, उन्हें मेरा जबाव पंसद आयेगा।''

दूसरे किसी ने, मुझे लिखा और कहा कि, यदि, मैं ''और मेरे मित्र'' रात को सूक्ष्मशरीरी यात्रा में, तिब्बत से आयें और उसके बिस्तर के चारों तरफ जुड़ जाऐं तो, वह सूक्ष्मशरीरी यात्रा के संबंध में अधिक प्रसन्न अनुभव करेगा।

दूसरे किसी ने मुझे लिखा और मुझसे उच्च, शाश्वत, चीजों में से हर एक के बारे में, (यदि मैं चाहूॅ तो इसका उत्तर दे सकता हूॅ) ये बताने के लिये कि, मुर्गियों और किसी के पति (hens and

ones husband) को कैसे एक साथ रखा जाये। लोगों ने ये भी समझा कि, जो कुछ उनके मन में आये, वे मुझे लिख सकते हैं और यदि मैं जबावी हवाई डाक से उनको उत्तर न दूँ तो वे आक्रामक भी हो सकते हैं।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि, मेरे प्रकाशकों को परेशान न करें, वास्तव में, मैंने उन्हें, कोई भी पत्र, मुझे भेजने के लिये, मना किया है क्योंकि, वे प्रकाशक के रूप में व्यापार में हैं। उन लोगों के लिये, जो वास्तव में, उत्तर पाना चाहते हैं (यद्यपि मैं पत्रों को आमंत्रित नहीं करता) मेरे घर का पता है :

Dr. T Lobsang Rampa,
BM/LTR,
London W.C.I.,England

मैं किसी जबाव की गारंटी नहीं देता, और यदि आप इस पते का उपयोग करते हैं, तो आपको उचित डाकखर्च भेजना पड़ेगा क्योंकि, पत्र मेरे पास अग्रेषित किये जायेंगे और मुझे भुगतान करना पड़ेगा, इसलिये मैं उत्तर देने के लिये, पर्याप्त मधुर विचार में नहीं होऊँगा, जबतक कि, आप मेरे खर्चे को अपना खर्चा न बना लें। उहारण के लिये, जबतक कि, अग्रेषण प्रभारों का भुगतान किया जाये, ये कम से कम मुझे, एक डॉलर की लागत पड़ेगी।